DEMO

*NewsPaper*NewsPortal*NewsChannel

दैनिक डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट

DGR Detective Group Report

सतर्क रहें-सजग रहें अभियान

www.dgr.co.in

www.detectivegroupreport.com

YouTube DETECTIVE GROUP REPORT

संवाद और परिचर्चा

January 2022 to September 2022

संवाद और परिचर्चा

2013 से पुलिस सेवा के माध्यम से कार्यरत इंदौर में महिला थाने की वर्तमान इंचार्ज आर पाटीदार मैडम से डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट के पीआरओ एलएन उग्र द्वारा संवाद और परिचर्चा की गई... इस अवसर पर महिलाओं पर हो रहे अपराध और अन्य विषयों पर उन्होंने बेबाकी से अपना विचार प्रस्तुत की है... प्रमुख अंश इस प्रकार है...!

सवाल:- शहर में महिलाओं पर अपराध लगातार बढ़ रहे हैं...?

जवाब :- अपराध बढ़ने की बात से इनकार नहीं किया जा सकता है, इसके पीछे एक बड़ा कारण यह है कि 2 साल कोरोना काल के कारण महिलाएं बाहर नहीं आ पाई, घरेलू हिंसा हो या अन्य अपराध सभी प्रकार के अपराध में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को स्वतंत्रता कम होती है इसीलिए घर से बाहर नहीं निकल पाए...अब अनेक संस्थाओं के साथ साथ महिला डेस्क या महिला पुलिस अधिकारी महिलाओं को जागृत करने का काम कर रहे हैं अपने ऊपर अत्याचार और अपराध की आवाज उठाना चाहिए और यही हुआ है महिलाओं ने न्याय मांगने के लिए आवाज उठाई है! संभवत इसी कारण से महिलाओं के ऊपर हो रहे अपराध का रेशो बढ़ा है।

सवाल :-अपराध में महिलाओं की सहभागिता भी बढ़ रही है क्यों ?

जवाब :- अपराध में स्त्रीलिंग या पुल्लिंग से कोई संबंध नहीं होता है अपराध तो अपराध होता है, फिर भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं के अपराध की सहभागिता यह अंतर बहुत कम है! अपराध प्रवृति पुरुषों में अधिक है और वही देखा जाए तो महिलाओं में अपराध करने की प्रवृत्ति कम पाई जाती है! परिस्थितिवश

महिलाओं की आपराधिक सहभागिता हो सकती है परंतु स्वभावगत नहीं होती है। फिर भी महिलाओं के अपराध में उनकी सहभागिता दिखाई दी है परंतु उनको अपराधी में बढ़ोतरी नहीं कर सकते हैं।

सवाल:- पारिवारिक हिंसा में अब किसे दोषी मानते हैं?

जवाब :- पारिवारिक हिंसा में हम महिलाओं को दोषी नहीं ठहरा सकते हैं, एक महिला दूसरे परिवार से शादी करके ससुराल में आती है तो वह अकेली पूरे परिवार को प्रताड़ित नहीं कर सकती है उसके साथ जब अत्याचार होता है तब वह परेशान होती है और अन्य की मदद की ओर देखती है! ऐसे में काउंसलिंग के माध्यम से समस्या के समाधान का प्रयास किया जाता है! और इसके लिए परिवार परामर्श केंद्र ऊर्जा डेस्क महिला

विकास महिला डेस्क आदि के माध्यम से अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं

सवाल :- सामाजिक बदलाव के लिए क्या महिलाएं भूमिका निभा सकती हैं।

जवाब :- सामाजिक बदलाव में सबसे बड़ी भूमिका महिलाओं की होती है बच्चा जन्म लेता है और उस समय माता ही उसके साथ होती है माता का सरोकार सामाजिक चिंतन उसके द्वारा बच्चों को संस्कार दिए जाते हैं, यह जवाबदारी महिला ही उठाती है! एक जिम्मेदार महिला संस्कार के आधार पर सामाजिक चेतना के माध्यम से बच्चों को जागृत करती है, वह खुद जागृत होती है, इसलिए बच्चों को भी आगे अच्छे संस्कार देने की जवाबदारी महिला की होती है सामाजिक परिवर्तन में निश्चित रूप से महिलाओं की भूमिका सराहनीय रही है! सामाजिक चेतना से सरोकार रखते हुए महिला अच्छे विचार रखते हुए बच्चों को देगी तो सामाजिक परिवर्तन बच्चों के माध्यम से अवश्य आवेगा। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है सोच में परिवर्तन ही समाज में बदलाव ला सकता है और यही कार्य महिलाओं के द्वारा किया जा सकता है।

सवाल :- ड्रग्स मामले में महिलाओं की भूमिका को आप किस तरह से देखते हैं!

जवाब :- इस संबंध में कुछ थाने में कुछ नाम आए हैं एक पुरुष व महिला का अधिकार क्षेत्र अलग होता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है अपराधों में पुरुषों का और महिलाओं का रेशो समान नहीं होता है। महिलाओं की अपराध प्रवृति कम होती है क्योंकि महिलाओं के अपराध को समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है सोसाइटी में इसे अच्छा नहीं माना जाता है इसलिए भी महिलाओं के ऊपर अपराध प्रवृति होने का आरोप कम लगता है। समाज में महिलाओं के अपराधियों को घृणित कार्य समझा जाता है। अगर कोई महिला अपराधी है तो उसे हम परिस्थिति जन्य अपराध कह सकते हैं।

सवाल :- सामाजिक परिवेश के लिए कोई संदेश

जवाब :- सामाजिक परिवेश से अपराध कम होना चाहिए ऐसी अपेक्षा हम करते हैं सभी सामाजिक प्राणी मिलजुल कर रहे,अमन चैन से रहें यही हमारी अपेक्षा है। सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया... वंदे मातरम।

- महिलाओं ने न्याय मांगने के लिए आवाज उठाई है।
- अपराधों में पुरुषों का और महिलाओं का रेशो समान नहीं होता है। महिलाओं की अपराध प्रवृति कम होती है।
- एक जिम्मेदार महिला संस्कार के आधार पर सामाजिक चेतना के माध्यम से बच्चों को जागृत करती है, वह खुद जागृत होती है, इसलिए बच्चों को भी आगे अच्छे संस्कार देने की जवाबदारी महिला की होती है।

संवाद और परिचर्चा

एल.एन.उग्र

संवाद और परिचर्चा के अंतर्गत बड़वानी क्षेत्र से संबंध रखने वाले 1990 से पुलिससेवा में कार्यरत और वर्तमान में कनाडिया थाना प्रभारी श्री जेपी जमरे से मुलाकात की गई। परिचर्चा में थाना प्रभारी कनाडिया द्वारा पुलिस प्रशासन और आम जनता के बीच समन्वय के साथ साथ अन्य विषयों पर भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए ।

सवाल

पुलिस कमिश्नर प्रणाली को नए बदलाव के लिए कैसे देखते हैं?

जवाब :- पुलिस कमिश्नर की प्रणाली में एकदम से बदलाव आने में समय लगेगा, अधिकारी कर्मचारी एवं जनता को बदलने में भी समय लगेगा, इसके बदलाव से जनता को अवश्य लाभ होगा।

सवाल

आपके क्षेत्र में अपराध बढ़े हैं या कम हुए हैं ?

जवाब :- कुछ अपराधों में बढ़ोतरी हुई है कुछ में कमी भी आई है, मोटरसाइकिल चोरी आदि की घटनाएं अधिक हुई है जैसे नकब जनी चैन स्नैचिंग। इन से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि जो अपराध कम हुए हैं उनमें हत्या होना, हत्या के प्रयास करना , इसके बावजूद थाने की पूरी टीम ने मिलकर आरोपियों को ट्रेस किया।

सवाल

इनमें कोई खास उल्लेख..

जवाब :- मोटरसाइकिल चोरी में नंबर के आधार पर आरोपी को ट्रेस किया गया मोटरसाइकिल की 8 घटनाएं उसमें 100% सफलता मिली और वह सिर्फ नंबर के आधार पर ट्रेस किया गया फुटेज का सहारा भी लिया गया जिसमें आरोपी को घर से पकड़ा गया।

सवाल

आम जनता में पुलिस की नकारात्मक छवि है क्या ऐसा आप मानते हैं?

जवाब :- पुराने जमाने की फिल्मों में पुलिस को नकारात्मक छवि के रूप में ज्यादा दिखाया गया अच्छे से ज्यादा खराब वाला चेहरा दिखाया गया... एक दौर था जब पुलिस विभाग में कम पढ़े लिखे लोग भी हुआ करते थे। तब और आज के पुलिस कर्मचारियों में काफी अंतर है, आज की तारीख में सिपाही भी कम से कम ग्रेजुएट शिक्षित और कंप्यूटर शिक्षा का ज्ञान रखने वाला है सामुदायिक पुलिस का एक नया रूप जनता के सामने आ रहा है, सकारात्मक सोच के साथ सहयोग की भावना भी पुलिस पूरे मन से करती है 100 डायल की सेवा के माध्यम से भी पुलिस ने अपनी अच्छी छवि बनाई है। आजकल सब जगह सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, कंप्यूटर पढ़ाई का भी असर दिखाई देता है,हाल ही में लकीर के फकीर की इमेज से बाहर आने का एक अच्छा प्रयास पुलिस विभाग ने किया है। आखिर पुलिस वाले भी तो इंसान ही होते हैं संवेदनाओं का भी समावेश होता है। इसलिए मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि पुलिस की नकारात्मक छवि जनता में है।

सवाल

परेशान और पीड़ित व्यक्ति के आसानी से आप तक पहुंच नहीं है क्यों...?

जवाब :- हम अगर आज की बात करें तो आज पुलिस तक आसानी से आम जनता और पीड़ित व्यक्ति पहुंच रहा है, सीएम हेल्पलाइन आदि ऐसी व्यवस्था है कि शीघ्र कार्यवाही होती है, बल्कि मैं तो कहूंगा कि आज की तारीख में पुलिस फरियादी तक पहुंच रही है और समस्या का समाधान करने का प्रयास करती है।

सवाल

आप के कार्यकाल की कोई बड़ी उपलब्धि?

जवाब :- मेरे कार्यकाल में मुख्य रूप से लूट आदि पर लगाम कसी है, हत्या जैसे अपराध में भी कमी आई है। लगातार पूरी टीम के सहयोग से लूट और डकैती के मामलों में सफलता प्राप्त की है। एक हत्या के मामले में सूचना प्राप्त होने के 12 घंटे में सफलता प्राप्त की अपराधी को पकड़ा गया। भगवंती बाई पति आशा राम कुमावत तलवाड़ा डैम बड़वानी की रहने वाली जो विराट नगर मूसाखेड़ी में रहती थी सुबह 7:30 बजे सूचना मिली और शाम को 7:30 बजे के लगभग पूरी टीम के सहयोग से अपराधी को पकड़ा गया।

सवाल

शासन प्रशासन और आम नागरिकों के बीच आप का तालमेल कैसा है?

जवाब :- मैं तो यह मानता हूं कि आवश्यकता के समय जनता पुलिस से सहयोग की अपेक्षा करती है, और पुलिस भी उनका समय-समय पर सहयोग करते हैं त्योहार पर जनता के सहयोग की पूरी कोशिश रहती है, इसमें जनता का सहयोग भी पूरा मिलता है जनता के सहयोग से ही अपराध को भी कम किया जा सकता है शासन प्रशासन और जनता के बीच हमने पूरा तालमेल बैठाने का प्रयास किया है।

सवाल

खाकी का खौफ अपराधियों पर कितना है?

जवाब :- बदमाशों और अपराधियों पर पुलिस का खौफ होना चाहिए.. डर अपराधियों पर होना ही चाहिए, आम जनता में हमारे प्रति आत्मविश्वास होता है और यही हमारे लिए कड़ी परीक्षा हैऔर इस पर हम खरा उतरने का प्रयास करते हैं । मैं आम जनता को यह संदेश देना चाहता हूं कि आम जनता के बिना पुलिस सफलता प्राप्त नहीं कर सकती है जनता का सहयोग निश्चित रूप से हमें मिले तो हम जनता की अपेक्षा पर खरे उतर सकते हैं।

हमारे अखबार का उद्देश्य और संकल्प वाक्य "सतर्क रहें- सजग रहें अभियान" पर आप क्या कहना चाहेंगे ?

जवाब :- बीमारी से बचाव के लिए सतर्क रहना है जो सजगता के साथ जरूरी है...! आजकल फोन के माध्यम से जो धोखे हो रहे हैं उस पर भी सतर्क रहना अनिवार्य है, आजकल नया तरीका अपराधियों ने अपनाया है, वर्तमान बीमारी के नाम पर आपको फोन किया जाता है कि अपने वैक्सीन का दोनों डोज लगाया कि नहीं, डोज लगाने के लिए बुक करना पड़ेगा, इसमें पढ़ा लिखा आदमी भी धोखा खा जाता है ... OTPनंबर पूछ कर पैसे का धोखा हो रहा है । इससे भी आम नागरिक को सजग रहना है और सतर्क रहना है यही सतर्क रहें सजग रहै अभियान की सार्थकता है ।

वर्तमान में **श्री संतोष हाड़ा,** *उप पुलिसअधीक्षक नारकोटिक्स इंदौर मूलतः उज्जैन ज़िले से है और सन 2002 से पुलिस विभाग में है । वह भिंड ,शिवपुरी, धार इत्यादि क्षेत्रो में पदस्थ रहे हैं एवं 2019 से नारकोटिक्स में है ।*

डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट के **PRO श्री एल. एन. उग्र** *से हुई उनकी गंभीर चर्चा के प्रमुख अंश -*

✡शहर में ड्रग्स की बढ़ती घटनाओं पर पुलिस का कितना कंट्रोल है ?

पुलिस का हमेशा प्रयास रहता है कि किसी अपराध पर कंट्रोल करें, अपराध की सूचना का संकलन किया जाता है टीम पूरी लगी रहती है सूचना तंत्र को मजबूत किया जाता है, और सूचना मिलते ही तत्काल दबिश देकर कार्य किया जाता है फिर वह अपराध पेडलर अपराध हो या कोई भी हो ! ड्रग्स की घटनाओं पर भी पुलिस विभाग पूरी मुस्तैदी से काम करता है ।

✡ड्रग्स पर क्या दोषी के खिलाफ सख्त कार्यवाही होगी ?

बिलकुल सख्त कार्यवाही होगी व हमेशा होती है,ड्रग्स के अपराधी हो या पेडलर अपराधी हो और तस्करी हो इन पर 3 तरह से कार्यवाही की जाती है :-

A. अल्प मात्रा में ड्रग्स पकड़े जाने पर
B. ज्यादा मात्र में लेकिन वाणिज्यिक से कम एवं
C. बड़े पैमाने पर कारोबार करने वालों पर ड्रग्स आदि में डील करने वालों पर नारकोटिक्स विभाग बड़ी कार्वाई करता है बड़ा कानून है और सजा का प्रावधान भी है ।

✡युवा वर्ग जो इस में लिप्त हो रहा है इसके लिए किसे जिम्मेदार मानते हैं?

पहले युवा वर्ग का इन्वॉल्व कम हुआ करता था, सोशल मीडिया, फिल्मों आदि ने इस पर बुरा असर डाला है, आजकल बच्चे फैशन के रूप में इसे ज्यादा ले रहे हैं नारकोटिक्स विंग नशा मुक्ति के लिए जागरूकता प्रोत्साहन सप्ताह आदि का कार्यक्रम करता रहा है। स्कूल कॉलेज में जाकर बच्चों को जानकारी दी जाती है। हमारी टीम द्वारा जागरूक करने का लगातार प्रयास रहता है !

✡मौत के जो सौदागर हैं ड्रग्स जहर फैलाने में लिप्त उन पर सख्त कार्रवाई होगी ?

लगातार बड़ी कार्यवाही हो रही है और होती रही है अवैध गांजा खेती करने वालों पर, अफीम का व्यापार करने वालों, सिंथेटिक ड्रग्स आदि मादक पदार्थों के खिलाफ नीमच मंदसौर आदि स्थानों पर नारकोटिक्स प्रकोष्ठ के द्वारा कानूनी कार्यवाही की जाती है ।

संवाद और परिचर्चा

श्री संतोष हाड़ा
उप पुलिस अधीक्षक नारकोटिक्स

हमारे अखबार और चैनल के सूत्रवाक्य और संकल्प
"सतर्क रहें - सजग रहें अभियान" पर आपकी बात...

वर्तमान दौर में सतर्क रहना जरूरी है सजगता के साथ रहना भी जरूरी है सजगता से अपराधों को टाला जा सकता है अगर पब्लिक सजग रहेगी पुलिस को सहयोग करेगी तो अपराध भी कम होंगे, अपराधी अपराध करने के पहले पकड़े जा सकेंगे ।जनता की सहभागिता होगी जनता पुलिस को सूचना देगी तो पुलिस तत्परता से कार्यवाही करेगी । सतर्क रहें सजग रहें अभियान सफल होना चाहिए.

✡देश की युवा शक्ति जो भ्रमित हो रही है उसे कुछ संदेश देना चाहेंगे?

नारकोटिक्स के हमारे अधिकारी डब्ल्यू एस नकवी साहब उनके निर्देशन में वॉलिंटियर प्रोग्राम के माध्यम से लोगों को जोड़ने का काम कर रहे है ।वेबसाइट पर ऑनलाइन अधिक संख्या में लोगों को जोड़ने का काम किया जा रहा है साथ ही अभियान चलाने के लिए सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं. युवा पीढ़ी इस गंदगी में लिप्त ना हो यही हमारा संदेश ..!

✡आपके विचार से पुलिस कमिश्नर प्रणाली का लाभ जनता को मिलेगा?

इंदौर बड़ा शहर है आबादी बढ़ रही है मेट्रो सिटी बढ़ रही है संगठित अपराध को रोकने के लिए प्रभावी कार्यवाही ग्राउंड लेवल पर की जाएगी, मैनेजमेंट कानून व्यवस्था सुधार करने के लिए पुलिस अधिकारियों को मौके पर निर्णय लेना होते हैं प्रभावी ढंग से कार्यवाही कर सके इसके लिए प्रणाली बहुत प्रभावशाली होगी, अभी शुरुआती दौर है व्यवस्था बनेगी इसका असर देखने को मिलेगा.

लंबे समय से पुलिस विभाग में कार्यरत और वर्तमान में थाना प्रभारी तुकोगंज इंदौर के रूप में पदस्थ **श्री कमलेश शर्मा** *से*

डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट के **PRO एल.एन. उग्र** से बातचीत के प्रमुख अंश ...

कमिश्नर प्रणाली ....!

पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू होने से शहर में अच्छा ही होगा, परिणाम आने में थोड़ा समय लगेगा

पुलिस प्रशासन को काम करने में आसानी भी होगी और निश्चित रूप से हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ेगी ही सही ।

आम जनता को राहत ..!

आम जनता को निश्चित रूप से इससे राहत मिलेगी जो गली मोहल्लों में गुंडों से बदमाशों से अपराधियों से परेशान रहते हैं उन को इससे राहत मिलेगी ।आम जनता की सुविधा के लिए हम हैं और हमारे संबंध मधुर संबंध है आम जनता हमारे पास तक आसानी से पहुंचती है ।

अपराधियों पर असर ...

जनता के लिए पुलिस कमिश्नर प्रणाली निश्चित रूप से लाभदायक होगी इस का डट अपराधियों में बदमाशों में होना चाहिए और होगा पुलिस जनता के काम करती है, पुलिस के माध्यम से जनता को राहत मिलेगी, अभी कमिश्नर कोर्ट चालू होने के बाद निश्चित रूप से इसमें बड़ा लाभ होगा ।

कोई बड़ी उपलब्धि

हमारे थाने की बड़ी उपलब्धि यह है कि लूट चैन स्नैचिंग या मर्डर हंड्रेड प्रतिशत सफलता प्राप्त की है, यह सब टीम वर्क के कारण संभव हुआ है , बड़ी उपलब्धि है । पुलिस विभाग अपना काम कर रहा है ।

संवाद और परिचर्चा

श्री कमलेश शर्मा
तुकोगंज थाना प्रभारी

यातायात सुधार पर...

यातायात के मामले में पुलिस के द्वारा नए प्रयोग किए जा रहे हैं और जल्द ही शहर में यातायात के मामले में सुधार भी दिखाई देगा, अवश्य ही सफलता मिलेगी ।

नेताओं का दखल..!

जनहित और शहर हित के कामों में समन्वय उचित बनता है । कोई तकलीफ नहीं आती है साथ ही कभी भी अपराधी को छुड़ाने के लिए मेरे पास कोई फोन नहीं आया ।

परिवारिक दायित्व...

यह निश्चित है कि पुलिस की सर्विस में व्यस्तता के कारण हमेशा सतर्क रहना होता है फिर भी जो समय हमारे पास बचता है उसमें हम प्रयास करते हैं कि परिवार में भी कुछ समय दे सकें ।

हमारे संकल्प और सूत्रवाक्य "सतर्क रहें –सजग रहे अभियान" पर संदेश ..!

क्योंकि कोविड संक्रमण तेजी से वापस बढ़ रहा है इसलिए हम सभी इंदौरवासियों का कर्तव्य है कि निर्देशों का पालन करें ,मास्क लगाएं साथ ही भीड़भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचें । हाथ धोते रहें और आवश्यकता होने पर डॉक्टर से संपर्क करें।

श्री योगेश सिंह तोमर, थाना प्रभारी संयोगितागंज... यहां पर दो-तीन महीने ही हुए है... पुलिस सेवा में लंबा समय हुआ है। उनसे साक्षात्कार के प्रमुख अंश...

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

आपके थाना क्षेत्र में नए साल में पिछले वर्ष की तुलना में अपराध का ग्राफ कम हुआ या बड़ा ?

यह कहना तो संभव नहीं है पर फिर भी ऐसा लगता है कि इस साल में अपराध का ग्राफ कम ही हुआ है।

किसी खास अपराध पर आपकी कोई विशेष उपलब्धि ?

सभी अपराध अपराध होते हैं और उन पर सभी पर कंट्रोल करना अनिवार्य होता है, अपराध पर नियंत्रण करना अनिवार्य ।

शासन प्रशासन और आमजन के बीच आपके समन्वय कैसे हैं ?

अभी मुझे यहां आए हुए कम समय हुआ है, आम जनता के संपर्क में आने से शिकायतों को गंभीरता से सुनना पड़ता है और उन शिकायतों को समाधान करने का प्रयास करते हैं जनता में भरोसा बढ़ता है और काम करने के दौरान काम की खुद को भी संतुष्ट होती है एक सेटिस्फेक्शन होता है, अगर यह सब होता है तो शासन और प्रशासन की नीतियों के बीच आम जनता के साथ अच्छा समन्वय बन जाता है।

आपके थाने की पूरी टीम के बीच काम को लेकर सामंजस्य कैसा है ?

अच्छा सामंजस्य है सारी टीम का सहयोग मिलता है, फिर मेरा ऐसा भी मानना है कि एक थानाप्रभारी को प्रबंधक के रूप में काम करना चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि किस कर्मचारी की कार्य क्षमता क्या है उनको उनके आधार पर उनसे वैसा ही काम लिया जाना चाहिए इससे रिजल्ट अच्छा आते हैं काम पर संतुष्ट होती है और सारी टीम के बीच एक अच्छा समझ सामंजस्य बना रहता है अच्छा माहौल रहता है।

संवाद और परिचर्चा

श्री योगेश सिंह तोमर, थाना प्रभारी संयोगितागंज

आपके क्षेत्र में संवेदनशील अपराध पर नियंत्रण कैसा है ?

मेरे क्षेत्र में ऐसा संवेदनशील कोई अपराध और ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां अलग से संवेदनशील अपराध माना जाए।

हमारे अखबार के संकल्पसूत्र उद्देश्य " सतर्क रहें सजग रहे अभियान "पर आप क्या कहना चाहेंगे?

अच्छा स्लोगन है अच्छा प्रयास है हमें हमेशा वातावरण को देखते हुए सतर्क रहना चाहिए और सजग रहना चाहिए आपका जो प्रयास है अभियान है यह सफल हो ऐसी मेरी कामना है।

अपराधियों को सुधारने की ओर आपके प्रयास क्या होते हैं ?

हमारा एक ही मोटो होना चाहिए कि अपराधी पर सख्ती हो आम जनता पर सौहार्दपूर्ण वातावरण हो अच्छे संबंध हो ऐसी व्यवस्था होना चाहिए, साथ ही लगातार संवाद बने रहना चाहिए यही सफलता की कुंजी है इससे सफलता की संभावना हमेशा बनी रहती है।

ऐसे भी अपराधी होंगे जो बार-बार अपराध में आपके सामने आते हैं तब आपकी क्या प्रतिक्रिया होती है?

जैसा मैंने कहा अपराधी पर शक्ति और आम जनता के साथ सहानुभूति थाना प्रभारी के रूप में आमजन के साथ संवाद बना रहना चाहिए,मुलाकात सामान्य होना चाहिए कि लोगों के बारे में क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त होती है कार्यवाही करने में सक्षमता होती और इससे आम जनता की अपेक्षाएं भी पूरी होने का वातावरण बना रहता है और हमारा यह प्रयास होता है कि आम जनता के अपेक्षापूरी हो। कुछ प्रतिबद्धता होती हैं जो हमारी जिम्मेदारी भी होती है।

थाना खजराना प्रभारी श्री दिनेश वर्मा से संवाद और परिचर्चा हुई , प्रमुख अंश....

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

शहर में कमिश्नर की प्रणाली को आप किस तरह से देखते हैं ?

यह एक अच्छा निर्णय है आम जनता को अपराध से राहत मिलेगी और पुलिस प्रशासन को अपराधियों पर कार्यवाही करने में आसानी होगी और जो आदतन अपराधी हैं उन पर नकेल कसने के लिए पुलिस को अधिकार मिलेंगे। रासुका आदि के जो अपराधी हैं उन पर भी काम करने के लिए पुलिस को अधिक जिम्मेदारी से काम कर सकने में आसानी होगी , पुलिस का उत्तरदायित्व , जनता के प्रति जवाबदेही बढ़ेगी ।काम के प्रति पुलिस विभाग भी जिम्मेदारी से काम कर पाएगा, यह एक अच्छी व्यवस्था प्रमाणित होगी इस पर अपराधियों पर शिकंजा कर सकेंगे। बल की कमी जरूर है,पर अपराध नियंत्रण में बल के मिलने से और अच्छे परिणाम आएंगे। अभी हमें 60 के बल की जरूरत है और हमारे पास 25 की सुविधा है , जरूरत पूरी हो रही है धीरे-धीरे पूरी होगी तो यह तय है कि इस प्रणाली से जनता को लाभ मिलेगा।

आपके थाना क्षेत्र में स्त्रियों सम्बन्धित अपराध के ग्राफ में कमी आई है या बढे ?

जहां तक मेरा अनुमान है हमारे क्षेत्र में पिछले दिनों की तुलना में अपराधों में कमी आई है, यह अच्छा सुखद समाचार, अपराधों में कमी आना ही चाहिए।

शासन - प्रशासन और आमजन के बीच कैसे समन्वय स्थापित करते हैं ?

यह काम हम समन्वय का जो होता है वह संवाद के माध्यम से स्थापित करते हैं, समाज के विशेष लोगों की बैठकें बुलाते हैं, चर्चा करते हैं, शासन प्रशासन की योजनाओं को पूर्ण रूप से हम लागू करने का प्रयास करते हैं । हमारे इलाके में हम लोगों से संपर्क करते हैं भ्रमण करते हैं रहवासी संघ से तालमेल बिठाते हैं उनसे सोमवार और चर्चा मिलनसारी के साथ की जाती है अपनी योजना पहुंचाते हैं और वह उनको समझते हैं समस्याएं हमारे पास आती हैं,हम सुलझाना का काम आसानी से कर पाते हैं। समय-समय पर हमारे द्वारा यहां पर बैठकों का आयोजन किया जाता है ।

आपका क्षेत्र संवेदनशील है और जनता के साथ कैसा आप तालमेल बिठाते हैं या अपराध पर नियंत्रण करते हैं ?

जनता के बीच आसानी से जाने का प्रयास करते हैं उनसे ऐसी शिकायतें हमें मिलती है, मोबाइल के माध्यम से हम संपर्क करते हैं, वह समस्याएं बताते हैं हमारा पैदल भ्रमण का कई बार कार्यक्रम रहता है, घर के सामने ही समस्या पहुंचकर सुनते हैं और खजराना में साक्षरता की कमी है छोटे अपराधी बेरोकटोक अपराध में लिप्त होते हैं। बीट के माध्यम से भी हम समस्याएं सुलझाने का प्रयास करते हैं।

आपके थाना की जो पूरी टीम है उन सब के बीच में काम को लेकर कैसे सामंजस्य बिठाते हैं ?

बहुत आसानी से मिलता है सभी को बराबरी से काम सौंपा जाता है और सभी कर्मचारी पूरी ईमानदारी से हमें सहयोग करते हैं और काम आसानी से निपट जाए तालमेल ठीक रहता है।

संवाद और परिचर्चा

श्री दिनेश वर्मा
थाना प्रभारी खजराना

आदतन या नए अपराधियों को सुधारने की ओर आपके प्रयास क्या है ?

हमारा प्रयास रहता है कि जो अपराधी हैं किसी भी कारण से अपराध में चले गए हैं, हमारे द्वारा समझाइश दी जाती है, उनसे सरेंडर करवाया उन सभी को मुख्यधारा में जोड़ने का प्रयास किया। सामाजिक हिस्से बने रहें ऐसा हमारे द्वारा प्रयास किया जाता रहा है । कई अपराधियों पर सख्ती भी करना पड़ती है।

आमजन की आप तक पहुंच?

बड़ी जिम्मेदारी है व्यस्तता तो होती है लेकिन फिर भी मेरा प्रयास रहता है कि अगर कोई समस्याग्रस्त आमजन आता है तो वह आसानी से मुझ तक पहुंच सके, और उसकी समस्या समाधान कर सकूं यह मेरा प्रयास रहता है ।

आपके द्वारा किसी एक कार्यप्रणाली पर कुछ प्रकाश डालिए...

बहुत आसान है सोशल मीडिया के माध्यम से हम संपर्क में रहते हैं, कर्मचारियों की जागरूकता से काम संपन्न होते हैं, नगर सुरक्षा समिति जिसमें 135 एक्टिव सहयोगी सदस्य हैं वह पुलिस को बड़ी मदद करते हैं खजराना जैसे क्षेत्र में नगर सुरक्षा समिति का काफी महत्वपूर्ण रोल होता है, उनके सहयोग के लिए उनकी बड़ी प्रशंसा की जाना चाहिए । सभी के सहयोग से कोरोनावायरस काल में सुरक्षित रखा ,सावधानी रखें इसी की वजह से यहां पर केस कम हुए जन सहयोग और स्टाफ के माध्यम से टीमवर्क के माध्यम से गड़बड़ी करने वालों को सही रखते हैं, सभी को अच्छा संदेश गया।

ऐसा कोई खास अपराध जिस पर आपकी कोई विशेष उपलब्धि रही हो?

सामान्यत: सामाजिक सोहद्रता बनाकर हमने काम किया कोई अन्य तनाव भी नहीं हुआ,बड़े आयोजन मोहर्रम आदि पर नियमों का पालन करवाया, यह सभी के सहयोग से पूर्ण हो सका,सभी का सहयोग मिला इसीलिए हम यह सब काम कर पाए... हां हमने भू माफियाओं पर बड़ी कार्रवाई की है, उन्हें जेल भेजा है,और उनकी अभी तक जमानत भी नहीं हो पाई, क्योंकि उनके अपराध बड़े थे अन्य अपराध से जनता को राहत मिल गई, भू माफियाओं अवैध कब्जों पर रासुका जैसी कार्यवाही की है उस पर उन पर नियंत्रण किया है। चैन स्नैचिंग और लूट जैसे अपराधों को हमने पूरा कंट्रोल किया पकड़ा है। जनता को राहत मिली है।

हमारे अखबार के संकल्पसूत्र और उद्देश्य "सतर्क रहें -सजग रहें अभियान" पर आप क्या कहना चाहेंगे?

यह सूत्र वाक्य अच्छा है और इस पर निश्चित रूप से सभी को अमल करना चाहिए सभी को सतर्क रहना चाहिए और सजग रहकर अपराध दुनिया से बचे रहें यह हमारा प्रयास होना चाहिए, अतः कहना चाहूंगा कि सतर्क रहें सजग रहे अभियान बहुत प्रशंसनीय अभियान है ।

हमारे अखबार और चैनल के संकल्प सूत्र और उद्देश्य 'सतर्क रहे... सजग रहे... अभियान' पर आपकी टिप्पणी...

यह एक बहुत ही प्रशंसनीय अभियान है और सतर्क रहें सजग रहें यह अभियान जो है यह सराहनीय है यह सब के हित के लिए उपयोगी है।

DGR @ एल.एन.उइ (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री संजय सिंह बैस
पलासिया थाना प्रभारी

कमिश्नर प्रणाली पर आप क्या कहना चाहेंगे, कमिश्नरी प्रणाली सफल होगी?

कमिश्नरी कार्यप्रणाली में कई कार्यवाही ऐसी होती हैं जैसे 110 की कार्यवाही हुई, जिला बदर की कार्यवाही हुई, इसमें यह पता है होता है कि यह कि किस तरह के बदमाश है और उन पर क्या कार्रवाई की जाना है ऐसे बदमाश जो कि समाज के लिए खतरनाक है उन पर निर्णय लेने में ज्यादा समय नहीं लगेगा, मेरे मतानुसार तो यह प्रणाली सफल होगी, यदि अपराधी पर तत्काल कार्यवाही की जाती है, तो जनता को निश्चित रूप से उसका लाभ मिलेगा। अपराधी खौफ में रहेगा तो आम जनता निश्चित रूप से इससे शांति महसूस करेगी। जबसे कमिश्नर प्रणाली लागू की गई है इसके उपरांत से अपराधों के ग्राफ में काफी गिरावट आई है। जबसे कमिश्नर प्रणाली लागू ही है इसमें पुलिस का एक तो संदेश यह है कि जो बदमाश है उन पर तत्काल कार्रवाई की जाए और दूसरी तरफ जो आम जनता है उसको राहत पहुंचाई जाए। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए एक हमने ऐसा तो रास्ता बनाया गया है जिसमें जो शिकायत करता है उसको फीडबैक दिया जाता है।

अपराध पर शिकंजा कैसे कसा जा सकता है?

निश्चित रूप से अपराध पर शिकंजा कसेगा, अभी जैसे-जैसे स्टाफ की पूर्ति होती जाएगी और सुधार होता जाएगा। एक तरफ आपने देखा होगा ट्राफिक व्यवस्था पहले से काफी बेहतर सुधार हो चुकी है पुलिस का अपराधी पर खौफ आता है, पुलिस बदमाशों पर फोकस होकर कार्यवाही करेगी जब बदमाशों के विरुद्ध कार्यवाही की जाती है तो निश्चित रूप से अपराधियों पर और अपराध पर शिकंजा कसेगा।

खाकी का खौफ होना चाहिए ?

निश्चित रूप से खाकी का खौफ होना ही चाहिए,लेकिन यह खौफ है ना जो बदमाशों के बीच होना चाहिए ना की आम जनता के लिए, बदमाशों को अगर पुलिस का भय नहीं होगा तो बड़ा मुश्किल होगा, बदमाशों पर भय होना ही चाहिए।

ड्रग्स के गिरफ्त में जो युवा वर्ग आ रहा है इस पर आप उनको क्या संदेश देना चाहिए ?

युवा जब कभी क्राइम में जाता है तो इसके पीछे कहीं ना कहीं ड्रग्स की लत का होना पाया जाता है, नशे की लत में ही अपराध करता है, जब वह अपराध करता है तो उसकी मन स्थिति ऐसी नहीं रहती है, कि उसके परिणाम के बारे में समझ पाए। शराब के नशे में ड्रग्स के नशे में मदहोश होता है, ड्रग्स जो है वह निश्चित रूप से बहुत ही हानिकारक है युवा वर्ग के लिए। अभी एक नया दौर चला है कि डीजल सुघ कर नशा कर लेते हैं, नशे की हालत में जब वह गाड़ी चला रहे होते हैं तो बहुत ही खतरनाक एक्सीडेंट हो जाते हैं, कई गरीब होते हैं जिनके पास पैसा नहीं होता है, वह नशे की गिरफ्त में फंस जाते हैं, चोरी करते हैं लूटपाट करते हैं ऐसी स्थिति में ड्रग्स युवाओं के लिए काफी हानिकारक है। ऐसे में पुलिस की ओर से तो काफी अभियान चल रहा है युवाओं को ड्रग्स से दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

न्यायालयीन प्रक्रिया में पुलिस का कितना सहयोग होता है?

न्यायालय प्रक्रिया जो होती है उसमें पुलिस के जो कार्यवाही पुट अप की जाती है उस पर कार्यवाही होती है, न्यायालय द्वारा समन पर तामील प्रक्रिया के लिए दिए जाते है, पुलिस की विवेचना पर न्यायालय निर्णय लेती है इस प्रकार से न्यायालयीन प्रक्रिया में पुलिस का पूरा सहयोग होता है।

आपके यहां रहते कुछ खास उपलब्धि?

मुझे यहां लगभग डेढ़ वर्ष हुआ है और मेरे कार्यकाल में काफी उपलब्धियां हैं, चोरी के वाहनों के मामले में,चोरी हो, नकब जनी, हो या की लूट के संबंध में हो, यह जो भी क्राइम होते हैं उन को चिन्हित किए गए हैं और सख्त से सख्त कार्यवाही की गई है। इसके अलावा अन्य अपराधों में भी काफी कमी आई है। इसके अलावा मानवीय कार्य करते हैं जैसे विगत समय में एक महिला जो घर में मरणासन्न पड़ी थी,घर के दरवाजे बंद थे पुलिस को जैसे ही पता लगा,पुलिस गई घर के दरवाजे तोड़े और उसे लाया गया, उसका प्राथमिक उपचार कराया गया, उसके बच्चे जो विदेश में रहते थे, इस तरह से किसी की जान बचा कर मानवीय कार्य भी किए जाते हैं पुलिस द्वारा।

पुलिस की छवि सिर्फ चालान बनाने की ही क्यों बन कर रह गई?

मैं जहां तक अपनी बात करूं मैं मोटर व्हीकल एक्ट में चालान बनाने की प्रक्रिया में बहुत ज्यादा इंटरेस्ट नहीं रहता हूं, केवल वही चालन बनाया जाना चाहिए जो बहुत जरूरी है,जिसे अपराध में किसी को बल मिलता है और ऐसे चालान बनाना अनिवार्य है। थाने की ऐसी प्रक्रिया नहीं है कि सिर्फ चालन बनाया जाए।

आम जनता को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

आम जनता को भी यही संदेश देना चाहेंगे कि पुलिस आम जनता के लिए है, पुलिस से डरना नहीं है और पुलिस के समक्ष अपनी शिकायत को अवश्य करना चाहिए, पुलिस कमिश्नर प्रणाली में तो जनता को राहत मिलेगी,बदमाशों पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जा रही है, इसलिए मैं आम जनता से अपील करता हूं कि पुलिस को सहयोग करें और जो अपराध करते हैं, अपराधी के बारे में अगर उनके पास कोई जानकारी है तो पुलिस को सूचना जरूर दें।

" आप सतर्क रहें अपने आजू-बाजू जो कुछ हो रहा है .. उसका आकलन दूरगामी करना चाहिए .. कोई गलत काम तो नहीं हो रहा है .... तो आपको पीछे हट जाना चाहिए। अपराध घटित होते हुए देखते हुए आपको जिम्मेदार नागरिक की भूमिका अदा करते हुए खुद भी इसका विरोध करना चाहिए और पुलिस को कम्युनिकेट करना चाहिए "

इंदौर में लगभग छः वर्षों से पदस्थ और वर्तमान में थाना प्रभारी - छोटी ग्वालटोली के रूप में कार्यरत निरीक्षक सविता चौधरी से कई मुद्दों पर विस्तृत परिचर्चा हुई।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है आपको लगता है कि यह सफल होगी ?

इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है यह बहुप्रतीक्षित थी, इसके 40 साल से लगातार सतत प्रयास चल रहे थे,अब जाकर यह लागू हुई है और हमारे तो माननीय मुख्यमंत्री जी महोदय हैं, जो प्रशासन है उसने यह जो निर्णय लिया है वह बहुत ही सोच समझ कर लिया गया निर्णय है, जनसंख्या के मान से इंदौर और भोपाल में अत्यधिक जनसंख्या हो गई है आज से 20 साल पहले कमिश्नर प्रणाली लागू की जाना चाहिए थी और कमिश्नर प्रणाली लागू हो जाने से निश्चित रूप से अपराध में प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित होगी ।

इससे जनता को कितना लाभ मिलेगा ?

इसका जो लाभ है हम जिसकी जन भक्ति देश सेवा कर रहे हैं आम जनता के लिए ही हम काम कर रहे हैं। इसका 100% लाभ है वह आम जनता को ही मिलने वाला है, हर तरह से उसको सहयोग मिलने वाला है, चाहे वह साइबर फ्रॉड हो, चाहे वह महिलाओं से रिलेटेड अपराध हो, प्रॉपर्टी से संबंधित अपराध हो,सभी में ही जनता को लाभ मिलने वाला है ।

अपराधों पर इससे कड़ा शिकंजा कसा जाएगा ?

हां निश्चित रूप से अपराधों पर इसमें

शिकंजा कसा जाएगा क्योंकि कमिश्नर प्रणाली जो है उसमें जो निर्णय लिए जाना है वह कमिश्नर सर को लिए जाना है,क्योंकि कमिश्नर सर हमारे वरिष्ठ अधिकारी हैं, वह हमारे जिला लेवल पदाधिकारी हैं। उनसे हम डायरेक्टली जुड़े रहते हैं कम्युनिकेशन करते हैं, हम जिन अपराधियों पर सख्त कार्यवाही कानूनी कार्रवाई कराना चाहते हैं, क्रियान्वयन कराना चाहते हैं, हमारे कमिश्नर सर ही उसमें निर्णय लेंगे तो वह निर्णय ठोस होगा, प्रभावी होगा और उसके जो दूरगामी प्रभाव हैं आम जनता में परिलक्षित होंगे और अपराधियों में भी खौफ व्याप्त होगा, कि जो जो पुलिस सख्त कार्रवाई करती है अगर हम रिपीटेडली अपराध करेंगे तो उन पर खौफ जरूरी है ।

अपराधी पर खाकी का खौफ कितना होना चाहिए?

अपराधी पर बहुत खौफ होना चाहिए और जो साधारण जनता है आम जनता है जिनको पुलिस से छोटी-छोटी बातों में सहयोग की अपेक्षा रहती है वह बिल्कुल खौफ में ना रहे हमारे जो थाने हैं वह जनता के साथ दोस्ताना व्यवहार करते हैं उनकी समस्या को सुनते हुए जहां काउंसलिंग की आवश्यकता होती है जहां छोटे-मोटे फोन लगाने से ही काम हो जाते हैं हमारी जो महिला ऊर्जा डेस्क है महिलाओं के लिए छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान करती है और जो अपराधी हैं उन पर हम सख्त प्रहार करते हैं।

न्यायिक प्रक्रिया में पुलिस का कितना सहयोग होता है ?

न्यायालय प्रक्रिया पूरी पुलिस के सहयोग से ही चलती है और हमारा जो सो परसेंट सहयोग होता है,वह न्यायालय प्रक्रिया में रहता है चाहे वह समंस वारंट हो या एविडेंस को जाना है, चाहे जघन्य सनसनीखेज अपराध हों उनकी मॉनिटरिंग से रिलेटेड केस हो तो पुलिस का तो पूरा सहयोग रहता है और पुलिस हमेशा सहयोग करने को तत्पर रहती है।

आजकल ड्रग्स की गिरफ्त में युवा बहुत आ रहे हैं आप क्या कहना चाहेंगे?

हम युवाओं को बच्चों को यह संदेश देना चाहेंगे कि आजकल जो सोशल मीडिया प्लेटफार्म बहुत ज्यादा ब्रॉड हो गया है,इंटरनेट आपके पास अवेलेबल है आप अच्छी शिक्षा ग्रहण करें अच्छी बातें देखें समझे और सुने जो लोग ड्रग्स की गिरफ्त में आ चुके हैं उनकी क्या दुर्गति हुई है उनका परिवार उनके माता-पिता किस वेदना से गुजरते हैं जो बच्चे ड्रग्स गिरफ्त में आ जाते हैं उनके क्या दूरगामी परिणाम होते हैं। अंत किस तरह का होता है इसका आकलन करें खुद भी सतर्क रहें औरों को भी सतर्क करें यदि उनके

संवाद और परिचर्चा

सविता चौधरी
छोटी ग्वालटोली थाना प्रभारी

कांटेक्ट में ऐसा कोई व्यक्ति आता है उनको लगता है कि मैं तो इससे प्रभावित हो गया हूं मैं इससे बच नहीं पाया हूं लेकिन समाज के और लोग इस बुरी संगति के असर में ना आए तो निश्चित रूप से वह हमारी इंदौर पुलिस से संपर्क कर सकता है हम उन पर कड़ी कार्यवाही करते हुए उन्हें नशा मुक्ति की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं ।

जो आदतन अपराधी हैं उन पर आप कैसे नियंत्रण करते हैं ?

आदतन अपराधी देखिए जो भी कोई भी अपराधी पैदा नहीं होता है वक्त मौका परिस्थिति ऐसी होती है कि व्यक्ति अपराधी बन जाता है हर व्यक्ति के अंदर एक अच्छा और एक बुरा इंसान होता है हमारा पहला काम तो होता है उसको समझा देना काउंसलिंग करना जब भी कोई आदतन अपराधी थाने पर आता है हम उसे मानवता के नाते ट्रीट करते हैं समझाते हैं और कानूनी प्रावधानों के तहत उसे समझाते हैं और उसके बाद भी अगर वह नहीं मानता है जो हमारे सख्त कानून है वह उसके ऊपर लागू किए जाते हैं जिला बदर है रासुका जैसी कार्यवाही है की जाती है जिससे उनमें खौफ व्याप्त होता है।

इस थाने में आपके कार्यकाल की कोई विशेष उपलब्धि जिससे लोगों को लगे कि कुछ सबक मिल सकता है ?

ऐसा कोई खास तो नहीं पर एक हमारे यहां मामला हुआ था जिसमें धमकाकर पैसे लेने वाला 11 लाख का एक मैटर था, जो हमने 24 घंटे के अंदर ट्रेस किया वह एक हमारी अच्छी बरामदगी,थी लोगों के प्रति और जनता के प्रति मेरा तो हमेशा से यही संदेश है यही मैसेज है कि आप सतर्क रहें अपने आजू-बाजू जो कुछ हो रहा है आप भले दृष्टि से सामने देख रहे हो लेकिन आपकी दृष्टि है वह बहुत दूर तक जाना चाहिए सामने वाले व्यक्ति को आप भले ही देख रहे हैं लेकिन उसका आकलन दूरगामी करना चाहिए आपको समझ लेना चाहिए कि आप किसी गलत इंसान की संगति में तो नहीं पड़ रहे हैं कोई गलत काम तो नहीं हो रहा है और हम जब भी कोई काम करते हैं तो हमारे जो ज्ञानेंद्रिय छठी इंद्री जो है, वह क्लिक करती है कि नहीं यहां कुछ गड़बड़ है तो आपको पीछे हट जाना चाहिए। अपराध घटित होते हुए देखते हुए आपको जिम्मेदार नागरिक की भूमिका अदा करते हुए खुद भी इसका विरोध करना चाहिए और अगर आप ना कर पाए तो कम से कम पुलिस को कोऑर्डिनेट करके पुलिस को कम्युनिकेट करके पुलिस के सहयोग से उस पर प्रहार करते हुए उसको वही नेस्तनाबूद करें।

एक पुलिस महिला पुलिस अधिकारी होने के नाते थाने पर आप किस तरह से नियंत्रण करते हैं, थाने का सहयोग आपको कैसे मिलता है ?

मेरे थाने पर जो भी अधिकारी कर्मचारी है उन सभी को मैं अपने परिवार का हिस्सा मानती हूँ, सभी मेरे परिवार के छोटे भाई हैं परिवार में जब किसी से कोई गलती होती है, उसे समझाइश दी जाती है दोबारा उससे इस तरह की गलती ना हो यह समझाया जाता है, और फिर जब कोई बहुत ही ज्यादा लिमिट से बाहर या आप से हटकर कोई गलत काम में लिप्त होता है तो फिर,शरीर के खराब अंगों को काटकर अलग कर दिया जाता है मोहब्बत से समझाते,पारिवारिक वातावरण से थाने में काम करती हूं और करवाती हूं ।

सवाल आम जनता की आप तक पहुंच कैसी है आसानी से लोग अब तक आते हैं अपनी समस्या बताने?

आम जनता मुझसे आसानी से आकर मिल सकती है आम जगह पर मेरे मोबाइल नंबर संपर्क नंबर सभी जगह चस्पा है कोई भी मुझे फोन कर सकता है कोई भी मुझसे मिल सकता है। यह हो सकता है कि हम कहीं व्यस्त हैं,या कोई अर्जेंट काम ना हो तो हम उसे समय दे देते हैं, अगर मैं फ्री हूं थाने पर हूं तो मेरी कोशिश रहती है कि हर महिला हर पुरुष को में अपने स्तर पर ही समस्या का समाधान के लिए मदद करने की कोशिश करती हूँ...

महिलाएं जो अपराध शामिल होती हैं उनको आप कैसे देखते हैं?

कई महिलाएं ऐसी हो गई हैं जो अपने परिवार को सास ससुर को मां बाप को छोड़कर अलग हो गई है, जो अपराध में लिप्त हो गई हैं उन पर भी हम सख्त कार्यवाही करते हैं, अपराधी अपराधी होता है वह महिला और पुरुष नहीं होता है। पहले मानवता का व्यवहार करते हुए उसे एक की काउंसलिंग की जाती है उसकी समस्या समझी जाती है यह इस गलत कार्य में कैसे आई इसकी क्या आवश्यकता है उसकी समस्या को जड़ से समाप्त करने की कोशिश रहती है और फिर भी अगर वह नहीं सुधरती है उसकी पुनरावृत्ति होती है तो फिर उस पर हमारी जो भी कानूनी प्रावधान है उसके तहत उस पर कार्यवाही की जाती है।

एमआईजी थाना प्रभारी श्री अजय कुमार वर्मा -

☞ सीनियर ऑफिसर हमारे साथ हैं उनका मार्गदर्शन है तो निश्चित रूप से यह कमिश्नर प्रणाली सफल होगी..

☞ अपराध का ग्राफ इसलिए बड़ा की जनसंख्या बढ़ी है और जनसंख्या बढ़ने के कारण अपराध में भी वृद्धि हुई है..

☞ मेरी 28 साल की सर्विस में मेरे द्वारा कभी भी दुर्व्यवहार किसी के साथ नहीं किया, यही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूं ..

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

कमिश्नर प्रणाली की सफलता..!

निश्चित रूप से 100% में सफल होगी,क्योंकि पुलिस विभाग ने इस पर पूरी तरह से जोर लगा दिया है, और जिस तरह से सीनियर ऑफिसर हमारे साथ हैं उनका मार्गदर्शन है तो निश्चित रूप से यह कमिश्नर प्रणाली आप देखेंगे कि सफल होगी।

इससे जनता को लाभ ...!

इससे जनता को बहुत लाभ मिलेगा आप देख रहे हैं, ऑनलाइन मुख्यमंत्री हेल्पलाइन से भी जनता को लाभ मिल रहा है और सीनियर अधिकारी जो है वह मॉनिटरिंग कर रहे हैं,जो डाउट उनकी मॉनिटरिंग से जनता को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा सभी को न्याय मिलेगा और कानून अच्छा रहेगा जिससे सभी को लाभ मिलेगा।

अपराध का ग्राफ बढ़ा है या कम हुआ ..!

अपराध का ग्राफ इसलिए बड़ा की जनसंख्या बढ़ी है और जनसंख्या बढ़ने के कारण अपराध में भी वृद्धि हुई है, लेकिन लोगों को न्याय मिल रहा है,बात सुनी जा रही है आप देखेंगे कि सीएम हेल्पलाइन में अधिकतर अपराध पंजीबद्ध हो गए हैं, अगर अपराध बढ़ रहा है तो इस समय बढ़ेगा, लेकिन व्यवस्था होगी तो अपराध में कमी भी आएगी।

ड्रग्स जैसे अपराध पर कार्यवाही..!

अभी आपने देखा होगा कि श्रीमान कमिश्नर महोदय ने इसे बड़ी गंभीरता से लिया है, इसे चैलेंज के रूप में भी लिया है और इसमें जो सभी हमारे अधिकारी हैं वे सभी इसमें एक अच्छा काम करते हुए दिखाई देंगे जनता से भी हमारी अपील है कि इसमें उनके पास अगर कोई सूचना आती है, ड्रग्स के विषय में तो वे पुलिस को शीघ्र सूचना दें, आपको ध्यान होगा पूर्व में भी जो हमारे कमिश्नर साहब यहां पर डीआईजी थे,उस समय भी उन्होंने ड्रग्स के लिए पूरे ऑल इंडिया में सबसे बड़ी कार्यवाही की थी, इसे सराहा भी गया था और श्रीमान कमिश्नर साहब इस मामले में बहुत गंभीरता से विचार करते हैं । मैं समझता हूं कि अगर कोई पुलिस कर्मचारी भी इसमें लापरवाही बरतेगा तो वे उसे क्षमा नहीं करेंगे । आप देखेंगे जनता को इससे काफी राहत मिलेगी और इसमें काफी सुधार हुआ भी है।

जो आदतन अपराधी हैं उन पर नियंत्रण..!

आदतन जो अपराधी हैं उन पर हमारी लगाम बहुत अच्छी कस जाएगी, क्योंकि आपने देखा होगा कि हमको बाउंड ओवर कराने में बड़ी तकलीफ आती थी, अब हमारे सीनियर ऑफिसर के हाथ में ही है तो बाउंड ओवर कराने में हमें हमें सुविधा होगी और निश्चित रूप से अपराध में रुकेंगे

और अपराधियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी वहीं मॉनिटरिंग बराबर की जा रही है, अपराधियों पर निश्चित रूप से शीघ्र बड़ी कार्यवाही होगी। देखा होगा सलमान लाला पर पूरे इंदौर जिले में मिलकर कार्यवाही की है और सख्त कार्रवाई की है।

राजनीतिक हस्तक्षेप..!

राजनीति भी समाज का एक अंग है समाज से वह बाहर नहीं है, हमें यह देखना चाहिए कि अगर जनप्रतिनिधि की जो बात सही है तो निश्चित रूप से वह भी जनप्रतिनिधि हैं इसलिए उनकी बात को भी सुनना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए, लेकिन यदि वह नीति विरोध है और असंवैधानिक है तो हम हमारे सीनियर अधिकारियों को बताते हैं, तो वह हमारा पक्ष सुनते हैं और हमारी मदद करते हैं, और हमारा समर्थन करते है।

पुलिस प्रशासन की चालान बनाने की छवि ..!

देखिए मामला यातायात पुलिस का है और अभी हमारे जो वर्तमान यातायात अधिकारी जैन साहब जो हमारे डीसीपी बने हैं, उन्होंने चालानी कार्यवाही पर काफी कुछ रोक लगाई है उपनिरीक्षक से नीचे के अधिकारी कोई चालान ना काटे, और उसमें पारदर्शिता बरती जावे और किसी प्रकार की अवैध वसूली ना लेवे, कैमरे वगैरह भी लगे हुए हैं जहां जायज है वहाँ उचित कार्रवाई होना ही चाहिए, वह गलत नहीं है, लेकिन हां लोगों को समझाना चाहिए, खुद बाइक पर आकर लोगों को समझाते हैं,मैं मानता हूं हमारे डीसीपी श्री जैन साहब बहुत ही संवेदनशील अधिकारी है । वह इस पर काफी अच्छे से मेंटेन करेंगे भविष्य में ट्राफिक पर भी आपको काफी सुधार दिखाई देगा ।

आपकी कोई विशेष उपलब्धि ..!

अभी मुझे यहां अल्प समय हुआ है, मेरी जो उपलब्धि है,वह जनता के प्रति अच्छा व्यवहार, संवेदनशील आचरण और उनकी बातों को गंभीरता से सुना है। मेरा अभी तक ऐसा विश्वास है, मेरी 28 साल की सर्विस में मेरे द्वारा कभी भी दुर्व्यवहार किसी के साथ नहीं किया, यही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूं।

आम जनता की आप तक पहुंच..!

आम जनता का अधिकार है और उनकी मुझ तक आसानी से पहुंच है, मैं ऐसा भी मानता हूं कि उनके टैक्स से ही हमको हमारा वेतन मिलता हैं, उनका पूरा अधिकार है वह मुझसे कभी भी बात कर सकते हैं। जब जब भी मुझसे किसी ने संपर्क किया और अपनी समस्या रखी है तो मैंने प्रयास किया है कि,जो मैं नहीं कर सकता था उसे मैंने उसमें संबंधित को बताया भी है,कि कानूनी रूप से में कुछ मदद नहीं कर सकता हूं और जायज हक उसका है तो उसको मेरे द्वारा दिया गया।

थाने पर आपका नियंत्रण..!

थाने पर एक प्रशासनिक अधिकारी का नियंत्रण होना चाहिए वह मेरा है,हमारे यहां लगभग 70 अधिकारी कर्मचारी हैं। सब पर कौन क्या कर रहा है यह तो संभव नहीं है, लेकिन सबको समान रूप से काम का वितरण किया गया है, यह जरूर है और उन सब पर नजर रखता हूं, कि वह उनके द्वारा किसी को परेशान न किया जाए फिर भी अगर जाने अनजाने में इस तरह की कोई परेशानी है तो उस समस्या का समाधान करते हैं।

☞ हम मोहल्ला भ्रमण के दौरान समझाइश के माध्यम से सही दिशा देने का प्रयास करते हैं माता-पिता को हम समझाते हैं कि यह गलत लत में, संगत में अपने बच्चों का भविष्य बर्बाद ना करें ...

☞ मेरा एक ही पैरामीटर रहता है कि अगर मेरे थाने पर 1 सप्ताह में 100 लोग आए हैं तो 95 लोगों को संतुष्टि मिलना चाहिए, यह मेरा प्रयास रहता है...

☞ अपराधी पर कोई तरस नहीं आता है,अपराधी कैसा भी हो लेकिन वह क्रिमिनल ही रहता है, मौका मिलते ही वह अपराध करता है, वह अपना असली रूप दिखा देता है, इसलिए अपराधियों पर तरस खाने की जरूरत नहीं है...

सीहोर जिले से सम्बन्ध रखने वाले और थाना प्रभारी भंवरकुआं में लगभग सवा साल से पदस्थ श्री संतोष दूधी ने संवाद और परिचर्चा के अंतर्गत कई मुद्दों पर हमारे PRO एल. एन. उग्र से अपने विचार व्यक्त किए-

कमिश्नर प्रणाली से क्या आम जनता को लाभ मिलेगा ?

बिल्कुल आम जनता को कमिश्नर प्रणाली से लाभ मिलेगा, जो आदतन अपराधी हैं, बदमाशी करने वाले हैं, अशांति फैलाने वाले हैं, इस तरह के जो तत्व है, इनको तत्काल प्रतिबंधित कर भारी राशि से बाउंड ऑफ किया जाएगा, इससे उन पर हमेशा के लिए अंकुश बना रहेगा इसमें निश्चित रूप से बेहद सफलता पुलिस को मिलेगी।

अपराधियों पर इससे कितना खौफ पैदा होगा ?

अपराधियों में खौफ है ही सही पुलिस का और कमिश्नर प्रणाली लागू होने से और खौफ ज्यादा है, अपराधी और जिसने भी बॉन्ड्स का उल्लंघन किया है, उसको हम तत्काल जेल भेज रहे हैं, सख्त से सख्त कार्रवाई करने का प्रयास हमारा रहता है।

अपराध का ग्राफ बढ़ा है या कम हुआ है इस नए वर्ष में?

नए साल में ऐसा कोई गंभीर अपराध घटित नहीं हुआ है, छोटे-मोटे जो अपराध हैं, एक्सीडेंट वगैरह हैं, वह हो रहे हैं जो साधारण अपराध है वो हो रहे हैं, लेकिन ऐसा कोई गंभीर अपराधों में बढ़ोतरी नहीं हुई है, गंभीर अपराध घटित नहीं हुए हैं, और अपराधों में कमी आ रही है।

शासन- प्रशासन और आम जनता के बीच आप कैसे समन्वय बनाते हैं?

आम जनता और पुलिस के बीच जैसा समन्वय सालों चल रहा है, हम उसे और बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं और हमारा एक ही मकसद रहता है कि जो हमारे थाने पर रिपोर्ट लेकर आए, फरियादी जो आता है वह पुलिस के कार्य से पूरी तरह से संतुष्ट हो, यह मेरी प्राथमिकता है। नंबर दो अभी तक तो यह है कि इस तरह की कम से कम शिकायत मिलेगी की थाने पर गए और कार्यवाही नहीं हुई, 1-2 ऐसे मामले हो सकते हैं,लेकिन देर सवेर उसकी भी सुनवाई हमारे द्वारा की गई है। लेकिन मेरा एक ही पैरामीटर रहता है कि अगर मेरे थाने पर 1 सप्ताह में 100 लोग आए हैं तो 95 लोगों को संतुष्टि मिलना चाहिए,यह मेरा प्रयास रहता है, और फिर 2 -4 -5 तो ऐसे व्यक्ति रहते ही हैं जो जीवन में कभी संतुष्ट नहीं होते हैं।

संवाद और परिचर्चा

श्री संतोष दूधी
भंवरकुआं थाना प्रभारी

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस के द्वारा क्या प्रयास किए जाते हैं ?

सामाजिक बदलाव के लिए हमारा प्रयास होता है कि क्रिमिनल पर नजर रखें आम जनता की भी जिम्मेदारी है कि अपने अड़ोस पड़ोस में कोई अजनबी व्यक्ति हो उसकी सूचना हमें दें और आदतन जैसे अपराधी हों,एक जगह से दूसरी जगह रहने लगा है, तो ऐसे अपराधियों कि लोग हमें जानकारी दें और जो नशा वगैरह करते हैं,उन लोगों के बारे में पुलिस को जानकारी समय रहते दें,अपने बच्चों का ध्यान रखें उन्हें अच्छे से अच्छे एजुकेशन दिलाएं और किसी भी तरह की समस्या हो तो संबंधित एजेंसी और संबंधित पुलिस थाना को अवश्य बताएं लोग बिना डरे।

सर ऐसे भी अपराधी होंगे जिन पर आपको तरस आता होगा कि बार-बार यह अपराधी आपके सामने आता है इस पर क्या कार्यवाही की जाए ?

नहीं अपराधी पर कोई तरस नहीं आता है,अपराधी कैसा भी हो लेकिन वह क्रिमिनल ही रहता है, मौका मिलते ही वह अपराध करता है, वह अपना असली रूप दिखा देता है, इसलिए अपराधियों पर तरस खाने की जरूरत नहीं है। हां यह देखा जाता है कि अगर कोई गलती से अपराधी बन गया है और उसकी मानसिकता अपराधी वाली नहीं है, तो उसके साथ हम कोशिश करते हैं कि अच्छे से व्यवहार करें और सही रास्ते पर लाने का हमारा प्रयास रहता है, और वाकई वह क्रिमिनल है बार-बार वह चाकू छुरी चला रहा है,अपराध कर रहा है तो उस पर तरस खाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इंदौर में वीआईपी कल्चर का बड़ा महत्व है इसको पुलिस कैसे मैनेज करती है?

मेरा ऐसा मानना है कि ऐसा कोई वीआईपी कल्चर नहीं है इंदौर में, प्रदेश में पूरे देश में एक जैसा कल्चर है। अगर वह वीआईपी है तो उनकी सुरक्षा करना हमारा पहला दायित्व है। आम आदमी की सुरक्षा के साथ-साथ वीआईपी की भी जान माल की सुरक्षा की हमारी जिम्मेदारी है और वह जिम्मेदारी हम निभाते हैं। अलग से कोई विशेष काम किए जाने योग्य नहीं है यह सब रुटीन के काम है जो पुलिस को आता है।

थानों पर राजनीतिक हस्तक्षेप को कैसे देखा जाता है?

राजनीतिक हस्तक्षेप गलत तरीके से कुछ नहीं होता है, किसी फरियादी किसी पीड़ित की बात को पहुंचाने तक के लिए अगर पुलिस को कोई फोन करता है, तो उसे मैं गलत नहीं मानता हूं। उसे पुलिस प्रशासन के काम में हस्तक्षेप नहीं मानता हूं और ऐसा कोई राजनीतिक हस्तक्षेप मेरे कार्य में तो नहीं हुआ है।

युवा वर्ग जो नशे में गिरफ्त हो रहा है, इस पर आप क्या नजरिया रखते हैं ?

युवा वर्ग में खासकर जो 14 से 18 वर्ष के बच्चे हैं या कहे युवा है ऐसे बच्चों को हम मौहल्ला भ्रमण के दौरान समझाइश के माध्यम से सही दिशा देने का प्रयास करते हैं, इनके माता-पिता को हम समझाते हैं कि यह गलत लत में ,संगत में अपने बच्चों का भविष्य बर्बाद ना करें और जो आदतन नशेड़ी हैं उनको पकड़ कर हमने कईयों को रिहैब सेंटर भेजा है। उन्हें सुधारने के उचित प्रयास धाराओं के तहत भी कर रहे हैं और उन्हें लगातार समझाइश दी जा रही है।

आप के कार्यकाल की कोई बड़ी उपलब्धि है?

उपलब्धियां तो पुलिस विभाग की है, अभी पिछले समय गंभीर घटना हो गई थी, पिछले साल राजस्थान की एक गैंग ने डकैती डाली थी। इंदौर पुलिस की नाक का सवाल था, वह कि भाई ऐसी दिनदहाड़े डकैती डालने वाले बदमाश कहां के हो सकते हैं,शहर की पूरी टीम ने मिलकर उसे ट्रेस किया और ट्रेस करने पर पता चला वे लोग राजस्थान के कोटा जिला वगैरा के लोग थे। उनको हम ने गिरफ्तार किया यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। छोटे-मोटे मामलों में तो हम लोग त्वरित कार्यवाही करते हैं टीमवर्क रहता है यही हमारी उपलब्धि है सारी टीम का सहयोग रहता है यही उपलब्धि है ।

☞ हम सभी का यह प्रयास होगा कि अक्सर यह शब्द जो सुनने को मिलता है कि इंदौर क्राइम सिटी बनने की ओर अग्रसर है तो इस पर हम इसे रोकने का पूरा प्रयास कर रहे हैं जिससे कि इंदौर के लिए यह शब्द दोबारा सुनने को ना मिले...

☞ आम आदमी की पहुंच अब सिर्फ मुझ तक ही नहीं और बड़े अधिकारियों तक भी उनकी पहुंच हो गई है...

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप कैसे देखते हैं?

यह बहुत ही अच्छा और प्रभावी सिस्टम है, इससे अपराधियों पर निसंदेह पूर्ण रूप से अंकुश लगेगा, इंदौर को जैसा कि आप जानते हैं चार जोन में बांटा गया है, और सभी के प्रभारी सभी पुलिस अधीक्षक महोदय हैं, उनके अधीन सभी अधिकारी हैं । क्योंकि क्षेत्र और कम हो गया है तो अब अधिकारीगण उस पर और अच्छे से निगाह रख सकेंगे, साथ ही उनके क्षेत्रों में होने वाले अपराध और अपराधियों पर सतत मॉनिटरिंग उन के माध्यम से की जा सकेगी,पहले भी मॉनिटरिंग होती रही है पर अब और अच्छे से मॉनिटरिंग की जा सकेगी ।

इसके माध्यम से क्या पुलिस प्रशासन में कसावट आएगी?

निश्चित रूप से इससे पुलिस प्रशासन में कसावट आवेगी, फील्ड में और भी जो हमारा फोर्स है ,वह जोर शोर से काम कर सकेगा । अपराधियों पर काफी कार्यवाही अभी हो रही है.. जो लोग गुंडागर्दी करते थे और दादागिरी करते थे सरे आम इन सब पर काफी हद तक अंकुश लगा है, जो कुख्यात गुंडे या बदमाश लोग थे अब वो सब भूमिगत जैसे हो गए हैं।

युवा वर्ग जो नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं उस पर आप क्या कहेंगे?

पुलिस विभाग के जो वरिष्ठ अधिकारी है,जितने भी थाना प्रभारी गण है,सभी लोगों का शुरू से ही यह उद्देश्य रहा है कि नशे पर पूर्णता अंकुश लगे और इस प्रयास में पहले भी कार्यवाही होती रही है । आबकारी एक्ट के तहत एनडीपीसी एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है और इस बीच यह भी देखा गया है कि, छोटे-छोटे बच्चों के बीच नशे की लत बड़ी है । रोड पर जो भीख मांगने वाले लोग हैं, वह नशे की गिरफ्त में है, इन पर भी निगाह रखी जा रही है । सोशल वर्क भी किया जा रहा है,समझाइश भी दी जा रही है, साथ ही चाइल्ड हेल्पलाइन के माध्यम से भी समझाइश दी जा रही है ।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

घरेलू हिंसा में मेरा ऐसा मानना है कि लगभग दोनों पक्ष ही दोषी रहते हैं, क्योंकि एक बच्ची शादी होकर अपने घर से ससुराल आती है । जहां पर उसने अपना पूरा समय बिताया और फिर एक नए वातावरण में आती है तो उसको उस में ढलने में थोड़ा समय लगता है और जो ससुराल पक्ष है उसे एडजस्ट करने में भी समय लगता है तो चर्चा करें बात करने से और उसे अपने परिवार का सदस्य मानते हुए व्यवहार करें, तो जो कन्फ्यूजन होते हैं वह दूर होते हैं लेकिन जहां यह कम्युनिकेशन गैप आता है फिर विवाद बढ़ने शुरू हो जाते है ।

संवाद और परिचर्चा

श्री धर्मवीर सिंह नागर
एमजी रोड थाना प्रभारी

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस के क्या प्रयास होते हैं?

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस के यह प्रयास रहते हैं कि जैसे समाज कि जो कुरीतियों और बुराइयों है जैसे घरेलू हिंसा नशा और छोटी मोटी बातों पर पड़ोसियों से जैसे विवाद हो जाते हैं तो इसमें पुलिस जब पैदल भ्रमण पर जाती है और पूर्व में हम लोग के पुलिस मुख्यालय के नारे भी रहे हैं कि कि "पड़ोसी की सुरक्षा में है अपनी सुरक्षा" तो इस तरह की समझाइश हमारे द्वारा दी जाती है, .. मोहल्ला समिति की मीटिंग के समय या नगर सुरक्षा समिति की बैठक के समय या फिर शांति समिति की जब बैठक लेते हैं, तो उसमें हमारे वरिष्ठ अधिकारीगण विचार और मुद्दों पर चर्चा करते हैं, और संबंधित को समझाइश देते हैं ।

जो आदतन अपराधी है उन पर आप कैसे नियंत्रण करते हैं?

जो आदतन अपराधी रहते हैं वह कोई भी अपराध पुनः घटित करते हैं तो हम लोग उन पर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही 110 सीआरपीसी की कार्यवाही कर कर उनको बांड ओवर कराते हैं 107- 16 के तहत भी बांड ओवर कराते हैं, और अगर वे उसका उल्लंघन करते हैं तो हम उस उन पर 122 की कार्यवाही करते हैं जिसके अंतर्गत उसको सीधा जेल होती है । कई अपराधी होते हैं उन्हें हम थाने पर बुलाकर समझाया इस देते हैं कि दोबारा कोई अपराध घटित ना करें और जब अपराधी मानता नहीं हो लगातार वह कोई अपराध करता है तो फिर उसके ऊपर है जिला बदर जैसी कठोर कार्रवाई करके उन को दंडित करने की कार्यवाही होती है ।

आम आदमी की आप तक पहुंच कैसी है?

आम आदमी की पहुंच अब सिर्फ मुझ तक ही नहीं बड़े और बड़े अधिकारियों तक भी उनकी पहुंच हो गई है । कोई भी सामान्य व्यक्ति अपनी शिकायत लेकर सीधे थाने आ सकता है थाने पर जो अधिकारी होते हैं उनको अपनी शिकायत सुनाता है और अगर उसको लगता है कि उसकी शिकायत पर सुनवाई नहीं हो रही है कार्यवाही नहीं हो रही है तो वह हम लोगों से सीधे आकर मिलता है और अगर उनको लगता है कि हम भी उनकी मंशा अनुसार कार्य नहीं कर पा रहे हैं तो वरिष्ठ अधिकारियों के पास भी वह डायरेक्ट जाता है । मैं आपको जानकारी देता हूं कि चाहे हमारे एसीपी साहब हों चाहे एडिशनल डीसीपी साहब हो डीसीपी साहब हो और कमिश्नर साहब यह सभी फोन पर भी सब को सुनते हैं और सभी के फोन उठाते हैं,, जो सामान्य व्यक्ति होता है उसकी शिकायत सुनते हैं उसकी कार्यवाही के लिए अपने अधीनस्थों को तत्काल निर्देश देते हैं ।अभी कमिश्नर प्रणाली लागू होने के बाद एक और पैटर्न चालू हुआ है हम लोगों से थानों से जो लोकल शिकायतें प्राप्त होती है उनमें आवेदक का मोबाइल नंबर भी लिखा होता है तो बड़े अधिकारियों के कार्यालय से जो पेंडिंग शिकायत है उस पर फोन पर प्रार्थी से डायरेक्ट बात करते हैं । उनसे पूछते हैं और हमारे सभी के तथा वरिष्ठ अधिकारियों के नंबर डिस्प्ले पर है । कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

क्या इंदौर अपराध की राजधानी बनने की ओर अग्रसर है ?

क्योंकि इंदौर एक महानगर है और आसपास के प्रदेशों से आकर लोग यहां रहते हैं नौकरी के हिसाब से या पढ़ने के हिसाब से लोग यहां पर किराए के मकान लेकर रहते हैं । क्योंकि यहां अपराध अलग-अलग तरह के घटित होते हैं और उनमें कई अपराध इस तरह के हैं जैसे भूमि पर कब्जा रहता है उनके विवाद चलते रहते हैं आपसी पैसों का लेनदेन का विवाद चलता रहता है अन्य प्रकार के विषय नशाखोरी आदि तो यह सब जब होता है तो कहीं ना कहीं छोटे-मोटे अपराध घटित होना स्वाभाविकहै,बाहर के लोग आकर इंदौर में अपराध करते हैं । क्योंकि इंदौर महानगर है कहीं भी सुनसान इलाके में चैन स्नैचिंग,सुनसान में कोई घर है वहां चोरी कर लेते हैं,कई बार यह लोग इकट्ठा होकर लूट या डकैती कर लेते हैं । हालांकि जब से वरिष्ठ अधिकारियों ने कमिश्नर प्रणाली लागू होने के बाद से और ज्यादा ध्यान दिया है और पूर्व से भी सभी अधिकारी सतर्क हैं और अपराधी वे सब पकड़े भी जाते हैं चुकी घटना तो घटित हो जाती है, साइबर क्राइम आदि पर भी लगातार रोकने का प्रयास किया जा रहा है ।हम सभी का यह प्रयास होगा कि अक्सर यह शब्द जो सुनने को मिलता है कि इंदौर क्राइम सिटी बनने की ओर अग्रसर है तो इस पर हम इसे रोकने का पूरा प्रयास कर रहे हैं । जिससे कि इंदौर के लिए यह शब्द दोबारा सुनने को ना मिले ।

जनता अगर सकारात्मक वातावरण बनाएगी तो निश्चित रूप से सामाजिक बदलाव आएगा ...

☞ सेल्फ डिपेंडेंट पति और पत्नी है वह एक दूसरे की सुनना ही नहीं चाहते, समझना ही नहीं चाहते। हम कई बार देखते हैं कि एक ईगो पॉइंट पर पूरा परिवार हिंसा पर चला जाता है, उलझा रहता है ...

☞ बच्चे और बच्ची दोनों को उनको मां-बाप को सुधारने की आवश्यकता है। आस-पड़ोस को भी देखने की जरूरत है कि बच्चा किस दिशा में जा रहा है ...

☞ पब्लिक में कोई कितना भी बोल दे कि पुलिस बहुत खराब है, लेकिन अंततः याद हमारी 100 डायल ही आती है। तो कहीं ना कहीं जनता हम पर विश्वास करती है...

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

कमिश्नर प्रणाली इंदौर में लागू हुई है इसको आप किस तरह से देखते हैं ?

पुलिस प्रशासन के पावर बड़े हैं और तुरंत कार्यवाही के लिए तो पुलिस कमिश्नर प्रणाली बेहद सराहनीय है,इसके कारण हम जनता में और जनता के प्रति हमारा विश्वास और बढ़ेगा।

हाल ही में कमिश्नर साहब की एक महत्वपूर्ण बैठक में सभी को सख्त निर्देश मिले हैं क्या संदेश है?

यह नहीं कह सकते हैं, हमारे जो कमिश्नर साहब है बहुत ही पोलाइट है। हमे लगता ही नहीं है कि वह हमारे बड़े अधिकारी हैं, वह तो हमारे एक पारिवारिक वरिष्ठ सदस्य की तरह हम सभी को ट्रीट करते हैं। एक बेहतर इंदौर और बेहतर कानून व्यवस्था बनाने के लिए जो किया जा सकता है, उसके लिए आपस में बैठकर उनके द्वारा चर्चा की गई। उनको जो उचित लगा उन्हें वह बताया और हमको कुछ हमारी बातें थी वह भी हमने सभी ने रखी। वह भी उनके द्वारा सुनी गई और इस तरह से यह एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई है।

क्या आप ऐसा मानते हैं कि कमिश्नर प्रणाली से पुलिस प्रशासन में और कसावट आवेगी ?

मेरे ख्याल से ऐसा कहना ठीक नहीं है, पर हमारा पुलिस विभाग जो है वह पहले से ही चुस्त-दुरुस्त है। यह है कि मॉनिटरिंग का जो स्तर बढ़ा है, उससे कई चीजें फिल्टर होकर अच्छे रूप में सामने आएंगी। कुछ चीजें कई बार छूट जाती है वह प्रॉपर चैनल से चलेंगे तो बेहतर होगा।

कमिश्नर साहब का ऐसा कहना है कि थाना प्रभारी ज्यादा से ज्यादा जनता के बीच में रहे, इससे क्या संदेश जाता है?

यह तो पहले से भी था और एक स्वागत डेस्क हमारी चला करती थी। आज भी वैसा ही सिस्टम है यह है कि पुलिस कमिश्नर प्रणाली आने से पुलिस से और अपेक्षाएं बढ़ गई हैं,और उम्मीदें बढ़ गई है,हम बात करें कि पहले भी रात को 10:00 बजे मान लो कोई पति अपनी पत्नी को पीट रहा है,तो वह चार बच्चों के साथ थाने पर आकर खड़ी हो जाती थी,उसे विश्वास है पुलिस पर और जितना विश्वास पुलिस पर है उतना अभी भी किसी पर नहीं है। पब्लिक में कोई कितना भी बोल दे कि पुलिस बहुत खराब है, लेकिन अंततः याद हमारी 100 डायल ही आती है। तो कहीं ना कहीं जनता हम पर विश्वास करती है, उस विश्वास को और हम मजबूत बनाएं। कमिश्नर साहब का ऐसा कहना था कि मानवीय संवेदनाओं के साथ यदि हम बात करेंगे तो और भी बेहतर होगा। उसके लिए भी हम लोगों ने कुछ काम शुरू किए हैं।

अपराधियों पर क्या आप मानते हैं कि खोफ बढ़ेगा?

अपराधियों की अगर बात करूं तो क्योंकि जिला बदर से लेकर एनएसएस तक हमारे अधिकारियों के हाथ में है। हम बेहतर तरीके से जानते हैं कि उस आदमी ने क्या किया है और कैसे किया है, अपराधी को तो हम से डरना चाहिए, लेकिन एक आम आदमी को पुलिस से उतना ही प्रेम होना चाहिए और अपराधियों को हम से उतना ही खौफ करना चाहिए, जिला बदर आदि की कार्यवाही भी अब हम सख्ती से कर पाएंगे।

ड्रग्स की गिरफ्त में युवा वर्ग और महिलाएं भी आ रही हैं, इस पर आप का क्या नजरिया है?

किसी भी ड्रग्स को लेकर अगर बात करें तो कोई भी विभाग अकेले अपने दम पर कोई काम नहीं कर सकता। जनता का सहयोग बहुत जरूरी है,हमारा बच्चा रात को 12:00 बजे कहीं पार्टी में जा रहा है। तब हम देख रहे हैं क्या ? वह क्या खा पीकर आ रहा है किस व्यवस्था में आ रहा है, ड्रग सप्लायर की अगर बात करें तो ड्रग सप्लायर पेडलर इन सब को तो पुलिस अपने मुखबरी के माध्यम से खत्म करेगी, लेकिन अब एक आम परिवार का जो बच्चा है, बच्ची है। हम तमाम देखते हैं कि रात को पब में नशा कर रहे हैं, मैं सिर्फ बच्ची को सुधारने की बात नहीं करती हूं, लेकिन बच्चे और बच्ची दोनों को उनको मां-बाप को सुधारने की आवश्यकता है। आस-पड़ोस को भी देखने की जरूरत है कि बच्चा किस दिशा में जा रहा है ।

क्या एक आम आदमी, आम जनता आप तक आसानी से पहुंच पाती है?

इस सवाल का जवाब तो अब परेशान व्यक्ति से ही पूछना पड़ेगा, लेकिन आम जनता मुझ तक आसानी से पहुंच पाती है यह मेरा मानना है।

संवाद और परिचर्चा

श्रीमती अमृता सोलंकी
थाना प्रभारी-राजेंद्रनगर

अक्सर देखा गया है कि राजनीतिक हस्तक्षेप पुलिस प्रशासन के काम में होता है आप क्या मानते हैं ?

मुझे नहीं लगता है कि राजनीतिक हस्तक्षेप पुलिस प्रशासन के काम में होता है। एक व्यक्ति जब जनता के बीच से चुनकर जाता है। उसके लाखों वोटर होते हैं, जनता की सामान्य अपेक्षाएं उससे रहती है। सामान्य लोग पुलिस से भी भय खाते हैं.. और किसी जनप्रतिनिधि ने मुझे अगर किसी काम के लिए कह दिया। तो वह मैं इस तरह दबाव के रूप में नहीं देखती। मैं जनप्रतिनिधि को सही बात बताने की कोशिश करती हूं, अपना पक्ष सामने वाले को रखती हूँ, और फिर सही और गलत जो होता है। उसे देखा जाता है,जो संवैधानिक स्थिति होती है, उसके अनुसार हम लोग काम करते हैं। इसके अलावा मुझे नहीं लगता है कोई दबाव काम करता है।

सवाल :-घरेलू हिंसा में कौन दोषी है?

मुझे लगता है घरेलू हिंसा में जितना दोषी पति उतना ही सासुमाँ भी होती है, साथ ही दोष उस लड़की के मां और बाप का भी है। जब हमने लड़की ब्याह दी उसके बाद जो फोन की परंपरा चलती है। लगातार संपर्क करने की जो परंपरा है घर को टूटने का कारण यह भी होता है। पहले विवाह 20- 22 साल की उम्र में हो जाया करता था, तो एक प्रेम बना रहता था । सेल्फ डिपेंडेंट पति और पत्नी है वह एक दूसरे की सुनना ही नहीं चाहते, समझना ही नहीं चाहते। हम कई बार देखते हैं कि एक ईगो पॉइंट पर पूरा परिवार हिंसा पर चला जाता है, उलझा रहता है। जो नेचुरल परेशान महिला है जो दर्द से पीड़ित जो है, वह कई बार तो थाने तक भी नहीं पहुंच पाती है। तो हमेशा के लिए पारिवारिक हिंसा के लिए हम केवल पुरुष वर्ग को दोषी नहीं मान सकते हैं।

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस का क्या मानना है?

सामाजिक बदलाव के लिए मेरा ऐसा मानना है कि पुलिस को अपना मित्र समझे, आप लोगों में कमियां ढूंढने लेंगेगे,कमियां मिलती जाएंगी । आप लोगों में खूबियां ढूंढने का प्रयास करें, अच्छाइयां सामने आएंगी। हमारा विभाग भी इसी समाज से आया हुआ है अगर हमारे विभाग का कोई कर्मचारी अच्छा काम करता है तो प्रशंसा का हकदार है। जनता अगर सकारात्मक वातावरण बनाएगी तो निश्चित रूप से सामाजिक बदलाव आएगा।

आदतन अपराधियों पर आप कैसे नियंत्रण करते हैं ?

आदतन अपराधी जो है वह समाज के लिए जहर है। उन पर बहुत सारी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही बनी हुई है जो कानूनन पुलिस को अधिकार मिलता है, फिर चाहे वह जिला बदर या अन्य कानूनी कार्यवाही हो। वह पुलिस के पास है और उनका उपयोग भी करते हैं और अपराधी को जो है उसको हमारा खौफ होना चाहिए, उसके लिए हमें विधिक दायरे में रहकर काम करना चाहिए हम करते हैं।

पुलिस की छवि मात्र चालान बनाने तक की है इस पर आप क्या कहना चाहते हैं?

यह विषय यातायात पुलिस का है और मेरे क्षेत्र में इस तरह की कोई घटना नहीं हे इसलिए में इस पर कोई टिप्पणी करना नहीं चाहती हूँ।

आमजन को आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

आम जनता को मेरे यही संदेश है कि पुलिस मित्र बनिए। अभी हम ने जो रिटायर्ड जो लोग होते हैं, घर में बुजुर्ग लोग जो होते हैं, जिनके बच्चे बाहर पढ़ रहे हैं या नौकरी कर रहे हैं, अमेरिका में है या ऑस्ट्रेलिया में,वह पैसा तो भेजते हैं,लेकिन वहां पर अकेले हैं,कोई भी साथ नहीं, दो साल से कोविड-19 फंसे हुए, हमने ऐसे लोगों को एक ग्रुप तैयार किया और पुलिस के द्वारा उनको सहयोग किया गया। फिर मोहल्ले वालों से ही उनको सहयोग कराना प्रारंभ किया। तो इस तरह से नैतिक स्तर पर बदलाव की जरूरत है। हम आज शहर की संस्कृति में रहते हैं, पड़ोस में कौन रह रहा है, यह नहीं जानते। गांव में खुशी और गम में पूरा गांव साथ होता है हमें भी इसी तरह के सहयोग की जरूरत है।

आप के कार्यकाल में अपराध का ग्राफ बढ़ा या कम हुआ?

मेरे एक सवा साल के कार्यकाल में कोविड-19का कार्यकाल रहा। इसलिए संख्या कम रही थाने में एक्सीडेंटल मामले ज्यादा रहे। अपराध का ग्राफ 2019 में जो रहा वैसा ही रहा।

sponcership
DETECTIVE GROUP
Detecting the truth
WWW.DETECTIVEGROUP.IN

You Tube Detective Group Report
SUBSCRIBE

☞ माता-पिता का तो सर्वोच्च नियंत्रण होना चाहिए बच्चों पर, यंग जनरेशन पर और वह उन पर ध्यान नहीं दे पाते हैं । इसी कारण लड़के भटकाव की ओर जाते हैं....

☞ घरेलू हिंसा में भी आधुनिक जीवन शैली जो है वह दोषपूर्ण है, इसमें सबसे पहले बात तो यह है कि जो महत्वाकांक्षा है और जो सामंजस्य से नहीं बिठाने की समस्या आती है..

☞ कमिश्नर साहब के द्वारा जो एक नया सिस्टम डिवेलप किया गया है, वो है रिहैब सेंटर में जाकर जो नशे के कारण पीड़ित व्यक्ति है, उनसे जाकर बात करते हैं, उनकी समस्याओं पर चर्चा की जाती है....

☞ सीएम हेल्पलाइन में पूरे मध्यप्रदेश में सारी समस्याओं के समाधान के लिए और तत्काल निराकरण के लिए पूरे मध्य प्रदेश में सबसे अधिक प्रकरण के समाधान की साख पुलिस राऊ के खाते में आती है । यह राऊ पुलिस के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है....

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO), मो. 91110 30505

संवाद और परिचर्चा

श्रीनरेंद्र सिंह रघुवंशी
थाना प्रभारी- राऊ

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है उसे आप किस तरह से देखते हैं ?

♦ कमिश्नर प्रणाली को हम इस तरह से देखते हैं कि पुलिस को और पावर आएगा, अपराधियों को कंट्रोल करने का, अपराधियों पर कार्यवाही करने का और अपराधियों पर नियंत्रण करने का पुलिस के पास में एक कारगर तंत्र विकसित होगा। जिससे इन अपराधियों पर कार्यवाही की जा सके।

आपको लगता है कि कमिश्नर प्रणाली लागू होने से अपराध पर या अपराधियों पर नियंत्रण हो पाएगा ?

♦ अपराध पर नियंत्रण हो पाएगा या नहीं यह तो नहीं कह सकते, पर अपराधियों पर नियंत्रण हो पाएगा यह पक्का है। जो आदतन अपराधी हैं, जिन पर पुलिस को कार्यवाही करने में काफी वक्त लगता था,उन पर पुलिस नियंत्रण कर पाएगी।

पुलिस प्रशासन में भी कसावट आएगी इससे?

♦ कमिश्नर प्रणाली इंदौर में लागू होने से पुलिस प्रशासन में कसावट आ गई है, पुलिस प्रशासन चुस्त और दुरुस्त है। सारी टीम मिलकर काम करती है इससे सफलता मिलती है।

ड्रग्स की घटनाएं कहीं बढ़ रही हैं या घटना घट रही है?

♦ सोशल मीडिया और जो आधुनिक जीवन शैली है, उसमें इंटरनेट और अन्य जो चीजें हैं इसके कारण युवा भटकाव की ओर जा रहे हैं। उसके लिए कमिश्नर साहब ने नारको हेल्प लाइन चालू की है, जिसकी मदद से कोई भी कहीं भी अगर कहीं भी नशीले पदार्थों के संबंध में सूचना मिलती है,तो उस पर तत्काल कार्यवाही होती है। इस तरह की किसी के पास भी कोई भी सूचना आती है तो वह नारकोटिक पर सूचना भेज सकता है। उस पर त्वरित कार्यवाही की जावेगी।

आजकल देखा जा रहा है कि ड्रग्स में महिलाएं भी लिप्त हो रही है ?

♦ मेरा यही कहना है कि इग्स में पुरुष इंवॉल्व हो रहे हैं, नए बच्चे जो कम उम्र के बच्चे हैं, यह इग्स में लिप्त हो रहे हैं और इनके साथ ही महिलाएं भी बड़ी संख्या में लिप्त हो रही है, जो आधुनिक जीवन शैली है, इंटरनेट वगैरह इसके कारण इस दिखावे के कारण यह सब लोग इग्स में में लिप्त हो रहे हैं।

ड्रग्स में क्या कोई अंतरराज्यीय गिरोह काम कर रहे हैं ?

♦ इस विषय में राऊ क्षेत्र में कोई प्रकरण नहीं है और ना इस तरह की कोई जानकारी है अगर और कहीं है तो उसके बारे में जानकारी नहीं बता सकता

आमजन की नजरों में पुलिस की छवि चालान बनाने तक की रह गई थी क्यों ?

♦ भाई पुलिस को अगर कुछ गलत दिखेगा, तो चालान तो बनाना पड़ेगा,लड़के तीन सवारी बैठकर जा रहे हैं, मोबाइल पर गाड़ी चलाते हुए बात कर रहे हैं, हाथ छोड़कर गाड़ी चला रहे हैं, बेतरतीब स्पीड से गाड़ी चला रहे हैं,पटाखे फोड़ते हुए मोटरसाइकिल लेकर जा रहे हैं, जिससे कि आमजन में एक आक्रोश उत्पन्न होता है और यह सोचा जाता है कि इनके विरुद्ध पुलिस कोई कार्रवाई क्यों नहीं कर रही। इसलिए पुलिस को यह कार्रवाई करना पड़ती है। और इस कार्यवाही का असर भी देखने को मिलता है,बीच में देखने को मिला था कि एक अभियान चला था,डीसीपी साहब यातायात ने कमिश्नर साहब के निर्देशन में, एक अभियान चलाया था। कि पटाखे फोड़ते हुए जो मोटरसाइकिल वाले वाहन चालक हैं इन पर कार्यवाही की जाए और सख्ती से इस पर कार्यवाही की गई तो असर भी देखने को मिला है।

जो युवा बिगड़ रहे है ,इसमें माता-पिता को दोषी माना जा सकता है ?

♦ माता-पिता का तो सर्वोच्च नियंत्रण होना चाहिए बच्चों पर,यंग जनरेशन पर और वह उन पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसी कारण लड़के भटकाव की ओर जाते हैं, अगर इस तरह से परिवार का नियंत्रण बच्चों पर हो। यंग जनरेशन पर हो तो बाकी सब नियंत्रण तो अपने आप ही हो जाएंगे।

घरेलू हिंसा में आप क्या नजरिया रखते हैं

♦ घरेलू हिंसा में भी आधुनिक जीवन शैली जो है वह दोषपूर्ण है, इसमें सबसे पहले बात तो यह है कि जो महत्वाकांक्षा है और जो सामंजस्य से नहीं बिठाने की समस्या आती है नए परिवार में नई बच्ची विवाह करके आती हैं। जो ससुराल पक्ष से उसे सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं,ससुराल पक्ष की अपनी बहू से अपेक्षाएं बहुत हो जाती हैं, वह आई है अब सब कुछ वह करेगी। दोनों पति-पत्नी के बीच में किसी बात को लेकर मनमुटाव हो ना,वह सब चीजें कारण रहती हैं, जिनको बैठकर बातचीत से हल किया जा सकता है । और हम काउंसलिंग के माध्यम से इस समस्या को कम करने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक बदलाव में पुलिस की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है ?

♦ सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस के द्वारा पारिवारिक विवादों में और अन्य कारणों में काउंसलिंग के माध्यम से हम लोग मदद करते हैं। सामाजिक बदलाव में एक बड़ा परिवर्तन किया है कि युवा वर्ग नशे में शामिल हो रहा है,उसमें भी पुलिस के द्वारा जागृति का अभियान चलाया जा रहा है। कई जगह तो कमिश्नर साहब के द्वारा जो एक नया सिस्टम डिवेलप किया गया है, वो है रिहैब सेंटर में जाकर जो नशे के कारण पीड़ित व्यक्ति है,उनसे जाकर बात करते हैं,उनकी समस्याओं पर चर्चा की जाती है और जो मुख्य समस्या होती है उसकी जड़ पर तक जाकर समाप्त करने का प्रयास पुलिस द्वारा किया जाता है।

शिक्षित बेरोजगार जो है यह अपराध की ओर क्यों बढ़ रहे हैं आपका क्या सोचना है ?

♦ शिक्षित बेरोजगार अपराध की ओर इसलिए मूड रहे हैं कि, उनकी महत्वाकांक्षा है तो बहुत जल्दी में कुछ कर पाएं, आगे बढ़ जाएं ,परंतु वह गलत राह पकड़ लेते हैं,पिक्चरों में देखते हैं, जो अपराधिक सीरियल होते हैं उसमें देखते हैं,तो उससे बहुत जल्दी प्रभावित होते हैं और उसके देखा देखी अपराध की ओर मुड़ जाते हैं।

इंदौर को मुंबई का बच्चा कहा जाता है और यह कहीं अपराध में भी मध्य प्रदेश की राजधानी बनने की ओर अग्रसर है ?

♦ इंदौर में अभी अगर कोई भी अपराध की सूचना मिलती है तो पुलिस के द्वारा तत्काल कार्रवाई की जाती है। एफ आई आर दर्ज की जाती है। संख्या की आबादी को भी हम अगर देखें तो लगभग 40 लाख आबादी है, इसमें अपराध तो बड़े हैं संख्या के मान से,परंतु इसमें एक बात अच्छी हो रही है कि पुलिस के द्वारा प्रतिबंधात्मक कार्यवाही और जो लघु अधिनियम की कार्यवाही है, जिससे समाज में अपराध नियंत्रण करने के काम में आते हैं उसे आधार पर कार्रवाई होती है।

आपके थाने की ऐसी कोई बड़ी उपलब्धि जिससे यह संदेश जाए कि पुलिस इस तरह से कार्यवाही भी करती है ?

♦ समाज के प्रति पुलिस का जो दायित्व है उसी आधार पर पुलिस के द्वारा कोरोना काल के समय यहां राऊ थाने पर पर पुलिस के द्वारा जो अप्रवासी लोग थे,जो बाईपास पर बहुत दूर से आ रहे थे और जा रहे थे। उन लोगों के लिए खाने पीने का प्रबंध लगभग डेढ़ से 2 माह तक निशुल्क करना,हजारों लोगों के रहने की व्यवस्था करना, उनके पानी की व्यवस्था करना, उनके विश्राम आदि की व्यवस्था की गई ,यह काम बड़े स्तर पर राऊ पुलिस के द्वारा किया गया।

यह कार्य प्रशंसनीय था क्या इस पर आपको कहीं इस तरह का प्रोत्साहन मिला ?

♦ सामाजिक रूप से और प्रशासन स्तर पर इस कार्य को बढ़ा सराहा गया और इसका उल्लेख भी किया गया है।

अन्य ऐसा कोई उल्लेख करना चाहे जिससे राऊपुलिस की छवि बड़ी दिखती हो ?

♦ हां अवश्य सीएम हेल्पलाइन में पूरे मध्यप्रदेश में सारी समस्याओं के समाधान के लिए और तत्काल निराकरण के लिए पूरे मध्य प्रदेश में सबसे अधिक प्रकरण के समाधान की साख पुलिस राऊ के खाते में आती है। यह राऊ पुलिस के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है,इस पर कमिश्नर साहब द्वारा एवं अन्य अधिकारियों द्वारा भी प्रशंसा की गई है।

आमजन की आप तक पहुंचे कैसी है आसानी से आप तक पहुंचते हैं?

♦ निश्चित रूप से आसानी से आमजन अपनी समस्या लेकर आ सकते हैं ? जो पीड़ित व्यक्ति है वह सीधे आकर मुझसे संपर्क करते भी हैं और कर सकते हैं।

☞ "100 डायल , क्राइम वॉच, सिटीजन कॉप यह तमाम हेल्पलाइन जो है वह महिलाओं की सुरक्षा के लिए ही है"

☞ "पूरे इंदौर में एक ही महिला थाना है तो यहां हम यह नहीं देखते हैं कि यह किस थाना क्षेत्र की है पूरे इंदौर से कोई भी महिला कहीं से भी हो , पीड़ित महिला हो तो उसकी आसानी से हम तक पहुंच बनी हुई है "

☞"नई उम्र की जो बच्ची है,बालिका है, महिलाएं हैं, यदि किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थिति आपके साथ हो,तो ऐसी स्थिति में आपको धैर्य नहीं खोना है..हिम्मत रखना है"।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप किस नजरिए से देखते है ?

इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इससे अवश्य ही अपराधियों पर अंकुश लगेगा उन पर कार्यवाही करने में आसानी होगी कमिश्नर सर के पास बहुत अधिकार है इस पर से निश्चित रूप से अपराधियों पर अंकुश लगेगा।

पिछले साल की तुलना में इस साल में अपराध का ग्राफ बढ़ा है या कम हुआ है?

इस बारे में मैं बहुत ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहती और इंदौर में बहुत सारे थाने हैं कुछ कहने का आधार नहीं है मेरे पास। यह मेरा कार्यक्षेत्र नहीं है।

इंदौर में युवा वर्ग नशे की गिरफ्त में आ रहा.. ?

इसके कई कारण हो सकते हैं इंदौर चूंकि एजुकेशनल हब भी हो चुका है यहां बाहर के भी काफी बच्चे आकर पढ़ रहे हैं और उन पर अंकुश नहीं रहता है। अकेले रहने का एक यह बहुत बड़ा रीजन होता है अगर बच्चे परिवार के साथ रहे तो इस पर अंकुश रहता है दूसरा कारण यह है कि वह घर से बाहर रहते हैं इसलिए जल्दी बहकावे में भी आ जाते हैं।

क्या महिलाएं वर्तमान में इंदौर में अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रही है ?

नहीं मुझे ऐसा महसूस नहीं होता है, बल्कि मैं तो इसमें दिन प्रतिदिन इस विषय में सुधार हो रहा है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए बहुत सारे काम हो रहे हैं, बहुत सारी बातें हो रही हैं, आप देखेंगे कई सारी हेल्पलाइन हैं जो महिलाओं की सुरक्षा के लिए ही चल रही है। 100 डायल , क्राइम वॉच, सिटीजन कॉप यह तमाम हेल्पलाइन जो है वह महिलाओं की सुरक्षा के लिए ही है और पुलिस का हमारा प्रयास रहता है कि छोटे-छोटे बच्चों को स्कूलों में हम जाकर अवेयरनेस कार्यक्रम करते हैं। हेल्पलाइंस के बारे में समझाते हैं। तो हम कह सकते हैं कि इंदौर में महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस के द्वारा पर्याप्त प्रयास किए जा रहे हैं।

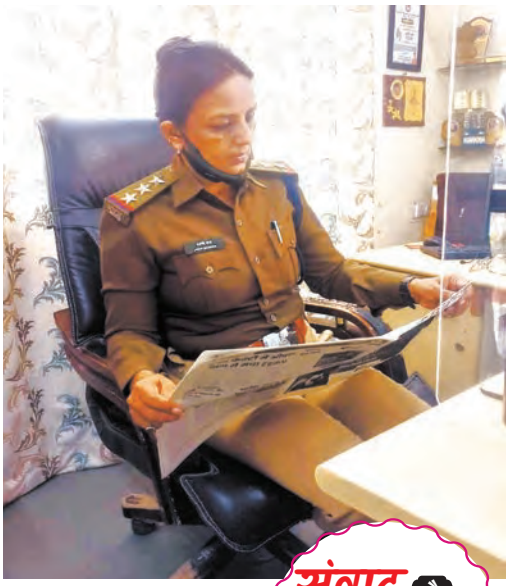

संवाद और परिचर्चा

श्रीमती ज्योति शर्मा
महिला थाना प्रभारी

जो पीड़ित महिला है क्या वह आप तक बिना किसी औपचारिकता के आप तक आकर अपनी शिकायत कर सकती है ?

पीड़ित महिला की हम तक बहुत आसानी से पहुंच है, क्योंकि पूरे इंदौर में एक ही महिला थाना है तो यहां हम यह नहीं देखते हैं कि यह किस थाना क्षेत्र की है पूरे इंदौर से कोई भी महिला कहीं से भी हो , पीड़ित महिला हो तो उसकी आसानी से हम तक पहुंच बनी हुई है। पीड़ित महिलाओं की संख्या बहुत तादाद में है ... हमारे यहां किसी भी समय पीड़ित महिला हमारे पास शिकायत लेकर आ सकती है ।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

मेरा ऐसा मानना है कि घरेलू हिंसा में एक परिवार होता है,चारदीवारी का परिवार रहता है, एक महिला है उसके ससुराल पक्ष के लोग हैं पति सास ससुर देवर जेठानी ननंद सब हो सकते हैं। यदि महिला के साथ किसी भी तरह की हिंसा हो रही है चाहे वह शारीरिक हिंसा हो या मानसिक हिंसा हो हम उसे घरेलू हिंसा की श्रेणी में ले सकते हैं। इसमें ऐसा नहीं है की बहू है, पत्नी है तो ही शिकायत कर सकती है। सास अगर परेशान है तो सास भी घरेलू हिंसा के तहत शिकायत कर सकती है इसमें महिला का होना ही पर्याप्त है।

क्या घरेलू हिंसा जो होती है उसके लिए सिर्फ ससुराल पक्ष ही दोषी है?

नहीं ऐसा नहीं है ,क्या होता है कि आज लोगों में सहनशक्ति बहुत कम हो गई है। हमारे पास जो मैटर आते हैं उसमें बहुत छोटी छोटी सी बातें रहती है, परिवार के बीच में कोई बड़ा मुद्दा नहीं रहता है विवाद की स्थिति में दोनों को समय रहते दोनों पक्षों को समझा जाए उन्हें यह एहसास कराया जाए कि यह विवाद ठीक नहीं है, उन्हें अच्छे बुरे का भान करा दिया जाए और वे समझ भी जाते हैं। कई बार परिवार टूटने से बच जाते हैं, हमारी यही कोशिश रहती है कि यदि कोई भी आवेदिका या शिकायतकर्ता महिला आती है तो उसके ससुराल पक्ष या अनावेदक पक्ष जो रहता है उसे बुलाते हैं, काउंसलिंग करवाते हैं और उसके जरिए विवाद को सुलझाने का प्रयास करते हैं। हम सीधे FIR इसलिए नहीं करते हैं कि क्योंकि यह सब पारिवारिक लोग होते हैं, यह लोग आदतन अपराधी नहीं होते हैं और महिला भी यही चाहती है कई बार यह होता है कि वह खुद चाहती है, कि ससुराल पक्ष को बुलाकर समझा दे जिससे कि समय रहते हुए परिवार से बंधे रहे और परिवार टूटने से बच जाए।

सामाजिक बदलाव के लिए महिला पुलिस के क्या प्रयास होते हैं ?

देखिए सामाजिक बदलाव एक बहुत बड़ा विषय है, इस बारे में बहुत ज्यादा अधिक तो नहीं लेकिन हां मुझे लगता है कि जो आज का परिदृश्य चल रहा है, उसमें हम लोग स्कूल कॉलेजों में भी जाते हैं वहां पर छात्राओं को , बच्चों को समझाते हैं,कि सोशल मीडिया के बारे में बताते हैं और यह बताया जाता है कि कोई भी चीज की लत बुरी होती है। पटिकुलर कोई चीज बुरी नहीं होती है। मेरा ऐसा मानना है कि सोशल मीडिया को आप लत मत बनाओ और यदि आप उसमें कुछ कर भी रहे हो तो यह सोच समझ कर करो कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है, कोई आपका फायदा उठा सकता है, यह इस तरह की बहुत सारी छोटी छोटी चीजें हमारे द्वारा समझाए जाती है। हमारी जो नई जनरेशन है वह इन सब बातों को समझ जाए तो मुझे लगता है कि उनके द्वारा कोई भी की गई चीजों को उनके खिलाफ में उपयोग नहीं कर पाएगा,यही सब सावधानी रखने की आवश्यकता है।

कोई आदतन महिला अपराधी आपकी नजर में आई क्या?

देखिए यहां तो सारे पारिवारिक मामले ही आते हैं। मेरे पास ऐसी कोई जानकारी नहीं है,जो आदतन महिला अपराधी के रूप में उल्लेख की जाए।

पिछले समय की तुलना में क्या पुलिस की छवि सुधरी है ?

देखिए पुलिस विभाग के द्वारा कुछ समय से बहुत अच्छा किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। समय-समय पर हमारे वरिष्ठ अधिकारी भी कहते हैं कि, हमारे व्यवहार को लगातार सुधार करने की आवश्यकता है। और यह प्रयास जारी रहना चाहिए,हम देखते हैं कि जब एक मरीज डॉक्टर के पास जाता है और वह दो बोल अच्छे से बोल लेते है, तो मरीज की आधी बीमारी ठीक हो जाती है। तो एक तरह से देखा जाए तो हम सभी एक डॉक्टर के रूप में ही है और हमारे व्यव्हार से निश्चित रूप से अच्छा हो सकेगा। ऐसा हमारा सब का प्रयास रहता है। यहां पर अगर वह परेशान है और उसको बिठाकर सिर्फ पानी पिला दिया जाए तो मुझे लगता है कि 100% में से 40% हम वही उसे कंफर्टेबल कर पाते हैं तो इनिशियल इनीशिएटिव जो शब्द होता है और इन सब बातों से समाज में अच्छा मैसेज जाएगा।

पूरे इंदौर में एक ही महिला थाना तो सारे इंदौर की महिलाएं आज जो पीड़ित है वह आप तक आती है ?

पूरे इंदौर की नहीं पूरे देश की महिलाएं यहां आती है क्योंकि यहां पर जो महिलाएं रहती है उनका मायका हो या ससुराल हो। वह अपने पीड़ित होने की रिपोर्ट कर सकती है, हम किसी भी महिला को वापस नहीं करते यह सोच कर कि यह से किसी और संबंधित थाने से आई है। ऐसे में अनावेदक जो मुंबई का हो या या दिल्ली का हो कहीं का भी हो तो हम उसे बुलाते हैं। बातचीत करते हैं और करवाते हैं और उससे वह मामले को सुलझाने का प्रयास करते हैं।

महिलाओं के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

मेरा संदेश है कि नई उम्र की जो बच्ची है,बालिका है, महिलाएं हैं, यदि किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थिति आपके साथ हो,तो ऐसी स्थिति में आपको धैर्य नहीं खोना और किसी भी तरह से यह स्टेप लेना है कि, आप वहां से मूव कर सको या आप हंड्रेड डायल कर सकते हो तो वह करो एफ आर वी जो रहती है वह आपकी मदद के लिए पहुंचेगी और समय है तो आप किसी भी तरह से उसको चकमा देकर वहां से क्विट करो लेकिन यह सब आप तभी कर पाओगे जब आप हिम्मत रखोगे और धैर्य रखोगे।

मीडिया आदि के माध्यम से यह महसूस हो रहा है कि महिलाएं भी अपराध की ओर बढ़ रही है?

नहीं यह कहना ठीक नहीं है, यह तो परिस्थितियां होती हैं। इसके कारण कई बार महिलाएं अपराध की ओर अग्रसर हो जाती है, लेकिन सामान्य रूप से हम यह नहीं कह सकते हैं कि महिलाएं भी अपराध की ओर बढ़ रही है।

☞"हम जागरूक करते हैं,कि अपराध बुरी बात है छोटे बच्चों को समझाते हैं। आपने देखा अभी गुड टच बैड टच के आधार पर एक बच्ची ने कंप्लेंट की एक थाने में और आरोपी पकड़ा गया और पुलिस हर मोर्चे पर सामाजिक बदलाव के लिए जाकर प्रेरित करती है"

☞"निश्चित रूप से फोर्स अमला बढ़ा है पावर बढे हैं तो निश्चित रूप से जिम्मेदारियां बड़ी है तो हम लोग इसे पूरा करने का प्रयास भी कर रहे हैं और आप इसे महसूस भी कर रहे होंगे,कि पब्लिक में पुलिस की उपस्थिति मौजूदगी बढ़ रही है"

☞"जरूरी नहीं कि उसे डंडे से ही मारा जाए,बातों का , कानून का भय पर्याप्त होता है। अगर किसी ने किसी व्यक्ति की रिपोर्ट की है कि फलां आदमी उसे छेड़ता है, परेशान करता है, कमेंट करता है, या वह गाली दे रहा है उसे पुलिस द्वारा फोन भी कर दे तो इतना भय पर्याप्त होता है।"

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली जो लागू हुई है इसे आप किस तरह से देखते हैं ?

इंदौर चूंकि महानगर है और जनसंख्या के साथ-साथ यहां पर अपराध भी बढ़ते हैं और अपराधियों पर नियंत्रण के लिए यह आवश्यक था कि पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू हो और इसके फायदे भी निश्चित रूप से हैं। जैसे 151 में हमारे यहां से 144 के आर्डर पुलिस जारी करेगी और जो प्रतिबंधात्मक कार्यवाही होती है, उसमें अब हमको ही पेश करना है, हमारे यहां पर यह काम होगा और एक ही जगह से केंद्रित होने से इसमें सुविधा से काम हो पाएगा। कार्यवाही जल्दी हो पाएगी जो एनएसए हैं, जिला बदर है, हमको मालूम है कि कौन अमुक व्यक्ति का रिकॉर्ड खराब है, वह खतरनाक है, किसकी अपराधिक प्रवृत्ति है, उस पर नियंत्रण आवश्यक है तो तुरंत इन पर नियंत्रण हो पाएगा।

इससे आम जनता को लाभ मिलेगा ?

अब इस विषय में हमारे द्वारा बोला जाना ठीक नहीं है। जनता हमारे सीधे सीधे संपर्क में है, अधिकारी हमारे बढ़ गए हैं जनता का परीक्षण भी बहुत अच्छा हो रहा है। स्टाफ भी बढ़ गया है और इसमें सभी की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित की जा रही है। तो निश्चित रूप से इसमें पब्लिक को फायदा मिलेगा।

पुलिस प्रशासन में पहले की अपेक्षा और भी अधिक कसावट आएगी ?

निश्चित रूप से फोर्स अमला बढ़ा है पावर बढे हैं तो निश्चित रूप से जिम्मेदारियां बड़ी है। तो हम लोग इसे पूरा करने का प्रयास भी कर रहे हैं और आप इसे महसूस भी कर रहे होंगे,कि पब्लिक में पुलिस की उपस्थिति मौजूदगी बढ़ रही है। ट्राफिक के मामले में हो अपराध के मामले में हो सामुदायिक पुलिस के मामले में हो ,तो हर मोर्चे पर पुलिस के जिम्मेदारियों में अंतर आ रहा है और सुधार लगातार किया जा रहा है।

नए साल में क्या अपराध का ग्राफ बढ़ा है या कम हुआ है ?

इस विषय में मैं यही कहना चाहूंगा कि अपराधों में अभी निश्चित रूप से कमी तो आई है, क्योंकि हम लोग जब रोज निकलते हैं और नया अमला भी मिला हुआ है तो जब बड़े बड़े अधिकारी और एसीपी साहब , यहां तक कि एडिशनल कमिश्नर साहब, कमिश्नर साहब खुद भी रोड पर निकलते हैं,मौके पर जाते हैं तो निश्चित रूप से प्रभाव दिखाई देता है। छेड़खानी के मामले हो या लड़ाई झगड़े के मामले हो इनमें बहुत कमियां भी आई है।

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार बड़ा पैर पसार रहा है इस पर पुलिस प्रशासन किस तरह से सख्ती कर पाएगी?

मेरा ऐसा मानना है कि ड्रग्स के भी बहुत सारे मामले पकड़े हैं। हर जगह कार्यवाही हो रही है, ड्रग्स के मामले में हर थाने पर कार्यवाही की जा रही है,बल्कि अब तो वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश भी हैं इसे डेवेलप किया जाए, अपराधी राजस्थान के हो खरगोन के हो या कहीं के भी हो, पूरी लिंक डेवलप करके कार्यवाही की जा रही है थाने में और उसमें हमारी हेल्पलाइन भी जारी हुई है। नारकोटिक्स,क्राइम ब्रांच भी काम कर रही है। सभी थाने काम कर रहे हैं और इसको हमारा प्रयास है की जड़ से समाप्त करेंगे।

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस की क्या भूमिका रहती है?

अभी कुछ घटना हुई है छोटी बच्ची के साथ छेड़खानी, दुष्कर्म के मामले हैं हम लोग उन लोगों को समझाते हैं,कुछ सामाजिक संस्थाओं की मदद भी लेते हैं। उन को जागरूक करते हैं सामाजिक सुधार के लिए शिविर भी लगाते हैं अभी आजाद नगर की बातें कुछ लोगों को हमने हमारे वरिष्ठ अधिकारियों से बात करके उनको नशा मुक्ति केंद्र पर भर्ती किया। उनको हम जागरूक करते हैं,कि अपराध बुरी बात है छोटे बच्चों को समझाते हैं। आपने देखा अभी गुड टच बैड टच के आधार पर एक बच्ची ने कंप्लेंट की एक थाने में और आरोपी पकड़ा गया और पुलिस हर मोर्चे पर सामाजिक बदलाव के लिए जाकर प्रेरित करती है कि आप गलत व्यवहार ना करें और बच्चों को समझाते हैं, बच्चों के लिए जागरूक करते हैं कि बच्चों का ध्यान रखें जिससे कि इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके।

एक कहावत है 'भय बिना प्रीति नहीं होती है 'क्या इसको आप सही मानते हैं ?

मेरा मानना है कि भय दो चीज का होता है,लोग स्पीड से गाड़ी चला कर जा रहे हैं, छोटा बच्चा गाड़ी चला रहा है,ऐसे में हम उस के पिता को बुलाते हैं, आपका बेटा गाड़ी चला रहा है, एक्सीडेंट हो जाएगा,फिर उसको बैठा लेते हैं यह एक भय हो गया। जरूरी नहीं कि उसे डंडे से ही मारा जाए,बातों का , कानून का भय पर्याप्त होता है। अगर किसी ने किसी व्यक्ति की रिपोर्ट की है कि फलां आदमी उसे छेड़ता है, परेशान करता है, कमेंट करता है, या वह गाली दे रहा है उसे पुलिस द्वारा फोन भी कर दे तो इतना भय पर्याप्त होता है। निश्चित रूप से इन प्रयासों के फायदे मिलते हैं।

आदतन जो अपराधी है उन पर आपका क्या रवैया रहता है ?

अभी हमारे यहां कुछ घटनाएं हुई है,जो आदतन अपराधी थे उनके खिलाफ रासुका की कार्रवाई की गई कुछ जिला बदर भी हुए हैं बांड ओवर भी कराते हैं और उन्हें एहसास कराते हैं कि अगर तुम गलत काम करोगे उसका नतीजा बुरा होगा।

अगर कोई राजनीतिक हस्तक्षेप प्रशासनिक काम में आता है या किसी अपराधी को छुड़वाने के लिए आपके पास फोन आता है तो आप कैसे देखते हैं, आप क्या करते हैं ?

ऐसा देखा जाता है कि उन लोगों की भी कुछ मजबूरी होती है वह हमें फोन करते हैं लेकिन यह हमारा सोचना है कि, जो लीगल है विधि सम्मत है वही कार्यवाही करना है और हमारे द्वारा बताए जाने पर कई बार वह लोग समझ भी जाते हैं, तो ठीक है। नहीं तो फिर हमें कानूनी कार्रवाई के साथ से तो काम करना ही होता है और बाद में उन्हें यह एहसास हो भी जाता है कि यह चीज इस तरह से ही होना थी। तो हम लोग कानून से बंधे हुए हैं। हमारा पहला काम है कि पीड़ित को न्याय दिलाना

आमजन को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

आमजन को हम यही संदेश देना चाहेंगे कि आप लोग छोटे-छोटे बातों को अपने लेवल पर निपटा लें, किसी तरह का गुस्सा ना करें। अन्य कोई बात है तो 100 नंबर पर खबर करें। पुलिस को अपना मददगार समझे यह ना समझे कि पुलिस हमारी सुनेगी की नहीं। हमारे वरिष्ठ अधिकारी हमको हर मीटिंग में प्रोत्साहित करते हैं इसीलिए पुलिस को अपना मित्र समझे परिवार का सदस्य समझे और जो भी समस्या उसमें घबराए बिल्कुल ना और ना कोई निर्णय स्वयं ले अगर आपके साथ कुछ गलत हुआ है तो आप तत्काल मारपीट ना करें बल्कि सीधे 100 नंबर पर फोन कर दें थाने पर आकर रिपोर्ट करें आपको न्याय मिलेगा।

आमजन की पहुंच आप तक आसानी से है या कोई प्रतिबंध रहता है ?

आप देख सकते हैं हमारे यहां थाने पर जो भी आता है सीधे हमारे पास तक आ सकता है। हमारे यहां के दरवाजे हमेशा खुले रहते हैं,कोई भी व्यक्ति हो हमें 24 घंटे कभी भी फोन कर सकता है और इंदौर में सभी थानों पर इस तरह की व्यवस्था है हमारे वरिष्ठ अधिकारी जब सब लोगों से सामान्य रूप से मिल रहे हैं तो हमारे स्तर पर तो कोई प्रतिबंध है ही नहीं। आमजन आसानी से कभी भी हमसे मिल सकता है शिकायत कर सकता है उसके साथ हम न्याय करने का प्रयास करते हैं।

घरेलू हिंसा के मामले में पुलिस का क्या रोल रहता है ?

घरेलू हिंसा में कई बार यह देखा जाता है कि पति पत्नी के झगड़े हैं उसमें समझाइश देने से भी मान भी जाते हैं,तो हम लोगों की पहली कोशिश होती है कि पति को डांट -डपट कर समझा दे। उसको एक डर रहे पुलिस का कि उसको बंद न करें पर उस पर एक डर बना रहे और दोबारा उस से लिखवा कर बांड ओवर करवा कर उसको समझाते हैं जिससे उसका घर भी ना टूटे फिर भी ना माने तो फिर हम समस्त प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करते हैं। प्रयास रहता है कि घर परिवार भी ना टूटे और महिला प्रताड़ित भी ना हो। तो कह सकते हैं कि इसमें पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

sponcership
DETECTIVE GROUP
Detecting the truth
WWW.DETECTIVEGROUP.IN

You Tube Detective Group Report
SUBSCRIBE

☞पुलिस को अपराधियों में खौफ पैदा करने के लिए कमिश्नर प्रणाली एक अच्छा टूल है, इस टूल का बेहतर तरीके से उपयोग करके निश्चित तौर पर अपराधियों पर अंकुश लगाया जाएगा तो कुल मिलाकर जनता को ही राहत मिलेगी।

☞जो विधायक सांसद या जनप्रतिनिधि है उनके साथ हमारा संवाद होता ही रहता है। उन्हें हमारी और हमें उनकी जरूरत रहती है, यह संवाद सेतु बना रहता है तो आई डोंट नो इसे हस्तक्षेप कहा जाए? क्योंकि कानून सबके लिए एक बराबर का है किसी को थोड़ा बहुत तो आप ओब लाइज कर सकते हैं, बट किसी को कानून से परे जाकर लाभ देने की कभी कोई अधिकारी प्रयास नहीं करता है।

☞"3P" अर्थात "पुलिस प्रेस प्रॉसिक्यूटर तीनों मिलकर ही आपराधिक प्रदूषण कम कर सकते हैं और इसमें तीनों के जो अपने-अपने रोल है उसे अगर हम ईमानदारी से अदा करे तो निश्चित रूप से जनहित के लिए अच्छा काम होगा।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

श्री पंकज द्विवेदी जी
परदेशीपुरा थाना प्रभारी

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली जो लागू हुई है उसे आप किस नजरिए से देखते हैं ?

♦ कमिश्नर प्रणाली ही अर्बन पुलिसिंग का मॉड्यूलर है। अर्बन पुलिसिंग के लिए तो पुलिस आयुक्त और उसकी पद संरचना ही बेसिक है, बहुत जरूरी हो जाता है जब कोई भी शहर जब महानगर का रूप ले लेता है, तो यह अच्छा है। काफी दिनों से यह था इसके लागू हो जाने से लोगों को काफी सुविधा प्राप्त होगी। कानून व्यवस्था और लोक व्यवस्था कायम करने में भी काफी मदद मिलेगी। काफी पावर ऐसे हैं जिनके लिए दूसरी एजेंसियों पर निर्भर करना पड़ता था। वह पुलिस के हाथ में होगी तो निश्चित ही त्वरित निर्णय लेकर और बेहतर पुलिसिंग दे पाएंगे।

आम जनता को इस से कितना लाभ मिलेगा ?

♦ इससे आम जनता को बहुत लाभ मिलने वाला है इसलिए मिलने वाला है कि जो अपराधिक तत्व है वे जब अपने सीमित दायरे में आएंगे,जब बा उंडेशन होगा, उनका डिटेंशन सेंटर जेल में भेजा जा सकता है। तो इससे दूसरी ओर जो व्यक्तिगत अपने कार्यक्रमों के लिए कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के पास जाना होता था, उन पर निर्भर होते तो उससे उनकी निर्भरता भी खत्म होगी।

अपराधियों पर खाकी का खौफ और बढ़ेगा इस पर आप क्या कहना चाहते हैं ?

♦ देखे जैसा कि महाकवि तुलसीदास जी ने कहा था कि" भय बिन प्रीत ना हो गोसाई " जब तक अपराधियों पर खौफ नहीं होगा तो अपराधियों को भी अपराध से दूर रखने में कठिनाई महसूस होगी। तो सामान्य रूप से अपराधियों पर पुलिस का अपना खौफ और आम जनता पर अपना विश्वास पैदा कर सके और यह कर पाती है,तो पब्लिक को हमेशा लाभ मिलता है।

इंदौर में ड्रग्स का काला बाजार बहुत बढ़ रहा है,उसमें युवा वर्ग बहुत लिप्त हो रहा है, इस पर आप क्या कहना चाहेंगे ?

♦ कई सारी चीजें हैं जो युवाओं को प्रभावित करती है, कम उम्र ही ऐसी होती है। तो निश्चित तौर पर महानगर में उन्हें बहुत सारी चीजें उपलब्ध होती रहती है। हम लोग अपने नेटवर्क के सहारे ड्रग्स पर नकेल कसने का पूरा प्रयास कर रहे हैं और दूसरी ओर युवाओं को प्रेरित करने का भी प्रयास कर रहे हैं, कि इन नशे की चीजों से दूर रहे, उनके लिए कैंपेनिंग भी की जा रही है, लगातार दोनों ही ओक्सेप्ट पर पुलिस काम कर रही है। ड्रग्स नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए लगातार मुखबिर तंत्र का सहारा लेकर कैसेस भी रजिस्टर्ड किए जा रहे हैं। दोनों ही दिशा में काम करेंगे तो आगे चलकर अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

पुलिस प्रशासन को राजनीतिक हस्तक्षेप का कितना सामना करना पड़ता है ?

♦ मैं इसे राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं कहूंगा मेरे 22 साल की सर्विस में कहीं हस्तक्षेप तो नहीं मिला। लेकिन ऐसा नहीं कह सकते कि किसी राजनीतिक प्रतिनिधि का फोन न आता हो। राजनीति के लोग हैं,सरकार में है, सामाजिक कामों से जुड़े हुए हैं, लोगों की उन तक पहुंच होती है, जनप्रतिनिधि होते हैं लोगों की समस्याएं सुनते हैं। उसके निराकरण के लिए वे प्रशासनिक अधिकारियों को फोन करते हैं,तो हस्तक्षेप तो नहीं है लेकिन पैरेलल है। लोगों की समस्याओं से वह भी दो-चार होते हैं तो हमें फोन लगाते हैं, मुझे हस्तक्षेप जैसा नहीं लगता है, जिस काम के लिए उनका फोन आया है वह करने जैसा होता है तो निश्चित रूप से करते हैं। जो करने लायक नहीं होता है तो उसके लिए उन्हें शालीनता से समझा भी दिया जाता है।

बाल अपराध को सुधारने के लिए आपके पुलिस के क्या प्रयास होते हैं?

♦ बाल अपराध सुधार में सुधार लाने के लिए जहां भी बच्चों की इकाई होती है स्कूल होते हैं, वहां पर जाकर बच्चों को हम प्रेरित करते हैं कि आदमी की नजर पहचानना सीखें और बच्चों को गुड टच बैड टच के बारे में समझाते हैं। तो एक ओर अवेयरनेस कैंपेनिंग करते हैं, दूसरी और कहीं ऐसी कोई रिपोर्ट आती है उस रिपोर्ट की कनशन में हम लोग सजग रहते हैं।

इंदौर में स्पा केंद्रों के नाम से जो घटनाएं हो रही है उस पर आपकी क्या टिप्पणी है और कितना नियंत्रण हुआ है ?

♦ देखिए कितना नियंत्रण हुआ है इसमें मैं आकलन नहीं कर सकता। मैं जिस थाना क्षेत्र को रिप्रेजेंटेड करता हूं उसे थाना क्षेत्र में स्पा जैसी कोई घटना नहीं हुई है। लेकिन पुलिस ऐसी गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए सदैव कार्यवाही करती ही रहती है

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

♦ घरेलू हिंसा में मैं पुरुष को दोषी मानता हूं, कारण यह है कि एक मनोविज्ञान है आदमी कमजोर पर ही वार करता है, जुल्म करता है। चाहे समाज का संपन्न वर्ग हो, ऊंची जाति का वर्ग हो, जवान हो, कमजोर पर आदमी ही वार करता है। बच्चे बुजुर्ग और महिलाएं निश्चित तौर पर समाज के कमजोर वर्ग हैं और कमजोर पर तो जुल्म किए ही जाते हैं और होते ही रहे हैं। इसीलिए कानून हमेशा कमजोर के साथ खड़ा रहता है। क्योंकि फरियादी और आरोपी की जो अवधारणा है । कि जो फरियादी है वह कमजोर है आरोपी जो है वह सशक्त भी है। घरेलू हिंसा भी इससे भिन्न नहीं है, घरेलू हिंसा में भी महिला कमजोर पक्ष है, महिलाओं पर पुरुषों की प्रधानता को सार्वभौमिक रूप से सारा देश ही स्वीकार करता है,तो में बताना चाहता हूं कि पुरुष अपने मद में चूर रहता है, तो घरेलू हिंसा में पुरुष का ज्यादा अहम भाग रहता है। अगर वह थोड़ा सा संयम बरतें अपनी मर्यादा में रहे, तो घरेलू हिंसा के केसेस कुछ कम होंगे। दोनों तरफ जिम्मेदार है लेकिन मेरे द्वारा जो ऑब्जर्व किया है उसमें पुरुष की प्रधानता ज्यादा लगती है।

आदतन अपराधी जब आपके सामने आते हैं तो आपकी क्या प्रतिक्रिया रहती है ?

♦ देखिए आदतन अपराधी दो तरह के होते हैं और दोनों के लिए रवैया थोड़ा भिन्न हो जाता है। एक आदतन अपराधी ऐसा होता है जो है हैवीचलअफेंडर है, उसे लगातार वारदात करना होता है, वह करता ही जाता है एक लगातार जो अपराध कर रहा है उसके प्रति थोड़ा सख्त रवैया रहता है और जिसका लंबे अंतराल के बाद किसी कारणवश कोई अपराध रजिस्टर्ड होने जा रहा है, तो उसके प्रति थोड़ा सा नरम रुख रहता है। लेकिन दोनों ही पक्ष में लेंस लगाकर जरूर देखते हैं कि क्या कारण रहा।

सामाजिक बदलाव में पुलिस की क्या भूमिका होती है ?

♦ सामाजिक बदलाव में पुलिस की बहुत वृहद भूमिका है जब कभी किसी सोसाइटी में कुछ नए चेंजेज आते हैं तो वहां पुलिस को अगवा रहना पड़ता है। कोई व्यवस्था निर्मित करना होती है तो वहां पुलिस को अगवा रहना पड़ता है। हमारी अनिवार्यता यानी कि पुलिस की अनिवार्यता सभी जगह सभी क्षेत्र में है। जब सारा देश एक ताले में बंद हो चुका था, उस समय सिर्फ पुलिस थी जो रोड पर थी, तो सामाजिक रूप से कोई भी परिवर्तन आता है कोई भी व्यवस्था लागू होती है तो उसमें पुलिस का बहुत महत्वपूर्ण रोल हो जाता है और वह समय-समय पर बदलता रहता है। आपातकाल में हम हेल्पर के रूप में काम करते हैं और सामान्य दिनों में हम दांडिक प्रक्रिया के तहत काम करते हैं और जो तीसरा पहलू हमारा होता है गश्त के रुप में,जब सारी दुनिया सोती है तो रात में उनकी प्रॉपर्टी आदि की सुरक्षा के लिए रखवाली के लिए रात में जागते हैं। तो सामाजिक बदलाव की जहां भी बयार चलती है,तो पुलिस को जो दायित्व सोपें जाते हैं वह काम करती है और कुल मिलाकर पुलिस का बहुत महत्वपूर्ण रोल है।

आपके थाना क्षेत्र में चोरी डकैती लूटपाट स्नैचिंग कि आज की तारीख में क्या स्थिति है ?

♦ पिछले वर्ष की तुलना में एक सवा महीने की आंकड़ों की अगर तुलना की जाए तो निश्चित रूप से वह आंकड़ा 2020 और 2021 की तुलना में कम ही है।

न्याय प्रक्रिया में पुलिस का कितना सहयोग या उनकी भूमिका होती है क्या रोल रहता है ?

♦ न्यायालय प्रक्रिया में शुरू से लेकर आखिरी तक पुलिस का महत्वपूर्ण रोल होता है। पुलिस से अपने आपको यह सोच कर इतिश्री नहीं कर सकती की किसी मामले में अभियोजन प्रपत्र तैयार कर दीया न्यायालय में चालान पुट अप कर दिया। गवाह को कोर्ट तक पहुंचाने की, गवाह को सुरक्षा प्रदान करने की, मुलजिम को माननीय न्यायालय में उपस्थित कराने की,हर चरण में, मतलब एक केस रजिस्टर्ड होने से आरोपी को सजा हो जाने तक न्यायालय के साथ ही पेरेलल काम करना होता है।

'3P' अर्थात 'पुलिस प्रेस प्रॉसिक्यूटर के समन्वय पर आप क्या विचार रखते हैं ?

♦ तीनों का ही समाज के प्रति बड़ा महत्वपूर्ण जवाबदेही है क्योंकि अगर तीनों ही सकारात्मक पहलू को सदैव सामने लाने का प्रयास करेंगे तो उसे न केवल पॉजिटिविटी आएगी बल्कि जो सफाई का काम है जिसे हम कहते हैं, यह प्रदूषण अलग अलग तरह का होता है। एक आपराधिक प्रदूषण होता है, तो प्रदूषण को जो मुक्त किया जा सकता है। तो तीनों मिलकर ही आपराधिक प्रदूषण कम कर सकते हैं और इसमें तीनों के जो अपने-अपने रोल है उसे अगर हम ईमानदारी से अदा करे तो निश्चित रूप से जनहित के लिए अच्छा काम होगा।

समाज के लिए आप कोई संदेश देना चाहेंगे?

समाज के लिए मैं यही संदेश देना चाहता हूं कि

"इंसान का इंसान से हो भाईचारा"
" यही संदेश हो आज तो हमारा "
और
"जोत से जोत जलाते चलो"
"प्रेम की गंगा बहाते चलो" ।

☞ HELP DESK : हेल्प डेस्क जो एक नई व्यवस्था है, कमिश्नर सिस्टम के बाद कमिश्नर साहब द्वारा दिए गए निर्देशों के तहत कार्रवाई की जा रही है। कई बड़े थाने हैं थानों पर ज्यादा रिपोर्ट आती है स्टाफ कम कब पड़ता है। सुनवाई के लिए आदमी इधर-उधर भटकता है तो हमारा यह प्रयास रहता है कि, थाना प्रभारी है, हो सकता है किसी काम से बाहर हो, थाने पर नहीं हो, अन्य कामों में व्यस्त है या हे भी तो कोई डायरी का अवलोकन कर रहे हैं या कोई दूसरे काम में व्यस्त हैं। और फरियादी अब आता है तो उसे यह समझने के लिए उसको क्या काम है,उसकी क्या समस्या है, उसको समझने के लिए एक हेल्प डेस्क बनाई गई है। तो जो फरियादी आता है, उसे इधर उधर न भटकना पड़े, फरियादी हेल्प डेस्क पर आकर अपनी समस्या बताएं। समस्या सुनकर ड्यूटी ऑफिसर जो होता है, वह उसे बताता है कि किस अधिकारी के पास उसको जाकर संपर्क करना है। सत्यापन का काम है या किसी विवेचक से काम है या थाना प्रभारी से काम है तो डेस्क अधिकारी जो होता है,वह उसको मार्गदर्शन करता है, और फरियादी को यह सुविधा हो जाती है। इसी उद्देश्य से हेल्पडेस्क का एक नया प्रोजेक्ट हमने शुरू किया है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसे आप किस तरह से देखते हैं आपका नजरिया क्या है ?

♦ कमिश्नरी प्रणाली को बहुत सकारात्मक रूप से देखते हैं पुलिस को उत्तरदायित्व के साथ में जिम्मेदारी मिली है, जो शक्तियां मिली है अपराध रोकने के लिए जो अच्छी है, हम पर जो विश्वास जाहिर किया है, हम लोग उसको पूरा करेंगे।

पुलिस प्रशासन को इस से कितना लाभ होगा ?

♦ पुलिस प्रशासन को इस से निश्चित रूप से लाभ होगा पहले अपराधियों पर कार्यवाही करने के लिए प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करने के लिए उनको बाउंड ओवर करवाने के लिए फिर बाद में उसका जो उल्लंघन करते थे उनके लिए वे फिर से अपराध करते थे तो उन पर सही एवं प्रतिबंधात्मक कार्रवाई करने के लिए अन्यत्र देखना होता था अभी जो हमारे कमिश्नर साहब और अन्य अधिकारी है वह अपना निर्णय लेकर आसानी से उन पर कार्यवाही कर पाएंगे तो पुलिस प्रशासन को काम करने मेंआसानी होगी।

जो आदतन अपराधी है उन पर आपकी क्या टिप्पणी है ?

♦ जो आदतन अपराधी है हमारा यही सोचना है, कि जो अपराधी है और जेल चले जाते हैं, उसके आने के बाद फिर वह अपराध करते हैं, उनके कारण समाज में भय बना रहता है, एक डर बना रहता है लोगों में। उनकी रिपोर्ट कम करते हैं, इसलिए पुलिस उन पर ज्यादा से ज्यादा प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करती है, 110 और 122 की कार्यवाही करती है जिला बदर करती है और रासुका की कार्रवाई भी करती है। यह सब जो कार्यवाही है यह सब आदतन अपराधियों के लिए ही बनी है।

आदतन अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा मिलना चाहिए यह आम धारणा है,आपका क्या कहना है?

♦ जैसा आपका मानना है हमारा भी यही मानना है और हम तो यह मानते भी हैं,कि जो अपराधी है उस को कड़ी से कड़ी सजा मिलना चाहिए और हमारा कर्तव्य भी है, कि ऐसे अपराधियों को

संवाद और परिचर्चा

श्री तहज़ीब काज़ी
थाना प्रभारी - विजय नगर

अधिकतम सजा दिलवाई जाए। उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करें। और जो सज्जन लोग हैं,वह समाज में निर्भीक होकर विचरण कर सकें। इसलिए अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

वरिष्ठजनों की सुरक्षा के लिए पुलिस के कितने सकारात्मक प्रयास होते हैं ?

♦ वरिष्ठजनों की सुरक्षा के लिए थानानुसार सूचियां बनाई गई है, किस थाने क्षेत्र में कितने सीनियर सिटीजन रहते हैं, अकेले रहते हैं, ऐसे के लिए संवाद के लिए एक सिस्टम बनाया गया है। जब उन्हें आवश्यकता होती है पुलिस की, सहायता की जरूरत होती है, तो उनके साथ संपर्क करके यथासंभव उन से बात करके, हमारे जो कांटेक्ट प्लान है, उसी आधार पर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था करते हैं।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

♦ घरेलू हिंसा में मानसिक विकार संबंधी प्रमुख कारण होते हैं और इसी कारण परिवार में झगड़े होते हैं। क्रोध में आकर आदमी हिंसा करता है, भावनाएं होती है उसके कारण से झगड़े होते हैं, अगर आपस में व्यवहार अच्छा रखे तो घरेलू हिंसा की संभावनाएं कम रहेगी।

धार्मिक उन्माद भड़काने वाले कौन होते हैं, किस कारण से एक दूसरे के धर्म के लोग आपस में विवाद करते हैं लड़ते हैं और इस पर आपके क्या विचार है?

♦ बहुत से ऐसे फैक्ट होते हैं, जिनके कारण यह धार्मिक विवाद होता है, उन्माद फैलता है, मीडिया -सोशल मीडिया है या अफवाह फैलती है तब या ऐसे लोग लोगों का ब्रेनवाश करके या अफवाह फैलाकर झगड़े वगैरह कराते हैं , तो पुलिस निष्पक्षता से कार्यवाही करती है। जो उपद्रवी होते हैं उनके खिलाफ कार्रवाई होती।

आमजन को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

♦ आमजन के लिए हमारा यही संदेश है कि पुलिस आपकी सेवा और सुरक्षा के लिए है। उसको हमेशा सहयोग करें और जब भी कभी कोई विपत्ति हो या किसी समय या किसी भी तरह की सुरक्षा संबंधी आवश्यकता हो सेवा की आवश्यकता है, तो पुलिस को याद करें और जब पुलिस को किसी और नागरिक की सुरक्षा या सेवा के तारतम्य में आपकी आवश्यकता पड़े तो आप भी पुलिस की सहायता अवश्य करें।.

राजनैतिक समन्वय को आप कैसे देखते हैं? प्रशासनिक हस्तक्षेप कितना रहता है उस पर आप क्या टिप्पणी करेंगे ?

♦ जहां तक मैं समझता हूं कि राजनीतिक प्रेशर पुलिस में बहुत कम है, कि मुझे तो नहीं लगता है कि किसी अपराधी को छुड़ाने के लिए कोई जनप्रतिनिधि का फोन आता हो। किसी चोर के लिए या अपराधी को छुड़ाने के लिए कोई फोन करता है। सामान्य व्यवहार में कभी कोई ऐसा अपराधी, जिससे कभी कबार कोई अपराध हो जाता है, वे जनप्रतिनिधि के पास जाते हैं। तब जनप्रतिनिधि पुलिस को फोन करते हैं। सामान्य प्रजातंत्र के अधिकार के तहत जानकारी मांगते हैं। हमारे द्वारा उनको बताया जाता है कि इसके द्वारा ऐसा ऐसा अपराध किया गया है। तो हमारी बात को मानते हे और पुलिस पर वह अनैतिक कार्य करने के लिए कभी दबाव नहीं बनाते हैं।

न्यायिक प्रक्रिया में पुलिस प्रशासन कितना सहयोगी है ?

♦ न्यायिक प्रक्रिया में सबका अपना अपना रोल है, पुलिस का भी अपना रोल है, पुलिस में वारंट तामील कराने में समंस तामिल कराना पुलिस अपराधी को गिरफ्तार करती है। चालन प्रोड्यूस करती है। पुलिस का अपना काम है जो पुलिस न्याय प्रक्रिया में सहयोग के रूप में करती है।

पुलिस और प्रेस में कैसा समन्वय होना चाहिए इनकी भूमिका पर आप क्या विचार रखते हैं ?

♦ देखिए प्रजातांत्रिक देश है यहां पर संवैधानिक व्यवस्था है, सबका समाज में अपना अपना महत्वपूर्ण स्थान है। प्रेस निश्चित रूप से समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है, प्रजातंत्र में वह एक प्रहरी का काम करती है, अगर कोई अनजान हो अन्याय होता है या कानून का उल्लंघन हो रहा है। कोई भी एजेंसी अगर गलत काम कर रही है इस समय प्रेस को भी और पुलिस को भी सहयोग करना चाहिए। और अगर कोई ऐसी संदिग्ध जानकारी है तो उसको बताने में संकोच नहीं करना चाहिए। प्रेस और पुलिस दोनों अपने-अपने डिग्निटी के हिसाब से काम करें यही हमारी अपेक्षा रहती है।

अगर आप पुलिस विभाग में नहीं होते तो कहां होते हैं?

♦ अब तो मैं सोचता हूं कि इतना लंबा समय हो गया है, पुलिस से और वर्दी से इतना प्यार है कि पुलिस के बिना में कल्पना भी नहीं कर सकता। अब तो इसके बिना सोचना भी मुश्किल है कि यदि मैं पुलिस में नहीं होता तो क्या करता? हां पर मैं यह सोचता हूं कि अगर पुलिस में नहीं होता तो शायद कोई खिलाड़ी होता कोई स्पोर्ट्समैन होता खेल खेल रहा होता।

sponcership

ड्रग्स का व्यापार इंदौर में अधिक बढ़ रहा है और युवा वर्ग इस में लिप्त हो रहा है इस पर आप क्या कहेंगे ?

♦ इस पर भी पुलिस की कार्यवाही लगातार जारी है, पहले इस तरह से होता था कि ड्रग्स से जुड़े सूत्र पर जो कार्यवाही होती थी,जो व्यापारी होते थे वही पकड़ में आते थे। लेकिन अब कमिश्नर साहब ने यह निर्देश दिया है कि जो लोग ड्रग्स पीते हैं या कंज्यूम करते हैं,जो एडिक्ट है,उनकी लिस्ट बनाते हैं,उनसे पूछताछ करते हैं। उनके खिलाफ 8 बटा 27 की कार्यवाही करते हैं और जो ड्रगीस्ट है,उनसे जानकारी लेते हैं। कि उनको ड्रग्स उपलब्ध कौन करवाता है,फिर हम उस चैन को पकड़ते हैं और प्रमुख स्रोत तक जाते हैं। जो इसके बड़े वितरक हैं, उनको हम ने मुलजिम बनाया है उन पर इनाम घोषित करवाए हैं और उनके खिलाफ कार्यवाही की गई।

☞ जबसे पुलिस का उदय हुआ है जबसे आदतन अपराधियों के विरुद्ध सखत् रवैया रहा है। पुलिस के पास जो अधिकार है विभिन्न कानूनों के द्वारा अधिकार प्रदान किए गए हैं। उनका बेहतर तरीके से अभी भी प्रयोग कर रहे थे और कमिश्नर प्रणाली में और बेहतर तरीके से उन अधिकारों का प्रयोग किया जाएगा।

☞ शासन नीति बनाता है शासन नीति निर्धारक तत्व है और प्रशासन उसका पालन करता है। प्रशासन का काम उसको लागू करना है। एक क्रम है,उसके अनुसार जिसको जो दायित्व है दायित्व का निर्धारण है उसी अनुसार वह अपने अपने दायित्वों को पूर्ण करता है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री सुनील शर्मा
थाना प्रभारी - सराफा

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इससे पुलिस प्रशासन पर कितनी जिम्मेदारी बढ़ेगी और इससे जनता को कितना लाभ मिलेगा ?

♦ काफी समय से इंदौर में पुलिस प्रणाली पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू करने की कयावद चल रही थी। इसे लागू किया गया है तो निश्चित ही इससे पुलिस प्रणाली में और भी बेहतर तरीके से सुधार होगा। बहुत सारे अधिकारों के साथ-साथ बहुत सारी जवाबदेही भी पुलिस की बढ़ेगी और एक जो सुपरविजन लेबल है। निर्णय लेने की क्षमता है उसमें भी काफी बढ़ोतरी होगी। आम जनता को इससे आवश्यक रूप से फायदा होगा।

क्या अपराधियों पर शिकंजा कसा जाएगा ?

♦ निश्चित रूप से पुलिस द्वारा अपराधियों पर पूर्व से ही शिकंजा कसा गया है और अब पुलिस को नई प्रणाली और नए अधिकार जब मिलेंगे तो और बेहतर तरीके से अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सकेगी।

जो आदतन अपराधी हैं उन पर आप क्या दृष्टिकोण रखते हैं ?

♦ जबसे पुलिस का उदय हुआ है जबसे आदतन अपराधियों के विरुद्ध सखत् रवैया रहा है। पुलिस के पास जो अधिकार है विभिन्न कानूनों के द्वारा अधिकार प्रदान किए गए हैं। उनका बेहतर तरीके से अभी भी प्रयोग कर रहे थे और कमिश्नर प्रणाली में और बेहतर तरीके से उन अधिकारों का प्रयोग किया जाएगा।

इंदौर में मौत के सौदागर ड्रग्स के रूप में जो व्यापार बढ़ा रहे हैं उन पर कंट्रोल कैसे होगा ?

♦ ड्रग्स के मामले में तो जीरो टॉलरेंस की नीति हमेशा पुलिस की रही है। क्योंकि बहुत सारे अपराधो की जड़ ड्रग्स होती है। ड्रग्स के कारण कई अपराध होते हैं पुलिस का कोई भी कर्मचारी और अधिकारी हो वह नशे के खिलाफ नशे व्यापार या इससे जुड़े लोगों को कुचलने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

युवा वर्ग नशे की गिरफ्त में ज्यादा आ रहा है इसको कैसे सुधारा जा सकता है ?

♦ इसके लिए कानूनी प्रावधान के साथ-साथ सामाजिक के जागरूकता,चेतना और शिक्षा में कुछ सुधार करके, पारिवारिक और सामाजिक संगठन है, उनको बेहतर तरीके से जागरूक करें। और कानून तो अपना काम कर ही रहा है। तो निश्चित रूप से युवाओं को बेहतर ढंग से हम सुधार करने का प्रयास कर सकते हैं।

शासन और प्रशासन के मध्य आप किस तरह से समन्वय स्थापित कर पाते हैं ?

♦ जिसमें हम कह सकते हैं कि शासन नीति बनाता है शासन नीति निर्धारक तत्व है और प्रशासन उसका पालन करता है। प्रशासन का काम उसको लागू करना है। एक क्रम है,उसके अनुसार जिसको जो दायित्व है दायित्व का निर्धारण है उसी अनुसार वह अपने अपने दायित्वों को पूर्ण करता है। ठीक तरह से समन्वय स्थापित किया जाता है।

कार्य में राजनीतिक हस्तक्षेप की भूमिका को आप किस तरह से देखते हैं ?

♦ नहीं ऐसा कोई राजनैतिक हस्तक्षेप कार्य में नहीं रहता है। कोई भी राजनीतिक दल हो कोई भी ग्रुप हो सबकी अपनी अपनी भूमिका होती है। सबकी अपनी अपनी जवाबदेही है सब की एक सीमा है उसके हद में वह काम करते हैं। तो मेरा मानना है कि इस तरह का राजनीतिक हस्तक्षेप बहुत ज्यादा हमारे काम में नहीं है।

आपका क्षेत्र व्यवसाय क्षेत्र है और यहां आपसी विवाद सुलझाने में पुलिस की क्या भूमिका होती है ?

♦ जी यहां मेरा जो क्षेत्र है व्यवसाय क्षेत्र है,यहां कोई क्रिमिनल नहीं रहते,सभी व्यापारी लोग रहते हैं। कभी कबार किसी छोटी बात को लेकर या किसी गलतफहमी को लेकर कोई विवाद कभी हो जाते हैं। उस समय हमारा प्रयास रहता है कि दोनों पक्षों को बैठा कर,उस गलतफहमी को दूर किया जाए। और जो विवाद है उनको उनकी एसोसिएशन के माध्यम से या उनके जो बड़े बुजुर्ग लोग हैं उन के माध्यम से समझौता करने का प्रयास किया जाता है। और इसमें काफी सफलता भी मिलती है बहुत जल्दी आपस में वे लोग समझ जाते हैं और विवादों का निपटारा करते है।

लगातार घरेलू हिंसा के अपराध बढ़ रहे हैं इसमें आप किसे दोषी मानते हैं?

♦ मैं यहां तक समझता हूं इस तरह के अपराध में अभी तो कमी आई है। घरेलू हिंसा है या महिला संबंधित जो अपराध है, कमी आई है और महिला संबंधी जो कानून है जो विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। शासन द्वारा प्रशासन द्वारा पुलिस विभाग द्वारा एनजीओ द्वारा उसका भी ए फैक्ट है कि महिला अपराधों में और घरेलू हिंसा जैसे अपराधों में कमी आ रही है।

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस द्वारा कितने सकारात्मक प्रयास किए जाते हैं ?

♦ वरिष्ठ जनों की सुरक्षा का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसके लिए हम लोग लगातार कार्य करते हैं, कई योजनाएं हम चलाते हैं, जिसमें वरिष्ठ पुलिस पंचायत का प्रयास जारी है। हम लोगों द्वारा वरिष्ठ जनों की एक सूची तैयार की जाती है महीने में एक बार उन सभी से हमारा कर्मचारी जाकर एक बार कम से कम मिलने का प्रयास करता है। और जब विभिन्न होली दिवाली जैसे त्यौहार आते हैं,तब भी जाकर उनसे हम लोग मिलते हैं। ताकि उससे उनको एकाकीपन और परेशानी ना हो। लॉकडाउन के दौरान भी लगातार हम लोगों के संपर्क में रहे और हम लोगों के द्वारा जो भी अच्छे से अच्छा बन सका वह हम लोगों ने किया। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भी लगातार हमारे प्रयास जारी रहते हैं।

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस द्वारा किए जा रहे कार्यों से क्या सामाजिक बदलाव आएगा ?

♦ देखिए पुलिस की बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। समाज के प्रति और समाज में अपराधों का नियंत्रण करना उन पर कंट्रोल करना तो पुलिस का कार्य है ही,इसके अलावा समाज में जागरूकता हो अपराधियों और अपराध के प्रति सजगता हो। समाज में कोई भी कुरूति हो या ऐसी कोई परंपरा जिससे अपराध का उदय होता हो। उसे रोकने में रोकथाम करने के लिए हमारा पूरा प्रयास होता है, जिसके लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जाती है। तो हमारा मानना है कि पुलिस के प्रयासों से बदलाव निश्चित रूप से आएगा।

आपके थाना क्षेत्र में चोरी, स्नैचिंग ,डकैती जैसे अपराधों के ग्राफ में बढ़ोतरी हुई है या कमी?

♦ क्षेत्र थोड़ा संवेदनशील है, व्यापारी क्षेत्र है इसलिए चैन स्नैचिंग जैसी घटनाएं कम होती है । हां कभी कभार चोरी जैसी घटनाएं जरूर होती हैं। इसके सुरक्षा के लिए हमारे द्वारा एक बहुत अच्छा प्रयास किया गया है। पूरे क्षेत्र को उन केमरों के माध्यम से कवर किया हुआ है। और जिसकी परिणीति यह है कि, पिछले 2 वर्ष में जो भी घटना हुई है उसको हमने तुरंत पर्दाफाश किया और आरोपियों को उनके मुकाम तक पहुंचाया है।

कैमरे वाला जो प्रयोग आपने किया है शायद आपके थाने में ही सबसे ज्यादा यह सफल प्रयोग माना जाएगा?

♦ क्योंकि यह क्षेत्र ही ऐसा है कि यहां पर कैमरे बहुत आवश्यक है। इसमें सराफा क्षेत्र में जितने भी एसोसिएशन है संगठन है वे सभी पूरा सहयोग करते हैं। और जन सहयोग से उनके सुरक्षात्मक सिस्टम डिवेलप किया जा रहा है। इस प्रयास में लगातार सफलता मिल रही है।

आमजन के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

♦ जनता के लिए तो पुलिस का हमेशा यही संदेश है। कि सभी सुरक्षित रहे और सभी बिना किसी भय के, बिना किसी डर के अपना जो कार्य है वह करें। उसके लिए हमेशा हम तत्पर हैं पुलिस अपना कार्य कर रही है और आप भी जो अपना दायित्व है उसका निर्धारण और अपने कार्य करने का उद्देश्य पूरा कर सकते हैं।

बाल अपराध पर पुलिस के द्वारा किस तरह से नियंत्रण किया जा सकता है?

♦ वास्तव में जो बाल अपराध के लिए कानून में बहुत सारे उसके प्रावधान है उसका पालन हम लोगों को करना है। उसके लिए बहुत सारे एनजीओ बहुत सारे सरकारी विभाग एवं संगठन अलग से भी कार्य कर रहे हैं। और इस क्षेत्र में बाल अपराध जैसी कोई घटना नहीं है इन्हीं प्रयासों से बाल अपराध को नियंत्रित किया जा सकता है।

☞ घरेलू हिंसा पर

टीवी और मोबाइल ... जो टीवी सीरियल है जो सबसे ज्यादा इंटरनेट का यूज़ है, व्हाट्सएप इंस्टाग्राम इन सबके कारण आपस में घर में छोटी-छोटी बातों को लेकर मनमुटाव बढ़ता है और फिर वह घरेलू हिंसा में तब्दील हो जाता है तो हम कह सकते हैं कि आधुनिक संसाधन जो है वह घरेलू हिंसा के लिए कारण बन रहे हैं।

☞ पुलिस प्रशासन में कसावट

पुलिस प्रशासन में निश्चित रूप से कसावट आएगी। क्योंकि छोटे स्तर पर और पूरे शहर को 4 सेक्टर में बांटा गया है, और प्रत्येक सेक्टर में 8-8 थानों पर पुलिस अधीक्षक महोदय की स्थापना की गई है। जब 8 थानों पर सुपरविजन पुलिस अधीक्षक महोदय स्तर के अधिकारी करेंगे, तो निश्चित ऊपर से लेकर नीचे तक कसावट आएगी और व्यवस्थाओं में अच्छा सुधार होगा।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री संजय शुक्ला
थाना प्रभारी - एरोड्रम

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसकी सफलता और पुलिस प्रशासन में इससे कसावट आएगी ?

♦ इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि जो अपराध और अपराधियों पर अंकुश लगाने का दायित्व है, वह अभी तक जिला बदर या एनएसए 107 या 110 बांड ओवर की जो कार्यवाही होती थी, उसके लिए एसडीएम महोदय कलेक्टर महोदय पर आश्रित रहना पड़ता था। उसमें हमारे यहां से प्रतिवेदन तैयार कर वरिष्ठ अधिकारियों के माध्यम से एसडीएम साहब और कलेक्टर साहब के समक्ष प्रस्तुत होता था। तब उस पर विचार शुरू होता था, यह जो प्रक्रिया थी इसको सरलीकरण करते हुए यह सारे अधिकार पुलिस आयुक्त महोदय को दे दिए गए हैं। यह कम से कम समय में अधिक से अधिक कार्यवाही किए जाने और अपराधियों और अपराध पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से किया गया।

अपराध के ग्राफ में पिछले वर्ष की तुलना में गिरावट आई है या बढ़े है ?

♦ निश्चित रूप से कमी आई है वाहन चोरी,नकब जनी, मारपीट, हत्या के प्रयास और हत्या जैसे अपराधों में फिलहाल कमी आई है।

चूँकि आपका क्षेत्र वीआईपी है तो आमजन और वीआईपी में आप कैसे तालमेल बिठाते हैं ?

♦ आम आदमी का जो रूटीन का कार्य और आम आदमी जो अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहता है। हमारे क्षेत्र में वीआईपी का मूवमेंट होता है,थोड़े समय के लिए वहां भी हमें अटेंड करना होता है,वे आते हैं उनके निकलने के बाद हम को फिर से आम आदमी के बीच और थाने पर आकर व्यवस्थाओं को संभालना होता है।

ऐसा कोई अपराधी भी आपके समक्ष आया हो जब आपको चौकना पड़ा हो ?

♦ हां ऐसे एक बार हुआ था मैं जब जबलपुर में था, तो एक छठवीं क्लास के बच्चे ने सातवीं क्लास के बच्चे के सीने में चाकू भोंक किया था। हालांकि उस बच्चे को वहां के जो जनप्रतिनिधि थे, तत्काल उनके सहयोग से मेडिकल कॉलेज में जाकर भर्ती कराया गया, ऑपरेशन करवाया गया, उसकी जान बचाई गई। उस घटना ने मुझे निश्चित रूप से अंदर तक झकझोर दिया था और सोच में पड़ा था कि कहीं ना कहीं यह बच्चों में गलत प्रभाव हो रहा है।

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार बहुत बढ़ रहा है इससे युवा वर्ग में कितना हानी उठा रहा है ?

♦ ड्रग्स के कारण सबसे ज्यादा युवा वर्ग ही प्रभावित है। और इसके सुधार के लिए लगातार ड्राइव चलाई जा रही है। पुलिस कमिश्नर महोदय द्वारा इस पर बहुत ही ज्यादा फोकस करके, सभी अधिकारियों को ऊपर तक के स्तर के सभी अधिकारियों को मीटिंग लेकर, इस बारे में बताया है। कि इसकी जो चैन है, इसको हर हालत में खत्म करना है। और कार्यवाही भी की जा रही है, इसके लिए एक रिहैब सेंटर भी बनाया गया है। सुधार केंद्र पर भेजा जाता है और पुलिस के द्वारा अच्छे प्रयास किए जाते है।

सुनने में आया है कि इस विषय में अंतर राज्य गिरोह भी सक्रिय है उस पर पुलिस कितनी सख्त है ?

♦ उसके लिए नाकाबंदी है क्राइम ब्रांच की टीम लगातार काम कर रही है। क्राइम ब्रांच नारकोटिक्स ब्यूरो हैं, यह लोग लगातार इस पर काम कर रहे हैं। जो बड़े पैमाने पर अंतर राज्य गिरोह ड्रग्स की सप्लाई करते हैं, उनके ऊपर बराबर नजर रखते हैं, सूचना संकलन करते हैं और फिर पकड़ कर कार्रवाई करते हैं।

शहर में वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस का क्या महत्वपूर्ण रोल होता है ?

♦ शहर में वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए उनके सहयोग के लिए अतिरिक्त पुलिस उप आयुक्त श्री प्रशांत चौबे जी द्वारा लंबे समय से एक कार्यक्रम किया जा रहा है। जिसमें वरिष्ठ लोगों की पूरी सुनवाई होती है, जिसमें जैसे घर की कोई पारिवारिक परेशानी है, इलाज में कोई दिक्कत आ रही है, तो हॉस्पिटल में काफी कम खर्च में इलाज कराया जाता है। पुलिस के द्वारा काफी सकारात्मक प्रयास किए जाते हैं।

बाल अपराध को सुधारने के लिए पुलिस के क्या प्रयास है ?

♦ बाल अपराध को सुधारने के लिए एक बाल संरक्षण अधिकारी होता है। जैसे बच्चों के संबंध में कोई शिकायत आती है,तो उसकी सुनवाई वह करते हैं, यदि बच्चे द्वारा कोई घटना घटित कर दी गई है। उसके लिए सिविल कपड़ों में रहकर पुलिस ड्रेस पुलिस वेशभूषा में नहीं रह कर। उसकी सुनवाई करते हैं, उसकी काउंसलिंग करते हैं, उसके बाद उनको बाल कल्याण समिति के समक्ष ले जाते हैं। वह लोग भी काउंसलिंग करते हैं। उनका ब्रेनवाश करके उनको मुख्यधारा में लाने का प्रयास करते हैं।

आपके क्षेत्र में चैन स्नैचिंग लूट डकैती की वारदातों पर कितना फर्क पड़ा है ?

♦ हमारे क्षेत्र में लास्ट ईयर डकैती एक हाइलिंग सिटी में हुई थी। उसमें जो पीड़ित थे, उनके ही परिवार के कोई लोग सम्मिलित थे। जिनके षड्यंत्र से वह घटना हुई थी। बाकी चेन स्नेचिंग की घटनाएं होती है? उसको रोकने के लिए उसके लिए लगातार सुबह दोपहर शाम को पुलिस की पार्टियां बनाकर पेट्रोलिंग करा कर चारों तरफ से घेराबंदी की जाती है। फिलहाल हमारे क्षेत्र में इन गतिविधियों पर अंकुश लगा हुआ है।

न्याय प्रक्रिया जो होती है उसमें पुलिस का कितना सहयोग रहता है ?

♦ कोई भी घटना घटित होती है थाने पर रिपोर्ट होती है, थाने में विवेचना के उपरांत न्यायालय में अभियोग पत्र पेश होता है। न्यायालय से समंस वारंट ईशु होते हैं उसको तामिल की करवाई कर, माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना होता है या आरोपियों को गिरफ्तारी वारंट जारी जारी होता है तो उसको गिरफ्तार करके पेश करना होता है। तो एक दूसरे के सहयोग से ही यह सब संभव हो पाता है न्यायालय के आदेश पर पुलिस कार्य करती है, पुलिस अपने दायित्व का निर्वहन करती है।

आम जनता की पहुंच आप तक कैसी है ?

♦ आम जनता से लगातार संवाद करना पड़ता है,चौराहे पर खड़े होकर आसपास के जो लोग हैं, या कालोनियों में जनसंवाद के माध्यम से उनकी मीटिंग लेकर उनकी समस्याओं के बारे में सुनना और उन समस्याओं के निराकरण का प्रयास करना। यह सब एक दूसरे से बातचीत करके हम लोग एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं और प्रयास करते हैं कि लगातार संवाद बना रहे।

"पुलिस हमारी मित्र - टीआई हमारा भाई "

यह मुहिम 2016 से छपारा से शुरू की गई थी मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा इसको काफी अपनाया गया। सोशल मीडिया के माध्यम से जब यह काफी चर्चा में आया तो 2018 में उत्तर प्रदेश पुलिस ने इस मुहिम को अपनाया था। मुझे सोशल पुलिस का बड़ा चाव रहा है, मंडला जिले के एक थाने की दीवार को हमने कैनवास के रूप में उपयोग किया। सेव टाइगर के अभियान को वहीं से हमने चलाया जीवंत पेंटिंग वहां पर बनाई गई। इस प्रकार से हमने वहां पर नवाचार का प्रयोग किया

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है, उसकी सफलता की कितनी संभावना है और आम आदमी को इससे क्या लाभ होगा?

♦ इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू होने से इसकी सफलता में कोई संशय नहीं है। इसमें पुलिस को काम करने का सीधे निर्णय लेने का अधिकार मिलेंगा और एक कम्युनिकेशन में जो टाइम लग जाता था वह फास्ट हो जाएगा। इसलिए पुलिस तत्परता से कोई निर्णय ले सकेगी, कानून व्यवस्था में सुदृढ़ता आएगी। पुलिस व्यवस्था में सुधार होगा पुलिस तत्परता से काम करेगी तो निश्चित रूप से आम आदमी को लाभ मिलेगा पुलिस की सेवाएं उसको जल्दी मिलेंगी।

इससे पुलिस प्रशासन में भी कसावट आएगी?

♦ ऑफ कोर्स निश्चित रूप से क्योंकि पुलिस प्रशासन में कमिश्नर प्रणाली में सुपर विजन और तगड़ा हो जाता है। थानों को और हैंड मिल जाते हैं काम करने के लिए सुपर विजन अच्छे से प्रॉपरली हो रहा है।

'पुलिस हमारी मित्र - टीआई हमारा भाई ' अभियान आपके द्वारा चलाया गया है इस पर आप बताइए ?

♦ टी आई के रूप में मेरा पहला थाना था जिला सिवनी में छपारा थाना। वहां पर असल में राखी के अवसर पर हमने एक अभियान चलाया था, हमारी थाना क्षेत्र में जो हमारी माता बहने हैं जितनी भी महिलाएं हैं। लड़कियां हैं उनके मन में विचार है कि थाना प्रभारी टीआई जो है वह हमारा भाई है। अमूमन देखने में आता है कि किसी को भी थाना आने में बड़ी हिचक होती है और खासकर महिलाओं को तो और भी ज्यादा झिझक होती है। वह किसी न किसी का साथ ढूंढती रहती है। बिचौलियों को कई बार फायदा मिलता है। पुलिस से सीधा कम्युनिकेशन नहीं हो पाता है,पुलिस तक सीधी पहुंच नहीं हो पाती है। क्योंकि मेरी पोस्टिंग अधिकतर गरीब और आदिवासी इलाकों में होती रही है वहां पर मैंने इस बात को नोटिस किया कि जो गांव के लोग हैं महिलाएं हैं व थाना आने में हिचकते है। तो यह इसीलिए अभियान चलाया था कि यह सब कम्युनिकेशन दूर हो और उन्हें लगे भाई के ऑफिस जा रही है। तो निश्चित रूप से वह यहां आकर सीधे टीआई को अपनी पीड़ा बता सकते हैं।

कमिश्नर प्रणाली से अपराधियों में खाकी का खौफ बढ़ेगा?

♦ निश्चित रूप से जैसे हमारी न्याय की मंशा होती है, आम आदमी जो है उसके अंदर एक निर्भयता का माहौल हो। उनके अंदर डर का माहौल ना हो । और जो गुंडे बदमाश है उनके अंदर डर का माहौल होना चाहिए। तो कमिश्नर प्रणाली इस बात की सुनिश्चितता प्रमाणित करेगी।

' टीआई हमारा भाई' यह प्रयास इंदौर में आपके द्वारा नहीं किया गया, क्या यहां भी यह अभियान चलेगा और लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी ?

♦ इंदौर की जहां तक बात है अभी यहां आए हो मुझे चार-पांच महीने ही हुए हैं। हीरानगर थाने में मेरी पहली पोस्टिंग है। क्योंकि यह अभियान अपना असर दिखाता है रक्षाबंधन के समय और जब रक्षाबंधन आएगा तो यहां पर भी इस अभियान को चलाया जाएगा। काफी लोगों को इसके बारे में पहले से जानकारी है। यह मुहिम 2016 से छपारा से शुरू की गई थी मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा इसको काफी अपनाया गया। सोशल मीडिया के माध्यम से जब यह काफी चर्चा में आया तो 2018 में उत्तर प्रदेश पुलिस ने इस मुहिम को अपनाया था। यूपी के पुलिस अधिकारी ने सभी अपने मातहतों को बोला था कि यह गली गली मोहल्ले मोहल्ले अभियान चलना चाहिए। साथ ही में महाराष्ट्र और यूपी पुलिस के कई अधिकारियों ने इसे अपनाया, बाद में इसके बहुत ही चमत्कारिक रिजल्ट मिले हैं। क्योंकि मैंने अपने थाने में देखा था कि साल के अंत में महिलाओं के क्राइम रेट में काफी गिरावट आई थी। इसके साइड इफेक्ट बहुत से सामने आते हैं इससे पुलिस की इमेज में काफी इजाफा हुआ। साथ ही कानून व्यवस्था में इसका बहुत फायदा मिलता है। बहुत सारे अपराध होने के पहले ही पुलिस को सूचना मिल जाती है। जो बेसिक पुलिसिंग है उसमें भी इसका काफी लाभ मिलता है। कई फरारी आरोपियों को हमने पकड़ा है। मैं जहां भी जिस थाने में भी रहूंगा उस थाने में यह अभियान चलाया जाएगा मुहिम चलाई जाएगी।

संवाद और परिचर्चा

श्री सतीश पटेल
थाना प्रभारी - हीरानगर

आपके द्वारा वन्य प्राणियों के लिए भी काफी काम किए है उसके बारे में बताइए ?

♦ एक बार जब मैं कान्हा क्षेत्र में पदस्थ था मंडला जिले में खटिया थाना,क्योंकि वहां पर नेशनल पार्क है। एक बार जब एक टाइगर से बहुत नजदीक से आमना-सामना हुआ, देखा तो सेव टाइगर से जुड़ गया। वहां पर थाना था काफी समय से वह अस्त-व्यस्त और बिना रंग रोगन के था। मुझे सोशल पुलिस का बड़ा चाव रहा है, स्थानीय लोगों एवं एक रिसोर्ट के मालिक महेश्वरी जी उनसे मिलकर उस थाने पर जो मुख्य सड़क पर था। जहां से लाखों पर्यटक आते जाते थे थाने की दीवार को हमने कैनवास के रूप में उपयोग किया। सेव टाइगर के अभियान को वहीं से हमने चलाया जीवंत पेंटिंग वहां पर बनाई गई। इस प्रकार से हमने वहां पर नवाचार का प्रयोग किया, वहां के जो चीफ कंजरवेटर ऑफिसर द्वारा बताया गया कि यह देश का पहला थाना है जिस तरह का अभियान कोई चलाया गया है।

आपके द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण के लिए भी काफी प्रयास किए गए इस पर कुछ बताइए ?

♦ मेरी पोस्टिंग मंडला जिले में रही है विजय राणा एक थाना था वहां पर अतिक्रमण बहुत था, सड़क के दोनों ओर वहां पर छात्रों को छात्राओं को आने जाने में काफी बाधिश में तकलीफ होती थी। काफी गंदगी थी तो हमने एक मुहिम चलाई" ब्यूटीफुल विजय राणा "तो आम जनता के सहयोग से वहां पर हमने अतिक्रमण हटाया। और वहां पर शुक्रवार को जब हाट बाजार लगता था तो शनिवार को हम सारे लोगों को इकट्ठा करते थे, गांव के लोगों को मिलकर अच्छा माहौल बनाकर स्वच्छता अभियान को चलाया गया था। उससे आपस में कम्युनिकेशन बनता था और एक चाय पार्टी के साथ से सौहार्द्र का वातावरण बनता था।

☞ अधिकारियों के द्वारा इसके लिए जो रोडमैप तैयार किया गया है। कमिश्नर सिस्टम के लिए तो निश्चित रूप से उससे कसावट बड़ी है और धीरे-धीरे आपको दिखाई देगा कि वह परिलक्षित होने लगेगा कि किस तरह से पुलिस का सिस्टम काम कर रहा है और सफल भी हो रहा है।

☞ समाज के लिए मनोरंजन करने का फिल्मों का अपना स्तर है उनकी अपनी परिकल्पना है। पुलिस अपना कार्य करती थी करती है और करती रहेगी।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

थानाप्रभारी - जूनी इंदौर इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है, इसकी सफलता की कितनी संभावना है व इससे आम आदमी को कितना लाभ मिलेगा?

♦ इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है यह निश्चित रूप से सफल होगी। इसके पीछे हमारे माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान साहब की जो योजना थी, एक अच्छी कल्पना है एक अच्छी योजना है, और हमारे जो वरिष्ठ अधिकारीगण हैं माननीय कमिश्नर महोदय है और जो भी वरिष्ठ अधिकारीगण इस योजना में लगे हुए हैं और निश्चित रूप से यह इंदौर में सफल होगी। अधिकारियों के द्वारा इसके लिए जो रोडमैप तैयार किया गया है। कमिश्नर सिस्टम के लिए तो निश्चित रूप से उससे कसावट बड़ी है और धीरे-धीरे आपको दिखाई देगा कि वह परिलक्षित होने लगेगा कि किस तरह से पुलिस का सिस्टम काम कर रहा है और सफल भी हो रहा है।

इंदौर में अपराध का ग्राफ बढ़ा है या कम हुआ है पिछले वर्ष की तुलना में?

♦ इस बारे में जानकारी देना थोड़ा कठिन है मेरे लिए थोड़ा सा कठिन लग रहा है

इंदौर में ड्रग्स का काला बाजार काफी तेजी से बढ़ रहा है इसमें युवा वर्ग भी लिप्त हो रहा है आप किस तरह से देखते हैं ?

♦ इसमें कार्यवाही की जा रही है और निश्चित रूप से कुछ बड़ी कार्यवाही भी पूर्व में पुलिस के द्वारा की गई है। हमारे वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निर्देश दिए गए हैं कि इस संबंध में कठोर से कठोर कार्यवाही की जाए। तो वरिष्ठ

संवाद और परिचर्चा

श्री अभय नेमा
थाना प्रभारी - जूनी इन्दौर

अधिकारियों की मंशा अनुसार इस पर पुलिस प्रशासन काम कर रहा है।

पुलिस के द्वारा न्यायिक प्रक्रिया में कितना सहयोग किया जाता है ?

♦ न्यायालय प्रक्रिया में पुलिस का पूर्ण सहयोग है। न्यायालय द्वारा जो भी पत्रिकाएं जारी की जाती है जो उक्त आदेश जारी किए जाते हैं उनकी तामिली की जाती है और प्रयास किया जाता है कि हर दम आदेशों की तामिली पूरी पूर्ण की जाए और प्रकरण जो चल रहे हैं उनका निकाल हो रहा है

आपके थाना क्षेत्र में चैन स्नैचिंग लूट डकैती गुंडागर्दी की वर्तमान स्थिति क्या है ?

♦ जो भी सूचनाएं आती है उन पर कार्रवाई की जाती है

क्या आप मानते हैं कि इंदौर में भ्रष्टाचार का ग्राफ बढ़ा है ?

♦ इस संबंध में तो बहुत स्थिति साफ नहीं कर पाऊंगा, क्योंकि मैं एक छोटे से थाने का प्रभारी हूं। पूरे जिले के बारे में बात करेंगे तो मेरे लिए संभव नहीं होगा,कि मैं इस संबंध में कोई जवाब दे पाऊंगा।

बाल अपराध को कैसे सुधारा जा सकता है ?

♦ बाल अपराध निश्चित रूप से बढ़ रहे हैं। उसमें हमारी कुछ सामाजिक कमजोरियां है। उसमें सुधार के लिए उस स्तर पर कार्य करना पड़ेगा तब बाल अपराध पर कंट्रोल हो सकता है। इसके लिए पुलिस के द्वारा मोहल्लों में जाकर समय-समय पर जन जागरण के कार्य किए जाते हैं। उनसे बात करके उनको समझाइश दी जाती है। हम कह सकते हैं कि पुलिस के द्वारा इसके लिए भी उचित प्रयास किए जाते हैं।

आपके क्षेत्र की जनता को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

♦ आम आदमी को हमारा यही संदेश है कि सावधान रहें। यदि कोई अपराध की सूचना मिलती है तो उसे पुलिस तक पहुंचाएं और पुलिस का सहयोग करें। पुलिस को आप सहयोग करेंगे तो निश्चित रूप से आपको एक अच्छा सहयोग मिलेगा और अपराध में रोक लगेगी। पुलिस प्रशासन द्वारा निश्चित रूप से अपने ही जिम्मेदारी का निर्वहन किया जाएगा।

क्या आप ऐसा मानते हैं कि पिछले समय में फिल्मों द्वारा या टीवी द्वारा पुलिस की छवि को कम कर प्रस्तुत किया गया है ?

♦ देखे वह एक माध्यम है समाज के लिए मनोरंजन करने का,मीडिया का मीडिया है उनकी अपनी परिकल्पना है। पुलिस अपना कार्य करती थी करती है और करती रहेगी। पुलिस विभाग बहुत अच्छे से कार्य कर रहा है और भविष्य में अच्छे से यह कार्य करते रहेंगे पुलिस का समाज के प्रति दायित्व जो है वह पुलिस निभा रही है।

☞ "घर छोड़कर ना जाओ "इसके माध्यम से हमारे द्वारा महिलाओं से संवाद किया जाता है। मोहल्ले में जाकर संवाद संपर्क किया जाता है। स्कूल में बच्चों को जाकर समझाइश दी जाती है।

☞ समाज को भी अपनी भूमिका समझना चाहिए, हम किसी को ब्लेम नहीं कर रहे हैं लेकिन आप भी देखते हैं कि कोई एक्सीडेंट हो गया है। उसको पहुंचाने में मदद नहीं करते,जबकि अब तो यह हो गया है कि जो इस तरह से पीड़ित को अस्पताल पहुंचाएगा उसे यातायात प्रबंधन के द्वारा 5000 रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री प्रीतम सिंह ठाकुर
थाना प्रभारी - रावजी बाजार

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इससे शहर को और आम जनता को क्या लाभ होगा ?

♦ निश्चित रूप से लाभ होगा आपने देखा होगा कि शहर के 32 थाने हैं । और इंदौर में कमिश्नर प्रणाली के कारण 32 थानों में जो पुलिस बल है और हमारे जो सीनियर ऑफिसर हैं। उनकी भी नियुक्तियां हुई है, निश्चित रूप से क्लोज मॉनिटरिंग है, इस आधार पर हम कह सकते हैं कि, इससे निश्चित रूप से इंदौर की जनता को बहुत लाभ मिलने वाला है। इससे अपराधियों पर निश्चित रूप से कड़ा शिकंजा कसा जाएगा,। गिरफ्तारी अभी उतनी ही शीघ्र हो रही है क्योंकि 1-2-1 मॉनिटरिंग अपराधियों की भी हो पा रही है।

क्या लापरवाह कर्मचारियों पर इसका कोई असर होगा डर बनेगा ?

♦ मेरा मानना है कि पुलिस प्रशासन का डर सिर्फ अपराधियों में होना चाहिए। जो अपराधिक गतिविधियों में लिप्त है उन पर डर पैदा होना चाहिए, बाकी जो लापरवाह कर्मचारी हैं, तो उस पर उसी समय विभागीय कार्यवाही हो जाती है उसे उस तरह का पनिशमेंट मिल जाता है।

इंदौर शहर में ड्रग्स का व्यापार बहुत फैल रहा है उस में युवा वर्ग काफी लिप्त हो रहा है पुलिस प्रशासन कैसे कंट्रोल करेगा?

♦ इंदौर पुलिस लगातार ही इस विषय में कार्यवाही कर रही है। इस तरह का व्यापार जहां पर है,वहां पर क्राइम ब्रांच और पुलिस विभाग द्वारा सभी थानों पर लगातार कार्यवाही हो रही है। इसमें अभियान भी चलने वाला है कि जो ड्रग एडिक्ट हो चुके हैं। यह एक बीमारी हो जाती है कि वह चाह कर भी नशे को छोड़ नहीं सकते है। उनके लिए रिहैब सेंटर के माध्यम से सुधार जैसी कार्यवाही लगातार जारी है।

ड्रग्स पर शहर में कोई बड़ी कार्यवाही जो आपको याद आती हो?

♦ हां बिल्कुल शहर में बड़ी कार्यवाही की गई है। हमारे इंदौर की पुलिस व क्राइम ब्रांच के द्वारा बड़ी कार्रवाई की गई है। जिसमें इंदौर में 70 से 80 लोगों को गिरफ्तार किया गया, इसमें अंतर राज्य गिरोह के सदस्य भी शामिल थे उनको, पुलिस की क्राइम ब्रांच द्वारा गिरफ्तार किया गया। साथ ही विजयनगर थाना और खजराना थाना तेजाजी नगर थाना आदि स्थानों पर, तथा हमारे यहां भी काफी कार्यवाही की गई।

क्या महिलाओं का भी अपराध में शामिल होने जैसा दिखाई दे रहा है, क्या कार्यवाही?

♦ नहीं ऐसा तो नहीं कह सकते, कि महिलाओं के अपराध में लिप्तता बढ़ रही है। हमारे डीसीपी साहब ने join4 में एक अभियान चलाया है- "घर छोड़कर ना जाओ "इसके माध्यम से हमारे द्वारा महिलाओं से संवाद किया जाता है। मोहल्ले में जाकर संवाद संपर्क किया जाता है। स्कूल में बच्चों को जाकर समझाइश दी जाती है। इसके फायदे भी हो रहे हैं और इसमें यह भी बताया जाता है कि आप किस Age में क्या कर सकते हैं। और इसके लाभ भी नजर आ रहे हैं, तो मैं कह सकता हूं कि महिलाओं का अपराध की तरफ बढ़ना ऐसा तो कोई रुझान समझ में नहीं आता है।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं?

♦ घरेलू हिंसा में ऐसा माना जाता है कि हर जगह अलग-अलग परिस्थितियां होती है। कहीं पर वास्तव में महिलाएं पीड़ित होती है,थोड़ा वो संकोच भी करती है, थाने आने में, शिकायत करने में, निश्चित रूप से जो अपने पैरों पर खड़ी है, जो जॉब कर रही है वह तो घरेलू हिंसा का शिकार नहीं हो पाती है। वह तो बहिष्कार भी करती है और रिपोर्ट भी दर्ज करा देती है। लेकिन जो महिला घर में रहती है या जॉब नहीं करती है उनको थोड़ा सा डर लगता है । कि एकदम से रिपोर्ट करने में उन्हें संकोच होता है। पुलिस थाने में आने में तो हम लोगों का भी है प्रयास होता है कि, हम एकदम से उनकी रिपोर्ट नहीं करते हैं। हमउन लोगों को काउंसलिंग के माध्यम से समझाने का प्रयास करते हैं। एकदम से अपराध दर्ज नहीं करते हैं। दोनों पक्षों और उनके सगे संबंधियों को बुलाकर समझाते हैं, बीच का रास्ता निकालते हैं,लेकिन कभी-कभी अपराध दर्ज भी करना पड़ते हैं। परिस्थितियों पर डिपेंड करता है कि कौन दोषी है पुरुष या महिला। अलग-अलग परिस्थितियों में दोनों दोषी हो सकते हैं

वरिष्ठ जन जो शहर के हैं उनके लिए सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से पुलिस के क्या प्रयास होते हैं ?

♦ वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस के द्वारा काफी अच्छे प्रयास किए जाते हैं। और इंदौर में हमारे नोडल ऑफिसर श्री प्रशांत चौबे साहब हैं, जिनके द्वारा अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं। उनके द्वारा सीनियर सिटीजन को कार्ड दिया गया है, सभी जगह नंबर उपलब्ध हैं,किसी भी थाने पर कोई भी समस्या आती है । तो संबंधित थाने के स्टाफ के द्वारा उनकी समस्या का निराकरण किया जाता है।

सामाजिक बदलाव में पुलिस की क्या भूमिका होती है?

♦ मेरा ऐसा मानना है कि समाज को भी अपनी भूमिका समझना चाहिए, हम किसी को ब्लेम नहीं कर रहे हैं लेकिनआप भी देखते हैं कि कोई एक्सीडेंट हो गया है।उसको पहुंचाने में मदद नहीं करते,जबकि अब तो यह हो गया है कि जो इस तरह से पीड़ित को अस्पताल पहुंचाएगा उसे यातायात प्रबंधन के द्वारा 5000 रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। हम देखते हैं कि ऐसे अवसर पर जो वीडियो फुटेज बनाते रहते हैं।उनको मदद कर के अस्पताल नहीं पहुंचाते हैं। जो कि उनको करना चाहिए, पुलिस भी समाज से ही आती है पुलिस के द्वारा काफी योगदान होता है।

धार्मिक उन्माद यदि होते हैं तो आप की क्या भूमिका है ?

♦ धार्मिक उन्माद के समय अक्सर यह देखा गया है कि कभी-कभी कोई व्यक्ति विशेष द्वारा अपने व्यक्तिगत फायदे को लेकर उस चीज को क्रिएट कर देता है। सभी धर्म को अपने अपने हिसाब से धर्म के काम करना चाहिए,धर्म के अनुसार धार्मिक त्योहार आदि मनाते रहना चाहिए, मनाना चाहिए। रेलिया जुलूस आदि की व्यवस्था होती है और सभी त्योहारों पर शांतिपूर्वक हम लोगों के द्वारा व्यवस्था की जाती है। सभी के द्वारा इस तरीके प्रयास किया जाना चाहिए जिससे धार्मिक उन्माद के समय सामाजिक एकता बनी रहे। पुलिस का हमेशा सहयोगात्मक रवैया रहता है। सभी धर्मों के प्रति हमारा सम्मान रहता है।

☞हर मोहल्ले में बीट प्रभारी , थानापभारी के नम्बर लगे होते हैं। उनपर सीधे भी अपराध की सूचना दी जा सकती है। समय पर सूचना मिलने पर पुलिस तत्काल कार्यवाही करती है। जनता के सहयोग से कई अपराध रोके जा सकते हैं ।

☞जनता की भागीदारी से जन सहयोग से लोगों में जनसवांद के माध्यम से वार्ता की जाती है । और प्रयास रहता है कि अपराध न हो । अपराध यदि हो भी तो जनता के सहयोग से पता लगाना और उसके उपर शीघ्र कार्यवाही करना , समाधान करना इस तरह से सामाजिक बदलाव में पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है ।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

पुलिस कमिश्नर प्रणाली से इंदौर की आम जनता को क्या लाभ होगा ?

♦ इंदौर में पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इससे एक बात साफ है, कि इससे पुलिस प्रशासन के लिए जिम्मेदारी बढ़ेगी और बखूबी निभा भी रही है पुलिस । पुलिस विभाग में सभी टीम के रूप में काम करते हैं और निश्चित रूप से अपराधियों में भय बढ़ेगा क्योंकि आम जनता का रिस्पांस भी इसमें मिल रहा है और यह पुलिस विभाग के लिए एक अच्छा अवसर है इससे अपराधियों में भय बढ़ेगा ।

गत वर्ष की तुलना में इन 2 माह में अपराध का ग्राफ बढ़ा या घटा है ?

♦ हम बात करें पिछले वर्ष की तुलना में इन 2 माह में तो अपराध घटित जो हुए हैं वह अलग बात है । पर अपराधों का शीघ्र विवेचन करना और सॉल्व करने की जो प्रक्रिया पुलिस के द्वारा अपनाई गई है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि पिछले वर्ष की तुलना में इन दो मांहों में अपराध कम घटित हुए हैं ।

ड्रग्स के जो घटना इंदौर में हो रही है उसमें युवा वर्ग शामिल हुआ है क्या कहना चाहेंगे ?

♦ इस विषय में मेरा मानना है कि ड्रग्स की जो घटनाये घटित हुई है उस पर कड़ी कार्यवाही की गई है, लगाम भी लगी है । सूचना मिलने पर कड़ी कार्यवाही भी की जाती है । जनता की तत्परता भी जरूरी है । पुलिस सजगता से कार्य करती है ।

आपके क्षेत्र में चोरी, चेन स्नेचिंग, लूटपाट, छेड़छाड़ जैसे अपराध की स्थिति क्या है ?

♦ हमारे थाना क्षेत्र में वर्तमान में काफी सुधार है । पुलिस गस्त बराबर रहती है, जन सहयोग से c c t v केमरों की व्यवस्था की गई है, इन सभी उपायों से उक्त घटनाओं पर अंकुश लगा है । फिर भी यदि अपराध हो जाते हैं तो इस आधार पर अपराधियों को पकड़ने की कोशिश की जाती है और पुलिस को इस कार्य में सफलता भी मिलती है ।

संवाद और परिचर्चा

श्री गोपाल परमार
थाना प्रभारी - अन्नपूर्णा

घरेलु हिंसा में किसे दोसी मानते हैं ?

♦ हम सभी एक सामाजिक परिवेश में रहते हैं, परिवार में किस तरह का तनाव किस स्तर पर है, इस बात पर निर्भर करता है । दोनों ही पक्ष यदि प्रयास करें बराबरी से प्रयास करें तनाव न हो तो घरेलू हिंसा न हो ।

आपके क्षेत्र की आम जनता को कुछ सन्देश देना चाहेंगे

♦ यही सन्देश है कि अगर आपके सामने कोई अपराध हो रहा है या किसी भी अपराधी की जानकारी आपको है तो उसकी जानकारी पुलिस को देवें, 100 नवम्बर पर । महिलाओं से सम्बन्धित कोई अपराध होतो 1098 पर सूचित करें। कोई संदिग्ध व्यक्ति नजर आए तो सूचना देवें । हर मोहल्ले में बीट प्रभारी, थानापभारी के नम्बर लगे होते हैं । उनपर सीधे भी अपराध की सूचना दी जा सकती है। समय पर सूचना मिलने पर पुलिस तत्काल कार्यवाही करती है । जनता के सहयोग से कई अपराध रोके जा सकते हैं ।

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा हेतु पुलिस का क्या व्यवहार होता है ?

♦ इस तरह की कोई शिकायत आती है तो पुलिस द्वारा तत्परता से कार्य वाही की जाती है । 100 नंबर पर कोई भी सूचना दे सकता है । यह सुविधा सभी के लिए है । वरिष्ठ जन कभी भी सीधे आकर संपर्क कर सकते हैं किसी भी अधिकारी से मिल सकते हैं, उनकी शिकायत पर तत्काल कार्यवाही की जाती है ।

सामाजिक बदलाव में पुलिस की कितनी भूमिका आप मानते हैं ?

♦ सामाजिक बदलाव में पुलिस का अहम रोल होता है , जनता की भागीदारी से जन सहयोग से लोगों में जनसवांद के माध्यम से वार्ता की जाती है । और प्रयास रहता है कि अपराध न हो । अपराध यदि हो भी तो जनता के सहयोग से पता लगाना और उसके उपर शीघ्र कार्यवाही करना , समाधान करना इस तरह से सामाजिक बदलाव में पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

बाल अपराध पर पुलिस का सुधार हेतु क्या प्रयास रहते हैं ?

♦ इस विषय में पुलिस द्वारा लगातार लोगों से जनसंवाद और डिसकशन किया जाता है । पुलिस और जनता की मीटिंग की जाती है। कम उम्र के नाबालिग बच्चे जो ग़लत दिशा में जाते हैं उन्हें समझाईस देकर संवाद के माध्यम से अपराध की तरफ जाने से रोकते हैं।

बांड ओवर की कार्यवाही क्या होती है ?

♦ यह कार्यवाही २ तरह की की जाती है
पहली - व्यकि जब अपराध करते हैं तो उनसे सदाचार के लिए बांड ओवर भरवाया जाता है । अपने आचरण में सुधार के लिए धारा 110 की कार्यवाही समयावधि के लिए न्यायालय के समक्ष निश्चित राशि की जमानत पर प्रतिबधित करवाया जाता है ।
दूसरी - परिशांति के लिए पुलिस द्वारा करवाई जाती है । जब किसी अपराधी पर पुलिस को आशंका है कि वह अपराधी शांति भंग कर सकता है तो पुलिस द्वारा प्रतिबंधात्मक धाराओं में बांड ओवर की कार्यवाही करवाई जाती है । प्रक्रिया वही रहती है ।

☞कमिश्नरी प्रणाली का आम आदमी का जो लाभ दिखेगा वह यातायात प्रबंधन में लाभ दिखेगा। या ट्रैफिक जाम जैसी स्थिति में लाभ दिखेगा। आपको यह भी दिखेगा की गुंडे बदमाश पर असर देखेगा तो आम आदमी सुकून से रहेगा।

☞ मेरे क्षेत्र में सबसे ज्यादा जो समस्या है वह वाहन चोरी की है और दूसरे नंबर पर घर में जो चोरी होती है वह। दोनों में बरामदगी का प्रतिशत काफी अच्छा है।और गुंडों के खिलाफ जिला बदर की कार्यवाही की गई है और कुछ लोगों के खिलाफ एनएसए भी करने वाले हैं।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली को आप किस तरह देखते हैं ?

♦ सफलता के लिए इसमें अपार संभावना है क्योंकि प्रतिबंधात्मक कार्यवाही के जो अधिकार है वह कमिश्नर साहब को मिल जाते हैंजिससे कि तत्काल और प्रभावी कार्यवाही होती है। पुलिस को मालूम होता है कि किस पर और कितनी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की जाना चाहिए और कहां करना है। इतने अधिकार कमिश्नर प्रणाली में मिले हैं तो उसका प्रारंभ हो चुका है और उसका प्रभाव दिखने भी लगा है।

आदमी आम आदमी को इससे कितना लाभ मिलेगा ?

♦ आम आदमी के मामले में कहना चाहूंगा कि , मामला थोड़ा सा पेचीदा है आम आदमी को इससे कोई बिजली पानी सड़क से जुड़ा हुआ कोई मामला नहीं है। जो इसमें दिखेगा आम आदमी का जो लाभ दिखेगा वह यातायात प्रबंधन में लाभ दिखेगा। या ट्रैफिक जाम जैसी स्थिति में लाभ दिखेगा। आपको यह भी दिखेगा की गुंडे बदमाश पर असर देखेगा तो आम आदमी सुकून से रहेगा।

पिछले वर्ष की तुलना में आपके क्षेत्र में अपराध का ग्राफ कम हुआ है या बढ़ा है?

♦ हां निश्चित रूप से अपराध का ग्राफ कम हुआ है , वाहन चोरी भी कम हुए हैं और घर में जो चोरियां होती थी उसकी बरामदगी का जो प्रतिशत है वह काफी बढ़ा है। तो हम कह सकते हैं कि निश्चित रूप से पिछले वर्ष की तुलना में इन दोनों में अपराध के ग्राफ में कमी आई है।

क्या अपराधियों को राहत देने के लिए राजनीतिक हस्तक्षेप कार्य में आता है ?

♦ राजनीतिक हस्तक्षेप पुलिस के द्वारा किसी गलत काम के लिए नहीं माना जाता है। फिर भी कोई आता है , तो पुलिस के द्वारा उन्हें बता दिया जाता है कि कि वह गलत है तो उनको भी मालूम हो जाता है , तो वह भी समझ जाते हैं। और मेरा मानना है कि राजनीतिक हस्तक्षेप शून्य के बराबर होता है।अपराध के लिए राजनैतिक हस्तक्षेप इंदौर में नहीं रहता है।

संवाद और परिचर्चा

श्री सतीश द्विवेदी
थाना प्रभारी -द्वारकापुरी

युवा वर्ग ड्रग्स की गिरफ्त में ज्यादा आ रहा है ? क्या इंदौर में ड्रग्स का व्यापार अधिक अपने पैर पसार रहा है ?

♦ हमारा शहर इंदौर चूंकि एक महानगर है और आसपास के जो छोटे जिले हैं। वहां की अपेक्षा यहां पर इसकी समस्या है। और अभी भारी मात्रा में इस पर कार्रवाई हुई है ,करोड़ों रुपए की ड्रग्स पकड़ी जा चुकी हैऔर लगातार पुलिस के द्वारा ड्रग्स पकड़ी जा रही है काफी अंकुश हुआ है।

त्योहारों के संदर्भ में आपके क्षेत्र की जनता को क्या संदेश ?

♦ हाल ही में होली त्यौहार आने वाला है इस पर अच्छे से सब लोग मिलजुलकर धर्मानुसार त्योहार मनाए और कोरोनावायरस का भी पालन करें। नशे का सेवन ना करें परंपरागत तरीके से होली का त्यौहार मनाए और धार्मिक विवादों को किसी तरह का स्थान न देवें, और हमारे यहां इस तरह का कोई धार्मिक विवाद है भी नहीं।

शहर के वरिष्ठ नागरिकों के लिए पुलिस की क्या सुरक्षात्मक पहल होती है?

हमारे वरिष्ठ जनों की पंचायत भी लगती रीगल चौराहे .स्थित कार्यालय पर और हमारे अधिकारी श्री प्रशांत चौबे साहब द्वारा यह सारा कार्य देखा जाता है। वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए हमारा प्रयास रहता है। उनके घरों तक भी हम जाते हैं अगर उनकी कोई समस्या होती है तो फोन पर भी समस्या का समाधान करते हैं ,पुलिस की आवश्यकता होने पर पुलिस को भी तत्काल भेजें जाता है। तो इसका भी काम चल रहा है।

घरेलू हिंसा में किसे दोषी ठहरा सकते हैं?

♦ घरेलू हिंसा में मुख्य रूप से नशा , शराब का नशा जो होता है, उसे मैं पहली प्राथमिकता दूंगा। इसके कारण घरेलू हिंसा की समस्या आती है। और दूसरा यह है कि परिवार में जो पति-पत्नी हैं उनमें समन्वय की कमी रहती है ,इसी कारण घरेलू हिंसा का कारण हो सकता है लेकिन आपसी समझ से इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

हमारे शहर में बाल अपराध काफी बढ़ रहे हैं इस पर आप क्या कहना चाहेंगे ?

♦ बाल अपराध में मेरा ऐसा मानना है कि पहले की अपेक्षा अपराधी ज्यादा निकल रहे हैं, उनका प्रतिशत बढ़ रहा है यह चिंता का विषय है। और इस पर भी हम लगातार सेमिनार आदि के माध्यम से कार्य कर रहे हैं।तमाम स्कूलों में जाकर भी हमारा प्रयास रहता है उन्हें जागरूक करने का प्रयास हमारा रहता है।और इस पर में हम लोग काम कर रहे हैं।

स्पा बनाम किसी रैकेट की कोई गतिविधियां आपके क्षेत्र में है ?

♦ मैं पिछले ढाई साल अन्नपूर्णा क्षेत्र में रहा हूं और 1 साल से मैं लगभग द्वारकापुरी क्षेत्र में हूं। .तो दोनों ही जगह मेरे क्षेत्रों में इस से रिलेटेड कोई गतिविधियां संचालित नहीं हुई दोनों में स्पा सेन्टर की आड़ में गलत जैसी कोई समस्या मेरे सामने नहीं आई बाकी शहर की जानकारी मुझे नहीं है।

भ्रष्टाचार पर पुलिस प्रशासन कितना सख्त है ?

♦ भ्रष्टाचार जैसे विषय पर पुलिस प्रशासन सबसे ज्यादा सख्त है और पूरा अंकुश है भ्रष्टाचार पर पुलिस प्रशासन द्वारा लगन और ईमानदारी से काम किया जा रहा है।

पुलिस प्रशासन का न्याय प्रक्रिया में कितना सहयोग होता है?

♦ पुलिस प्रशासन का न्याय प्रक्रिया में पूरा सहयोग होता है। हम कह सकते हैं कि न्याय व्यवस्था में पुलिस प्रशासन और न्यायालय दोनों ही दो पहिए हैं। पुलिस प्रशासन द्वारा लगातार है विवेचनाकी जाती है और न्यायालय में प्रस्तुत की जाती है। समय पर गवाहो को अदालत में प्रस्तुत करना। जिससे की गवाही समय पर हो पाए तो निश्चित रूप से पूरा सहयोग पुलिस का न्याय व्यवस्था में।

☞आपके क्षेत्र की जनता के लिए कोई संदेश ?

मैं हमारे क्षेत्र की जनता को संदेश देना चाहूंगा कि सभी लोग भाईचारे से रहे और अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा एजुकेशन देवे। एजुकेशन जितना ज्यादा रहेगा तो अपराध कम हो जाएगा उसके बाद सभी अपने परिवार और बच्चों को शिक्षा आपने नहीं दिया तो वह अपराध की ओर बढ़ सकते हैं इसलिए बच्चों को एजुकेशन दे इससे परिवार को समाज को सुकून रहेगा अपराध की ओर नहीं बढ़ेगा।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है सफलता की कितनी संभावना है और आम आदमी को इससे क्या लाभ मिलेगा?

- इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है और इसमें काफी सफलता मिलेगी, काफी नए वरिष्ठ अधिकारियों के पद जनरेट हुए हैं। इससे यह होगा कि यदि पब्लिक की कोई सुनवाई नहीं हो रही है तो अधिकारियों की लहर बनी हुई है उसमे किसी ने किसी लहर पर सुनवाई अवश्य होगी। पहले तो लगभग सभी का यह प्रयास रहता है कि है कि जो न्यूनतम इकाई है, कॉन्स्टेबल वही सुनकर इसको ऑन रोड हल कर दे। किसी को थाने आने की भी नौबत पड़ी तो उसकी सुनवाई की जाएगी और उसके बाद थाने पर भी वह संतुष्ट नहीं नहीं हो रहा है तो, सुनवाई के लिए काफी अवसर इस में नए पद जनरेट हुए हैं इसमें पब्लिक के लिए काफी अवसर हैं।

क्या इस प्रणाली में पुलिस बल और बढ़ेगा ?

- यह तो प्रशासन के ऊपर डिपेंड करता है प्रशासन को निर्णय लेना है इस विषय में।

अपराध का ग्राफ आपके क्षेत्र में कितना बड़ा है या कम हुआ है?

- अपराध में जनरल ही वह घटनाएं कम हुई है जिसमें जो समाज में डायरेक्ट इफेक्ट करती है। जिसमें छेड़छाड़ बलात्कार इन की घटनाओं में अभी विगत दो-तीन माह में लगातार कमी आई है जो पुलिस के लिए और आमजन के लिए अच्छा संकेत है।

आपके क्षेत्र में कोई धार्मिक उन्माद जैसी घटनाएं वातावरण उस पर आप का नियंत्रण कैसे होता है ?

- मेरे क्षेत्र में चंदन नगर की पब्लिक सभ्य और शालीन है और भाईचारे से निवास करती है और अभी तक ऐसी कोई समस्या मेरे सामने नहीं आई और सभी का यहां पर मिलाजुला सहयोग रहा है कि किसी प्रकार की कोई भी समस्या आती है तो सभी आगे आकर उसका निदान करते हैं।

संवाद और परिचर्चा

श्री दिलीप पुरी
थाना प्रभारी - चंदन नगर

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार काफी बढ़ रहा है इसमें युवा और महिला वर्ग भी काफी शामिल हो रहा है पुलिस प्रशासन का कैसे कंट्रोल है ?

- इस पर लगातार पुलिस कार्रवाई कर रही है इसमें कमिश्नर प्रणाली लागू होने के बाद एक ऑपरेशन प्रहार नाम का अभियान वरिष्ठ अधिकारी द्वारा चालू किया गया है। जिसमें पुलिस को काफी सफलता मिली है ,चंदननगर से ही एक ड्रग्स की चैन को पकड़ा था जिसमे उज्जैन के ड्रग सप्लायर और राजस्थान के सप्लायर भी अभी वर्तमान में जेल में है !

चंदननगर किसी समय हिंदू मुस्लिम समुदाय के लिए विवादों का विषय रहा है?

- यह तो सभी जगह रहा है इससे आप पर्टिकुलर यह नहीं कर सकते कि चंदन नगर में यह विवाद रहा है। लेकिन जहां जहां भी पब्लिक का इस तरह का विवाद रहा है वहां कोई न कोई समस्या का हल अवश्य निकला है।

क्या हम मान सकते हैं कि इनको सख्त सजा मिलना चाहिए समाज के लिए एक अभिशाप है ?

- इसमें कानून में हीं काफी सख्त सजा है तो इसमें जमानत बहुत मुश्किल से होती है और इसके अधिक से अधिक केसो में सजा ही होती है!

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस के द्वारा क्या पहल की जाती है ?

- वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए थानों पर सकारात्मक कार्यवाही की जाती है,जैसे ही कोई सीनियर सिटीजन आता है तो पहले उसकी सबसे पहले सुनवाई करते हैं। अभी सीनियर सिटीजन में क्या प्रॉब्लम आती है कि बच्चों से परेशान है पालन पोषण नहीं करते हैं या उन्हें घर पर रख नहीं रहे तो ऐसे समय में बच्चों को पुलिस के द्वारा समझाया जाता है। अगर नहीं मानते हैं तो फिर उन पर कानूनी कार्रवाई की जाती है और उन लोगों को संतुष्ट करने का पूरा प्रयास है और सफलता भी काफी मिलती है सीनियर सिटीजन के मामले में टॉप प्रायरिटी पर समाधान करने का प्रयास किया जाता है !

महिलाएं अपराध करेंगे इस पर आप क्या कहना चाहेंगे ?

- इसमें हम डिवाइड नहीं कर सकते हैं कि महिला अपराध कर रही है या पुलिस पुरुष अपराध कर रहा है, अपराध हो रहा है तो वह पुरुष भी कर सकता है और महिला भी कर सकती है ! डिपेंड करता है कि उस समय तत्कालिक सिचुएशन क्या थी। अगर आस पड़ोस के झगड़े हो रहे हैं महिला ने किसी पड़ोसी महिला को मार दिया है। तो यह नहीं कह सकते हैं कि महिला अपराध कर रही है या महिलाओं का अपराध ग्राफ बढ़ रहा है। और एक सिचुएशन थी दोनों में मार पीट हो गई और अपराध हो गया तो और केस रजिस्टर्ड हो गया।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

- घरेलू हिंसा इसमें सभी प्रकार से हो सकता है कि माता-पिता से बहू की नहीं बन रही है तो वह जाकर शिकायत करती है, उसके ऊपर हिंसा हो रही है पति से नहीं बनती है तो वह शिकायत करती है, कि हिंसा हो रही है। प्रताड़ित किया जा रहा है की बहू अपना मायका छोड़कर ससुराल आती है। इकलौती प्रसन्न रहती है वहां वह अच्छे से रहती है और यहां आने पर हो सकता है कि किसी न किसी से मनमुटाव हो या हो सकता है कि लोग परिवार में है तो कोई उनका सम्मान नहीं कर रहा ताने मारे जा रहे हो तो महिला घरेलू हिंसा पीड़ित होती है तो अगर ऐसा कुछ सामने आता है तो उस पर तत्काल कार्यवाही होती है !

क्या पुलिस द्वारा इस पर निष्पक्ष जांच होती है कार्यवाही होती है। ?

- हां पुलिस द्वारा ऐसा प्रयास किया जाता है पहले दोनों पक्षों को बुलाया जाता है आपसी सामंजस हमारी महिला पुलिस महिला ऊर्जा डेस्क के द्वारा किया जाता है।और उनको लगता है लास्ट में कि नहीं हो पा रहा है हम संतुष्ट नहीं है हम थक गए हैं परिवार की प्रताड़ना से।और वह कार्यवाई करवाना चाहे तो फिर कार्यवाही हो जाती है !

हेल्पडेस्क के बारे में कृपया बताएं?

- इसके माध्यम से यह प्रयास होता है उसमें उनको समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जाता है। घर टूटने से बचाए जाने का प्रयास रहता है और यह प्रयास होता है कि सामान्य से बना रहे या पुलिस का प्रयास हेल्पडेस्क के माध्यम से किया जाता है !

इंदौर व्यवसायिक राजधानी है यह अपराध की भी राजधानी बनने जा रही है ?

- नहीं इतना तो नहीं कह सकते इंदौर में हाई लेवल का ऐसा कोई बड़ा क्राइम नहीं है यहां पर जनरल जो एक क्राइम चल रहा है यहां कोई स्पेशल क्राइम बढ़ता जा रहा है ऐसा नहीं कर सकते !

इंदौर में पिछले दिनों फर्जी जमानतदारों का एक गिरोह काम कर रहा था उस पर पुलिस के द्वारा क्या प्रयास किए गए?

- इस बारे में मैं शायद कुछ ना कह पाऊं क्योंकि चंदन नगर में कोई कोर्ट नहीं है जिसके बारे में कुछ कह पाऊं फर्जी जमानत का अगर किसी अन्य थाने में कोई मामला है तो यह जानकारी उसी थाने से ही मिल पाएगी।

☞चालान का उद्देश्य भी कहीं ना कहीं लोगों को समझाने के लिए ही है....सिर आपका है और चिंता पुलिस को हो रही है, गाड़ी आपकी है और चिंता पुलिस को हो रही है, आपने फाइनेंस नहीं कराया आपने इंश्योरेंस नहीं कराया तो चिंता पुलिस को हो रही है ,चोरी चली गई चिंता पुलिस को हो रही है । तो यह आश्चर्यजनक बात है ना । तो चालान के माध्यम से समझाइश देने का प्रयास रहता है

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री संतोष सिंह यादव
थाना प्रभारी - गांधी नगर

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू होने से प्रशासन में क्या कसावट आएगी और आम आदमी को इससे क्या लाभ मिलेगा ?

- जैसा कि आपको मालूम है कमिश्नर प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह है कि लोगों की समस्याओं का यथासंभव, शीघ्र, गंभीरता पूर्वक और संवेदनशीलता के साथ निराकरण किया जाए। कहीं ना कहीं स्टाफ को समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने का जो अधिकारियों का मुख्य उद्देश्य है,इसी उद्देश्य के साथ में कहीं ना कहीं निश्चित रूप से अधिकारियों की जो मंशा है, वह लोगों की समस्या के लिए त्वरित निराकरण किया जाए। इससे आम लोगों को काफी मदद सहुलियत और सहयोग मिलेगा।

पुलिस की छवि नकारात्मक रूप से देखी जाती थी ,सिर्फ चालान बनाने तक की थी आज की स्थिति क्या है?

- चालान का उद्देश्य भी कहीं ना कहीं लोगों को समझाने के लिए ही है, अक्सर क्या होता है कि हम किसी व्यक्ति को समझाते हैं, तो कुछ समझ में नहीं आता है, उसका चालन 200 500 का बन जाता है ,तो चालन की स्लिप जो वह साथ में रखे घूमता है ,तो उसे कहीं ना कहीं इसका एहसास रहता है, कि हमारा यह चालन किस बात के लिए बनाया गया है। सिर आपका है और चिंता पुलिस को हो रही है ,गाड़ी आपकी है और चिंता पुलिस को हो रही है, आपने फाइनेंस नहीं कराया आपने इंश्योरेंस नहीं कराया तो चिंता पुलिस को हो रही है, चोरी चली गई चिंता पुलिस को हो रही है। तो यह आश्चर्यजनक बात है ना। तो चालान के माध्यम से समझाइश देने का प्रयास रहता है। तो मेरा तो यह मानना है कि वर्तमान जो परिस्थितियां है ,चालान के माध्यम से उनको समझाया जाए और सुधार हो जाए तो इसमें कोई बुराई नहीं है इसीलिए चलानी प्रक्रिया की जाती है।

महिलाए अपराध में शामिल हो रही है इस पर आप क्या नजरिया रखते हैं ?

- इस संदर्भ में मेरा मानना है कि जो माता-पिता है ,बच्चियों के भाई बहन है, उनको इस बात पर ध्यान देना चाहिए ,कि हमारी जो बच्ची है वह कहां जा रही है, उनके दोस्त कैसे हैं उनका जो उठना बैठना है वह किस तरह के लोगों में है। यदि उसको सुधार लिया जाए तो इसको सुधार लिया जाए तो मेरा ऐसा मानना है कि महिलाओं का अपराध की ओर बढ़ने का कोई प्रश्न ही नहीं उठेगा।

घरेलू हिंसा में महिलाएं पीड़ित होती है इस पर आप क्या विचार रखते हैं ?

- मेरा ऐसा मानना है कि यदि महिलाएं थाने पर आ रही है तो तो कहीं ना कहीं वह अपने से अपने परिवार से पीड़ित होकर अंतिम विकल्प के रूप में पुलिस के पास आ रही है। ऐसी स्थिति में उन्हें हर संभव मदद करने का प्रयास रहता है ,जो उनकी समस्या है उसका निराकरण करने के लिए और कानूनी दृष्टि अगर बेहतर है तो उसकी मदद करना चाहिए ऐसा मेरा मानना है।

समाज के बदलाव के लिए पुलिस की क्या महत्वपूर्ण भूमिका होती है ?

- सामाजिक बदलाव के लिए मैं आपको बताता हूं कि हम गांधीनगर क्षेत्र के लोगों के बीच लगातार संपर्क में रहते हैं। बातचीत करते हैं और पुलिस के द्वारा लोगों के बेहतर के लिए क्या-क्या काम किए जा रहे हैं, इसके बारे में लोगों को बताना बहुत जरूरी है। ताकि लोगों को जानकारी रहे। जैसे आपको मालूम है कि महिला हेल्पलाइन है चाइल्ड हेल्पलाइन है लेकिन लोगों को इस बात का नॉलेज नहीं है । कि उनका उपयोग कैसे किया जाए, इनका लोगों को भ्रमण के द्वारा जानकारी दी जाती है। सम्मान के द्वारा उनको बताना कि पुलिस आपको इस तरह से मदद कर सकती है तो यह कहीं ना कहीं सामाजिक बदलाव में पुलिस की भूमिका को दर्शाता है।

आपकी नजरों में आदतन अपराधी के लिए क्या व्यवहार किया जाना चाहिए?

- मेरा स्पष्ट मानना है कि क्रिमिनल के साथ पुलिस को सख्त रवैया रखना चाहिए, कोई रहम कोई दया की अपेक्षा नहीं है, सहानुभूति की अपेक्षा नहीं है, जो आम शहरी है ,जो शांति से जीवन जीना चाहते हैं ,अमन चैन से जीवन जीना चाहते हैं, उनके हर समस्या को गंभीरता से लेकर अपराधी पर ज्यादा ज्यादा सख्त कार्रवाई करना चाहिए यह मेरा मानना है।

सीएम साहब द्वारा दुष्कर्मियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए हैं आपका क्या मानना है ?

- सीएम साहब का जो कहना है उसका मूल मुख्य उद्देश्य यही है कि, क्रिमिनल्स में खौफ पैदा किया जाए। माताओं -बहनों पर इस तरह के अत्याचार करना बंद करें अन्यथा आप को नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा।

आपके क्षेत्र में चोरी चैन स्नैचिंग आदि के अपराध की स्थिति में बढ़ोतरी है या कमी हुई है ?

- मेरा ऐसा मानना है कि अभी अगर 2019, 2020 और 2021 की तुलना की जाए तो हमारे यहां जो इस तरह के अपराध कम हो गए, क्योंकि हमारा लगातार इलाके में भ्रमण होता है। इससे अपराधियों में 110 -151 की कार्यवाही सख्ती से की है, उसी का परिणाम है। तो कहीं ना कहीं और इस तरह के अपराधों पर हमारे यहां कंट्रोल है।

धारा 110 क्या होती है यह आम लोगों को इसकी जानकारी नहीं है यह क्या होती है। ?

- धारा 110 में यह होता है कि जो आदतन अपराधी है, जिनके ऊपर चार पांच केस रजिस्टर्ड है, उन पर विशेष नजर रखने के लिए हम उनको बांड ओवर करवाते हैं, ताकि इस तरह की अपराधिक गतिविधियों पर नियंत्रण किया जा सके। उसके बाद भी अपराध करते हैं तो उनको जेल भेजा जाए यह होता है।

आपके थाने पर जो बल है क्या वह पर्याप्त है ?

- हां बल की तो थोड़ी कमी है, ऐसा मेरा मानना है और यह बात हमारे बड़े अधिकारियों को सब को पता है और क्योंकि बीच में लॉकडाउन कोरोना का समय भी रहा है, लेकिन वह एक अपनी समस्या है वह समय रहते पूरी होगी। लेकिन जो बल हमारे पास उपलब्ध है उसी से हमें अधिक से अधिक काम लेना है और उसी के आधार पर हम रिजल्ट देने की कोशिश करते हैं।

साइबर अपराध के मामले में आपके थाने में किस तरह का दक्ष स्टाफ है ?

- हां, इस विषय में मुझे लगता है कि अभी कुछ स्टाफ की आवश्यकता है। इस के लिए समय-समय पर क्रैश कोर्स चलते रहते हैं तो कमी भी समय पर पूरी हो जाएगी। बाकी तो जो भी शिकायत आती है हम लोग उसका उच्च स्तर पर जाकर उसका निराकरण करते हैं।

ड्रग्स के कारोबार पर आपकी क्या टिप्पणी है ?

- ड्रग्स के कारोबार में जो भी लिप्त हैं, चाहे वह कारोबारी हो, या पीने वाला हो या बेचने वाला हो ,सभी के बारे में हमारे सीएम साहब और कमिश्नर साहब के स्पष्ट निर्देश है, कि इनको किसी तरह से पनपने नहीं दिया जाएगा इनको नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा और बड़ी कार्यवाही हुई है इंदौर में भी हुई है।

आपका क्षेत्र वीआईपी जोन में है, इसमें राजनीतिक हस्तक्षेप को किस तरह से देखते हैं?

- देखिए राजनेता जो होते हैं वह अपना काम करते हैं, वह भी जनसेवा से जुड़ा काम होता है । पुलिस और प्रशासन यह भी जनसेवा का एक माध्यम है । तो इसमें हस्तक्षेप वाला कोई इशू नहीं है, जहां कहीं पर कोई राजनेता फोन करता है, जायज काम है तो करने में कोई दिक्कत नहीं है और नाजायज काम होता है हम स्पष्ट मना कर देते हैं ।

आपके क्षेत्र में आपका कंट्रोल कैसा है ? और आम जनता की आप तक पहुंच कैसी है ?

- मेरा प्रयास यही रहता है कि लोगों की समस्याओं का निराकरण किया जाए और पुलिस जो जनता के लिए वेलफेयर के लिए काम करने वाली संस्था है, उसके बारे में सभी को जानकारी हो और इसी प्रयास में हम लगे हुए और आम जनता की पहुंच मेरे तक सीधी है । कोई समस्या है तो हम से सीधा संपर्क कर सकता है और अधिकारियों से सीधे उनका संपर्क बना रहता है, स्टाफ को यह दिशा निर्देश है ,कि वे उनसे कभी भी कोई भी व्यक्ति संपर्क कर सकता है । जो अधिकारी से मिलना चाहता है उसको नंबर उपलब्ध करा दें । जगह-जगह हमने पोस्टर लगा रखे हैं, संपर्क नंबर है 24 घंटे मोबाइल ऑन रहते हैं थाने में उपलब्ध है ।

समाज में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है, अवेयरनेस आ रही है, पुलिस के प्रति सहानुभूति है...

सामान्य रूप से सामंजस्य के माध्यम से घरेलू हिंसा को टाला जा सकता है...

साइबर अपराध के मामले में हमारे यहां दक्ष स्टाफ की थोड़ी कमी है पर्याप्त नहीं है...

माता-पिता के द्वारा उनध्यान नहीं दिया जाना, इस कारण से बच्चे जो होते हैं वह अपराध की ओर आकर्षित हो जाते हैं..

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री राकेश मोदी
थाना प्रभारी - पंढरीनाथ

इंदौर में कमिश्नरी प्रणाली से क्या आम जनता को लाभ होगा ?

- इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है, उस के माध्यम से अपराधियों के खिलाफ शिकंजा कसा जाएगा और जो अपराधी प्रवृत्ति के लोग हैं, उनके खिलाफ पुलिस को डायरेक्ट पावर मिल जाने से कार्रवाई की जाएगी, अपराधियों पर कार्रवाई करने में बड़ी आसानी होगी इसीलिए कमिश्नर प्रणाली को लागू किया गया है। आम जनता को इससे निश्चित रूप से लाभ मिलेगा।

क्या ऐसा माना जा सकता है कि राजनीतिक कारणों से कमिश्नर प्रणाली लागू की गई है ?

- इसके पीछे कोई राजनीतिक कारण नहीं है, यह कहना गलत है। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि राजनीतिक कारण से कमिश्नर प्रणाली को लागू किया गया है।

अपराध का ग्राफ आपके क्षेत्र में बड़ा है या कम हुआ है ?

- हम पिछले वर्षों की तुलना में अगर अध्ययन करें ,तो मेरा ऐसा मानना है कि मेरे थाना क्षेत्र में अपराध के ग्राफ में कमी आई है।

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार और युवा वर्ग की संलग्नता काफी तेजी से बढ़ी है ,पुलिस का इस विषय में किस प्रकार से एक्टिव है?

- इस मामले में इंदौर में काफी कार्रवाई की गई है, ड्रग्स कई मात्राएं पकड़ाई गई है इसमें, और जैसे-जैसे सूचना मिलती है पुलिस को वैसे ही पुलिस के द्वारा इस पर सख्त कार्रवाई की जाती है। समय-समय पर हमारे द्वारा अवेरनेस जो कैंप लगाए जाते हैं युवाओं को चेतना देते हैं, मीडिया के माध्यम से भी हम समय-समय पर जानकारी देते हैं और कहते हैं इसके गिरफ्त में ना आए इससे आप दूरी रखें , यह आपके लिए ठीक नहीं है , इस तरह से पुलिस के द्वारा कार्यवाही की जाती है।

शासन और प्रशासन के मध्य पुलिस अधिकारी होने के नाते आप कैसे समन्वय बैठा पाते हैं ?

- अब तो यहां पर इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हो गई है तो इस तरह के जो भी निर्णय लेते हैं वह हमारे वरिष्ठ अधिकारी है और वही इस मामले में निर्णय लेते हैं प्रशासन शासन अपना काम है करते हैं तो निश्चित रूप से इसमें समन्वय बना रहता है।

क्या पुलिस प्रशासन में राजनीतिक हस्तक्षेप को भी आप महसूस करते हैं ?

- मुझे ऐसा लगता नहीं है कि पुलिस प्रशासन के कार्य प्रणाली में कोई राजनीतिक हस्तक्षेप होता है, मुझे ऐसा कोई अनुभव नहीं है।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं?

- मेरा ऐसा मानना है कि घरेलू हिंसा में दोनों ही पक्ष जिम्मेदार होते हैं। दोनों पक्षों में कुछ ना कुछ गलतियां तो रहती है, फिर भी सामान्य रूप से सामंजस्य के माध्यम से घरेलू हिंसा को टाला जा सकता है।

सामान्य रूप से पुरूष को दोषी माना जाता है ?

- हां कानून कुछ इस तरह से बना हुआ है जिसमें कार्यवाही सिर्फ पुरुष वर्ग के खिलाफ ही की जाती है ,होती है। क्योंकि सामान्य रूप से महिलाओं के द्वारा ही पीड़ित होने पर पुलिस में शिकायत घरेलू हिंसा की, की जाती है।

सामाजिक बदलाव में पुलिस की भूमिका कैसी होती है ?

- देखिए मेरा ऐसा मानना है कि समाज में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है, अवेयरनेस आ रही है, पुलिस के प्रति सहानुभूति है ,जो कार्य शैली है वह लोगों को मालूम पड़ रही है, आम जनता का पुलिस के प्रति पॉजिटिव एटीट्यूट रहता है।

पुलिस हमारी मित्र हैं, ऐसी भावना किसी अधिकारी द्वारा शुरू की गई थी, इस पर आप क्या कहेंगे ?

- निश्चित रूप से हम यही कहेंगे कि, वह बहुत अच्छी पहल है और इसकी वजह से पुलिस और आम जनता के बीच अच्छे सम्बन्ध होने की संभावना बनी रहती है।

आम आदमी को धारा 110 की कोई जानकारी नहीं है इसमें क्या होता है ?

- धारा 110 यह कार्रवाई होती है कि अपराधियों पर 3 या 3 से ज्यादा 4 केस दर्ज होते हैं उन पर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की जाती है और वह कार्यवाही 110 धारा के अंतर्गत की जाती है, इस धारा में उनको नोटिस निकलता है इसके बाद उसको बाउंड ओवर किया जाता है बाउंड ओवर के बाद यदि फिर वह उल्लंघन करता है ,तो उसके खिलाफ 122 की कार्यवाही की जाती है।

साइबर अपराध के मामले में आपके थाने में दक्ष स्टाफ की क्या पोजीशन है ?

- हां यह बात सही है साइबर अपराध के मामले में हमारे यहां दक्ष स्टाफ की थोड़ी कमी है पर्याप्त नहीं है। लेकिन इस तरह की जो भी केसेस आते हैं तो हम सायबर को ही रेफर करते हैं।

क्या हमारे शहर में बाल अपराध में बढ़ोतरी हो रही है ? जो अवयस्क बालक है वह अपराध की ओर बढ़ रहे हैं ?

- हां यह बात तो सही है कि बच्चे अपराध में शामिल हो रहे हैं ,उनके बारे में इसमें सामाजिक कारण हम कह सकते हैं। माता-पिता के द्वारा उन पर ध्यान नहीं दिया जाना, इस कारण से बच्चे जो होते हैं वह अपराध की ओर आकर्षित हो जाते हैं और अपराध में लिप्त हो जाते हैं अगर माता-पिता का उन पर कंट्रोल हो तो मेरा ऐसा मानना है कि वे बच्चे अपराध की ओर अग्रसर नहीं होंगे।

शहर के वरिष्ठ जनों की सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से पुलिस का कैसा सहयोग होता है ?

इसमें यह होता है कि हमारी कई सेवा हैं ,उनका लाभ वरिष्ठ जनों को और आम नागरिकों को भी मिलता है, जैसे हंड्रेड डायल है ,थाने के नंबर सभी जगह उपलब्ध हैं ,बीट वालो का नंबर है, हमारे नंबर सबके पास है, बोर्ड पर सभी के हमारे नंबर अंकित होते हैं । और हमारे द्वारा जाकर लोगों से संपर्क भी किया जाता है उनको भी हम नंबर दे कर आते हैं ,अगर उनको कोई समस्या होती तो ,वह हम लोगों को संपर्क करते हैं और हमारे पास इस तरह की कोई भी समस्या आती है तो हम उसे हल करने का प्रयास करते हैं ।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

कमिश्नरी प्रणाली इंदौर में लागू हुई है, इसमें आम जनता को क्या लाभ मिलेगा?

- मेरा ऐसा मानना है कि कोई भी जो सिस्टम होता है, पुलिस प्रशासन का एक सिस्टम है, उसके हिसाब से जिस भी प्रणाली को लागू किया जाता है उसमें सबसे पहले यह ध्यान रखा जाता है कि, इससे जनता को कितनी सुविधा मिल सकेगी, जनता की समस्याओं का निराकरण हो सकता है। इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू की गई है उसका भी मूल उद्देश्य यही है कि जनता की सुनवाई अच्छी तरीके से हो और जनता के विरुद्ध जो अपराध करते हैं चाहे व सीनियर सिटीजन के विरुद्ध हो या आम नागरिक के विरुद्ध हो किसी भी संबंध का अपराध हो ,जो अपराध करेगा उनको सजा मिलनी चाहिए। जो सजा उनको मिलना चाहिए वह त्वरित मिल सके और प्रभावी तरीके से मिल सके। कमिश्नरी प्रणाली का पहला उद्देश्य है। और दूसरा उद्देश्य है कि जनता जो रिपोर्ट करने आती है उसकी सुनवाई बेहतर तरीके से हो सके और संवेदनशीलता का जो एक प्रश्न होता है, उसका भी महत्वपूर्ण भाव रखा गया है जो व्यक्ति पुलिस में शिकायत करने आता है, उसको उसकी कोई समस्या है तो उसका निराकरण किया जाए।

आपके क्षेत्र में पिछले वर्षों की तुलना में इस नए वर्ष में अपराध का ग्राफ बढ़ा है या कम हुआ है ?

- हमारे क्षेत्र में अपराध का ग्राफ तो कम हुआ है 1 वर्ष पहले 2 वर्षों की तुलना में अपराध कम हुआ है। जो प्रतिबंधात्मक कार्यवाही थी जो मायने रेट की कार्यवाही है। उनमें उनमें जरूर इजाफा हुआ है, क्योंकि जो गुंडे बदमाश थे उनको अच्छे तरीके से बाउंड ओवर कराया जा रहा है और छोटे छोटे जो अपराध करते थे शराब के सट्टे के इस प्रकार के थे उनके विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही की जा रही है, जिला बदर की कार्यवाही की जाती है।अपराधियों में एक परेशानी का विषय बना हुआ है।

इंदौर में ड्रग्स के व्यापार ने अपने पैर पसारे हैं, इसमें जो लिप्त है उस पर पुलिस विभाग द्वारा क्या कार्यवाही की गई है?

- ड्रग्स के व्यापार के लिए जैसा कि आपने सुना भी होगा कमिश्नर सिस्टम से पहले भी और बाद में भी काफी प्रभावी कार्यवाही की गई है जो अपराधी इस तरह के थे ,उन पर काफी प्रभावी कार्यवाही आई थी साहब और कमिश्नर साहब के निर्देशन में कार्यवाही की गई है,हमारे थाने में भी पिछले दिनों ड्रग्स के दो मामले दर्ज किए गए थे ,जिसमें एक चरस का प्रकरण भी था, लगातार जो इस तरह के व्यसन है या जो इस तरह के व्यसनों का उपयोग करते हैं उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही लगातार की जा रही है।

संवाद और परिचर्चा

श्री राहुल शर्मा जी
थाना प्रभारी - मल्हारगंज

इससे पुलिस प्रशासन में कितनी कसावट आएगी?

- पुलिस प्रशासन में कसावट का यह है कि हैरिंग का जो क्रम था पद सोपान का जो क्रम था वह कई वरिष्ठ अधिकारियों को इसमें शामिल किया गया है।और इसमें कुछ चीजों को काफी फोकस किया गया है अधिकारियों संख्या इसमें बढ़ाई गई है, अधिकारियों के द्वारा भी उन चीजों को अच्छी तरीके से देख सकें इसी उद्देश्य से लागू किया गया है। पहले हम देखते थे कि इंदौर में दो पुलिस अधीक्षक हुआ करते थे और सभी थानों को इन दोनों में बांटा गया था। तो अब सारे थानों को अनेक झोन में बांट दिया गया।जो नियंत्रण करता अधिकारी है पद के हिसाब से संख्या बढ़ाई गई है। वह बड़े अधिकारी हैं जो प्रणाली है वह भी प्रभावी ढंग से इसमें अच्छे से समस्या का समाधान हो सकेगा।

पुलिस के द्वारा शासन और प्रशासन के मध्य कैसे समन्वय स्थापित किया जाता है ?

- शासन और प्रशासन के मध्य पुलिस के द्वारा प्रारंभ से ही समन्वय बिठाया जा रहा है। क्योंकि पुलिस भी शासन-प्रशासन का ही एक हिस्सा है और सभी जो विभाग है शासन के वह सब जब मिलकर कार्य करते हैं ,तो एक आउटपुट अच्छा आता है। शांति व्यवस्था बनी रहती है और और जो व्यवस्था प्रशासन के बीच पहले से अच्छा है। नगर निगम राजस्व विभाग स्वास्थ्य विभाग मैं भी समन्वय के माध्यम से आगे बढ़ाया जा रहा है। सभी के मध्य पुलिस विभाग का समन्वय बना हुआ है। ।

सामाजिक बदलावों में पुलिस कैसे अपने आपको प्रस्तुत करती है?

- सामाजिक बदलाव में काफी हद तक पुलिस की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, समाज में कई तरह के बदलाव आ रहे हैं समाज हम पहली सीढ़ी के रूप में भी अगर देखें तो महिलाएं हैं बालिकाएं हैं। वर्तमान में आप जैसे की महिलाओं के अपराध भी काफी बढ़ रहे हैं, जो इंटरनेट और दूसरे अन्य व्यवस्थाएं आ रही है उसका जो पॉजिटिव प्रभाव है धनात्मक जो प्रभाव है वह तो उन लोगों को पढ़ ही रहा है। नेगेटिव फैक्ट् लोगों के ऊपर पड़ रहा है ,उसी का परिणाम है कि महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ रहे हैं। छेड़छाड़ की घटनाएं भी निश्चित रूप से बड़ी है, इसमें सबसे बड़ा जो हम लोग एक काम कर रहे हैं जो बच्चे हैं नाबालिक बच्चे हैं, उनके भागने के केस बहुत ज्यादा हो रहे हैं। क्योंकि वह समझदार नहीं है कानून को नहीं जानती है कानून की दृष्टि से समझदार नहीं होते हैं, ऐसे लोगों के माता-पिता को हम काउंसलिंग के माध्यम से समझाने का प्रयास करते हैं। महिला इंस्पेक्टर वह बस्तियों में जा रही हैं स्कूलों में जाती हैं और समझाती है कि कृपया करके आपके जो कम एज के बच्चे हैं। उनके कानून व्यवस्था की गई उनकी सहमति को भी सहमति नहीं माना जाएगा। यह सब चीजें उनके माता पिता को बताई जा रही है। माता पिता को कहा जाता है कि बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार रखें, जिससे किसी भी प्रकार की उनको अगर कोई समस्या आती है तो या उनके मन में कोई उत्सुकता है किसी चीज को या किसी विषय को लेकर अपने तक ना रखें। माता-पिता के साथ शेयर करें इससे यह होगा कि जो गलत चीज है उनको रोका जा सकता है अपराध में चली जाती है उन सब चीजों को रोका जा सकता है। यह सब चीजें पुलिस के द्वारा की जा रही है। इसके अलावा जो वरिष्ठ नागरिक गण है पुलिस के माध्यम से काफी सारी योजना है जो चलाई जा रही हैं। जिसमें उनको कानून कानूनी रूप से बताया जाता है अगर बच्चे उनके पालन पोषण नहीं करते हैं तो उन पर भी केस बनाने की प्रक्रिया की जाती है और माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है इस तरह से कम्युनिटी पुलिस का भी काम है जो किया जा रहा है उनके सामाजिक बदलाव में पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

घरेलू हिंसामें आप किसे दोषी मानते हैं ?

- घरेलू हिंसा में सामाजिक व्यवस्था इस तरह से है कि जो कमजोर पक्ष माना जाता है वह पुरुष का ही कमजोर पक्ष माना जाता है। कहीं ना कहीं वह महिला को परेशान करता है। सबसे ज्यादा यही जानकारी में आता है कि नशा करके पुरुष द्वारा महिला को परेशान किया जाता है मारपीट करता है, बाकी और कुछ बिंदु भी उनके साथ जुड़े हुए हैं, सामान्य रूप से पुरुष का पक्ष ही कमजोर माना जाता है बाकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

सीएम साहब का कहना है कि दुष्कर्मयों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए, इसका क्या संदेश समझा जाए ?

- इस संदेश में स्पष्ट रूप से यही है कि हमारी जो माता बहने हैं उनके खिलाफ यदि कोई अपराध करते हैं तो समाज में उसका मैसेज जाना बहुत जरूरी है।जो दुष्कर्म किया जा रहा है वह बहुत ही गलत है जो जननी है जो हमारी माता है यदि उनके खिलाफ कोई भी अपराध होता है, तो ऊपर के लेवल का जो निर्देश है स्पष्ट है कि और कानून भी वर्तमान में यही कहता है कि महिलाओं के खिलाफ जो अपराधी है उनके खिलाफ कार्यवाही हो और उसमें यह संदेश जाए कि इस तरह के अपराध में सजा निश्चित रूप से होती है।

साइबर अपराध के मामले में आपके थाने पर दक्ष स्टाफ की क्या स्थिति है?

- हां, यह एक अच्छा प्रश्न है और इस तरह अपराध के मामले में हमारे थाने में दक्षस्टाफ की कमी तो है, परंतु जो नए भर्ती हो रही है और नए जो लड़के हैं, इनको प्रशिक्षित भी किया जा रहा है और साइबर के मामले में इनको जानकारियां भी दी जा रही है। फिर भी जो बड़े मामले होते हैं साइबर के उनको भेजे जाते हैं। साइबर शाखा एक अलग से काम कर रही है और अलग-अलग स्तर के अलग-अलग जगह केस जाएंगे। कुछ साइबर शाखा के प्रकरण है और कुछ थाना स्तर के प्रकरण है इस तरह के शासन के निर्देश भी हैं आने वाले समय में स्टाफ की कमी की जो समस्याएं है वह भी दूर हो जाएगी।

स्वागत डेस्क कैसे काम करती है?

- स्वागत देश का अर्थ यही है कि जो भी थाने पर आए और उसको उसकी समस्याओं को सुना जाए और निराकरण के लिए उसकी व्यवस्था की जाए। महिला डेस्क वह अपना काम करती है और जो पीड़ित है उसके लिए राहत दिलाने का काम डेस्क के माध्यम से किया जाता है -कहां उसको शिकायत करने जाना है, काउंसलिंग की आवश्यकता है, अगर वह थाने पर आ जाए तो उसे यह महसूस नहीं हो की वह कहां आ गई, कुल मिलाकर संदेश यह है कि स्वागत के माध्यम से आने वाले हर शिकायतकर्ता को राहत मिल सके यही उद्देश्य है।

बाल अपराध बढ़ रहा है इस पर आप क्या टिप्पणी करेंगे?

जैसा कि हम देख रहे हैं आजकल आधुनिक साधन संसाधन कंप्यूटर मोबाइल नेट की बड़ी सुविधाएं सबके पास है। चीज को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है बच्चे जो नकारात्मक चीजें हैं उनको जल्दी सीख लेते हैं और उसी के आधार पर हम कह सकते हैं कि बाल अपराध बढ़ रहा है। परंतु पुलिस के द्वारा इसमें यह प्रयास किया जाता है कि उनको बाल संरक्षण सुधार गृह में भेजा जाता है,अच्छी चीज है उन्हें समझाई जाती है यही निर्देश दिए जाते हैं कि इन्हें सुधारा जाए और बच्चों में अच्छी प्रवृत्ति को समाहित किया जाए।

☞घरेलू हिंसा में तो मैंने यह चीज ऑब्जर्व की हुई है, कि हमेशा पुरुष ही गलत नहीं होता है, वह सोसाइटी की बात होती है और मैंने बोला भी है की एजुकेशन और परिवार के संस्कार यह दोनों बहुत इंपॉर्टेंट रोल रखते हैं, तो कहीं ना कहीं प्राथमिक पाठशाला घर से ही परिवार से ही शुरू होती है और यही हो तो यही सबसे अच्छा होगा।

☞पुलिस कमिश्नर सिस्टम के कारण जो खौफ वाली बात है, वह गुंडे और बदमाशों के लिए आती है। आम जनता को इससे डरने की आवश्यकता नहीं है। इससे सोशल पुलिसिंग जो है वह बेहतर बन गई है,ऑल सोशल एक्टिविटीज के हिसाब से देखें तो यह बहुत अच्छा है, हम कह सकते हैं जिससे आम जनता को निश्चित रूप से लाभ मिलने वाला है।

☞ऑपरेशन प्रहार मुख्य रूप से वारंटीओं, जो गुंडे बदमाश है उनके कंट्रोलिंग के लिए किया गया था। जिससे अभी 2 दिनों से बहुत अच्छे से रिपोर्टिंग हुई है। जब रात में वारंटीओं के चेकिंग के लिए निकलते हैं। ऑरेंज 100 से अधिक वारंटी,हमने एक रात में ट्रेस किया तो। यह पॉजिटिव एटीट्यूड रहा है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसे कहीं राजनीतिक दृष्टिकोण से भी देखा जा रहा है क्या ?

- नहीं, ऐसा कहना ठीक नहीं है, यह जो पुलिस कमिश्नर सिस्टम चालू हुआ है यह बहुत पॉजिटिव इफेक्ट ला रहा है। लोगों को उनके प्रति भी और कहीं ना कहीं सामाजिक सोसाइटी में भी चेंज जो आ रहे हैं, तो कहीं ना कहीं हमें इसको देखना चाहिए कि इससे पॉजिटिव रिजल्ट ही दिख रहे हैं।

क्या इस प्रणाली से पुलिस प्रशासन में भी कसावट आने की संभावना है ?

- पुलिस कमिश्नर प्रणाली सिस्टम कि हम बात कर रहे हैं, तो इसमें यह है कि मेन चीज होती है वह पब्लिक के लिए होती है। पुलिस और आम पब्लिक के बीच जो कांटेक्ट होता है, तो कमिश्नर सिस्टम लागू होने से आम जनता और पुलिस के बीच में अच्छी बॉन्डिंग हो रही है। और जैसा कि मैंने पहले भी बोला है, अपराध में कंट्रोलिंग हो रही है और जो हम मंथली वाइज ग्राफ चेक कर रहे हैं, तो ग्राफ में अच्छा शो रहा है। तो हम कहें सकते हैं कि कमिश्नर सिस्टम के कारण प्रशासन में भी निश्चित रूप से सुधार हुआ है ।

अपराध के ग्राफ में कितनी कमी आई है, पिछले वर्ष की तुलना में ?

- बेसिक अली दो चीजों में बहुत कमी आई है एक तो महिला संबंधी अपराध में और दूसरा चोरी के मामले में जो शिकायत आ रही थी, उसमें बहुत कमी आई है तो अपराध के ग्राफ में निश्चित रूप से कमी आना कह सकते हैं।

महिला उत्पीड़न के विषय में आपका क्या नजरिया है ?

- जो महिला उत्पीड़न के केस आ रहे हैं, इसमें अवेयरनेस की कमी कहीं ना कहीं दिखाई देती है। वह शो हो रही है, हर थाने में जबसे कमिश्नर सिस्टम लागू हुआ है, तब से अब इसका निश्चित रूप से फर्क पड़ा है। क्योंकि पुलिस के द्वारा टाइम टाइम पर कुछ न कुछ प्रोग्राम करते रहते

हैं, गली मोहल्लों में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहते हैं। इससे आम लोग प्रभावित हो रहे हैं और अच्छे परिणाम आ रहे हैं। और इससे महिला संबंधी अपराध में कहीं न कहीं कमी आ रही है।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानती हैं या आपका क्या नजरिया है ?

- मैं घरेलू हिंसा में कहीं न कहीं एजुकेशन की कमी को दोषी मानती हूं,पहली चीजें एजुकेशन की कमी और दूसरी बात यह है कि परिवार से संस्कार देना बहुत जरूरी है। क्योंकि हमने सुना है कि प्राथमिक पाठशाला जो है वह परिवार ही होता है,तो घरेलू हिंसा हो या कोई भी अपराध हो उसमें फैमिली का रोल बहुत इंपोर्टेंट होता है। तो लड़का हो या लड़की हो बेसिकली जो हम घरेलू हिंसा की बात कर रहे हैं, उसमें लड़के को घर से ही शिक्षा देना चाहिए, क्योंकि महिला उत्पीड़न का शिकार होती है, क्योंकि वह प्राथमिक पाठशाला है तो यहीं से कंट्रोलिंग बेहतर होगी।

संवाद और परिचर्चा

श्रीमती अनुराधा लोधी
सेंट्रल कोतवाली थाना

महिला डेस्क कैसे काम करती है?

- महिला डेस्क प्राथमिक रूप से महिला संबंधित अपराधों में और बच्चों से भी लेकर यह दो विषय में महिला डेस्क फोकस करती है। और कमिश्नर सिस्टम से यह बहुत अच्छी बात हुई है कि, टाइम टू टाइम हर थाने में कोशिश की गई है कि, महिला संबंधित अपराध कम हो। और यह हो भी रहा है खासतौर पर मैं कोतवाली थाने की बात करूं तो पिछले 3 माह में महिला संबंधी अपराध बहुत कम हुए एक ही प्रतिशत की रिपोर्ट आई है।

कानून महिलाओं की सुरक्षा के लिए बना है तो कहीं ना कहीं महिलाएं इसका दुरुपयोग भी करती है क्या, जिसके कारण पारिवारिक वैमनस्यता भी बढ़ती है ?

- कई बार हमने ऐसे कैस भी देखे हैं कि उसमें पुरुष भी पीड़ित रहते हैं,लेकिन इसके लिए काउंसलिंग की प्रोसेस बनी हुई है। वह लाभकारी ही सिद्ध हो रही है पति-पत्नी के मामले में जनरल ही प्राथमिक तौर पर ही काउंसलिंग का प्रयोग किया गया है, इसमें एक टीम गठित की गई है जो प्रॉपर ली काउंसलिंग करती है जिससे परिवार टूटने से बच जाता है ।

चोरी का ग्राफ आपके थाने में ?

- इस मामले में कोतवाली थाने में 0% है और इस महीने में तो एक भी शिकायत इस तरह की नहीं आई है।

शिक्षित बेरोजगारी और अपराध इस पर आप क्या कहेंगी ?

- देखे बेरोजगारी को हम अपराध में कारण मान सकते हैं, कई बार यह चीजें सामने आई है कि पढ़ा लिखा जो व्यक्ति है, जो बहुत त्रसत हो जाता है,नौकरी नहीं है, उसके पास तो कई बार देखा है कि, कुछ प्रतिशत ही देखा गया है कि, यह लोग गलत काम करते हैं। क्योंकि इनके पास प्रॉपर रोजगार नहीं होता है, लेकिन फिर भी यह मूल कारण नहीं हो सकता है। आप पढ़े लिखे हैं तो स्वाभाविक सी बात है कि हर व्यक्ति इतना तो कमा ही लेता है कि वह अपनी बेसिक आवश्यकता जो है वह पूरी कर सके।

पुलिस प्रशासन में राजनीतिक हस्तक्षेप को आप कैसे देखते हैं?

- देखिए राजनीतिक हस्तक्षेप की अगर हम बात करें, तो कहीं ना कहीं तो कुछ ना कुछ तो रहता है और वह कुछ प्रभावित करता भी है। लेकिन मैं पर्सनली मेरी बात करूं तो मुझे कभी इस चीज का इस बात की कभी समस्याएं उत्पन्न नहीं हुई है, मैं 2015 से इस विभाग में हूं मुझे पॉलीटिकल प्रेशर कभी भी नहीं आया।

शहर में हो रहे कब्जों पर कहीं-कहीं राजनीतिक संरक्षण होता है?

- यह बहुत अच्छी बात पूछी है, लेकिन सीएम साहब के निर्देश अनुसार एवं कमिश्नर साहब ने भी आदेशित किया है भू माफिया के खिलाफ कार्यवाही हो रही है और यह कहीं ना कहीं बहुत पॉजिटिविटी ला रहा है। समाज में तो इसमें डरने की जरूरत ही नहीं है जो भू-माफिया है उनके खिलाफ तो सख्त कार्यवाही कर ही रहे हैं।

महिला और बच्चों के लिए कुछ संदेश?

मैं खासकर बच्चों के लिए यह संदेश देना चाहती हूँ कि बच्चे पढ़ाई पर फोकस करें, महिलाएं जरूर समय दें परिवार को,अेजे पेरेंट्स बच्चों को समय देना बहुत जरूरी होता है। क्योंकि मैं खुद वर्किंग वूमेन हूँ मेरे हस्बैंड भी सूबेदार हैं। जैसे हम दोनों ही,परिवार को टाइम नहीं दे पाते हैं अपने बच्चों को,लेकिन फिर भी कहीं न कहीं कोशिश करते हैं कि जितना समय बचता है वह जरूर हम देते हैं। और परिवार में बड़ों का होना बहुत जरूरी होता है,क्योंकि मेरे इनलॉज भी मेरे साथ में रहते हैं, में यह चीज महसूस करती हूं कि बच्चे को एक जो पारिवारिक संस्कार की आवश्यकता होती है वह उसे मिल रही है दादा दादी से, और मेरा मानना है कि दादा दादी से अच्छे संस्कार कोई नहीं दे सकता है।

अगर आप पुलिस में नहीं होते तो कहां होती ?

- अगर मैं पुलिस में नहीं होती तो शायद लेक्चरर होती कहीं कॉलेज में लेक्चर दे रही होती।

इंदौर में ड्रग्स व्यापार काफी फैल रहा है इसमें महिलाओं की लिप्तता भी कहीं न कहीं दिखाई देती है, आपका क्या कहना पड़ता है ?

- देखिए यह सारी बातें तो यह पहले भी थी,लेकिन कमिश्नर सिस्टम आने के बाद यह सब चीजें उजागर भी हो रही है और कमिश्नर साहब के दिशा निर्देश पर हम लोग कार्यवाही भी कर रहे हैं। तो जो भी ड्रग माफिया है इनके खिलाफ सख्त कार्यवाही भी की जा रही है ।

आप एक महिला पुलिस अधिकारी हैं तो सवाल यह है कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए आपके द्वारा क्या प्रयास किए जाते हैं?

- महिला की सुरक्षा के लिए खास तौर पर हमारे द्वारा यह प्रयास किया गया है कि पहले एरिया डिटेक्ट किया गया है,कि किस एरिया में महिला संबंधित अपराध अधिक हुए हैं,उस एरिया में हमने समय तय किया कि किस समय में ही अपराध ज्यादा हुए हैं। या शिकायत ज्यादा आती है। महिलाओं के संबंध में उस एरिया में हमने पुलिस स्टॉफ बढ़ा दिया हैं, मैं खुद भी गश्त करती हूं, पैदल राउंड लगाती हूं गाड़ी से भी हम लोग भ्रमण करते हैं और समय-समय पर हम लोग कुछ न कुछ प्रोग्राम करते रहते हैं बच्चों से रिलेटेड, प्रोग्राम होता है। महिलाओं से संबंधित प्रोग्राम होता है,इसमें महिलाओं से सुरक्षा संबंधित अवेयरनेस प्रोग्राम लाते हैं। जो हेल्पलाइन नंबर होते हैं उसके बारे में भी जानकारी देते रहते हैं तो इन सब बातों से पॉजिटिव इफेक्ट लग रहा है ।

☞ कमिश्नर प्रणाली बहुत सक्सेस प्रणाली होगी और आगामी एक - दो महीनों में बहुत अच्छे रिजल्ट देखने को मिलेंगे . !

☞ समाज को अच्छा बनाने के लिए राजनीतिक लोग और पुलिस विभाग दोनों इंवॉल्व रहते है और जब दोनों एक ही मानस से काम करते हैं तो समाज स्वछ और सुरक्षित होता है..!

☞ अगर समाज में पुलिस का वातावरण ठीक नहीं होगा, अवैध गतिविधियां होंगी तो समाज परेशान रहेगा, इसलिए जो भी पुलिस अधिकारी हैं उनकी मंशा इस तरह से होना चाहिए कि, समाज अच्छा रहे..!

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री पवन सिंघल
थाना प्रभारी - छत्रीपुरा

इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको कई राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी देखा जा रहा है ?

♦ नहीं यह एक बहुत अच्छा प्रयास है, इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू होने से अपराधों पर बहुत अच्छा नियंत्रण होगा और जो भी क्रिमिनल्स हैं, जो व्यवस्था है वह काफी सुचारू रूप से संचालित होंगी। इस प्रणाली से अपराधियों पर निश्चित रूप से खौफ बनेगा, सारे बाउण्ड ओवर की जो कार्यवाही है हमारे जो वरिष्ठ अधिकारी हैं उनके नॉलेज में रहेगी तो उनके नॉलेज में सारे क्रिमिनलस वगैरह रहेंगे। इस कारण से क्रिमिनल्स पर भी हमारा पूरा नियंत्रण रहेगा और जो अपराधी प्रवृत्ति के रहेंगे उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही होगी। ऐसा हमारा मानना है और जो अन्य प्रदेशों में कमिश्नरी प्रणाली चल रही है, वह काफी सक्सेसफुली है कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जा सकता है। यह अच्छा निर्णय है और सभी को शुभकामनाएं और बधाई।

क्या आप ऐसा मानते हैं कि इसके कारण पुलिस प्रशासन में और भी कसावट आएगी ?

♦ बिल्कुल मेरा स्पष्ट मानना है कि इस व्यवस्था से निश्चित रूप से प्रशासन में कसावट आयेगी, इस व्यवस्था से और बल मिलेगा और भी जो संसाधन है वे सब भी मिलेंगे। इसके अलावा और भी जो अधिकारी है जो नॉलेजेबल है उन अधिकारियों का विभाग को लाभ मिलेगा और इसी कारण आम जनता भी काफी प्रसन्न रहेगी। क्योंकि अपराध पर नियंत्रण रहेगा उसे आम जनता को भी काफी सहूलियत रहेंगी ।

शिक्षित बेरोजगार जो है वह अपराध की ओर जा रहे हैं आपका क्या मानना है ?

♦ नहीं ऐसा तो नहीं है, हमारे द्वारा भी कई कॉलेजों में मीटिंग ली जाती है। जॉब तो वैसे सभी जगह है फिर भी कुछ कमी तो है। फिर भी उसकी मंशा होना चाहिए, उसकी मेहनत है और अगर वह मेहनत करेगा तो हंड्रेड परसेंट उसको जॉब मिलेगी और वह अपराधिक गतिविधियों से दूर रहेगा ।

शहर में महिलाएं अपराध कर रही है इस पर पुलिस प्रशासन का क्या कंट्रोल है ?

♦ मेरा मानना है कि इस में इस तरह के बहुत ही कम रेयर केस में है। हमारे क्षेत्र कि अगर हम बात करें तो एक महिला है जो अपराधिक गतिविधियों में कही न कही लिप्त थी,उसकी गतिविधियों को देखते हुए उसे अरेस्ट किया और आज वह जेल में है। पर यह बहुत रेयर केसेस में है हजारों में कोई ऐसा होता है तो इस तरह का अपराध समाज को चेंज नहीं कर सकता है, तो सभी दूर है ऐसा नहीं है ।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

♦ आज समय बदल गया है, और जो प्रिंट मीडिया और व्हाट्सएप अभी जो चल रहा है, उस के माध्यम से कुछ परिवारों में यह स्थितियां बदलती है। परंतु उनके संस्कार और अच्छे लोगों के माध्यम से जो वातावरण बनता है, उससे कहीं ना कहीं लाभ मिलता है, जैसे हमारे यहां महिला डेस्क है, महिला थाने हैं, इन के माध्यम से जो भी समस्याएं होती हैं उसका निराकरण भी होता है।

सीएम साहब ने सख्त निर्देश दिए हैं अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करने के आपका क्या नजरिया है ?

♦ मेरा तो मानना है कि यह बहुत अच्छा संदेश है और गुंडों के खिलाफ और बदमाशों के खिलाफ सख्त कार्यवाही होगी, तो हमारा जो समाज है वह बहुत खुशहाल रहेगा। जो भी गुंडागर्दी करता है और महिलाओं से जो भी छेड़छाड़ करता है या अन्य अपराध करता है उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होना चाहिए। जिला बदर की कार्यवाही और रासुका की कार्यवाही,उनके अवैध अतिक्रमण अवैध मकान हो यानी कोई जायदाद हो, तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होना चाहिए यही निर्देश दिया है सीएम साहब ने और यह सही भी है।

अपराधियों को राजनीतिक संरक्षण मिलता है यह कहां तक सही है ?

♦ नहीं मुझे तो इस तरह का कोई बहुत ज्यादा दिखाई नहीं देता है। क्योंकि मुझे भी लगभग 28 वर्ष इस विभाग में हो गए हैं। तो ऐसा नहीं है, अगर आप अच्छी कार्यवाही कर रहे हैं,तो आप के प्रति राजनीतिक लोग भी अच्छे हैं, और समाज भी आपकी तारीफ करेगा। तो वह ऐसी परिस्थिति नहीं होती है, समाज को अच्छा बनाने के लिए राजनीतिक लोग भी इंवॉल्व रहते हैं और पुलिस विभाग भी इंवॉल्व रहता है। और जब दोनों एक ही मानस से काम करते हैं तो समाज में अच्छे लोग रहते हैं और गुंडों पर सख्त कार्रवाई होती है।

साइबर अपराध के मामले में आपके थाने पर दक्ष स्टाफ की क्या स्थिति है ?

साइबर के मामले में हमारे यहां हमारे थाने पर कुछ 4-5 जवान और हेड कांस्टेबल हैं, अगर किसी प्रकार कोई क्राइम होता है, तो पहले तो साइबर थाने भी हैं, साइबर के माननीय पुलिस अधीक्षक महोदय भी हैं। और इसके अलावा साइबर के जो प्रकरण देखते हैं, जो शिकायत आती है उसकी जांच करते हैं। और बहुत सारे साइबर के जो अपराध हैं उन्हें हम भी ट्रेस करने की कोशिश करते हैं। और अगर हमको ऐसा लगता है कि हमारे अलावा और भी जो इस से रिलेटेड संस्था होती है उससे हम मार्गदर्शन लेते हैं और समाधान का प्रयास करते हैं।

समाज सेवा में पुलिस का क्या महत्वपूर्ण रोल रहता है ?

♦ यह सवाल आपका अच्छा है,समाज सेवा में पुलिस का बहुत महत्वपूर्ण रोल है। काफी अच्छा रोल पुलिस का होता है,पुलिस के द्वारा समाज में यदि अच्छा वातावरण रखा जाएगा तो निश्चित रूप से समाज बढ़िया चलेगा। अगर समाज में पुलिस का वातावरण ठीक नहीं होगा, अवैध गतिविधियां होंगी तो समाज परेशान रहेगा, इसलिए जो भी पुलिस अधिकारी हैं उनकी मंशा इस तरह से होना चाहिए कि, समाज अच्छा रहे। उसके लिए जो अवांछनीय गतिविधियां हैं उसको शक्ति से खत्म करना चाहिए।

आमजन की आप तक पहुंच कैसी है ?

♦ आमजन की हम तक बहुत अच्छी पहुंच है, हम तो 24 अवर्स उपलब्ध हैं, जब भी हमारी किसी को आवश्यकता होती है, हमारे मोबाइल नंबर सभी जगह डिस्प्ले हैं। और इसके अलावा हम जब यहां थाने पर रहते हैं या मोहल्ला मीटिंग लेते हैं तो उनसे हमारा संपर्क होता है, तो उससे डायरेक्ट व्यक्ति हमसे संपर्क में रहता है। तो उसको जल्दी राहत मिलती है, जनता हमारे बड़े अधिकारियों के संपर्क में आती है, तो वह बड़े गंभीर होते हैं और उससे उन को बड़ी राहत मिलती है।

आप अगर पुलिस में नहीं होते तो कहां होते ?

♦ यह भी आपने अच्छा पूछा है। और मैं अगर पुलिस विभाग में नहीं होता,तो चूंकि मैं निश्चित रूप से स्पोर्टस से संबंधित हूं तो स्पोर्ट्स में ही कहीं अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा होता। और पुलिस विभाग में भी मैं ऐसे ही उद्देश्य से आया था क्योंकि मैं (जिमनास्टिक में ऑल इंडिया में गोल्ड मेडलिस्ट रहा हूं) तो अगर मैं पुलिस विभाग में नहीं होता तो निश्चित रूप से स्पोर्ट्स में अपनी भूमिका निभा रहा होता।

इतनी व्यस्तता के बावजूद क्या आप परिवार को समय दे पाते हैं ?

♦ पुलिस की सेवा व्यस्तता की सेवा है उसके बाद भी अपने परिवार को पूरे समय देते हैं। जितना समय हम को मिलता है अधिकतम समय हम परिवार को देते हैं, परिवार हमारे साथ रहता है और हमारे बच्चे वगैरह भी अच्छे स्कूल में हैं और हम पुलिस की सेवाओं से संतुष्ट हैं।

☞ यह एक अच्छा दौर है और कमिश्नर प्रणाली के लागू होने के बाद से निश्चित रूप से शासन और प्रशासन के बीच एक अच्छा बेहतर समन्वय है..

☞ वीआईपी कल्चर का अब कोई चलन नहीं है , कहीं कोई बत्तियां नहीं है, कहीं कोई हूटर नहीं है, तो वीआईपी कल्चर तो कहीं रहा ही नहीं ..

☞ परिवारों को एक करने का हमारा प्रयास है , था और कई परिवारों को हमने एक किया भी है ...

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री सुनील श्रीवास्तव
थाना प्रभारी - सदर बाजार

कमिश्नर प्रणाली जो इंदौर में लागू हुई है इसके पीछे कई राजनीतिक दृष्टिकोण तो नहीं है ?

♦ नहीं ऐसा नहीं कह सकते हैं हम। काफी समय से इंदौर को कमिश्नर प्रणाली से जोड़ने का प्रयास लगातार जारी था। और अब यह कमिश्नर प्रणाली यहां पर लागू की गई है,इसे हम राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए नहीं कह सकते हैं, पूर्व से चर्चा जो चल रही थी उसको मूर्त रूप दिया गया है। यह बहुत अच्छी पहल है और इसमें काफी अच्छे सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

क्या हम ऐसा मान सकते हैं कि इसके कारण पुलिस विभाग की चुस्ती-दुरुस्ती और आमजन को भी राहत बढ़ेगी ?

♦ यह तो बिल्कुल सही है इसके कारण इस प्रणाली के कारण बहुत चुस्ती और दुरुस्ती आएगी। और इसी के कारण गुंडों और बदमाशों में भय का वातावरण बना हुआ है, काफी सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं इसके भी। आमजन के लाभ के लिए ही तो इस प्रणाली को लागू किया गया है। अपराधी वर्ग पर इसका प्रभाव पड़ेगा, अपराधी इसके कारण भागेंगे, अपराधी वर्ग अपराध करने से रुकेंगे और अपराधी अपराध को छोड़कर एक नई दिशा की ओर आएंगे। तो निश्चित रूप से इससे आम जनता को ही भला या आम जनता को इस में निश्चित रूप से लाभ है ।

वी आई पी कल्चर को पुलिस के द्वारा कैसे देखा जाता है?

♦ वीआईपी का जो कल्चर है वह वीआईपी के लिए है और जो साधारण लोग हैं उनके लिए साधारण कल्चर है। तो वीआईपी का कल्चर अपनी जगह है साधारण कल्चर अपनी जगह। और अभी तो ऐसा कोई वीआईपी कल्चर आपने देखा नहीं होगा। वीआईपी कल्चर का अब कोई चलन नहीं है। देखा भी होगा आपने कि कहीं कोई बत्तियां नहीं है, कहीं कोई हूटर नहीं है, तो वीआईपी कल्चर तो कहीं रहा ही नहीं ना ।

इंदौर जैसे शहर में ड्रग्स का व्यापार क्या बढ़ रहा है इस पर पुलिस का क्या नजरिया है?

♦ नहीं हम ऐसा नहीं कह सकते कि इंदौर में ड्रग्स का व्यापार बढ़ रहा है, हां यह जरूर है कि कुछ जगहों पर ड्रग्स का व्यापार हुआ है,हो रहा है और ऐसा भी नहीं है कि उन पर कोई कार्यवाही नहीं की जाती। पुलिस को जैसे ही सूचना मिलती है उन पर सख्त कार्यवाही की जाती है। और पिछले दिनों पुलिस के द्वारा ड्रग्स पर काफी अच्छा काम किया गया है और उसके कारण जो इस तरह के लोग हैं जो इस व्यापार में लिप्त हैं उन पर काफी हड़कंप है

अपराधियों को छुड़ाने के लिए पुलिस प्रशासन में राजनीतिक दखल कहीं दिखाई देता है क्या?

♦ नहीं ऐसा मैं नहीं मानता हूं कि अपराधियों को छुड़ाने के लिए या गलत तरीके से किसी को छुड़वाने के लिए राजनीतिक हस्तक्षेप पुलिस में शासन में कई होता है। अभी डेमोक्रेसी है, तो यह गलत है कि कहीं राजनीति का दखल पुलिस प्रशासन में है ।

जो आदतन अपराधी हैं उन पर पुलिस और आपका क्या व्यवहार है ?

♦ जो आदतन अपराधी हैं उन पर कानून की मंशा के अनुसार उन पर कड़ी कार्रवाई की जाती है, उनको बाउंड ओवर कराया जा रहा है, और जो इसका पालन नहीं कर रहे हैं उनके खिलाफ कार्यवाही करके उनको जेल भेजा जा रहा है ।

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस प्रशासन क्या प्रयास करता है?

♦ क्षेत्र में जो भी वरिष्ठ जन है उनके लिए सुरक्षात्मक प्रयास पुलिस के द्वारा किए जाते हैं। हम लोग उनके लिए हमेशा उनकी सुरक्षा के लिए काम करते हैं। और कहीं ना कहीं जो वरिष्ठ जन है,उनको पुलिस की सुरक्षा की जरूरत पड़ती है, तो और उनके द्वारा यदि हमसे संपर्क किया जाता है तो हमारे द्वारा तत्काल सुरक्षा मुहैया कराई जाती है ।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं ?

♦ घरेलू हिंसा में कुछ ऐसी चीजें हैं जो डिपेंड करती है, पति-पत्नी के बीच में आपस में समन्वय ना होना या कोई विवाद होना । कोई तालमेल ना होना, अपने अपने इशू होते हैं, उसके कारण घर में झगड़े होते हैं। लेकिन हम लोग उसको महिला परामर्श केंद्र के माध्यम से समझाने का काम करते हैं। थाने पर भी जो महिला डेस्क बनी है, उस के माध्यम से दोनों में समन्वय स्थापित करने का कोशिश करते हैं।

ऑपरेशन प्रहार के बारे में कुछ बताइए?

♦ ऑपरेशन प्रहार के तहत अभी काफी काम किया जा रहा है अभी हाल ही में सवा सौ के करीब 107 16 की कार्यवाही की गई है, 110 की कार्यवाही की गई है,गुंडों के खिलाफ आम चेक की कार्रवाई की गई है, जिला बदर और एनएसए की कार्यवाही की गई है, गुंडे बदमाश और जो कुख्यात अपराधी हैं उनको जेल भेजा गया है। और लगातार यह कार्यवाही की जा रही है गिरफ्तारी वारंट जारी है उनको भी जेल के पीछे भेजा जा रहा है।

शहर के लगभग हर थाने के बाहर सैकड़ों कंडम वाहन पड़े हुए हैं इनका निकाल क्या होगा ?

♦ स्थानों पर जो वाहन पड़े हुए हैं उसके निकाल के लिए नीति बनी है और उसका निकाल करने का लगातार प्रयास किया जा रहा है।

जनता के लिए कुछ संदेश ?

♦ बस हमारा संदेश यही है जनता से कि अपराध से सावधान रहें,उसे अवॉइड ना करें,अपराधी के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।और आम जनता से भी यही उम्मीद है कि कहीं जब कोई अपराध दिखे तो तुरंत पुलिस को इसके बारे में सूचना दें।तो अपराधियों के खिलाफ पुलिस द्वारा तत्काल कार्रवाई की जाएगी।

वाहन चेकिंग के नाम पर कई बार सामान्य वाहन चालकों को भी परेशान किया जाता है कितनी सच्चाई है ?

नहीं! मैं इससे सहमत नहीं हूं। सामान्य वाहन चालकों पर कोई कार्यवाही नहीं हो रही है। हमारे द्वारा यह देखा जाता है कि या तो उसके नंबर प्लेट खराब है, या नंबर डिजाइन में लिखवा रखे हैं, या सीरियल में गलती है या ब्लैक फिल्म लगी रहती है या मोबाइल पर बात करते हुए वाहन चला रहे होते हैं जो आरटीओ के नियम के विरुद्ध है उन पर सामान्य रूप से कार्यवाही की जाती है ।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री राम कुमारी कोरी
ट्रैफिक थाना प्रभारी (पश्चिम)

कमिश्नर प्रणाली से यातायात इंदौर पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

♦ इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है,तब से अगर हम यातायात प्रबंधन की बात करें तो और पब्लिक की राय लेंगे तो मध्य प्रदेश में इंदौर नंबर पर आने की कगार पर है और हमारे इस प्रयास का परिणाम यह है कि आज मैं 85% लोग यातायात के नियमों का पालन कर रहे हैं और जो लोग नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं उनके लिए हम प्रयास कर रहे हैं कि वह भी नियमों का पालन करें। हमारे डीसीपी साहब का मानना है कि हम लोग इस प्रणाली के अंतर्गत 100% सुधार करने का प्रयास करेंगे ।

इंदौर में यातायात पुलिस की सिर्फ चालानी कार्यवाही करने की इमेज क्यों बनी?

♦ चालानी कार्यवाही का हमारा कोई ऐसा उद्देश्य नहीं था, परंतु जब हम लोगों ने फील्ड में काम किया,लोगों को अवेयर किया,रेड लाइन पर रुकने के लिए समझाया, वनवे में चलें, रॉन्ग साइड में ना जाए,नो पार्किंग में वाहन खड़े ना करें, लेकिन लोगों को समझ में नहीं आया तो फिर हमें चालानी कार्यवाही करना पड़ी। हमारे अधिकारी द्वारा कहा गया है कि खास तरह से उन पर कार्वाई की गई,जिन की नंबर प्लेट गलत है या एक गलत तरीके से नंबर लिखवा रखे हैं या रेड लाइट का उल्लंघन करते हैं जैसे बुलेट में मॉडिफाई साइलेंसर लगा रखा है और कर्कश आवाज में वे गाड़ी भाग चला रहे। उसके लिए हमने बहुत सारी कार्यवाही कि । फिर भी जब नहीं माने तो हमें मजबूर होकर चालानी कार्यवाही करना पड़ी।

पिछले वर्ष की तुलना में नए वर्ष में इन तीन माह में क्या कार्यवाही की गई?

♦ इन 3 महीनों का डाटा तो मेरे पास स्पष्ट नहीं है? पर फिर भी हमारा जो प्रयास रहा है,उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि इन 3 महीनों में यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ हमारे द्वारा काफी कार्यवाही की गई है। और पूरे मध्यप्रदेश में अच्छी कार्यवाही यातायात प्रबंधन द्वारा यातायात पुलिस विभाग द्वारा की गई है।

अक्सर देखा गया है कि दोपहर में चौराहों पर वीरानगी रहती है,इस समय यातायात पुलिस कहां होती है?

♦ नहीं यह कहना शायद ठीक ना होगा, हमारा तो टाइम शेड्यूल निम्नानुसार रहता है। ड्यूटी का टाइम जो है वह 9:00 से 12:00 रहता है और 12:00 से 8:00 रहता है और एक है जो शाम को 5:00 से 10:00 बजे तक काम करती है। चौराहे वीरान नहीं रहते हैं, बस इतना है कि ज्यादा ट्राफिक नहीं है, धूप हो रही है और यातायात नॉर्मल है, तो हमारे डीसीपी साहब का कहना है कि कुछ रिलैक्स भी किया जा सकता है । ट्रैफिक पुलिस के जवान हमेशा मुस्तैदी से ड्यूटी पर रहते हैं

अक्सर देखा गया है कि जब वाहन चालक को आपके द्वारा रोका जाता है तो ' कथित भैया ' का फोन आता है,तो तब आप क्या करते हैं यातायात विभाग क्या करता है ?

♦ इस विषय में हमारे डीसीपी साहब का स्पष्ट कहना है कि ऐसी कोई परिस्थितियां अगर बनती है तो आप परिस्थिति अनुसार निर्णय करें और बड़ी सादगी से आप बात करें, और उन्हें नियम का उल्लेख करते हुए बताएं कि नियमों का उल्लंघन हो रहा है इसलिए इन पर कार्यवाही की जा रही चालन बनाया जाना अनिवार्य।

जब इंदौर में मानवीय पहलू के आधार पर ग्रीन कॉरिडोर बनता है तब यातायात पुलिस की क्या व्यवस्था होती है ?

♦ यह एक मानवीय पहलू होता है और मानव अंग जो दान किए जाते हैं और वह दूसरे शहरों को जब भेजे जाते हैं तो इंदौर शहर में कॉरिडोर ग्रीन कॉरिडोर बनाया जाता है और सारे चौराहे पर वायरलेस सेट के माध्यम से यातायात को कंट्रोल किया जाता है। और शहर के अन्य वाहन चालकों को परेशान नहीं किया जाता है, इस बात का भी ध्यान रखा जाता है वैसे भी सबका सहयोग मिलता है क्योंकि यह मानव कल्याण के लिए कार्य किया जाता है

क्रेन द्वारा उठाए गए वाहनों पर कैसे कार्यवाही की जाती है ?

♦ शहर की यातायात व्यवस्था को संभालने के लिए किया जाता है जो सड़क के पास में गाड़ी खड़ी करके और बाजार करने चला गया,अब वह मार्केट में व्यस्त थे एक घंटा हो गया डेढ़ घंटा हो गया,उससे यातायात बाधित होता है, तो उसे क्रेन द्वारा ही उठाया जाएगा और इसके बाद चालानी कार्रवाई होती है और वाहन चालक अगर चाहे तो यहां पर वाहन अपने चालान की राशि जमा कराकर छुड़ा सकता है या फिर वह कोर्ट के माध्यम से आना चाहे तो कोर्ट के माध्यम से अपनी गाड़ी को अपने वाहन को ले सकता है ।

यातायात पुलिस विभाग द्वारा शहर में अनेक योजनाएं चलाई गई सब ठप हो जाती है क्यों ?

♦ ऐसा तो नहीं है पर पुलिस ने यातायात पुलिस द्वारा समय-समय पर अनेक जनहित की ओर मानव हित की उनकी सुरक्षा के लिए योजनाओं को लागू किया जाता है और जहां तक हैल्मेट की योजना का सवाल है उसमें कार्यवाही भी हमारे द्वारा की जाती है और अभी भी लगातार की जा रही है। अवेयरनेस के माध्यम से सभी को सतर्क किया जा रहा है। क्योंकि हेलमेट लगाने से उनकी जान की सुरक्षा है क्योंकि दुर्घटना के समय हेलमेट आपकी जान को रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारे द्वारा समय-समय पर अवेयरनेस के कार्यक्रम किए जाते हैं। आपने देखा होगा कि ऑफिसों में भी अनिवार्य किया गया था कि हेलमेट लगाना अनिवार्य है।

अक्सर देखा गया है कि पुलिस विभाग के अधिकारी और कर्मचारी भी हेलमेट नहीं पहनते हैं ?

♦ नहीं हमारे अधिकारियों द्वारा एक समय आदेश दिया गया था कि कोई भी पुलिस अधिकारी कर्मचारी बिना हेलमेट के वाहन घर से ना लाए और वाहन चलाते समय हेलमेट अनिवार्य लगाएं हमारे अधिकारी समय-समय पर संज्ञान लेते हैं और अवेयरनेस के माध्यम से कर्मचारियों और अधिकारियों को भी सचेत करते हैं कि हेलमेट लगाना अनिवार्य है !

पुलिस प्रॉसिक्यूटर और प्रेस वाले जब गलती करें तो इनके बारे में आप क्या कहेंगे ?

तीनों ही पक्ष जिम्मेदार है नियम और कायदे कानून को जानने वाले हैं इसलिए इन्हें तो नियमों का पालन करना ही चाहिए अगर पुलिस नियमों का उल्लंघन करें तो वाकई माफ नहीं करना चाहिए उनके चालन बनाना चाहिए और हमने बनाए भी हैं। कोई भी नियमों का पालन नहीं करें तो निश्चित रूप से दंडात्मक कार्यवाही की जाना चाहिए।

अक्सर देखा गया है कि दो पहिया वाहन चालक को जब रोका जाता है तो यातायात पुलिस द्वारा उस वाहन चालक की गाड़ी की चाबी निकाल ली जाती है, यह किस नियम के तहत कार्रवाई होती है?

♦ यातायात के नियमों में हमको स्पष्ट आदेश हैं, हम को अधिकार है, वाहन के संबंध में कोई भी कार्यवाही हम कर सकते हैं, आपके वाहन की चाबी निकालने की बात कर रहे हैं तो उसमें हमारा यह मानना रहता है कि, कई बार हम वाहन चालक को रोकते हैं और वाहन चालक रुकते-रुकते नहीं रुकता है और कई बार वो गाड़ी भगा ले जाता है, और फिर हम उसको पकड़ नहीं पाते हैं और उसके गाड़ी भगाने की स्थिति में दुर्घटना होने की संभावना बड़ी होती है। तो इस व्यवस्था को सुधारे जाने के लिए हमारे द्वारा वाहन चालक के वाहन की गाड़ी की चाबी निकाली जाती है, ताकि वह कार्रवाई में हमको सहयोग करें।

सारे थानों पर जप्त किए गए वाहन पड़े हुए हैं इनका निकाल क्या होगा?

♦ लावारिस वाहनों जिनका कोई नहीं है उन पर नीलामी की कार्यवाही वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में की जाएगी। इसमें व्याय प्रक्रिया भी जो है उसको भी पूरा किया जाता है।उनमें से कुछ वाहन जो होते हैं वह अपराध में जप्त किए हुए वाहन होते हैं। उसका कोर्ट के हिसाब से जब भी निकाल होगा उस पर निकाल किया जाएगा।

ड्रग्स माफिया के खिलाफ NDPS द्वारा युद्ध स्तर पर कार्यवाही की जा रही है..
वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस महकमा सजग है और सतर्क भी है ...

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री आर.डी. कानवा
थाना प्रभारी तेजाजी नगर थाना

कमिश्नर प्रणाली को इंदौर में आप किस तरह से देखते हैं ?

- इंदौर में कमिश्नरी प्रणाली लागू हुई है वह अपराधियों के नियंत्रण के लिए बहुत कारगर हथियार है, इसमें अपराधियों को अपराध से रोकने के लिए जो प्रतिबंधात्मक कार्यवाही है, वह समय सीमा में और बहुत कारगर तरीके से बहुत अच्छे से हो सकेगी, जिसके कारण अगर वह पुनः अपराध करते हैं तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सकेगी।

इससे अपराध जगत पर एवं पुलिस प्रशासन पर कितना फर्क पड़ेगा ?

- कमिश्नरी प्रणाली से अपराध जगत पर निश्चित रूप से फर्क पड़ेगा,पूर्व में यह होता था कि प्रतिबंधात्मक कार्यवाही जो करती थी वह इतने अच्छे तरीके से नहीं हो पाती थी । वर्तमान में कमिश्नर प्रणाली लागू होने से प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करने से बांड ओवर होने की कार्यवाही की जाती है, उनको तत्काल गिरफ्तार कर लिया जाता है और कुछ समय सीमा के लिए उनको जेल में निरुद्ध कर दिया जाता है तो यह निश्चित है कि अपराध जगत पर इसका बहुत फर्क पड़ेगा। साथ ही हम कह सकते कि पुलिस प्रशासन में भी इस प्रणाली से कसावट आएगी।

पुलिस विभाग द्वारा शासन और प्रशासन के मध्य कैसे समन्वय स्थापित किया जाता है ?

- पुलिस विभाग और शासन प्रशासन के मध्य इंदौर में तो पूर्व से भी काफी अच्छा समन्वय रहा है । पूर्व में भी जो कार्यवाही होती थी वह अच्छी कार्यवाही होती थी, अपराध नियंत्रण के लिए जब-जब गुंडे बदमाशों के खिलाफ अभियान चलाए गए पुलिस विभाग और प्रशासन ने मिलकर अच्छी कार्रवाई की थी । जिसका परिणाम है कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने भी कई बार इंदौर की इस बात की प्रशंसा की है ।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं इसका क्या संकेत है ?

- माननीय मुख्यमंत्री महोदय के जो संकेत हैं उसके आधार पर है यह कह सकते हैं कि अब इसमें बहुत बारीकी से मॉनिटरिंग हमारे वरिष्ठ अधिकारीगण कर रहे हैं । हर छोटी छोटी घटना को बड़ी गंभीरता से लेते हैं, घटना क्यों हुई ? किन परिस्थितियों में हुई ? इसका अध्ययन किया जाता है और पुलिस की क्या भूमिका रही इस पर भी काफी बारीकी से जांच की जाती है।

राजनीतिक हस्तक्षेप को पुलिस प्रशासन में कैसे देखा जाता है ?

- मेरा ऐसा मानना है कि राजनीतिक जहां आवश्यक है वहां कोई परेशानी नहीं है, कोई व्यक्ति अगर किसी का पक्ष रखता है और वह व्यक्ति का पक्ष अगर सही है तो उसमें कोई पुलिस को दिक्कत नहीं है । और मानना नहीं मानना यह पुलिस का अपना निर्णय होता है । उसे कोई अगर इनलीगल अप्रोच करता है तो आवश्यक नहीं है कि वह बात मानी ही जाए एवं यह पुलिस प्रशासन के ऊपर भी निर्भर करता है ।

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस महकमा क्या रोल अदा करता है ?

- इंदौर में वरिष्ठ जनों के लिए अलग से वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में कार्यवाही जारी है । 60 वर्ष से अधिक के जितने भी लोग हैं उन सभी के कार्ड बनाए हुए हैं, उनका अलग से ग्रुप भी बनाया हुआ है, अगर उनको कोई भी समस्या आती है तो तत्काल में संपर्क करते हैं और पुलिस उस पर तत्काल कार्यवाही भी करती है ।

आपके क्षेत्र की जनता और समाज के लिए आपका कोई संदेश ?

- हमारा संदेश यही है कि वाहन चोरी के मामलों में वाहन का जो लॉक होता है वह कमजोर होता है । उसमें एक रॉड यूसेफ की रॉड का जो एक लॉक आता है, उसका उपयोग करें । दूसरा हमारा कहना है कि घर में ज्वेलरी कम से कम रखना चाहिए अगर आपके पास ज्वेलरी ज्यादा है तो आप लॉकर का उपयोग करें । और घरों में इंटरलॉक का उपयोग करें,सुरक्षा के बहुत सारे साधन है, जिनका हम उपयोग कर सकते हैं । सायरन लगा सकते हैं जिनके कई जगह स्विच होते हैं, वह हम बजा सकते हैं एक बार चालू हो जाने के बाद जब तक बंद नहीं होते हैं जब तक मेनस्वीच से उनको बंद ना किया जाए ऐसे सायरन भी होते हैं ऐसे समय में डकैती लूट के चांस होते हैं वह कम हो जाते हैं।

इंदौर महानगर में ड्रग्स का व्यापार तेजी से बढ़ा है यह मौत के सौदागर जो हैं इन पर क्या कार्यवाही होती है ?

- नहीं यह गलत है मौत का सौदागर जो है जिनको हम कह रहे हैं यह गलत है, असल में हो यह रहा है कि पहले कार्यवाही नहीं होती थी और अब कार्यवाही बहुत तेजी से हो रही है,अपराधी पकड़ा रहे हैं, इसलिए लोगों को लगता है कि यहां पर बहुत ज्यादा ड्रग्स का व्यापार और यह मौत के सौदागर अपना जाल बिछा रहे हैं । न केवल इंदौर बल्कि सभी जगह ड्रग्स का सेवन होता है और जब कार्यवाही होती है तो कार्यवाही दिखती है,तो कई बार लोग यह मानते हैं कि इस बार ड्रग्स का सेवन बहुत लोग कर रहे हैं । ऐसा नहीं है , एनडीपीएस की जो कार्यवाही है वह होती है पहले भी कार्रवाई होती थी पर अभी चूँकी युद्ध स्तर पर कार्यवाही हो रही है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है देखने वालों को कि ड्रग्स का बहुत ज्यादा प्रचलन चल रहा है....

- हमारे जो वरिष्ठ अधिकारी हैं बहुत संजीदा - संवेदनशील है, वे हमें कहते हैं कि वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं और बच्चों के लिए पुलिस को बहुत सतर्कता, सावधानी और संवेदनशीलता के साथ काम करना चाहिए।
- अभी हमारे अधिकारियों ने दो-तीन मीटिंग ली है उन मीटिंग में हमने जो पिछले सालों की तुलना में अध्ययन किया तो आईपीसी के अपराधों में गिरावट आने लगी है,अमूमन पहले अपराध बढ़ते थे ,इस बार अपराध कम हुए हैं। यही कमिश्नरी प्रणाली का प्रभाव है ।
- हमारी हंड्रेड डायल सुविधा ऐसी सुविधा है जिसे आप डायल करते हैं । पूरे इंदौर का मैक्सिमम जो रिस्पांस टाइम है मुश्किल से 7 से 12 मिनट है। तो आप समझिए 10 मिनट में पुलिस की सहायता मिल रही है, यह कमिश्नर प्रणाली का लाभ है।
- बॉन्ड ओवर की कार्यवाही भी बहुत तेजी से कर रहे हैं। एक सामान्य अपराधी को इस बात का एहसास होने लगा है कि,कोई गड़बड़ किया तो मुझे बांड ओवर के लिए भेजा जाएगा। तब उसको इस बात का रिलाइज हो जाएगा कि मैं पुलिस के निगाहों में आ चुका हूं, तो वह बड़ा अपराध करने से बचेगा। यही मुख्य बात है कि कमिश्नर प्रणाली में अपराध को होने से रोक ले।
- पुलिस प्रशासन में हर छोटे से लेकर बड़े कर्मचारी तक, सभी का यह प्रयास है,पूरी ताकत लगा रहे है कि यह जो सिस्टम लागू हुआ है,इसमें बेहतर से बेहतर कर सकें। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में सुधार निश्चित रुप से हो रहा है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री राजेन्द्र सोनी
थाना प्रभारी बाणगंगा

हमारे शहर में कमिश्नर प्रणाली का प्रयोग किया गया है आप कैसे देखते हैं...?

♦ इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है। इसे में बहुत सकारात्मक रूप से देखता हूं, यह परिवर्तन बहुत जरूरी था, इस परिवर्तन से शहर के नागरिक को जो अपेक्षा हैं, उनको हम शायद बेहतर तरीके से पूरा कर पाएंगे। बेहतर पुलिसिंग दे पाएंगे। हमारे कमिश्नर साहब, हमारे डीसीपी साहब और सभी अधिकारी इस दिशा में लगातार प्रयासरत भी हैं कि बेहतर पुलिसिंग हो,हर चौराहे हर गली में पुलिस की उपस्थिति हो। बहुत शॉर्ट नोटिस पर और बहुत शॉर्ट ड्यूरेशन में पुलिस की अगर किसी को आवश्यकता है तो पुलिस वहां पहुंचे और उचित कार्यवाही करें ।

पुलिस प्रशासन की कार्यवाही में राजनीतिक हस्तक्षेप कितना होता है ?

♦ नहीं कोई राजनीतिक हस्तक्षेप मेरी नजर में नहीं आया, कि जिसे मैं हस्तक्षेप कह सकूं, वे जनप्रतिनिधि है उनके पास भी पीड़ित व्यक्ति जाता है, वरिष्ठ अधिकारियों के पास भी आता है हमारे पास भी आता है, उसको लगता है कि यहां मेरी सुनवाई नहीं हो रही है तो वह हमसे बड़े अधिकारी के पास जाता है, क्योंकि जनप्रतिनिधि का काम है आम आदमी की टच में रहना उनकी बातें सुनना, तो जब कोई पीड़ित व्यक्ति उनके पास पहुंचता है तो यह सामान्य से बात रहती है कि वह हमारे पास आए और यह किसी की मदद हो सकती है तो इसको कम से कम पुलिस प्रशासन में हस्तक्षेप मैं नहीं मानता हूँ। जनप्रतिनिधि का भी काम है उनके जो क्षेत्र के मतदाता है नागरिक हैं उनकी बात सुने और उनकी मदद करें।

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस प्रशासन का क्या सहयोग होता है?

♦ वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस प्रशासन सालों से प्रयास में है, कि जो सिटीजंस अकेले रहते हैं, जिनके बच्चे बाहर चले गए हैं, उनको हमारे बीट के अधिकारी कर्मचारी जाते हैं हमारे मोबाइल नंबर देकर आते हैं और इनको दो तीन प्रकार की ओर सावधानी के बारे में बताया जाता है। उनको समझा देते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर वह हमसे संपर्क करें।

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार बहुत बढ़ रहा है इस पर आपकी क्या टिप्पणी है?

♦ देखिए मेरा ऐसा मानना है कि यह एक सामाजिक बुराई है, और सामाजिक बुराई को हम समाज के द्वारा ही दूर कर सकते हैं, इसकी शुरुआत घर से होती है, घर में बच्चों को संस्कार कैसे मिल रहे हैं, माता-पिता उनके ऊपर कितना ध्यान देते हैं यदि बच्चे को घर में पूरा समय माता-पिता का नहीं मिल रहा है तो वही अपेक्षा फिर वह अपने दोस्तों में तलाश करता है, और कई बार वह ऐसी तलाश में गलत सोहबत में पड़ जाता है। और समाज के लोगों को भी यह ध्यान देना पड़ेगा और मोहल्ले पड़ोस का कोई बच्चा भी अगर गलत काम कर रहा है तो उसको उसके माता-पिता को इस बात का आगाह करना पड़ेगा कि वह आपका बच्चा गलत दिशा में जा रहा है। हम लोग यही कोशिश करते हैं।

अभी रीसेंट एक केस मेरे पास आया था कि एक 17 साल के लड़के ने एक महिला का पर्स छीना उनके माता पिता की मृत्यु हो गई थी और उसकी बहन उससे मिलने के लिए थाने आई बहन ने बताया कि वह 21 साल की है भाई 17 साल का है। मां बाप है नहीं वह कमाती और भाई के शौक पूरे करती है।तो मैंने उस लड़की को यहां बैठा कर तथा सामाजिक रूप से जो काम करने वाले लोग हैं उनसे मैंने बात की और कहां कि इस बच्ची की मदद करें। और एक डॉक्टर साहब है उनको बुलाया फिर उनके यहां उसको नौकरी दिलवाई जिस लड़की को 2700 मे काम कर रही थी वह लड़की 6000 में काम कर रही है, लड़की मजबूत होगी तो अपने भाई को सुधारने में मदद करेगी। उसकी इच्छा है कि वह उसके भाई को रिहैब सेंटर में भेजे,तो पैसा होगा तो वह उसको वहां भेज सकें। तो हमसे जो मदद हो सकती थी वह हमने कि इस तरह से सामाजिक सुधार में मानवीय आधार पर हम पुलिस की भूमिका महत्वपूर्ण होती है ।

सामाजिक बदलाव में पुलिस की क्या भूमिका होती है?

♦ सामाजिक बदलाव में पुलिस की बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मेरा मानना है कि, समाज सुधार के लिए पुलिस एक बहुत बड़ा व बहुत आवश्यक अंग है। क्योंकि जो मापदंड नियम कायदे कानून भारत के संविधान में, आईपीसी में, सीआरपीसी में दिए गए हैं, उनको पुलिस ही एक ऐसी एजेंसी है जो आम आदमी पर लागू करती है। इन फोर्स एजेंसी है हम। आप कल्पना कीजिए कि 1 दिन के लिए पूरे शहर से पुलिस हटा ले, ट्रैफिक पुलिस हटा ले, तो क्या कोई लाल सिंगल पर रुकेगा? क्या कोई नियम का पालन करेगा?सड़क पर बैठे मिलेंगे शहर के पूरे लोग। कोई खौफ नहीं रह जाएगा। तो समाज को सुधारना और उसको सही दिशा में लगातार लेकर चलने का काम पुलिस सालों से करती चली आ रही है।।आज भी कर रही हे और आगे भी करती रहेगी।

मेरा मानना है कि पुलिस ने मानवीय संवेदनाएं छोड़ी नहीं है । विगत वर्षों की तुलना में आने वाले वर्षों में लगातार पुलिस इस दिशा में लगातार अपने आप को सुधार करते हुए बहुत अच्छे मुकाम पर हैं। पुलिस के द्वारा बहुत अच्छे-अच्छे काम किए हैं। आप देखेंगे प्रत्येक थाना में दिन भर में एक न एक कोई अच्छा काम अवश्य ही होता है ।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं? और अक्सर पुरुषों के खिलाफ झूठे प्रकरण दर्ज हो जाते हैं पुरुष पीड़ित होता है?

♦ घरेलू हिंसा में मेरा बहुत साफ मानना है कि मेरा भी घर है मेरा भी परिवार है पड़ोसियों के भी घर है और घर घर जोड़कर ही समाज बनता है यह घर घर की कहानी है अब देखेंगे हम जिसको घरेलू हिंसा परिभाषित करते हैं वह 12 घर छोड़कर कहीं ना कहीं कभी ना कभी देखने को मिलती है उसके पीछे तात्कालिक कारण भी होते हैं और सामाजिक कारण भी होते हैं सोशी और इगो प्रॉब्लम कहलाता है कि एक आदमी दिन भर में 400 कमाता है और वह 180 रुपए का एक क्वार्टर खरीद कर पी जाता है 50 अंडे मछली पर खर्च कर देता है अब बचे हुए 200 में उसे घर भी चलाना है स्कूल के बच्चों की फीस भी देना है अब पत्नी होती है तो वह उसे मारता है लो साहब यह घरेलू हिंसा शुरू हो गयी ईगो की प्रॉब्लम होती है जिसे वह सब परिवार के सदस्य अपना स्वाभिमान समझते हैं जबकि वास्तव में वह अभिमान होता है स्वाभिमान नहीं तीसरी बात रिश्तेदार नाते दारों का अनावश्यक दखल और सबसे ऊपर में कानून मानता हूं कि पारिवारिक संस्कार कैसे हैं रिश्तो के मूल्य कैसे हैं लड़की की शादी जहां हुई है उस लड़की के संस्कार क्या है उस लड़की की शादी हुई है उस परिवार के संस्कार क्या है एक संस्कारी बच्ची एक असंस्कारी परिवार को भी संस्कारित कर सकती है यह मेरा अनुभव है और पारिवारिक हिंसा में हम सीधे किसी भी व्यक्ति पर केस दर्ज नहीं करते हैं पहले काउंसलिंग करते हैं और फिर भी अगर किसी महिला की शिकायत है तो हमारे द्वारा उसे न्यायालय में प्रस्तुत किया जाता है सीधे कोई केस पंजीकृत नहीं होता है परिवारों को टूटने से बचाने का पुलिस का बहुत महत्वपूर्ण उद्देश होता है मेरा ऐसा पक्का मानना है कि अगर संस्कारी परिवार है तो इस तरह के बहुत कम प्रकरण आएंगे कोई ऐसी समस्या आएगी भी तो छोटी मोटी और घर में जब चार चूड़ी होती है तो वह मैं कहीं ना कहीं खनकती भी है और कोई घटना होगी भी तो सड़क पर नहीं आएगी। किसी भी महिला के द्वारा शिकायत किए जाने पर परिवार के सदस्यों सास ससुर जेठ जेठानी अन्य के खिलाफ न्यायालय के निर्देशानुसार सीधे दर्ज नहीं किया जाता है।

आपकी सर्विस के दौरान ऐसा कोई प्रकरण याद आता है जिसमें आपको अपराध ने चौंकाया ?

♦ जब मैं रिश्तो को तार तार होते हुए देखता हूं, तो मुझे बहुत तकलीफ होती है। मैंने ऐसा कोई रिश्ता नहीं देखा जिसमें उसको दाग ना लगाया हो। यह सोच कर तकलीफ होती है कि, कोई बाप ऐसा कैसे कर सकता है ? कोई बेटी अपने पिता के साथ ऐसा कैसे कर सकती है? क्या दो ही भाई आपस में ऐसा कुछ कर सकते हैं? अभी एक पत्नी ने अपने पति को मारकर जमीन में गाड़ दिया? तो यह जो स्थिति है मुझे चौंकाने वाली बात है? लेकिन यह दुनिया है,ऐसे कुकृत्य सालों से होते चले आ रहे हैं और जब इस प्रकार की घटनाएं होती हैं तो मुझे चौंकती है ।

अगर आप पुलिस में ना होते तो कहाँ होते?

♦ मैं अगर पुलिस में नहीं होता तो निश्चित रूप से कॉलेज में प्रोफ़ेसर होता।

■ .....भ्रष्टाचार के बारे में कमिश्नर प्रणाली लागू होने के बाद से मुझे कहीं भ्रष्टाचार दिखाई नहीं देता। और इसके बारे में कहीं सुनाई नहीं देता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि कमिश्नरी प्रणाली लागू होने से भ्रष्टाचार पर भी फर्क पड़ा है। उस पर रोक लगी है, तो भ्रष्टाचार पर तो निश्चित रूप से ब्रेक लगा है।

■ ..इस प्रणाली के माध्यम से एक अच्छा मैसेज आएगा। सभी दूर पुलिस प्रशासन की साख में वृद्धि होगी तथा अच्छा संदेश ही जाएगा और सुधार होने की पूरी संभावना है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री धर्मेन्द्र सिंह भदोरिया
थाना प्रभारी क्राइम ब्रांच

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप किस तरह से देखते हैं?

♦ इंदौर की जो कमिश्नर प्रणाली लागू की गई है यह निश्चित रूप से एक अच्छा सराहनीय कदम है और मध्यप्रदेश शासन की मंशा के अनुसार कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है, इसमें मैं देख रहा हूं और काम भी कर रहा हूं, गुंडे और बदमाशों में इसके कारण काफी दहशत है और और हमारे शहर के क्राइम में भी काफी गिरावट आई है। तो हम कह सकते हैं कि कमिश्नरी प्रणाली को सकारात्मक रूप से देखा जाना चाहिए।

क्राइम ब्रांच की कार्यप्रणाली कैसे होती है?

♦ क्राइम ब्रांच की कार्यप्रणाली पर मेरा ऐसा माननाहै कि, हमारे डीसीपी साहब जो हैं,वह इसको पूरी मॉनिटरिंग करते हैं, और उनके आदेश पर ही हम सारे कार्य करते हैं। वह साइबर फ्रॉड, इसके साथ ही बड़े-बड़े 420 के जो प्रकरण होते हैं, और इसके अलावा हम सबसे बड़ी कार्यवाही ड्रग्स एमडी और हीरोइन पर कार्य करते हैं। क्राइम ब्रांच विधान अनुसार कार्य करती है।

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार काफी बढ़ रहा है इसमें युवा और महिलाएं भी लिप्त हो रही है इस पर आप क्या कहेंगे?

♦ आपका सवाल ठीक है, लेकिन हमने अभी एक बड़ी कार्यवाही की है और कोशिश में सफलता भी हमने प्राप्त की है। बीच में 70 किलो हमने एमडी ड्रग्स पकड़ा था,यह एक बड़ी कार्यवाही थी। और अभी भी लगातार हमारे द्वारा इस तरह कार्यवाही जारी है की क्राइम को रोका जा सके। और इतना ही नहीं इस तरह के कई प्रकरण हमने छह सात बार पकड़ चुके हैं।

क्राइम ब्रांच और न्यायालय के बीच कैसे तालमेल बैठता है?

♦ क्राइम ब्रांच के द्वारा एक अलग पद्धति के साथ काम किया जाता है। क्राइम ब्रांच का सेशन एक अलग है और जैसे अन्य थानों का न्यायालय में संबंध होता है उसी तरह से क्राइम ब्रांच का भी अपना सेशन है,वही पर अन्य थानो तरह से कार्य संपन्न किया जाता है।

क्राइम ब्रांच में राजनीतिक हस्तक्षेप को भी कहीं देखा जाता है क्या ?

♦ क्राइम ब्रांच का अपना एक काम करने का अलग तरीका है। और मेरा जहां तक मानना है कि क्राइम ब्रांच के कार्य प्रणाली में और उसके कार्य पद्धति में राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं आता है। और मेरे द्वारा ऐसा कोई राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं देखा गया। तो हम कह सकते हैं कि क्राइम ब्रांच के कार्य पद्धति में राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होता है।

आपके रहते क्राइम ब्रांच के थाने द्वारा कोई बड़ी सफलता के बारे में आप बताएं?

♦ जैसा कि मैंने आपको अभी थोड़ी देर पहले ही बताया है हमारे द्वारा पिछले दिनों 70 किलो एमडी पकड़ा गया था यह क्राइम ब्रांच के लिए बड़ी सफलता थी, इसमें मुंबई के नामचीन लोग शामिल थे और उसमें जो नकली जमानतदार थे, उनको भी क्राइम ब्रांच द्वारा पकड़ा गया है, इससे क्राइम ब्रांच द्वारा काफी बड़ी बड़ी कार्यवाही की गई है। साथी एक कार्यवाही हुई जिसमें शहर के 2 बड़े बदमाश है इनमें से एक अपराधी पर 40 प्रकरण दर्ज से और एक अपराधी पर 20 प्रकरण दर्ज थे। तीन बार एनएसए हो चुका था अभी शॉर्ट एनकाउंटर में उन्हें भी पकड़ा गया है। तो क्राइम ब्रांच के द्वारा लगातार कार्य किए जाते हैं और सफलता भी मिलती है।

एनएसए की कार्यवाही क्या होती है ?

♦ एनएसए की कार्यवाही होती है एनएसए की एक नेशनल ला होता है उसके तहत कार्यवाही होती है, और उस नियम के तहत अपराधी को 1 साल के लिए बॉन्ड करते हैं , और जो लॉ कहता है उसे अनुसार कार्यवाही की जाती है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि अपराधी का कोई जाति धर्म नहीं होता है उनके साथ सख्ती से पेश आना चाहिए?

♦ बिल्कुल ठीक बात है ना अपराधी से घृणा नहीं कहते हैं और अपराधी को तो सुधारने का पूरा प्रयास करते हैं हमारा मानना भी है कि हम अपराध से घृणा करें अपराधी से नहीं। अपराधी को सख्ती से पेश आने के कारण ही वह सुधर सकता है और वह अपराध से घृणा करने लगेगा।

पिछले दिनों की तुलना में अपराध का ग्राफ कम हुआ है या ज्यादा हुआ है ?

♦ देखिए मेरा ऐसा मानना है कि पिछले वर्ष की तुलना में इस नए वर्ष में अगर हम तुलनात्मक अध्ययन करें तो, कमिश्नर प्रणाली लागू होने के बाद से अपराध का ग्राफ तो काफी कम हुआ है, और आंकड़ों की जहां तक बात करें तो मेरा ऐसा मानना है कि बड़ी-बड़ी घटनाएं नहीं हुई है। और अभी जो खरगोन में घटना हुई है उसको लेकर हमारे हमारे एसीपी साहब ने नीचे से लेकर ऊपर तक के स्तर पर बहुत बारीक मॉनिटरिंग की है और हमारे शहर में कोई भी ऐसी अप्रिय घटना नहीं होने दी यही बड़ी सफलता है

अपराधियों पर कितना शिकंजा कसा गया है?

♦ देखिए कमिश्नर प्रणाली को लागू हुआ अभी कुछ समय हुआ है और अभी तो शुरुआत है, निश्चित रूप से इस प्रणाली के माध्यम से अपराधियों पर शिकंजा कसा जाएगा मजबूत शिकंजा कसा जाएगा।

आम जनता के लिए आपका कोई संदेश जो क्राइम से सावधान करता हो?

♦ हमारा आम जनता को यही संदेश है कि क्राइम से बचें और स्वस्थ रहें मस्त रहें और कोई भी अगर आम आदमी को परेशानी होती है प्रॉब्लम होती है तो सब अधिकारियों के और मेरे मोबाइल नंबर डिस्प्ले किए हुए हैं। कभी भी कॉल कर सकते हैं,हमारे डीसीपी साहब 24 घंटे उपलब्ध हैं आम व्यक्ति उन्हें कभी भी कॉल कर सकता है। और महिलाओं के लिए जहां तक मेरा संदेश है वे भी सतर्क रहें हालांकि यह भी एक अच्छा विषय है कि,मुझे अभी यहां पर 4 महीने हुए हैं और इस बीच में इंदौर में ऐसा कोई महिलाओं से संबंधित बड़ा अपराध दर्ज नहीं हुआ है।

घरेलू हिंसा में आप किसे दोषी मानते हैं एक क्राइम ब्रांच के अधिकारी होने के नाते?

♦ यह एक ऐसा विषय है इसमें कुछ भी स्पष्ट कहना ठीक नहीं है,दोनों पक्ष उपस्थित हो सामने तो कुछ कहा जा सकता है। दोनों पक्षों को सुना जाए फिर गलती किसकी है यह तय किया जाए और इन सब मामलों के लिए महिला थाना अलग से भी काम कर रहा है। और इन सब से क्राइम ब्रांच काफी दूर रहता है।

पुलिस की इमेज चालान बनाने तक की बन गई है आप इसको कैसे देखते हैं ?

देखिए यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें 4 चीजें होती हैं। एजुकेशन, इंजीनियरिंग, इंफोर्समेंट और इन्वायरमेंट। इसमें क्या है कि इंफोर्समेंट का तो बहुत ज्यादा योगदान है, लेकिन अभी जो है हम इंफोर्समेंट को शासन के राजस्व वसूली के रूप में इसको कोई नहीं देखता है, और ना कोई चाहता है कि ज्यादा चालन वगैरह करें, लेकिन जो गलती करता है, उसके लिए चालन करना अति आवश्यक है। क्योंकि आपने सुना होगा 'भय बिन होय न प्रीत' तो हमारा मानना है कि बिना भय के कानून का कोई पालन नहीं करेगा।

हमारे डीसीपी साहब का एक अच्छा स्लोगन है- 'सुखद, सुरक्षित और सुगम यातायात देना हैं' यह यातायात प्रबंधन का मुख्य लक्ष्य है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री दिलीप सिंह परिहार
थाना प्रभारी यातायात (पूर्व)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली को आप किस तरह से देखते हैं?

♦ इंदौर में कमिश्नर प्रणाली जो है वह एक अच्छी शासन व्यवस्था है। जो इंदौर जैसे महानगरों के लिए आवश्यक है। यह अच्छी व्यवस्था है इस से जनता को सुरक्षात्मक माहौल मिलेगा। इसलिए कमिश्नर प्रणाली अच्छी प्रणाली है।

यातायात प्रबंधन में इससे कितना सुधार होगा?

♦ इस प्रणाली के माध्यम से यात्रा प्रबंधन में बहुत सुधार होगा। जैसा कि पिछले 3 महीनों में आपने देखा भी होगा कि, हमारे डीसीपी साहब श्री महेश चंद जी जैन साहब जब से आए हैं। उनके आने से यातायात पुलिस को जो है एक निश्चित लक्ष्य और दिशा मिली है, और उनके आने से स्टाफ व हर कर्मचारी को एक अच्छा उत्साह मिला है, जिसका असर आपको चौराहों पर पहले से काफी सुधार देखने को मिल भी रहा है।

यातायात प्रबंधन की शहरहित में क्या योजना है ?

♦ यातायात प्रबंधन की हमारे वरिष्ठ अधिकारियों की शहरहित में बड़ी अच्छी योजना है। भविष्य में इस तरह लगातार चरणबद्ध तरीके से यातायात को सुधार करना है। जिसमें सबसे पहले तो लोगों में यातायात के प्रति नियमों को पालन करने के प्रति जागरूकता लाना है और जैसे कि स्वच्छता में इंदौर अच्छा है, नंबर वन है। वैसे ही इंदौर के वाहन चालक है वह इंदौर को वाहन यातायात के विषय में भी नंबर वन बनाएं। ऐसी उनको एजुकेशन देना और इसके अलावा जैसे चौराहों पर लेफ्ट टर्न नहीं है,कई जगह हमने देखा डिवाइडर नहीं है, कहीं पर रोड मार्किंग नहीं है, कहीं पर रोड संकेत नहीं लगे हैं, यह जो सब काम है यह भी साथ-साथ करना है।

अक्सर देखा गया है कि दोपहर में चौराहे वीरान होते हैं, इस समय में यातायात पुलिस कहां होती है?

♦ ऐसा होता है कि ज्यादा जो यातायात ट्राफिक होता है वह सुबह और शाम के समय होता है, और जैसा कि हमारे यहां बल की थोड़ी सी कमी है हमारे शहर के लिए 800 की स्वीकृति है और यह स्वीकृति पुराने समय की है और बल अभी जो हमारे पास है वह लगभग 500 के करीब है इसमें भी आप यह मानी है कि 10 परसेंट अवकाश या बीमार होने की स्थिति में स्टाफ अवकाश पर रहता है तो यह और भी बल की कमी हो जाती है ज्यादातर जो पीक अवर्स होते हैं वह सुबह शाम के होते हैं लेकिन अभी यह प्रयास किया जाता है कि दोपहर में जो प्रमुख चौराहे हैं उनको खाली नहीं रखा जाता है उसमें आरक्षक उपस्थित रहता है दोपहर में यातायात के कम होने के कारण ऐसी कोई असुविधा नहीं आती है क्योंकि समय दुर्घटना की संभावनाएं भी कम होती है, इसलिए इसी तरह से इसको मैनेज किया जाता है।

वाहन चेकिंग के नाम पर कई बार सामान्य वाहन चालकों को भी परेशान होते देखा गया है इसमें कितनी सच्चाई है ?

♦ मेरा ऐसा मानना है कि कोई भी अपनी गलती नहीं मानता है कोई अगर रॉन्ग साइड से आता है तो उसको जो बोलते हैं कि आप रॉन्ग साइड से आए हो तो वह बोलता है कि हमको तो यहीं पर जाना है कोई हेलमेट नहीं लगाया है तो बोल देगा कि भूल गया किसी से कहो लाइसेंस नहीं है तो वह कहता है कि मुझे तो पता ही नहीं कि मेरा लाइसेंस नहीं है तो उसके नजरिए से तो वह परेशान होता है लेकिन पुलिस अपना काम कर रही है ना जिसके बाद सही है और जो सही चल रहा है उसको तो पुलिस से परेशान नहीं करती है।

जो नियम का पालन नहीं करेगा उसी को ट्रैफिक पुलिस रोकेगी, और जो नियम से जा रहे हैं, उनको तो हम कभी नहीं रोकते। मैंने तो कभी नहीं देखा कि जो सही चालक है, उसको परेशान किया गया हो और वह कभी परेशान होगा भी नहीं।

थानों पर जो जप्त वाहन है उनका कैसे निकाल होगा और न्याय व्यवस्था उस पर क्या है ?

♦ जैसे कि वाहन जो जप्त किए गए हैं, उनके अगर कोई कागजात नहीं है,तो उस वाहन को जप्त कर लिया जाता है, जप्त कर के थाने में खड़ा कर देते हैं, फिर वह आकर चालन कटा लेता है,पेपर दिखा देता है तो उसका वाहन उसको मिल जाता है। और जो दूसरे जप्त वाहन हैं और उसका पेंडिंग जो है, उनका निकाल तो न्याय व्यवस्था के हिसाब से जो भी निराकरण होगा वह होगा।

यातायत पुलिस जब किसी वाहन चालक को रोकती है और 'भैया' का जब फोन आता है तब आप की क्या भूमिका होती है?

♦ देखे इस विषय में मेरा यह अनुभव है कि, इस विषय में बहुत ज्यादा फोन नहीं आते। मैंने तो यहां तक देखा है कि 100 में से एक या दो कोई फोन आते हैं। इंदौर एक महानगर है यहां की जनसंख्या बहुत है और बहुत लोग बाहर के यहां पर रहते हैं, तो उनकी लोकल नेताओं से कोई ज्यादा जान पहचान नहीं होती है, इसमें मेरा बहुत ज्यादा अनुभव खराब नहीं रहा है। मुझे ऐसे ज्यादा कभी फोन आया नहीं। मैं इसमें एक बात और बताना चाहूंगा कि कभी उनके अगर फोन आते भी हैं और हमारे द्वारा उनको बता दिया जाता है कि यह गलत है। तो वह कभी ऐसे अडते नहीं है, कि इसे छोड़ ही दो, उनका कहना था कि ठीक है आप अपनी कार्यवाही कीजिए तो बात करने में कोई परेशानी नहीं है। ऐसा कोई बड़ा विवाद का विषय नहीं है।

शहर में जब ग्रीन कॉरिडोर बनता है तब यातायात पुलिस की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है?

♦ यह एक बहुत अच्छा आपने सवाल किया है,शहर में ग्रीन कॉरिडोर जो बनना है, वह यातायात पुलिस की बहुत एक जिम्मेदारी का काम होता है। किसी व्यक्ति की जान बचाने के लिए किया गया कार्य अच्छा कार्य होता है और हम तो ऐसा मानते हैं कि इस अच्छे कार्य में यातायात पुलिस को सहभागिता करने का मौका मिला है। तो हम लोग इसको बहुत अच्छे से अंजाम देते हैं, बड़े अच्छे से ट्रैफिक डायवेर्ड किया जाता है, उस समय जब वह एंबुलेंस निकलती है जो उसको पूरी व्यवस्था निकलने की की जाती है।

क्रेन द्वारा उठाए गए वाहनों पर कैसे व्यवस्था होती है ?

♦ देखिए जो रॉन्ग साइड या नो पार्किंग में वाहन खड़े होते हैं, उनको क्रेन द्वारा उठाया जाता है, और जो नगर निगम द्वारा निर्धारित शुल्क होता है वह उनसे वसूला जाता है, इससे यातायात प्रबंधन सुचारू हो यह प्रयास भी हमारा होता है।

अक्सर देखा गया है कि दो पहिया वाहन चालक को जब रोका जाता है तो वहां पर नियुक्त जवान के द्वारा दोपहिया वाहन की चाबी निकाल ली जाती है क्यों ?

♦ देखिए यह सही है लेकिन चाबी निकालने के पीछे एक प्रमुख कारण यह है कि, वाहन वाला भाग जाता है, क्योंकि कई बार क्या होता है कि वह कहता है कि रोक रहा हूं और वह भाग जाता है तो वाहनचालक वाहन को भगाएगा तो उससे दुर्घटना होने की संभावना रहती है। कई बार आपने सुना भी होगा कि पुलिस के जवान घायल हो जाते हैं,तो चाबी बंद करने के पीछे सुरक्षा का कारण महत्वपूर्ण होता है। सबसे पहले उसकी चाबी घुमा देते हैं ताकि गाड़ी उसकी बंद हो जाए, गाड़ी स्टार्ट होगी तो इससे दुर्घटना की संभावना बनी रहेगी, उसमें वाहन चालक की भी दुर्घटना हो सकती है और जवान को भी नुकसान हो सकता है।

यातायात पुलिस द्वारा समय-समय पर कई योजनाएं लाई गई अभी उनकी क्या स्थिति है ?

♦ देखिए अभी तेज बाईकर्स जो है, उनके ऊपर तो चालानी कार्यवाही हो रही है, पुलिस मुख्यालय भोपाल से एक विशेष यंत्र भी मिला है जिसमें स्पीड राडार लगा हुआ है। उस के माध्यम से अलग अलग अलग जगह पर लगा कर कार्यवाही की जा रही है, तो उचित समय पर उचित कार्यवाही की जा रही है।

सिग्नल तोड़ने वालों के खिलाफ पुलिस क्या कार्य करती है?

इंदौर में आज की स्थिति में सिग्नल तोड़ने वालों के खिलाफ यातायात पुलिस द्वारा बहुत सख्त कार्रवाई की जा रही है। जब कोई वाहन चालक पकड़ा जाता है तो चालान के माध्यम से उसके पुराने जितने पेंडिंग चालान है ,उसे वसूले जा रहे हैं। अभी आपने देखा होगा कि एक कार का चालान 21500 का बनाया,किसी बस का 11000 का चालान हुआ है, और शहर में एक मैजिक वाले का 40000 का चालान हुआ है। इससे यह देखिए कि आपकी अगर उसकी एक गलती में वह पकड़ा गया तो, उसकी पुरानी सारी गलतियों को निकाल लिया जाता है,पुरानी गलती निकाल कर उसको पूरा इकट्ठा करके चालानी कार्रवाई करते हैं। जिससे हमारे डीसीपी साहब का स्लोगन है।

'आपकी जो है एक गलती जेब पर पड़ती है भारी'

अतः शहर के यातायात प्रबंधन को सुचारू चलाने के लिए जो सिग्नल तोड़ते हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाती है और यह जरूरी भी है।

मेरा तो एक थाना प्रभारी होने के नाते यही संदेश है कि आम जनता स्वस्थ रहें - सुखी रहें और कानून का पालन करते हुए रहना चाहिए, शहर में यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जिसमें कोई बिना अपराध के भी अपनी जान से हाथ धो बैठता है। और सभी को जीवन में कानून के पालन करते रहना चाहिए यही हमारा संदेश है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री सवाई सिंह नागर
अजाक थान प्रभारी

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप कैसे देखते हैं ?

- इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है यह बहुत अच्छी प्रक्रिया है और इससे आम जनता को न्याय मिलने में शीघ्रता होगी क्योंकि पूर्व में 107 116 151 110 वगैरा के लिए कलेक्टर ऑफिस जाना पड़ता था पूरा पूरा केंद्रीकरण हो गया है और इससे निराकरण करने में कमिश्नर की प्रणाली को उचित कहना ठीक होगा।

इससे पुलिस प्रशासन में कितनी कसावट आएगी?

- कमिश्नर प्रणाली से इंदौर पुलिस प्रशासन में काफी कसावट आई है, छोटी-मोटी घटनाओं पर तत्काल कार्रवाई होती है, तत्काल रिस्पांस भी मिलता है और इससे बल में भी इजाफा हुआ है। पूर्व में हमको बल पूरा मिलता नहीं था, इससे काम में काफी सुविधा हो गई है। ट्राफिक में भी काफी बल मिल गया है उसमें अच्छी व्यवस्था हो गई है हर चौराहे को व्यवस्थित कर सकते हैं। पुलिस प्रशासन में निश्चित रूप से कसावट आई है और और भी आएगी।

अन्य थानों व आरक्षित थाने की कार्यप्रणाली में कितना अंतर होता है?

- यह सवाल अच्छा है पर इसमें मेरा ऐसा मानना है कि अन्य थानों और आरक्षित थाने की कार्यप्रणाली में कोई अंतर नहीं होता है, केवल आरक्षित थाने में यह है कि यहां पर जो अनुसंधान है वह बारीकी से होता है यहां पर राहत प्रकरण अलग से तैयार किया जाता है फरियाली जो आता है उसको आने का जो खर्चा है यहां से दिया जाता है और उसका भत्ता भी अलग से दिया जाता है और उसके साथ जो घटना घटित हुई है उसका राहत सरकार की तरफ से दी जाती है राहत प्रकरण तैयार करके कलेक्ट्रेट भेजते हैं वहां से स्वीकृत होता है। गवर्नमेंट ने कई सारी चीजें राहत में निर्धारित की हुई है।जैसे यदि किसी व्यक्ति की हत्या हो जाती है तो उसमें सरकार द्वारा उसके परिवार के एक सदस्य की सरकारी नौकरी का प्रावधान है। तथा 700000 का भी प्रावधान है और यह भी देखा जाता है कि उसके पास रहने के लिए कोई साधन नहीं है सरकार उसमें एक कदम आगे बढ़कर उसके रहने की व्यवस्था भी करवाती है।

कानून का लाभ लेते हुए कई बार सामान्य लोगों के खिलाफ झूठी शिकायत दर्ज हो जाती है इस पर क्या कहेंगे और कैसे काम करते हैं?

- हमारे द्वारा उसकी बराबर तहकीकात की जाती है, और अगर हमको ऐसा लगता है कि यह झूठी शिकायत है तो हम उसको पूरी चेक करने के बाद ही कोई कार्यवाही आगे बढ़ाते हैं, ऐसा नहीं है कि कोई भी शिकायत आई और हमने उस पर कार्यवाही शुरू कर दी पूरी तहकीकात के बाद ही जो उचित प्रतीत होता है उस पर कार्रवाई की जाती है।

मुख्यमंत्री द्वारा अपराध को सख्ती से कम करने का कहा गया है?

- मेरा मानना है कि यह बात सही है और मान्य मुख्यमंत्री जी ने जो कहा है कि अपराध को सख्ती के साथ खत्म करना चाहिए तो यह सही है। अपराधी के साथ सख्ती से पेश आना चाहिए, सख़्ती का मतलब खाली यही नहीं है कि मारपीट होना चाहिए, सख्ती का मतलब यह भी है कि अपराधी के खिलाफ कैसे मजबूत साक्ष्य जुटाए,उसके खिलाफ गवाहों को बुलाया जाए, एविडेंस तलाश किया जाए और उसे न्यायालय से सख्त सजा दिलाना चाहिए। यह भी तो सख़्ती का ही एक रूप है।

कई बार आरक्षित वर्ग की महिलाओं द्वारा कानून का दुरुपयोग किया जाता रहा है ऐसी आम धारणा है आपकी टिप्पणी?

- हमारा यह कहना है कि कोई भी अगर रिपोर्ट करने आता है तो उसकी रिपोर्ट तो लिखना ही पड़ती है, अब वह रिपोर्ट झूठी है या सच्ची है यह इन्वेस्टिगेशन का पार्ट है। अनुसंधान में बिल्कुल बारीकी से पूछताछ की जाती है, अगर ऐसा कोई गलत पाया जाता है तो हमारे पास ऑप्शन होता है खात्मा और कार्यवाही, तो प्रयास तो पूरा होता है कि सही और उचित कार्रवाई हो सके।

कई बार सामान्य लोगों को ब्लैकमेल किया जाता है ?

- देखिए इस बारे में कहना है कि अभी तक मेरे सामने तो ऐसा कोई प्रकरण आया नहीं है, अगर कोई ब्लैकमेल करता तो यह कानून का उल्लंघन होता है, तो उस पर उचित कार्यवाही जांच पड़ताल के बाद की जाना चाहिए।

जैसा कि आपका थाना आरक्षित है इसमें भी क्याराजनीतिक हस्तक्षेप को देखा जाता है?

- नहीं ऐसा कुछ मुझे महसूस नहीं होता है और राजनीतिक में काम करने वाले लोग भी सही और गलत को समझते हैं हमारे द्वारा उनको बताया जाता है कि यह गलत है तो वह अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करते। और कानून में उल्लेखित के अनुसार हम लोग काम करते हैं, सामान्य तौर पर राजनीति का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है।

जातिगत अपराध में पिछले वर्ष की तुलना में ग्राफ की क्या स्थिति है?

- जहां तक मेरा अनुमान है सामान्य रूप से इस तरह के कोई अपराध में बढ़ोतरी कोई खास नहीं हुई है, छुटपुट बढ़ोतरी के लो छोटी छोटी मोटी घटना लो ऐसी तो सामान्य चलती रहती है कभी कोई परिस्थितिजन्य घटना हो जाती है, तो उसको हमेशा नहीं मान सकते कि अपराध में बढ़ोतरी हो गई है।

'पुलिस हमारी बाप है गुंडागर्दी पाप है' यह नारा इंदौर शहर में सुनने को मिलता है इस पर आप क्या कहेंगे ?

- इस पर टिप्पणी करना कोई उचित नहीं है कानून की धारा में काम करना चाहिए कानून से हटकर कोई काम नहीं करना चाहिए।

अगर आप पुलिस की नौकरी में नहीं होते तो कहां होते ?

- यह भी आपने एक अच्छा सवाल पूछा है और मैं जहां तक समझता हूं कि अगर मैंने पुलिस की नौकरी ज्वाइन ना की होती तो मैं किसी स्कूल या महाविद्यालय में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहा होता।

सफर में यात्रियों को तत्काल आपकी मदद की आवश्यकता हो तो यात्रियों को क्या करना होता है?

यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे पुलिस में पुलिस द्वारा एक ऐप बनाया हुआ है । जीआरपी पुलिस हेल्प इस ऐप के माध्यम से हमेशा मदद को तैयार रहती है। जीआरपी पुलिस उस ऐप के माध्यम से अगर कोई आदमी परेशानी में कॉल करता है, तो हमारे अधिकारियों के पास, हमारे पास तत्काल सूचना आती है। और एक ऐसी टीम बना रखी जो तत्काल कार्रवाई करती है। हमारे अधिकारी और कर्मचारी जाते हैं और रेल के अंदर ही पीड़ित की शिकायत को दर्ज किया जाता है। उसको कहीं जाने की जरुरत नहीं है, यात्री अपनी सीट पर बैठा रहेगा और हमारी जो टीम है यात्रियों की की मदद करेगी। यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि इस तरह का जो काम है यह मध्यप्रदेश में ही अभी सबसे ज्यादा किया जा रहा है। अन्य प्रदेशों के बारे में तो मुझे जानकारी नहीं है, पर एमपी में तो यह है कि आपको जीआरपी पुलिस द्वारा सीट पर ही मदद की जाती है। और जहां पर भी ट्रेन चल रही है वहां संबंधित के लिए जीआरपी पुलिस द्वारा द्वारा कार्य को किया जाता है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप किस तरह से देखते हैं?

- यह एक बहुत अच्छी प्रणाली है और इसमें शहर में बहुत अच्छा अनुशासन आएगा और प्रशासन में भी सुधार आएगा और अपराध जगत में तो निश्चित रूप से इस में कमी आएगी, इसलिए हम कह सकते हैं कि कमिश्नर प्रणाली इंदौर में जो लागू हुई है वह बहुत अच्छी प्रणाली है ।

आम थाने और रेलवे थाने की कार्य प्रणाली में क्या अंतर है?

- देखिए ऐसा है कि रेलवे थाना और आम थाने में कोई खास फर्क नहीं है,जहां तक मेरा मानना है कि शहर में जिस तरह के अपराध होते हैं, उसी तरह के अपराध रेलवे में भी होते हैं। जैसे चोरी लूट डकैती हत्या यह सब चीजें शहर में भी होती है और यहां पर भी अमूमन ऐसा ही होता है। वही कानून शहर के लिए है और वही कानून यहां के अपराधियों के लिए। तो यहां की कार्यप्रणाली में और आम थाना की कार्यप्रणाली में कोई खास फर्क नहीं होता है। बस यहां रेलवे से संबंधित अपराध के कंट्रोल के लिए रेलवे थाना काम करता है ।

क्या आम आदमी का सीधा संबंध रेलवे थाने से होता है?

- हां बराबर है आम आदमी का सीधा संबंध रेलवे थाने से होता है, कोई आदमी सफर करके यात्रा करके आ रहा है और उसके सामान की कोई चोरी हो गई या उसके साथ कोई घटना हुई तो, वह सीधे रेलवे थाने पर ही आता है। और अगर ऐसा कोई अपराध है और जिस में आवेदक हम तक नहीं पहुंच पाता है, तो हम कोशिश करते हैं कि उस तक पहुंचे। कोई टेलीफोन आता है कोई सूचना आती है तो हम जाकर उसको अटेंड करते हैं। उसको सुनते हैं तो आम जनता का संपर्क तो सीधा रहता है रेलवे पुलिस थाने से ।

रेलवे में होने वाले अपराध किस तरह के होते हैं?

- रेलवे में होने वाले अपराध है वह ज्यादातर तो चोरियां होती है, जेब कटी हो जाती है, कभी-कभी लूट की घटना भी हो जाती है। और कुछ फ्रॉड जैसी घटनाएं भी हो जाती हैं इस तरह की अधिकतर घटनाएं रेलवे में होती रहती है। छीना झपटी की घटनाएं कम होती है चोरी ज्यादा होती है। सामान्य रूप से आदमी ट्रेन में सफर करता है, सोता रहता है उस समय चोरी की घटनाएं ज्यादा हो जाती है। पुलिस उसकी सक्रिय होकर जांच करती है और चोरी जैसे मामलों में फरियादी की मदद करती है। और अपराधी को पकड़ कर सामान दिलाने की कोशिश पूरी रहती है।

संवाद और परिचर्चा

श्री अनवर खान
रेलवे थाना- इंदौर अधिकृत अधिकारी

रेलवे पुलिस द्वारा स्मगलिंग के मामलों में किस तरह के कार्य किए जाते हैं?

- रेलवे पुलिस द्वारा इस तरह के जब मामले होते हैं,तो अपने जो मुखबिर होते हैं उनको विशेष रूप से प्रशिक्षित किए जाने के साथ ही उस पर कार्यवाही की जाती है। और स्मगलिंग जैसे मामलों में पुलिस पूरी तरह सक्रिय होकर स्मगलर जो होते हैं उनके खिलाफ पुलिस द्वारा समय-समय पर अभियान चलाया जाता है। वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग और उनके मार्गदर्शन से टीम बनाकर उनको पकड़ने की कार्यवाही की जाती है।

न्यायिक प्रक्रिया में क्या अलग से कोई ऐसा प्रावधान है जिसमें रेलवे विभाग का अलग से कानूनी प्रावधान प्रदर्शित होता है?

- नहीं इसमें इस तरह का कोई प्रावधान अलग से न्याय प्रक्रिया में नहीं है। और इसमें नहीं कोई अलग से मजिस्ट्रेट नियुक्त होते हैं। हां कहीं कहीं पर कुछ विशेष मजिस्ट्रेट नियुक्त किए जाते हैं तो वह जीआरपी थानों के अलावा अन्य थानों के संबंध में भी निर्णय लेते हैं।

रेलवे में होने वाली चोरी और धोखाधड़ी पर आप कैसे नियंत्रण करते हैं?

- मेरा ऐसा मानना है कि आदमी के साथ जब धोखा होता है तो है जब एक तो आदमी दोस्त ही बना लेता है और दोस्त बनाकर ही आम आदमी को धोखा देता है। आम जनता इतनी भोली होती है कि वह किसी के भी कहने में आ जाती है, जिसे कोई किसी के बहकावे में आ जाता है, वह कहता है कि चलो हम तुमको पैसा डबल कर देंगे, दुगना पैसा कर देंगे, और आदमी उसके बहकावे में आ जाता है। कई बार होता यह है कि जैसे आपने टिकट लिया है,या नहीं लिया है,लाओ अलग से हम टिकट

बिना टिकट यात्रियों पर जीआरपी पुलिस द्वारा कैसे काम किया जाता है या रेलवे विभाग द्वारा कैसे काम किया जाता है?

- बिना टिकट यात्रियों के लिए रेलवे विभाग द्वारा टीटी नियुक्त किए गए हैं,वही इन पर कार्रवाई करते हैं हम भी जीआरपी पुलिस भी उनके साथ सक्रिय रहती है। बराबर उनके साथ सहयोग करते हैं और बिना टिकट यात्रा पकड़े जाते हैं तो हमारे द्वारा भी उनको टीटी महोदय को पूरा सहयोग किया जाता। अगर कोई गलत आदमी है तो फिर जीआरपी पुलिस द्वारा उचित कार्रवाई की जाती है।

दिला देंगे, उसमें पैसा कम लगेगा तो आदमी के साथ धोखा हो जाता है और पुलिस उसमें भी सक्रियता के साथ लगी रहती है। इसमें सुरक्षा के लिए रेलवे पुलिस द्वारा दस्ते और उड़न दस्ते बनाए हुए हैं अपराधियों को पकड़ने का हमारे जीआरपी पुलिस द्वारा पूरा प्रयास किया जाता है ।

रेलवे में जो वीआईपी आते हैं तो उनके आगमन पर आपके द्वारा कैसे मैनेज किया जाता है?

- रेलवे में जो वीआईपी का आगमन होता है, तो उनके लिए जीआरपी पुलिस भी मुस्तैदी से काम करती है। उनके लिए निर्धारित मार्ग रहता है, उस मार्ग पर रेलवे पुलिस के अधिकारी और कर्मचारियों की नियुक्ति रहती है, वीआईपी की सुरक्षा के लिए अन्य संसाधनों का भी उपयोग किया जाता है और रेलवे पुलिस का उनकी सुरक्षा के लिए अलग से विंग रहता है खुफिया जानकारी लेता है, उसको यदि ऐसी कोई सूचना मिलती है तो वह तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को बताता है, हम लोगों को पूरी मदद करते हैं। हर चीज में उनकी देखरेख में कोई कोताही नहीं बरती जाती। और उस समय आम यात्रियों को कोई परेशानी नहीं हो उनको कोई नुकसान ना हो । इस तरह का भी हमारे द्वारा प्रयास किया जाता है, जीआरपी पुलिस द्वारा वीआईपी के लिए अलग से रास्ता बना दिया जाता है।

वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए जीआरपी पुलिस क्या कार्यवाही करती है?

- वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा के लिए जीआरपी पुलिस हमेशा तत्पर रहती है,कर्मठता से तत्पर रहती है और कभी-कभी तो जीआरपी पुलिस द्वारा वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए विशेष अभियान भी चलाया जाता है। और वरिष्ठ जनों की पूरी मदद की जाती है। जैसे कई बार वरिष्ठ जन है और ट्रेन चलने वाली है तो उन्हें कई बार उसमें हम हाथों से उठा कर उनको ट्रेन में बैठ आते हैं। कोई महिला वृद्ध है और उसको जरूरत है तो महिला पुलिस द्वारा उनकी मदद की जाती है। वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए सहयोग किया जाता है। और भी मदद की है जिसमें पानी की सुविधा है, हमारे जवान उनकी मदद करते हैं और ठंडा पानी उनको सीटों तक पहुंचा दें यह प्रयास रहता है। कई बार उनके टिकट नहीं बन पाते हैं तो जीआरपी पुलिस के जवान उनको टिकट बनाना बनाने में भी मदद करते हैं। तो सीनियर सिटीजंस के लिए तो जीआरपी पुलिस हमेशा सेवा करने को आगे आती रहती है काम करने को।

यात्रियों के हित में जीआरपी पुलिस किस तरह से काम करती है ?

- जीआरपी पुलिस द्वारा यात्रियों की मदद के लिए हमारी भावना है कि सभी आदमी,आम आदमी अच्छे से यात्रा पूरी करें। और जरूरतमंद को जीआरपी पुलिस द्वारा हमेशा पूरी मदद की जाती है। उनकी यात्रा के दौरान उनको कोई तकलीफ ना हो इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है।

रेलवे पुलिस और रेलवे प्रशासन के बीच कैसे संबंध में रहता है?

- रेलवे पुलिस और रेलवे प्रशासन के बीच काफी अच्छा संबंध रहता है। इस संबंध के माध्यम से ही यात्रियों के लिए सुविधाजनक कार्य किया जा सकता है। उनको परेशानियों से बचाया जा सकता है और और एक दूसरे को पूरा सहयोग किया जाता है। क्योंकि रात दिन हम लोगों को साथ में रहकर काम करना होता है। जीआरपी पुलिस और रेलवे विभाग के सभी लोग एक दूसरे से मिलकर काम करते हैं। कभी उनकी कोई समस्या है तो हम मदद करते हैं और हमारी कोई परेशानी है तो उनके द्वारा मदद की जाती है। आपस में बहुत अच्छा मेलजोल रहता है।

ऐसी कोई अन्य वह जानकारी जो यात्रियों के हित में आप देना चाहते हैं?

- हमारा ऐसा मानना है कि जीआरपी पुलिस द्वारा तो मदद की जाती है। पर यात्रियों को भी सतर्क रहना चाहिए सजग रहना चाहिए। जैसे कि सफर में कोई किसी को कोई चीज खाने को दे दे तो यह नहीं सोचना चाहिए किसको मैं खा लूं। यह सोचना चाहिए कि यह व्यक्ति बाहरी है, इसके द्वारा कुछ भी धोखा किया जा सकता है। बाहरी लोगों से उतना ही सहयोग लो जितना जरूरी हो। जीआरपी पुलिस चाहती है कि हर आदमी अपना सफर अच्छे से करें यही सद्भावना रहती है। आम आदमी आम यात्री अपनी खुद की सुरक्षा भी करें, और आसपास के वातावरण को समझकर यात्रा करें, किसी से किसी तरह का अनावश्यक मेलजोल ना रखें और इसके बाद भी जीआरपी पुलिस द्वारा उनकी मदद के लिए हमेशा तत्परता से कार्य किया जाता है।

sponcership
DETECTIVE GROUP
Detecting the truth
WWW.DETECTIVEGROUP.IN
WWW.DETECTIVEGROUP.IN

YouTube Detective Group Report
SUBSCRIBE

आम थानों में और हमारे कार्य प्रणाली में अंतर होता है उस की प्रणाली यह होती है कि उनके पास नामजद आरोपी होता है। साइबर सेल मैं इसके विपरीत होता है पहले आप जांच करते हैं, साइबर के पास नामजद आरोपी नहीं होता है। यह आम थानों और साइबर सेल में अंतर होता है।

साइबर सेल द्वारा अपराध रोकने के अनेक कार्य किए जाते हैं स्कूल कॉलेजों में जाकर अवेयरनेस के प्रोग्राम चलाए जाते हैं है कि अपनी कोई गोपनीय चीजें किसी को शेयर नहीं करना चाहिए अपने मोबाइल को कैसे सिक्योर रखना है सभी चीजें हमारे द्वारा लोगों को बताई जाती है यह हमारा प्रयास लोगों को जागरूक करना होता है यह साइबर सेल द्वारा समय-समय पर किया जाता है साइबर का मूल उद्देश्य यही है कि आप सतर्क रहेंगे तो ही इस क्राइम से बच सकते हैं

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री सोनल सिसोदिया
साइबर सेल - इंदौर

आपकी कोई विशेष योग्यता बताइए?

♦ मैं स्पोर्ट्स से हूं, मेरे द्वारा गोताखोरी को लक्ष्य बनाया गया है और इसी फील्ड में मैंने काम भी किया है। तैराकी में मैंने कई पुरस्कार जीते हैं। मैंने भारत का भी प्रतिनिधित्व किया है। अंतरराष्ट्रीय गोताखोर होना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है, मैंने 3 देशों में भारत का प्रतिनिधित्व गोताखोरी में किया है, चाइना, मलेशिया और बैंकॉक मैंने भारत का प्रतिनिधित्व किया है। मैं राष्ट्रीय स्तर की गोल्ड मेडलिस्ट गोताखोर रही हूं। भारत सरकार द्वारा मुझे दिल्ली में ही राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मध्य प्रदेश सरकार का एकलव्य पुरस्कार मध्यप्रदेश में जिसे खेल रत्न कहा जाता है उस पुरस्कार से भी मुझे सम्मानित किया गया है। और इन सब का श्रेय मैं अपने पिताजी को देना चाहती हूं,उनके मार्गदर्शन में ही मैंने तैराकी में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। मेरे पिताजी भी अंतरराष्ट्रीय स्तर के तैराक रहे हैं। इंडिया के बेस्ट वाटर पोलो प्लेयर रह चुके हैं वह भी। और मेरा नेटिव प्लेस इंदौर ही है।

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप किस नजरिए से देखते हैं?

♦ मध्य प्रदेश शासन के द्वारा इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू की गई है, यह एक प्रदेश शासन की बहुत ही अच्छी व्यवस्था है,इससे युवा वर्ग में भी काफी सजगता हुई है, पुलिसकर्मियों में भी इससे बड़ी उत्सुकता है,नया जोश है और अपराधियों पर अंकुश लगाने के लिए सबसे बढ़िया प्रणाली प्रमाणित होगी। इसलिए हम कह सकते हैं कि कमिश्नर की प्रणाली इंदौर में जो लागू हुई है वह प्रशंसनीय कदम है।

अन्य थानों और साइबर सेल के थानों की कार्यप्रणाली में क्या अंतर होता है?

♦ अच्छा सवाल है साइबर सेल और अन्य थानों की कार्यप्रणाली में काफी अंतर होता है। साइबर सेल की कार्यप्रणाली अन्य थानों के कार्य प्रणाली की अपेक्षा उनकी तुलना में एकदम अलग होती है। ,जो शिकायतकर्ता होता है उसकी शिकायत ही मुख्य आधार होती है। उसी के आधार पर हमको काम करने के लिए एक चैन बनानी पड़ती है, बहुत ही चैलेंजिंग काम है साइबर सेल का, अन्य थानों की अपेक्षा।

साइबर सेल के काम करने का उद्देश्य क्या है?

♦ साइबर सेल के काम करने का उद्देश्य है कि जिस तरह से अभी नए नए अपराध आ रहे हैं और आने वाले समय में भी इस तरह के अपराध और बढ़ेंगे,हमारी जो टेक्निकल चीजें हैं उसमें आधुनिकता में हर जगह डिवाइस सबसे इंपोर्टेंट है। तो उस पर लेकर सारे पॉइंट होते हैं साइबर सेल का उद्देश्य है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को अवेयर करें ,उन्हें जागरूक करें और उनकी शिकायत पर कार्रवाई करें।

आम अपराधी का सीधा संबंध साइबर सेल से होता है क्या?

♦ देखिए इसमें साइबर सेल से सीधा संबंध तो अपराधी का नहीं होता है,क्योंकि हमें अपनी जो कार्यप्रणाली है, फाइबर की जो कार्यप्रणाली है,चुकी शिकायतकर्ता की जो शिकायत है उस पर से ही साइबरसेल काम शुरू करता है। तो एक छोटा क्लू मिलता है,जिसके आधार पर बहुत बड़ी चैन तैयार करना होती है। उसी आधार पर जो फाइनली मुख्य अपराधी होता है उस तक हमें जाना होता है।

अपराधी में साइबर सेल के नाम का खौफ है या नहीं?

♦ अपराधियों में निश्चित रूप से साइबर सेल के नाम का खौफ है और खौफ होना भी चाहिए। अब लोगों में भी साइबर से संबंधित अपराध के लिए अवेयरनेस है,काफी जागरूकता आ गई है,तो कहीं ना कहीं इसमें युवा वर्ग और नौजवान लड़के लड़कियां जो है, जो नौकरी छोड़ चुके हैं,जो साइबर के प्रति अट्रैक्ट होने से अपराध करने के लिए अब उनको थोड़ा सा डर यह है कि अगर हम अपराधी प्रमाणित हो गए,तो हमारा भविष्य कहीं न कहीं खतरे में नजर आएगा।

साइबर सेल का कार्य क्षेत्र क्या है?

♦ इसको इस तरह से समझा जा सकता है कि साइबर सेल के मध्य प्रदेश में अलग-अलग जोन है। हमारा जो हेड क्वार्टर है वह भोपाल में है। भोपाल से साइबर सेल 4 झोनो में विभाजित है। भोपाल इंदौर ग्वालियर और जबलपुर इन चारों में साइबर सेल कार्य करता है।

क्या साइबर सेल सीधे अपराधियों पर कार्रवाई कर सकता है?

♦ साइबर सेल अपराधी पर सीधे-सीधे कोई कार्यवाही नहीं करता है। क्योंकि मैंने पहले भी बताया है कि शिकायतकर्ता बताता है कि उसके उसके साथ किस तरह का फ्रॉड हुआ है। उसके बाद ही हम अपराधी तक पहुंचते हैं, पहले शिकायत ली जाती है शिकायत जांच की जाती है। उसके बाद जैसे हमें आरोपी का पता लगता है, उसके बाद एफआईआर दर्ज करते हैं फिर हम आरोपी के पास तक पहुंचते हैं।

साइबर सेल द्वारा कोई विशिष्ट कार्य किया?

♦ सवाल अच्छा है साइबर सेल द्वारा हमेशा ही विशिष्ट कार्य किए जाते हैं साइबर सेल के द्वारा बड़े-बड़े मुलजिम और बड़े बड़े अपराधियों को पकड़ा है अभी दिल्ली में राजस्थान और पश्चिम बंगाल में साइबर क्राइम जो अपराधी हैं जो विदेशी लोग आकर इंडिया में बस गए हैं। उनके द्वारा क्राइम बहुत ज्यादा किया जाता है, इस संबंध में साइबर द्वारा बड़े-बड़े कैस की सफलता है। साइबर द्वारा विदेशी नागरिकों को पकड़ा है ऐसे लोग जो भारत आकर बस जाते हैं वह क्राइम करते हैं।

जनता के प्रति साइबर सेल कितना जवाब देह है?

♦ साइबर सेल जनता के प्रति जवाब देह तो बहुत ज्यादा है। अभी जो क्राइम बढ़ रहे हैं वह साइबर क्राइम बहुत ज्यादा बढ़ रहे हैं। लड़के लड़कियों के साथ सोशल मीडिया के फ्रॉड बहुत हो जाते हैं, कोई किसी की आईडी हैक कर रहा है, फेक आईडी बना रहा है, कोई किसी की अश्लील तस्वीरें वायरल वायरल की जा रही है,किसी के साथ बैंक खाते का फ्रॉड हो जाता है, पैसा निकाल लिया जाता है, इस तरह के जो फ्रॉड हो रहे हैं। लेकिन हम उसके बहुत डीप में जाकर आरोपी की पहचान कर क्राइम के शिकार फरियादी को रिलीफ दिलाते हैं फिर उसको लगता है कि उसको लाभ मिला है साइबर सेल में आकर।

आम पुलिस कार्यप्रणाली और नारकोटिक्स पुलिस कार्यप्रणाली में क्या अंतर होता है ?

यह एक अच्छा सवाल है, नारकोटिक्स अकेला एक ऐसा थाना है जिसमें मुखबिर से ही सूचना प्राप्त होने पर ही कार्यवाही की जाती है । यहां पर जनता द्वारा कोई शिकायत नहीं की जाती है। क्योंकि मुखबिर से सूचना प्राप्त होती है और नारकोटिक्स के द्वारा उसी मुखबिर की सूचना के आधार पर ही कार्यवाही की जाती है। और पुलिस फरियादी रहती है इसमें इस तरह से कार्यप्रणाली रहती है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू की है इसको आप किस तरह से देखते हैं ?

- इंदौर में जो कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है वह एक अच्छी प्रक्रिया है और शासन की मंशा के अनुरूप इस प्रणाली को लागू किया गया है। हालांकि हमारी जो विंग है नारकोटिक्स सेल जो है वह इकाई अलग है यह इकाई कमिश्नर प्रणाली से अलग है। क्योंकि यह एक अलग प्रक्रिया है।

नारकोटिक्स की जो कार्यप्रणाली है उस पर आपके विचार प्रस्तुत करें?

- नारकोटिक्स विभाग इसीलिए अलग से बनाया गया है कि यह एक अलग तरह के कार्य को अंजाम देता है जिसमें मादक पदार्थों की विधिवत आरोपी से जब्ती की कार्यवाही की जाती है। जब्ती की कार्यवाही कर के न्यायालय में पेश करते हैं। यही प्रक्रिया नारकोटिक्स विभाग की रहती है।

मुखबिर तंत्र जो काम करता है उसका क्या क्राइटेरिया होता है, क्या वे आपके विभाग के अधिकृत व्यक्ति होते हैं ?

- नहीं वे नारकोटिक्स विभाग के अधिकृत व्यक्ति नहीं होते हैं, वे पेड एम्पलाई भी नहीं होते हैं कोई भी व्यक्ति हमारे लिए मुखबिर का काम कर सकता है वह विश्वसनीय अवश्य होता है।

नारकोटिक्स विभाग का आम जनता से क्या सीधा संबंध होता है?

- देखिए नारकोटिक्स विभाग का आम जनता से यह संबंध होता है कि, जो भी मादक पदार्थ होते हैं, उनसे जागृति के लिए अवेयरनेस के नशा मुक्ति के कार्यक्रम करते हैं। इससे जनता को फायदा होता है और नशा मुक्ति के साथ-साथ हम स्कूल और कॉलेजों में जाकर भी हम नशा मुक्ति के लिए अवेयरनेस के आयोजन करते रहते

संवाद और परिचर्चा

श्री वर सिंह खड़िया
टीआई- नारकोटिक्स सेल, इंदौर

हैं। इसके अलावा आम चौराहों पर भी हमारे द्वारा अवेयरनेस के कार्यक्रम किए जाते हैं। आम जनता को हमारे द्वारा बताया जाता है कि, नशा अच्छी चीज नहीं है नशे से दूर रहना समाज के लिए अनिवार्य है। क्योंकि गांजा , स्मैक, भांग , अफीम का या कोई भी नशा खराब होता है नहीं करना चाहिए।अतः नारकोटिक्स विभाग का तो आम जनता से सीधा संबंध है ही सही उनके हित के लिए ही नारकोटिक्स विभाग कई कार्यक्रम करता है।

नारकोटिक्स विभाग के माध्यम से कौन से अपराध नियंत्रित होते हैं?

- इससे जैसा कि मैंने बताया मादक पदार्थ की रोकथाम के लिए काम किया जाता है। नशा मुक्ति, नशे की लत लत जिसे लग गई है, नशे में आदमी अपराध करता है, वह किसी भी तरह का अपराध हो सकता है। जन जागरण के कार्य किए जाते हैं। इसलिए नारकोटिक्स के द्वारा मादक पदार्थों का जो रोकथाम किया जाता है उसे कई तरह के अपराधों पर भी नियंत्रण अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। इससे जनता को फायदा होता है और अपराध पर नियंत्रण होता है।

इंदौर में ड्रग्स का व्यापार बहुत बड़ा है इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

- देखिए क्या होता है कि मुखबिर से सूचना मिलती है उस पर ही हम कार्यवाही करते हैं कोई सूचना नहीं मिलती है तो फिर बड़ा मुश्किल होता है पुलिस कार्रवाई करती है। बढे हुए ड्रग्स के व्यापार पर समय-समय पर पुलिस द्वारा बड़ी कार्यवाही की जाती।

नारकोटिक्स विभाग में आपके द्वारा कोई बड़ी कार्यवाही की गई हो ?

- नारकोटिक्स विभाग के द्वारा ड्रग्स के मामले में कई बड़ी कार्यवाही की गई है और हमारे आने के बाद तो, हमने पिछले दिनों 7 क्विंटल गांजा पकड़ा है। स्मैक भी पकड़ी है और अफीम भी पकड़ी है।

एम डी का नशा क्या होता है ?

- नशों के कई प्रकार होते हैं, इसी तरह से एमडी भी एक तरह का नशा है और यह किसी नशे के एक कोड वर्ड जैसे होता है। वैसे एमडी नशे का नाम पड़ गया है परिभाषा इसकी कुछ नहीं कह सकते हैं।

भ्रष्ट तंत्र को कैसे रोका जा सकता है ?

- देखिए सवाल तो अच्छा है पर इसके लिए हमारे विभाग द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जाती है। और उस पर कोई टिप्पणी भी नहीं करेंगे। हालांकि भ्रष्ट तंत्र को रोकने के लिए लोकायुक्त जैसे विभाग बने हुए हैं वह भ्रष्टाचार पर कार्रवाई करते हैं। जो भी भ्रष्टाचार होता है उसके खिलाफ लोकायुक्त पुलिस के द्वारा कार्यवाही की जाती है ।

नारकोटिक्स के बारे में वह बिंदु बताइए जो आम आदमी नहीं जानता है ?

- जैसे कि मैंने पूर्व में भी बताया है। नारकोटिक्स विभाग में सिर्फ मादक पदार्थों की रोकथाम के लिए कार्रवाई की जाती है। और इससे संबंधित जब्ती भी की जाती है। यह कार्यवाही सिर्फ नारकोटिक्स थाने पर ही की जाती है और किसी थाने पर यह कार्यवाही नहीं की जाती है। नारकोटिक्स की कार्रवाई में पुलिस ही फरियादी रहती है। इसमें कोई जनता का फरियादी नहीं होता है। सिर्फ और सिर्फ मुखबिर की सूचना पर ही कार्यवाही की जाती है। जनता की तरफ से कोई किसी तरह की शिकायत नहीं होती है। मुखबिर ही सूचना देता है, कि यहां पर अवैध काम हो रहा है,यहां पर नक्शे से संबंधित पर गतिविधियां हो रही है,मादक पदार्थ इसके पास है उसके पास है। पूरे मध्यप्रदेश में सूचना मिलती है तो मौके पर जाकर जब्ती की कार्रवाई करते हैं।

मादक पदार्थों और नशे से बचने के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

- हमारा संदेश यह है कि नारकोटिक्स का जो भी नशा करता है, नशे से छुड़ाने के लिए हमने बहुत सारे अभियान चलाएं हैं,बहुत सारे प्रयास किए हैं और हमेशा नारकोटिक्स के इस प्रयास से कई सारे लोगों ने नशा छोड़ भी दिया है और मुख्यधारा में वह आ भी गए हैं। समाज में मान-सम्मान के साथ में रहते हैं। हमारे यहां से नशा मुक्ति केंद्र की कार्यवाही भी की जाती है और स्कूलों कॉलेजों में जाकर इसके लिए जन जागरण के अभियान भी चलाए जाते हैं। और कई बार चौराहे चौराहे पर जाकर कई कार्यक्रम हम लोगों के द्वारा किया जाता है। नशे के बारे में बताया जाता है कि नशे से पूरा घर तबाह हो जाता है। परिवार मिट जाते हैं क्योंकि नशे से हर प्रकार से आर्थिक नुकसान ही होता है।

क्या परिवार के टूटने एवं घर में होने वाली हिंसा का कारण नशा भी होता है ?

- परिवार के टूटने का कारण कई बार नशा भी होता है। क्योंकि जो नशे का जो आदि रहता है वह पिए बिना रहता ही नहीं, और उसको पूरा करने के लिए व चोरी चकारी कुछ भी करेगा, मां बाप के पास से पैसा चोरी कर लेता है । मेरा अनुभव है मैं जब मंदसौर में था तो मैंने वहां देखा कि घर के बर्तन तक बिक जाते हैं। नशे के कारण घर में अनेक प्रकार के झगड़े होते हैं, नशा तो जीवन में होना ही नहीं चाहिए, मेरा तो यह कहना है। और इसी कारण हिंसा का जो कारण बनता है वह नशा माना जा सकता है।

समाज में बदलाव के लिए आप की क्या भूमिका होती है?

- सामाजिक बदलाव के लिए नारकोटिक्स विभाग के द्वारा भारत सरकार की योजना और मध्य प्रदेश सरकार की योजना के तहत कार्य किया जाता है। नशा मुक्ति के लिए हमारे विभाग द्वारा प्रमुखता से सामाजिक बदलाव लाने के लिए जन जागरण और अवेयरनेस के कार्यक्रम किये जाते रहते हैं। तो सामाजिक बदलाव में नारकोटिक्स विभाग का महत्वपूर्ण रोल होता है।

हमारा सबसे बड़ा दायित्व तो यही है कि शासकीय राजस्व को सुरक्षित रखना। उसके अलावा अगर इसके रास्ते में कोई बाधा आती है, कोई इसको क्षति पहुंचाने का प्रयास करता है,इस तरह का कोई अपराध करता है, इस तरह की गतिविधि करता है, या जनता से हमको कोई सूचना मिलती है इस अपराध से संबंध में, तो उस पर हम फोरी कार्यवाही करते हैं। ताकि शासन का जो राजस्व उसमें कोई क्षति ना होने पाए क्योंकि हमारा मूल दायित्व शासन के राजस्व को सुरक्षित रखना ही है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

आबकारी में अपराध की परिभाषा क्या है?

- आबकारी में अपराध की परिभाषा यह होती है कि, आबकारी विभाग राजस्व संग्रहित करने वाला एक विभाग है, हमारा जो मुख्य काम है वह यह है कि, सरकार के राजस्व को सुरक्षित रखना, जो सरकारी राजस्व होता है उसकी सुरक्षा करना और उसको संरक्षित करना। यह मुख्य रूप से हमारे विभाग का काम होता है। अब हमारे विभाग का मुख्य काम यह है कि जब कोई अपराध करता है या सरकारी राजस्व को कोई नुकसान पहुंचाता है, क्षति पहुंचाता है, वह कोई भी हो सकता है। कोई स्मगलर हो। जैसे अवैध मदिरा का कोई संग्रहण करता है, उत्पादन करता है तो यह जो प्रक्रिया होती है,वह यह होती है कि वह हमारे राजस्व की प्रक्रिया में आड़े आ रहा है और राजस्व में हमको जो सहयोग कर रहा है, जिसको हमने लाइसेंस दिया हुआ है, तो उसके लिए एक तरह से यह सेंध लगा रहे हैं। यह आबकारी अपराध की श्रेणी में आता है। उस समय फिर हम एक थाने के अधिकारी के रूप में हम काम करते हैं और हम अपराधों पर लगाम लगाते हैं। ताकि अपराधों की पुनरावृत्ति ना हो और शासकीय राजस्व का नुकसान ना हो वह सुरक्षित रहे। यह आबकारी विभाग के कार्य प्रणाली होती है।

आबकारी अपराध रोकने के लिए आपके क्या प्रयास होते हैं?

- इंदौर का जो पूरा आबकारी महकमा है वह 15 वृत में बटा हुआ है 11 वृत शहरी क्षेत्र में और 4 ग्रामीण क्षेत्र में तो यह 15 सर्किल मिलकर काम करना होता है। सबको अलग-अलग अपने इन क्षेत्रों में काम करने वाले अधिकारियों के इनके अधिकार हैं इनके अपने दायित्व हैं और उनसे संबंधित क्षेत्र में जितनी मदिरा की दुकानें हैं उनका राजस्व सुरक्षित रह पाए यह यह इनके प्रयास होते हैं यही इनके दायित्व भी हैं । और आबकारी संबंधित कोई अपराध अगर घटित हो रहा है तो उस पर सख्त कार्यवाही करें।

संवाद और परिचर्चा

श्री डॉ. आर.पी. द्विवेदी
नियंत्रक- आबकारी विभाग, इंदौर

इस पर बड़ी कार्यवाही कैसे होती है?

- इसमें भी जैसे कोई बड़ा अपराध करता है निर्धारित मात्रा से अधिक शराब लेकर जा रहा है परिवहन कर रहा है या रखा हुआ है। तो हम उस पर नॉन बेलेबल ऑफेंस की धारा के तहत उस पर कार्रवाई करते हैं। इसके अलावा हम यह भी देखते हैं कि कहीं कोई जहरीली शराब का व्यापार तो नहीं कर रहा है। जिससे की कोई वारदात ना होने पाए समय-समय पर हमारे द्वारा कार्यवाही भी की जाती है। अवैध महुआ का संग्रहण तो कोई नहीं कर रहा है, जहां से शराब बनती है। इस संबंध में लगातार दबिश देते हैं लगातार उस पर कार्यवाही कर रहे हैं। यही सतत हमारी तरफ से कार्रवाई की जाती रहती है। शायद आपको ध्यान हो के आसपास के जिलों में शराब कांड हुआ था, इसमें इंदौर जिले में काम करते हुए हम लोगों ने मानपुर से 70 लीटर से ज्यादा ओपी एक ढाबे से पकड़ा था। वह जहरीली शराब एक तरह से होती है उपयोगकर्ता के खिलाफ हमने धारा 49 के तहत उसका प्रकरण कायम किया। माननीय कलेक्टर महोदय ने उसकी जो ढाबे और उससे संबंधित जो भी कुछ था स्थानीय थाने के माध्यम से सर्वे करवाया,उसका जो ढाबा था अवैध गतिविधियों का अड्डा था,उसको नेस्तनाबूद करवाया गया। इसी तरह से इंदौर में भी जो कुछ इस तरह के ढाबे थे पंजाबी ढाबा था, देवास नाके के पास दो-तीन ढाबे थे, जो अवैध शराब बिठाकर पिलाते थे, उस पर भी माननीय कलेक्टर महोदय और नगर निगम द्वारा और आब कारी विभाग की टीम द्वारा प्रयास कर उन अवैध ढाबा को नेस्तनाबूद किया।

आबकारी से संबंधित कोई बड़ा प्रकरण जो आपने सॉल्व किया हो?

- हां एक प्रकरण मुझे ध्यान आता है कि, एक घटना बड़ी मंदसौर में हुई थी।एक मानपुर में ढाबे पर कार्यवाही की। उसको सील किया। वहां से जब्ती हुई उसका प्रकरण कायम करके उसको जेल भिजवाया। इसके अलावा हमने करीब 60 से 70 फोर व्हीलर वाहन पकड़े 100 से ज्यादा हमने टू व्हीलर वाहन पकड़े। जो सब के सब सब जप्त हैं।उन सब के खिलाफ गैर जमानती धाराओं में प्रकरण कायम किया गया है। वह सारे अपराधी जेल में बंद है। यह सब बड़ी कार्यवाही लगातार हमारे द्वारा की जाती रही है।

अक्सर सुना जाता है कि बड़े जो अपराधी हैं वह बड़ी सावधानी से छूट जाते हैं, ऐसा क्यों?

- नहीं बड़े आबकारी के जो अपराधी हैं वह बच कर नहीं निकल पाए। ऐसा तो कुछ नहीं है, न्यायालय में हमारे द्वारा जो कार्यवाही होती है वह बहुत पुख्ता कार्रवाई होती है। कई चरणों में वे न्यायालय में मुकदमा लड़ते हैं उस प्रक्रिया में अगर वह बच जाते हैं छूट जाते हैं तो ऐसा मुश्किल होता है। हमारे द्वारा जो जानकारी मिलती है वह अवैध शराब का इस तरह का कोई काम कर रहे हैं,तो उनके खिलाफ पुख्ता कार्यवाही करने का हमारा पूरा प्रयास सफल होता है।और जो आबकारी धाराओं में हमको प्रदत अधिकार प्राप्त हैं वे सब सख्त कार्रवाई करते हैं।

न्यायिक प्रक्रिया में आप की क्या भूमिका होती है?

- न्यायिक प्रक्रिया में हमारे द्वारा जो प्रकरण कायम किया जाता है चाहे वह 34 a के तहत अपराध हो जो वे लेवल होता है, चाहे 34 /2 के तहत होता है जो नॉन बिलेबल होता है,धारा 49 के तहत जो जहरीली शराब के तहत वह भी नॉन बेलेबल धारा होती है, उन सब को न्यायालय में हम पुट अप करते हैं। माननीय न्यायालय द्वारा उस पर निर्णय लिया जाता है हमारे द्वारा न्याय की प्रक्रिया पूर्ण रूप से पुख्ता की जाती है।

समाज सुधार के लिए आबकारी विभाग क्या कार्य करता है?

- क्या हमारा विभाग जो है वह शासकीय रेवेन्यू को संरक्षित करने वाला विभाग है फिर भी समाज सुधार के लिए हमारी और से प्रयास किए जाते रहते हैं। समाज अच्छा रहें सुरक्षित रहें सुरक्षित रहें यह हमारी भी कामना रहती है।

आबकारी विभाग की ओर से कोई अपील?

- हां अवश्य आबकारी विभाग द्वारा यही अपील की जाती रहती है कि, आप अवैध अड्डों पर ना जाएं, अवैध माध्यम जो होते हैं, उनसे शराब ना लें। सस्ती मदिरा के चक्कर में कोई दुर्घटना के शिकार ना हो।

युवा वर्ग नशे की और बहुत आकर्षित हो रहा है इसको आप क्या मानते हैं ?

- देखे यह प्रश्न हमारे विभाग से संबंधित नहीं है। युवाओं के लिए जो अलग-अलग संस्थाएं हैं, सोशल नेटवर्क है, फोरम है या जो इकाईयाँ हैं,जो इस दिशा में काम कर रही हैं। यह सब उनके लिए सोचने का विषय है कि युवाओं को कैसे जागृति पैदा करें कि वह नशे की ओर आकर्षित ना हो। और पुलिस हो या हमको तो जो सूचना मिलती है कि किसी को बरगलाया जा रहा है,तो हम उस पर उचित तत्काल फॉरी कार्यवाही कर सकते हैं। और हमारे द्वारा जो प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की जा सकती है वह करेंगे ।

आबकारी विभाग पुलिस और आम पुलिस की कार्यशैली में क्या अंतर है?

- पुलिस का तो बहुत विस्तृत कार्य क्षेत्र है और हमारा तो एक छोटा सा डिपार्टमेंट है। हमारा तो काम राजस्व को सुरक्षित करना है। हम राजस्व अधिकारी हैं,शासकीय राजस्व सुरक्षित है,उसके लिए हम काम करते हैं। इसमें अगर कोई व्यवधान डालता है, कोई अवैध संग्रहण करता है, उसको मीट आउट करने के लिए हमको धाराएं दी गई है। हम उस में काम करते हैं,तो मेन काम जो हमारा है वह राजस्व को बचाना है और पुलिस का तो विस्तृत कार्य क्षेत्र है यही हमारे कार्य शैली में अंतर है।

वरिष्ठजन हमारे समाज के एक महत्वपूर्ण अंग है। उनकी सुरक्षा के लिए हमारा दायित्व बनता है कि वह सुरक्षित रहें और आसान जीवन संचालित हो, इस हेतु हमारे द्वारा पुलिस के द्वारा हमेशा प्रयास किए जाते रहते हैं।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री मोहन मालवीय
थाना प्रभारी-सांवेर

बड़े शहरों की तुलना में छोटे शहरों की थाना प्रणाली क्या होती है ?

- बड़े शहरों और छोटे शहरों की थाना प्रणाली का नियम कोई अलग से नहीं है, सभी थानों में कार्यप्रणाली एक जैसी होती है। सभी का दायित्व होता है कि अपराध की रोकथाम करना और अपराध घटित होने पर उन्हें डिटेक्ट करना और कानून व्यवस्था बनाए रखना। इस तरह से सभी थाना प्रणाली एक जैसी ही होती है।

अपराध किस तरह के घटित होते हैं?

- छोटे शहरों में अपराध साधारण रूप से मारपीट के चोरी के अधिक होते हैं, साथ ही जमीन संबंधी विवाद की भी संख्या अधिक रहती है इस प्रकार से अपराधों का यहां पर घटित होना पाया जाता है।

अपराधी होने के पीछे क्या कारण होते हैं?

- अपराधी होने के पीछे अनेक कारण होते हैं। कई बार हमने यह भी देखा है कि परिवारों में अपराध का जो बैकग्राउंड होता है और अपने परिवार का परिवेश व्यक्ति को अपराधी बनाने में सहयोग होता है। कई बार परिस्थितिवश भी व्यक्ति अपराध कर बैठता है, और अपराध में ऐसा घर जाता है कि वह बाहर नहीं निकल पाता है। कई बार संगत का असर भी होता है और इस तरह से भी व्यक्ति अपराध कर बैठता है और अपराधी हो जाता है।

क्या आपकी कार्यप्रणाली में आप राजनीतिक हस्तक्षेप को देखते हैं?

- देखिए मेरा ऐसा मानना है कि राजनीति अपना काम करती है और पुलिस को कानून के दायरे में रहकर अपना काम करना होता है। ऐसा कोई राजनीतिक दबाव नहीं देखा गया है कि जिसमें हमारी कार्यप्रणाली प्रभावित होती हो,वह जनप्रतिनिधि हैं और जनप्रतिनिधि अपना काम करते हैं और पुलिस प्रशासन अपना काम करती है जो नियम और कायदे कानून के दायरे में होता है। तो बहुत ज्यादा ऐसा राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं माना जा सकता है।

नाबालिग अपराधी हो रहे हैं इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

- कोई जन्म से अपराधी नहीं होता है, परिस्थितिवश नाबालिक बच्चे जो हैं वह अपराध कर बैठते हैं। जिनको हम सादी वर्दी में बाल न्यायालय में प्रस्तुत करते हैं। जिनका दंड बाल न्यायालय द्वारा निर्धारित किया जाता है, अक्सर उन्हें सुधारने का अवसर भी दिए जाते हैं और सारी निर्णय बाल न्यायालय द्वारा ही किया जाता है।

महिला अपराधों की ओर बढ़ रही है इस पर आपकी क्या टिप्पणी?

- देखिए इस पर भी मैं तो यही कहूंगा कि कई बार परिस्थितियां इस तरह की होती हैं कि महिलाएं अपराध कर बैठी है और वह अपराधी हो जाती है। सामान्य रूप से महिलाएं अपराध की ओर कम ही आकर्षित होती हैं। महिलाओं के अपराध के ग्राफ पर मेरा यह कहना है कि पिछले वर्षों की तुलना में अमूमन अपराधों की संख्या इक्क्ल ही है। महिला अपराधों पर हम तत्काल कार्रवाई करते हैं महिलाओं को न्याय दिलाने का प्रयास करते हैं ताकि वे भविष्य में इस तरह के अपराध जगत में ना पड़े।

क्या आपके थाना क्षेत्र में ड्रग्स का व्यापार बढ़ रहा है ?

- नहीं हमारे थाना क्षेत्र में ड्रग्स का व्यापार नहीं है और इस तरह के यहां पर कोई घटना नहीं है। ड्रग्स का व्यापार है जिससे शहर में होता हो इस तरह की कोई घटना हमारे यहां नहीं है।

सामाजिक वातावरण में आपकी भूमिका क्या होती है?

- सामाजिक वातावरण में पुलिस की बहुत अहम भूमिका होती है। सामुदायिक पुलिस ऑपरेशन एहसास के तहत महिला अधिकारी स्कूल कॉलेज में और महिलाओं में कॉलोनियों में जाकर समूह ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर गुड और बैड टच की जानकारी दी जाती है। और इस तरह से सामाजिक वातावरण में हमारे द्वारा एक अच्छा कार्य किया जाता है। सामाजिक हित के लिए पुलिस हमेशा कार्य करती रहती है।

अपराधी कमजोर प्रक्रिया के तहत छूट जाते हैं क्यों?

- मेरा ऐसा मानना है कि प्रकरण कि हमारे द्वारा विवेचना की जाती है और विवेचना पर डिपेंड किया जाता है। यह कार्य बारीकी से किया जाता है, फोरेंसिक साक्ष्यों को विधि अनुसार किया जाए तो अपराध और अपराधियों को सजा मिलने के कारगर साबित होगी। पुलिस द्वारा पूरी ईमानदारी से कार्य किया जाता है।

ग्रामीण वरिष्ठजनों की सुरक्षात्मक पहल आपके द्वारा क्या की जाती है?

- वरिष्ठजन हमारे समाज के एक महत्वपूर्ण अंग है। उनकी सुरक्षा के लिए हमारा दायित्व बनता है कि वह सुरक्षित रहें और आसान जीवन संचालित हो, इस हेतु हमारे द्वारा पुलिस के द्वारा हमेशा प्रयास किए जाते रहते हैं। हमारा प्रयास होता है कि जो समाज में पेंशन वाले हैं या जो बड़े लोग हैं वह बुजुर्ग लोग हैं उन्हें हमें हमेशा चेक करते रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में त्वरित राहत देने का प्रयास भी हम लोगों के द्वारा किया जाता है। तो निश्चित रूप से वरिष्ठ जनों की सुरक्षा के लिए पुलिस के द्वारा हमेशा सकारात्मक प्रयास जारी रहते हैं।

अपराध होने के पीछे सबसे पहला मुझे जो कारण नजर आता है वह है नशा। हम देखते हैं कि 14- 15 साल का बच्चा शराब पीने लग जाता है। बुरी संगत में आकर शराब पीने लग जाते हैं। गांजा पी रहे हैं। दूसरा नशा कर रहे हैं, खराब लोगों के साथ घूम रहे हैं, रात में घूम रहे हैं। उसके बाद आजकल जो टेक्नोलॉजी हो गई है जैसे कि टच स्क्रीन मोबाइल रख रहे हैं, मोबाइल का रिचार्ज करवाते हैं 700-800 का लगता है, नए बच्चों को बाइक चलाने का शौक है,भले वे परिवार से संपन्न नहीं है,लेकिन बाइक चाहिए उसमें डालने के लिए पेट्रोल चाहिए, घूमना फिरना भी चाहिए, फिर अच्छे कपड़े भी चाहिए, पढ़ाई लिखाई नहीं करना साथ ही शिक्षा का भी अभाव रहता है इन सब कारणों जो शॉर्टकट कमाई चाहता है वह कारण अपराध के लिए मुख्य रूप से होता है ।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री जी एस महोबिया
थाना प्रभारी- क्षिप्रा

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसको आप किस तरह से देखते हैं?

शहरी थानाक्षेत्र और ग्रामीण थानाक्षेत्र की कार्य प्रणाली में क्या अंतर होता है ?

- शहर के थाना क्षेत्र और गांव के जो थाना क्षेत्र हैं उसमें कुछ अंतर तो होता है, शहर के थाना क्षेत्र जो हैं उनका एरिया कम होता है, गांव के थाना क्षेत्रका एरिया विस्तृत होता है। ग्रामीण क्षेत्र होने में काफी दूर -दूर गांव होने से पुलिस की लगातार वहां पहुंच नहीं बन पाती है। तो हमें कई बार ग्राम रक्षक समितियों का सहारा लेना पड़ता है । ग्रामीण क्षेत्र होने से कई जगह मोटरों के वायर लगे हुए हैं, स्टार्टर लगे हुए हैं, इस टाइप की चोरी करने में चोरों को बड़ी आसानी होती है। शहरी क्षेत्रों में इस तरह चोरियां नहीं होती हैं। क्षेत्र सीमित होता है फोर्स काफी होता है। ग्रामीण क्षेत्र में मुख्य रूप से फोर्स की भी समस्या है और दूसरी जो चीज है वह यहां पर दूर-दूर गांव हैं, हाईवे है, कई बार ऐसा होता है की रात में कई गांव हम कवर नहीं कर पाते हैं। टोल नाके हैं अन्य रास्ते हैं जो दूसरे शहरों दूसरे जिलों को कवर करते हैं तो उस तरह की समस्याएं तो आती है।

ग्रामीण क्षेत्र में होने वाले अपराध और शहर में होने वाले अपराध में बेसिक अंतर क्या होता है?

- शहर के अपराध और गांव के अपराध में बहुत ज्यादा कोई अंतर तो नहीं है। जैसे कि शहर में तात्कालिक कारणों से अपराध होते हैं। जैसे आपस में लड़ाई झगड़ा चाकू चलना नशे में शराब वगैरा पीकर आपस में लोग लड़ लेते हैं। परंतु ग्रामीण क्षेत्र में यह देखने में आता है कि, जमीन संबंधी विवाद होते हैं,मजदूरी के संबंध में विवाद होते हैं, भाई भाई के विवाद हो जाते हैं, नाले को लेकर लेकर विवाद हो जाते हैं, इस तरह के अपराध ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होती है।

क्या अपराध - बेरोजगारी के पीछे आप शिक्षा को कारण मानते हैं ?

- शिक्षा के अभाव में तो बेरोजगारी होती ही है। फिर भी पूर्ण रूप से हम इसे दोषी नहीं कह सकते। कई लोग अशिक्षित हैं लेकिन वह मजदूरी तो करते हैं, किसी ने पान का ठेला लगाकर रखा हुआ है । कोई कुल्फी बेच रहा है कोई फल का ठेला लगा कर बैठा हुआ है। जिसको काम करना है वह तो काम करेगा। हम देखते हैं कई अच्छे शिक्षित लोग भी फ्रॉड कर रहे हैं। बड़े-बड़े अपराध में इंवॉल्वमेंट चोरियां कर रहे हैं। अपराध के नए-नए तरीके अपना रहे हैं तो हम बेरोजगारी को शिक्षा से सीधे-सीधे नहीं जोड़ सकते हैं। जो अपराधी है वह अपराध करेगा ही सही भले ही वह शिक्षित हो या अशिक्षित हो।

जो आदतन अपराधी हैं उन पर आपकी टिप्पणी क्या होगी?

- आदतन जो अपराधी है उसकी लगातार चेकिंग होना चाहिए। वह कब कहां है अगर आस-पास कोई अपराध होता है तो उसको जरूर देखना चाहिए कि वह उस समय कहां पर था। अगर आदतन अपराधी को लगातार हम चेकिंग करते हैं तो पुलिस की जो कार्यवाही है उससे काफी फर्क पड़ता है। उस अपराधी पर यह दहशत बनी रहती है कि पुलिस की नजर उस पर है। लगातार यह भी देखें कि उसके सोर्स ऑफ इनकम क्या है? उससे मिलने वाले कौन-कौन हैं? यह सारी चीजें हम देखते रहते हैं। क्या कमा रहा है उसकी रिश्तेदारी कहां है किस तरह के लोगों से है? अगर अपराध होगा तो वह कहां पर जा सकता है? यह सारी चीजें हम लोग देखते हैं । और आदतन अपराधी पर सख्ती से कार्यवाही भी की जाना चाहिए ।

सामाजिक परिवेश को सुधारने में पुलिस की क्या भूमिका होती है?

- देखिए अन्य इकाइयों के तुलना में पुलिस एक ऐसी कई है जो तत्काल सभी की नजर में आती है सबसे पहले वही नजर आती है। अगर हम किसी को हेलमेट पहनने के लिए कह रहे हैं, और कोई दूसरा अगर उनको हेलमेट पहने के लिए कह रहा है, तो हमारी बात को जरूर सुनेगा, दूसरे की बात पर इतना ध्यान नहीं देगा। अगर हम रोड पर खड़ा होकर किसी को बोले कि नशा नहीं करना है, शराब नहीं पीना है या दुकान वाले को बोलेंगे कि 15 साल से कम वाले को सिगरेट नहीं देना है शराब नहीं देना है तो वह हमारी बात को अवश्य सुनेगा । कोई धूम्रपान कर रहा है तो हम उसको मना करेंगे, तो उसे समझ में आएगा सभी को यह समझ में आएगा के पुलिस जो दिखती है ट्रैफिक व्यवस्था संभालती है। पब्लिक को पुलिस समझाती है कि यहां मत खड़े रहो, वहां मत खड़े रहो यहां अपराध हो सकता है, या लोगों से जब बोलती है कि अपने घरों के बाहर कैमरा लगाएं तू ही तो पुलिस ही है जो कहती है तो लोग मानते हैं हमारी बात को समझते है और उसको करते भी है। इस प्रकार से कह सकते हैं कि सामाजिक परिवेश के लिए पुलिस का बहुत महत्वपूर्ण रोल होता है।

कोरोना समय का कोई अनुभव बताइए?

- करोना काल के समय पुलिस द्वारा बहुत महत्वपूर्ण काम किए गए हैं। जैसे इस समय में मेडिकल वाले हैं या राजस्व विभाग के अधिकारी हैं, कई कर्मचारी भी लगे हुए थे,वह किसी को बोलते थे कि, मास्क लगाओ या सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करो तो कोई नहीं करता था। लेकिन जब पुलिस खड़े होकर बोलती थी कि मास्क लगाना है, सोशल डिस्टेंसिंग रखना है तो पब्लिक वह करती थी।

चैन स्नैचिंग लूटपाट और डकैती की घटनाओं में आपके थाने का ग्राफ पिछले वर्ष की तुलना में क्या है?

- पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष में हमारे थाने क्षेत्र की इन घटनाओं का ग्राफ कम है। चैन स्नैचिंग की एक घटना हुई थी और उस पर भी पुलिस द्वारा तुरंत कार्रवाई करते हुए उसे पकड़ लिया गया था, मांगलिया हॉट की घटना है, इसके अलावा जो चोरी की घटना है वह नॉर्मल घटना है। क्योंकि हमारा क्षेत्र भारी है काफी बड़ा क्षेत्र है, कालोनिया बन रही है वहां के रखरखाव अच्छे से नहीं हो रहा है, वहाँ गार्ड नहीं होता है तो कई बार चोरी को हटना तो होती है। एरिया को कवर नहीं किया हुआ है तो चोरी की घटनाएं सामान्य रूप से होती है। बाकी पहले की अपेक्षा में इन सब घटनाओं का ग्राफ कम है।

क्या ग्रामीण थाना क्षेत्र में भी राजनीतिक हस्तक्षेप को देखा जाता है ?

- राजनीति खासियत चाय ग्रामीण क्षेत्रों या शहरी क्षेत्रों सब जगह होता है लेकिन इसको हम हस्तक्षेप नहीं कह सकते है, एक सीमा तक ही उनकी बात को माना जाता है, उसके तहत कार्यवाही भी होती है । लेकिन जहां कानून बनता है तो कानून फिर अपने तरीके से काम करता है कानून के दायरे में ही काम किया जाता है। वैधानिक कार्यवाही अगर है तो उसमें राजनीतिक हस्तक्षेप उतना नहीं होता है, इतना प्रभाव नहीं डालता है।

ऐसे किसी अपराध के बारे में बताइए जिसने आप को चौंकाया हो ?

- हां कई बार मानवीय संवेदना है प्रश्नवाचक चिन्ह लगाती हैं। अभी रीसेंट की एक घटना है मांगलिया की, जहां एक बच्ची के साथ उसके पिता ने ही हत्या की। पता चला था कि पहले भी उसने उसके साथ बलात्कार किया था, उसके खिलाफ 376 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध हुआ था। उसके बाद उसके घर वालों ने ही उस पर विश्वास करके उसको छुड़वा दिया। यह सुधर जाएगा यही मानकर। उसने भी उस समय घरवालों से काफी माफी मांगी। उसके बाद सात आठ महीने वह अच्छे से रहा और उसने उस लड़की के साथ फिर से बलात्कार का प्रयास किया और वह इस में सफल नहीं हुआ तो उस लड़की की हत्या कर दी। ये तरीका का अपराध पूरा चौकानेवाले ही होते हैं

क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी ड्रग्स जैसे व्यापार की पहुंच है?

- नहीं हमारे थाना क्षेत्र में जो ग्रामीण थाना क्षेत्र है इसमें ड्रग्स के व्यापार जैसी कोई स्थिति नहीं है यहां पर इस तरह की कोई घटना हमारी जानकारी में नहीं है।

आम ग्रामीण की आप तक पहुंच कैसी है ?

- एकदम सीधी पहुंचे कोई भी मुझसे आकर मिल सकता है। हमेशा मैं यहां उपलब्ध रहता हूं। कई बार होता यह है कि कुछ लोग आते हैं वह बाहर से उनको लगता है कि उनकी समस्या हल हो जाएगी तो वहीं से मिल लेते हैं। और उनको लगता है कि थाना प्रभारी से ही मिलना है तो वह मुझसे आकर मिल सकते हैं,अभी आपने भी देखा एक सज्जन सीधे मुझसे आकर मिले थे कोई परेशानी का विषय नहीं,सीधी पहुंचे है। हर अपराध की जानकारी और शिकायत तो सीधी मेरे पास आती ही है।

आपकी कोई विशेष उपलब्धि...!

- मेरी एक बार दतिया पोस्टिंग के समय चुनाव के समय हमने अवैध पैसा पकड़ा था लगभग रु.2500000 था , बाद में हमने 1000 पेटी शराब पकड़ी थी जो लगभग 35 -36 लाख की थी। एक हमारे यहां पोकलेन मशीन की चोरी हुई थी करीब 3800000 रुपए की मशीन थी जो 24 घंटे में हम पकड़ कर लाए थे कानपुर से। मेरी जब भोपाल पोस्टिंग थी तो विस्फोटक अधिनियम के तहत एक बड़ी कार्यवाही की थी काफी बड़ी मात्रा में विस्फोटक हमने पकड़ा था परवलिया थाना क्षेत्र में।

अगर आप पुलिस में ना होते तो कहां होते?

- यह आपने सबसे अच्छा सवाल पूछा है मैं पुलिस में ही होता, पुलिस में नौकरी करने का मेरा सपना था और भगवान ने वह सपना मेरा पूरा किया मैं भगवान को उसके लिए धन्यवाद भी देता हूं।

sponcership
DETECTIVE GROUP
बच्चो का विवाद,
झूठे आरोप, मासूम का सौदा
और अन्य खबरें...
CRIME GRAPH
DGR
You Tube Detective Group Report
SUBSCRIBE

ग्रामीण थाना क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप को आप किस तरह से देखते हैं?

प्रजातंत्र में डेमोक्रेसी में एक सिस्टम बना हुआ है। इसमें जो राजनेता है वह जब किसी पद पर पहुंचता है विधायक बनता है या मंत्री बनता है। लोगों के उनसे बहुत सारी अपेक्षाएं होती है और जब पीड़ित जनप्रतिनिधि के पास जाएगा। तो स्वाभाविक है कि वह अपने क्षेत्र की जनता के लिए संबंधित विभाग को निश्चित रूप से फोन लगाएंगे और उनके समस्या के निवारण के लिए प्रयास करेंगे। इसको आप किस रूप में देखते हैं यह आपके ऊपर डिपेंड करता है। यदि कोई व्यक्ति सही है और उसके लिए कोई राजनेता फोन लगाकर कहता है और उस पर उचित कार्यवाही हो। तो इसे राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं कहूंगा। लीगल कार्य के लिए अगर कोई कहे तो उसे करने में कोई परेशानी नहीं है तो राजनीतिक तंत्र में एक स्वाभाविक सी चीज है इसे राजनीतिक हस्तक्षेप के तरह से नहीं देखा जाए तो ठीक रहेगा।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

आपको लगता है ग्रामीण थाना क्षेत्र और शहरी थाना क्षेत्र के कार्य प्रणाली में कुछ अंतर होता है?

- हां मेरा ऐसा मानना है कि ग्रामीण थाना क्षेत्र और शहरी थाना क्षेत्र की कार्यप्रणाली में काफी अंतर होता है। शहरी थाना क्षेत्र में आबादी काफी ज्यादा होती है। काफी क्लोज ऑपरेशन डेस्क रहते हैं। सबसे महत्वपूर्ण क्या है कि कोई भी घटनाक्रम यदि होता है तो उसका इंपैक्ट तुरंत जाता है। पुलिस को और अलर्ट होकर काम करना पड़ता है। शहरी थाने का जो क्षेत्रफल होता है वह उतना बड़ा नहीं होता है तो वहां पर देहात थाना क्षेत्र की अपेक्षा घटना की जानकारी जल्दी मिलती है अपराध बहुत जल्दी कंट्रोल किया जा सकता है जो पुलिस का सिस्टम बना हुआ है उसके तहत अधिकारी हेड क्वार्टर पर रहते हैं और आवश्यकता होने पर बड़े अधिकारी भी तुरंत घटनास्थल पर पहुंच सकते हैं। वही देहात के जो थाना होते हैं जहां क्षेत्रफल जो होता है वह काफी बड़ा होता है। फैला हुआ रहता है सूचनाएं काफी लेट मिल पाती है, कई जगह पर नेटवर्क भी नहीं होता है, तो जब कोई घटना हो जाती है गंभीर घटना हो जाती है, तो हम लोगों को काफी मशक्कत करना पड़ती है और बल भी जो होता है वह उतना पर्याप्त बल नहीं होता है जिससे पूरा थाना क्षेत्र कवर किया जा सके। यह इस तरह का बेसिक अंतर है सामान्य तौर पर यही एक बड़ा अंतर होता है।

ग्रामीण थाना क्षेत्र के अपराध किस तरह के होते हैं?

- जो शहरी थाना क्षेत्र में चोरी के अपराध बहुत ज्यादा होते हैं, फिर वह रात में होने वाली चोरियां हो, या वाहन चोरियां हो, चैन, स्नैचिंग जैसी घटनाएं हो, छेड़खानी वाली घटनाएं हो, ग्रामीण की अपेक्षा वहां

ज्यादा होती है। ग्रामीण क्षेत्र थाना क्षेत्र में सबसे ज्यादा घटनाएं होती हैं शिकायत आती हैं वह आपसी झगड़ों की होती है। जमीनी विवाद ज्यादा होते हैं। गंभीर झगड़ों की संभावना ज्यादा होती है।

ग्रामीण परिवेश को सुधारने में ग्रामीण पुलिस की कार्यवाही क्या होती है?

- ग्रामीण परिवेश को सुधारने के लिए पुलिस के द्वारा लगातार लोगों से संपर्क किया जाता है। हम जिस गांव में जाते हैं वहां के पंचायत के लोगों से संपर्क करते हैं। आपस में सभी के साथ चर्चा करते हैं जिससे लोगों को जानकारी मिल सके। जो नाबालिग बच्चियां चली जाती है उनके लिए हम गांव में अवेयरनेस के कार्यक्रम करते हैं। और हमारी कोशिश रहती है कि जो छोटे-छोटे गांव में आपसी जमीन के या दूसरे झगड़े होते हैं उनको वही निपटा कर सामाजिक परिवेश को सुधारने का पुलिस के द्वारा लगातार प्रयास किया जाता है।

संवाद और परिचर्चा

श्री आर.एन.एस. भदौरिया
थाना प्रभारी सिमरोल

आपके थाना क्षेत्र में अन्य अपराधों का ग्राफ पिछले वर्ष की तुलना में घटा है या बड़ा है ?

- देखे मुझे अभी इसका अध्ययन करना है मुझे यहां थाने का प्रभार लिए हुए अभी कुछ ही दिन हुए हैं इसलिए अभी एकदम कुछ भी कहना उचित नहीं होगा। लेकिन शीघ्र ही इस बात का अध्ययन अवश्य करूंगा।

क्या अपराध के पीछे बेरोजगारी को भी कारण माना जा सकता है?

- बेरोजगारी के कारण भी अपराध एक मुख्य कारण होता है, खासकर गांव में कोई खास रोजगार नहीं होने के पीछे अपराध हो जाते हैं। तो हम बेरोजगारी के कारण अपराध को बढ़ावा मिल रहा है यह हम कह सकते हैं।

क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार का स्वरूप देखने को मिलता है?

- भ्रष्टाचार एक अलग विषय है , ऑफिशियल रूप से भ्रष्टाचार पर कुछ कहना मुश्किल है।

सतत क्षेत्र संपर्क के बारे में आप क्या कहेंगे?

- शहरी थाना क्षेत्र की पुलिस की बात की जाए तो थाने बहुत क्लोज होते हैं अधिकारी वहीं बैठे हैं, यदि थाने पर कोई सुनवाई नहीं होती तो वह बड़े अधिकारी के पास जाता है। यही सिस्टम और शहर से देहात में भी चालू हो गया है। यहां भी हमने कम्युनिकेशन सिस्टम को बढ़ाया है। हमारे एडिशनल एसपी साहब एसपी साहब भी सतत संपर्क में रहते हैं। शिकायत करने के कई सारे माध्यम होते हैं।

क्या ग्रामीण क्षेत्र में फ्रॉड के केस बड़े?

- शहरी सीमा से जो लगे हुए ग्रामीण क्षेत्र हैं वहां पर जमीन आदि के फ्रॉड अवश्य बड़े हैं। जमीनों के मामले में धोखाधड़ी हो रही है, दूसरे जो फ्रॉड है वह ऑनलाइन टाइप के फ्रॉड हो रहे हैं। उसमें ग्रामीण और शहर में कोई अंतर नहीं है। अपने मोबाइल की जो नंबर है उसके कारण जो होने वाले फ्रॉड है उसमें ग्रामीण क्षेत्र के लोग ज्यादा चपेट में आ जाते हैं। क्योंकि जागरूकता की जानकारी ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को कम होती है और वह जल्दी फ्रॉड में फंस जाते हैं।

क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी सर्वधर्म की सुरक्षा के लिए कोई अतिरिक्त प्रयास किए जाते हैं ?

- ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्रों पुलिस के द्वारा सर्वधर्म सबके लिए एक समान रूप से कार्य किया जाता है और सभी की सुरक्षा के लिए हमारे द्वारा कार्य किया जाता है। मैं तो यह कहूंगा कि पुलिस का कोई धर्म नहीं होता है पुलिस के द्वारा सभी धर्मों के लिए समान रूप से काम किया जाता है। धर्म विशेष रूप से मानवता के विषय है सभी धर्मों का हम समान रूप से सम्मान करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में किस तरह के नशे का चलन है?

- ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य रूप से कच्ची शराब अवैध शराब, इस तरह के नशे अधिक चलन में है। ड्रग्स जैसे नशे गांव में कम चलन में है, बहुत ज्यादा अगर होगा तो गांजा वगैरह पीने की शिकायत मिल सकती है। आधुनिक जो नए तरह के चलन के नशे हैं वह शहरी क्षेत्रों क्षेत्रों में देखने को ज्यादा मिलते हैं ग्रामीण क्षेत्रों में उस तरह के नशों का चलन नहीं है।

नशा मुक्ति के लिए ग्रामीण पुलिस के द्वारा क्या प्रयास किए जाते हैं ?

- ग्रामीण क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र की जो पुलिस है वह भी नशा मुक्ति के लिए समय-समय पर प्रयास करती है, नारकोटिक्स विभाग के द्वारा बहुत सारे कार्य किए जाते हैं। और ग्रामीण क्षेत्र में और हमारे द्वारा नशा मुक्ति अभियान चलाए जाते हैं सेमिनार आयोजित कर लोगों को जागरूक करते हैं उन को जागृत करने का प्रयास करते हैं नशा मुक्ति से दूर रहने के लिए उन्हें मानसिक रूप से भी तैयार करते हैं।

क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी महिला डेस्क काम करती है?

- जी हां ग्रामीण क्षेत्र में हो या शहरी क्षेत्रों सभी जगह महिला डेस्क काम करती है महिलाओं से संबंधित जो भी शिकायत आती है वह महिला डेस्क के द्वारा ही समस्या को समाधान करने के लिए प्रयासरत रहती है। इसमें सफलता भी मिलती है।

आपने पुलिस विभाग को ही क्यों चुना अगर पुलिस विभाग में नहीं होते तो आप कहां होते?

- सेवा करने के लिए पुलिस विभाग को मैंने चुना है और फिर भी अगर वह पुलिस में नहीं होता तो शायद शिक्षा विभाग में होता या कृषि विभाग में अपनी सेवाएं दे रहा होता।

अपराधी होने के पीछे आपकी नजरों में क्या कारण हो सकते हैं?

- अपराध होने के पीछे बहुत सारे कारण हैं, मुझे लगता है कि अपराध होने के पीछे सबसे बड़ा जो कारण है वह है लोगों में सहनशक्ति की कमी और उसका इगो, छोटे छोटे अपराधों के पीछे यह बड़े कारण होते हैं। छोटे-छोटे कारणों के बाद ही अपराध बड़ा रूप ले लेता है। विवादों के पीछे दूसरे जो कारण होते हैं उनमें जमीनी विवाद भी एक महत्वपूर्ण कारण होता है।

DGR
Detective Group Report
You Tube Detective Group Report
SUBSCRIBE

♦सामाजिक परिवेश को सुधारने में पुलिस की भूमिका क्या होती है?

ग्रामीण क्षेत्र वालों को भी कानून का ज्ञान होना चाहिए, पढ़ाई लिखाई के लिए ग्रामीण परिवारों को आगे आना चाहिए। जैसे बच्चों को नहीं पढ़ाते हैं,बच्चों को कम शिक्षा दी जाती है ,यह गांव के लिए माइनस पॉइंट होता है। दूसरा एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि गांव में चुनाव के कारण पार्टी बन्दी बहुत हो गई है । इस वजह से भी सामाजिक परिवेश गड़बड़ा गया है। इसी कारण से गांव में फूट पड़ गई है ,व्यक्तिगत बुराई नहीं होने के बाद भी राजनीतिक वातावरण की वजह से संबंध बिगड़ जाते हैं। विचारधारा के कारण भी कई बार विवादों की स्थिति बन जाती है। गांव में कई बार विभाजन की स्थिति बन जाती है। पुलिस का यही प्रयास होता है कि यह विभाजन ना हो, गांव की स्थितियां अच्छी रहे, आपसी भाईचारा बना रहे, और सामाजिक व अच्छा रहे इसके लिए पुलिस के द्वारा प्रयास किया जाता है। हम लोग गांव में जाते हैं सामाजिक सद्भावना रखने के लिए प्रयास करते हैं एक दूसरे का सम्मान रखना चाहिए तभी सामाजिक परिवेश अच्छा रहेगा।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

अपराधी होने के लिए आप क्या कारण मानते हैं?

♦ अपराधी होने के पीछे ग्रामीण क्षेत्र में मैं यहां तक मानता हूं, एक मुख्य कारण यह है कि यहां पर कानून की जानकारी नहीं होती है। और कानून की जानकारी के अभाव में अनजाने में भी कई बार लोग अपराध कर बैठे हैं। और दूसरा जो बड़ा कारण है वह है इंटरनेट का बढ़ता हुआ प्रभाव। गांव-गांव में इंटरनेट ने अपनी पहचान बनाई है और उसके गिरफ्त में जो लोग आ जाते हैं वह भी अपराध में लिप्त हो जाता है। इंटरनेट की कुछ अच्छाई भी है तो कुछ बुराई भी है। लेकिन बुराई में जल्दी लोग शामिल हो जाते हैं। शहरों की देखा देखी गांव में भी अब लोग इन सब चीजों में उलझ कर अपराध करने लगे है। ग्रामीण क्षेत्रों में एक समस्या और यह है कि यहां पर एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए और खुद को सही साबित करने के लिए व्यक्ति अपराधी हो जाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक विवादों में पुलिस की क्या भूमिका है?

♦ पारिवारिक विवाद इस तरह के महिला संबंधित कोई विवाद आते हैं तो महिला पुलिस अधिकारी हेड कांस्टेबल के द्वारा ही उसको हल करने का प्रयास करते हैं। बाकी मामलों में पुलिस के द्वारा उनको बातचीत के माध्यम से उनकी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता है। तो पारिवारिक विवादों में भी पुलिस की महत्व की भूमिका होती है। हमारा प्रयास होता है कि थाने स्तर पर ही अगर वह समस्या निपट जाए तो अच्छा है अन्यथा फिर हम बड़े वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग लेते हैं और उन के माध्यम से उचित कार्यवाही करें समाधान करने का प्रयास पुलिस के द्वारा किया जाता है।

संवाद और परिचर्चा

श्री मंशाराम बगैन
थाना प्रभारी चंद्रावतीगंज

क्या नाबालिग अपराधी आपके क्षेत्र में हैं?

♦ शहरों के वातावरण को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्र में जो नाबालिक बच्चे हैं वह भी अपराध की तरफ बढ़ रहे हैं और अपराध के जो आरोपी हैं वह निश्चित रूप से शहर की चमक दमक देखकर प्रभावित होकर उसमें शामिल हो जाते हैं। इस वजह से नाबालिग आरोपियों की संख्या बढ़ी है। नेट पर चोरी के तरीके देखते हैं, और उसी माध्यम से उसको अपनी लाइफ स्टाइल बना लेते हैं। और इस कारण से नाबालिग जो होते हैं वे अपराध में चले जाते हैं। शराब बेचने का व्यापार करना जैसे कामों में भी नाबालिग बच्चों का उपयोग हो रहा है। मुखबिरी का काम भी एक छोटे बच्चे करते हैं। बड़े अपराधी इन नाबालिक बच्चों का उपयोग करते हैं और उनको इस अपराध में उनको डाल देते हैं। पुलिस के द्वारा समय-समय पर दबिश दी जाती है और ऐसे अपराधियों को पकड़ा जाता है और कोशिश करते हैं कि वह अपराधी सुधर जाए।

क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी पुलिस की कार्यवाही में राजनीतिक हस्तक्षेप होता है?

मेरा ऐसा मानना है कि अगर पुलिस सही से काम करें तो राजनीतिक हस्तक्षेप का कोई प्रभाव नहीं होगा ,नहीं हो सकता है, अगर पुलिस के द्वारा सही तरीके से काम नहीं किया जाएगा, तो फिर राजनीतिक हस्तक्षेप होगा। इसे वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में पुलिस के द्वारा उचित प्रक्रिया और सही काम किया जाता है।

क्या बेरोजगारी के कारण लोग अपराध की दुनिया में चले जाते हैं?

♦ मेरा ऐसा मानना है और मैं इसमें यही कहूंगा कि हां बेरोजगारी के कारण भी जो युवा वर्ग है, जिनके पास काम नहीं है, वह अपराध की दुनिया में चले जाते हैं। नौजवान लड़के हैं यही सोचते है की शॉर्टकट से पैसा जल्दी कमाया जा सकता है,इसी सोच के आधार पर जो युवा वर्ग है बेरोजगार हैं वह अपराध की ओर चले जाते हैं। कम मेहनत करो और अधिक पैसा कमाने के चक्कर में वह अपराधी हो जाते हैं। सही नहीं है तो कभी न कभी पुलिस की गिरफ्त में आ ही जाते हैं। फिर वह सलाखों के पीछे चले जाते हैं और अपराधी प्रमाणित हो जाते हैं।

क्या आपके ग्रामीण क्षेत्र में चोरी, लूटपाट, डकैती जैसे अपराध का ग्राफ बढ़ा है?

♦ हां समय को देखते हुए इस तरह की घटनाएं जो है और इन घटनाओं का ग्राफ है वह बढ़ रहा है। इसके लिए पुलिस के द्वारा अच्छी पहल की गई है। सीसीटीवी कैमरे हर जगह लगवाए गए हैं। लोगों को और जनता को भी हमारे द्वारा समझाइश दी गई है कि वह भी अपने घरों के आसपास सड़कों पर कैमरे सीसीटीवी कैमरे लगाकर रखें। उनका सहयोग पुलिस को मिलता भी है और लोग भी समझ रहे, इससे जनता को तो फायदा है इसके साथ ही पुलिस को भी काफी फायदा मिल रहा है।

महिला अपराध का ग्राफ आपके थाना क्षेत्र में कैसा है?

♦ ग्रामीण क्षेत्र है उसमें महिला अपराध निश्चित रूप से बड़ा है, मैं यही कहूंगा क्योंकि हो यह रहा है कि कोई भी अपराध होता है तो उसमें पुरुष वर्ग महिलाओं को आगे कर देता है। किसी झगड़े और विवाद की स्थिति में परिवार के लोग महिलाओं को आगे कर देते है। उनकी यह भी सोच है कि महिलाओं और बच्चों को आगे कर देने से शिकायत जल्दी भी होगी और कार्यवाही भी अच्छी होगी। क्योंकि वह जानते हैं कि इसकी वजह से पुलिस की कार्यवाही में कमी रहेगी इसके पीछे मेरा यह मानना है कि जब विवाद की स्थिति में थाने तक बात आती है तो पुरुष वर्ग जो होता है उसको तो हम समझाते हैं तो वह मान भी जाता है। लेकिन महिला जब थाने पर शिकायत लेकर आती है और उसे कितना भी समझाओ तो मानती नहीं है। शिकायत करने में उसका उसकी दिलचस्पी ज्यादा रहती है। कई बार महिला होने का लाभ लेते हुए झूठी कार्यवाही भी करा जाती है, ३५४, ३७६ जैसी कार्यवाही भी करा जाती है। हालांकि हमारे द्वारा उसे समझाने का प्रयास पूरा किया जाता है पुलिस का यह प्रयास होता है कि विवाद ज्यादा ना बढ़े और सभी अच्छे से रहें।

क्या शहरों की तरह आपके ग्रामीण क्षेत्र में भी आदतन अपराधी पाऐ जाते हैं ?

♦ हां इस तरह के अपराधी यहां भी जाते हैं। जिन अपराधियों को बार-बार समझाने के बाद भी भी नहीं मानते हैं और अपराध करते हैंऐसे अपराधी पाए जाते हैं। सब पर जिला बदर की कार्यवाही,nsc की कारवाई की जाती है। और भी प्रतिबंधआत्मक कार्रवाई होती है।

अगर आप पुलिस में न होते तो कहा होते?

♦ ये अच्छा प्रश्न है, मै पुलिस में ही नौकरी करने का का स्वप्न देखता था, टीचर जॉब के लिए मेरा सिलेक्शन हो भी गया था लेकिन मेरा पूरा मन पुलिस में नौकरी करने का था। फिर तैयारी की ओर सफल हो गया। मेरा स्वप्न पूरा हुआ ईश्वर का आभारी रहूंगा।

शहर की आधुनिकता का ग्रामीण परिवेश में क्या प्रभाव पड़ा है?

शहरी आधुनिकता का ग्रामीण परिवेश पर यह फर्क पड़ा है कि, जो लोग शहरी जीवन को अपनाना चाहते हैं, वह ग्रामीण क्षेत्र में वैसे ही प्रयास करते हैं और शहरी जो दिखावा है उसके कारण ग्रामीण क्षेत्र में भी अपराध जगत में बढ़ोतरी हुई है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री भरत सिंह ठाकुर
थाना प्रभारी- गौतमपुरा जिला इंदौर

ग्रामीण और शहरी थाना क्षेत्र की कार्य प्रणाली में क्या अंतर होता है ?

- मेरे द्वारा शहरी थाना क्षेत्र और ग्रामीण थाना क्षेत्र दोनों में काम किया गया है, मैंने अनुभव किया है कि, ग्रामीण क्षेत्र के जो लोग होते हैं वह सीधे-साधे लोग होते हैं। सच्चा और सरल व्यक्ति होता है ,जबकि शहर का व्यक्ति अपना दिमाग लगाकर कोई भी रिपोर्ट करता है । ग्रामीण क्षेत्र का जो व्यक्ति होता वह सीधी भाषा में अपनी बात कहता है, इसी आधार पर पुलिस को कार्यवाही भी करना होती है । तो पुलिस की कार्यवाही , प्रक्रिया तो एक जैसी है । प्रक्रिया और कार्यवाही में कोई फर्क नहीं होता है। अपराधी तो अपराधी होता है अपराध पर जिस तरह नियंत्रण पा सके वही कार्य पुलिस को करना होता है ।

क्या अपराध के स्तर पर कुछ भिन्नता होती हैं ?

- जहां तक मेरा ख्याल है बड़े शहरों में अपराध अधिक होते हैं और छोटी जगहों पर अपराध कम होते हैं । यहां छोटा कस्बा है इसलिए अपराध की संख्या कम होती है। यहां पर आदतन अपराधी भी बहुत कम रहते हैं। और लोग एक दूसरे को जानते हैं पहचान रहती है ,इसलिए अज्ञात अपराधी यहां पर बहुत कम पाए जाते हैं। कम घटनाएं कर पाते हैं। और शहरों में यह अंतर होता है लोग एक दूसरे को नहीं जानते हैं बाहर दूसरे मोहल्ले से आकर भी आदमी अपराध कर देता है। अज्ञात अपराधी के नाम से अपराध हो जाते हैं।

अपराधी होने के पीछे आपकी नजरों में क्या कारण हो सकता है ?

- अपराधी होने के पीछे मुख्य रूप से आर्थिक कारण ही होता है । आर्थिक तंगी के कारण आदमी अपराध करते हैं, कुछ मामलों में मेरी नजरों में सामाजिक कारण भी रहता है। जैसे कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को नाजायज रूप से दबाता है तो वह व्यक्ति अपराध की ओर मुड़ जाता है और अपराध करने लगता है ।

पारिवारिक विवादों में पुलिस की क्या भूमिका होती है ?

- जब पारिवारिक विवाद आते हैं, तब जैसा कि वरिष्ठ अधिकारियों के भी हम को निर्देश प्राप्त हैं । पहले उसमें काउंसलिंग करके उनको आपस में समझोतो के माध्यम से निपटाने का प्रयास किया जाना चाहिए । हम लोग यह प्रयास करते भी हैं और अगर वह आपसी समझौते से काउंसलिंग से नहीं समझता है तो फिर कानूनी कार्यवाही के माध्यम से हम उस पर कार्रवाई करते हैं। और जो भी सभी के हित में हो वह निर्णय का प्रयास रहता है।

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के अपराध की क्या स्थिति है और सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए क्या प्रयास किये जा रहे है?

- ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं संबंधी अपराध नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र से महिलाओं के अपराध की संख्या ना के बराबर होती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के संबंधित अपराधों में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है। उल्लेख नहीं है। तथा सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए पुलिस के द्वारा अनेक कार्य किए जाते हैं। नशा मुक्ति कार्यक्रम किया जाता है, बालिकाओं को उनकी सुरक्षा के लिए जागरूक करने का प्रयास रहता है, दहेज प्रताड़ना,नशाखोरी इन सब चीजों के लिए तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के लिए भी पुलिस के द्वारा सकारात्मक सोच के साथ कार्यवाही की जाती है।

क्या आपके कार्य में राजनीतिक हस्तक्षेप होता है?

- देखिए यह तो निश्चित है कि जब भी हम कोई कोई काम करते हैं सार्वजनिक रूप से , तो जो लोग होते हैं, वह अपने हिसाब से काम करने का प्रयास करते हैं। यह एक सामान्य प्रक्रिया है, लोग परेशान होते हैं तो अपने स्तर पर परिचित लोगों की सिफारिश लगाते हैं । परंतु हमारे द्वारा वैधानिक कार्यवाही ही सुनिश्चित की जाती है । क्योंकि हमारा कानून का पालन करने का सिद्धांत है, इसलिए हम यही प्रयास करते हैं कि वैधानिक कार्यवाही पूर्ण हो सके । सामने वाले को भी हम इसी तरह से संतुष्ट करने का प्रयास करते हैं। और वह हमारे तर्कों से सहमत भी होते हैं, अनुचित्र कार्य करने के लिए किसी तरह का कोई दबाव नहीं होता है ,राजनीतिक मायने नहीं रखता।

पुलिस की छवि को मीडिया या अन्य माध्यम से नकारात्मक प्रस्तुत किया गया है आप क्या कहेंगे ?

हां यह महसूस जरूर किया जाता है कि पुलिस की जो नेगेटिव छवि है उसको ज्यादा प्रस्तुत किया गया है और ज्यादा उसको हाईलाइट किया गया है। सिनेमा आदि में भी पुलिस की छवि को लोगों ने नकारात्मक छवि को दिखाया गया । हाईलाइट किया गया है । जिस कारण से पुलिस की छवि खराब हुई है । लेकिन वास्तविकता में ऐसा नहीं है पुलिस के द्वारा भी समाज में अच्छे अच्छे काम किए जाते हैं,परंतु मीडिया और मनोरंजन की दुनिया में सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जाता है। पुलिस की छवि को नेगेटिव ज्यादा दिखाया जाता है ,ताकि लोगों का इंटरेस्ट है ऐसी बातों को देखने में अधिक होता है ।

शहरों की तरह आपको भी छोटे-मोटे अपराधियों को छोड़ने के लिए कि लिए' भैयाओं 'का फोन आता है?

- हां कभी-कभी ऐसा होता है, कि किसी अपराधी को पकड़ते हैं तो किसी नेता का या किसी पहुंच वाले व्यक्ति का फोन आता है । नेताओं की या जो भी प्रभावशाली व्यक्ति हैं उनके भी फोन आते है। और यह कहा जाता है कि यह हमारा व्यक्ति है यह इस तरह का अपराध नहीं कर सकता । उनके द्वारा कहा जाता है लेकिन हमारे द्वारा उनको जो वास्तविक स्थिति बताई जाती है ,तो कई बार वह भी समझ जाते हैं और जो वैधानिक कार्य होती है वह चलती रहती है उस पर किसी तरह का कोई जोर नहीं रहता है।

आपके थाना क्षेत्र में चैन स्नैचिंग लूटपाट और डकैती की घटनाओं का ग्राफ पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष कितना है ?

- पिछले वर्ष की तुलना में हमारे यहां संपत्ति संबंधी अपराध कम हुए और जो अन्य अपराध हुए हैं उनमें से 70% अपराधों को हमने डिटेक्ट भी कर लिया है। कुछ अपराध है जिन जो डिटेक्ट नहीं हो पाए हैं, जिनमें मोटरसाइकिल चोरी जैसे अपराध है । उनमें हम कह सकते हैं कि चोरी वगैरा के जो अपराध है वह कम है।

ड्रग जैसा व्यापार इस क्षेत्र में है ?

- देखिए यह एक छोटा ग्रामीण क्षेत्र है और ड्रग जैसे अपराध और नशे की लत शहरों की अपेक्षा गांव में नहीं है । क्षेत्र में ड्रग अपराध के लिए कोई घटना नहीं है मेरी जानकारी जहां तक है।

आपके द्वारा पुलिस विभाग को ही सेवा के लिए क्यों चुना गया ?

- यह आपने बहुत ही अच्छा सवाल मुझसे किया है, मेरा पुलिस विभाग को चुनने का एक सबसे बड़ा उद्देश्य यह था कि, जो समाज में व्याप्त बुराइयां हैं ,समाज में जो कुरीतियां हैं, उनसे लड़ने के लिए, उनको मिटाने के लिए,सबसे अच्छा रास्ता सबसे अच्छा साधन पुलिस विभाग ही मेरी नजर में था। इसीलिए मैंने पुलिस विभाग को चुना। फिर भी यदि अगर भाग्य से पुलिस विभाग में ना होता, तो शायद किसी शिक्षा विभाग में टीचिंग कर रहा होता या टीचर के रूप में सेवा रत होता । मेरे द्वारा पूर्व में टीचिंग का कार्य भी किया गया है।

क्या आपके क्षेत्र में नाबालिग अपराध भी पनप रहा है ?

- नहीं सामान्य रूप से हमारे क्षेत्र में नाबालिग अपराध की संख्या नहीं है।

अपराधी होने के पीछे क्या कारण मानते हैं ?

अपराधी होने के पीछे जहां तक मेरा ख्याल है कि कुछ लोग स्वभाव से अपराधी प्रवत्ति के होते हैं। इसके कारण कोई स्पष्ट नहीं है, कि इस वजह से ही वह आदमी अपराधी बना हे। कुछ विद्रोह की भावना से भी अपराधी बन जाता है। कुछ लोग नशे के गिरफ्त में आ जाते हैं तो भी वह अपराध में शामिल हो जाते हैं। फिर दूसरा कारण यह भी है कि आपकी संगत कैसी है, खराब संगत के कारण भी कई बार अपराधी होने वाली जानकारी मिलती है। और वह छोटे छोटे अपराध में शामिल हो जाते हैं। और फिर वही बड़े अपराध करने लग जाते हैं।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

ग्रामीण क्षेत्र और शहरी थाना क्षेत्र में मूल भूत क्या अंतर होता है ?

- ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों में एक बडा अंतर होता है कि शहरी थाना क्षेत्र सीमित होता है और वहीं ग्रामीण क्षेत्र बड़ा और फैला हुआ होता है। यहां दूर दूर तक गांव होते हैं, जैसे मेरे थाना क्षेत्र बेटमा में 70 गांव हैं, अब कोई घटना हुई है तो सूचना मिलने में देरी हो सकती है फिर घटना सथल पर पहुचने में काफी समय लग जाता है। शहरी थाना क्षेत्र और ग्रामीण थाना क्षेत्र में अपेक्षाकृत संसाधन की कमी भी होती है।

दोनो थाना क्षेत्र में कार्य करने की स्थिति में क्या फर्क है ?

- नहीं मूल रूप से दोनों ही थाना क्षेत्रों में कोई फर्क नहीं है। वर्तमान में इन्दौर ओर भोपाल में कमिश्नरी प्रणाली को लागू किया गया है, तब से थोड़ा बदलाव किया गया है। इसके अलावा अन्य कोई फर्क नहीं है। दोनों थाना क्षेत्रों की कार्य प्रणाली में समय समय पर वरिष्ठ अधिकारियों से प्राप्त निर्देशों के अनुसार कार्य किया जाता है।

आपके थाना क्षेत्र में किस तरह के अपराध होते हैं ?

- हाइवे से हमारा थाना क्षेत्र लगा होने से एक तो एक्सीडेंट की स्थिति अधिक होती है और गांव में जमीन के विवाद ज्यादा होते हैं। कुछ मामलों में पारिवारिक तनाव ओर प्रतिद्वंदता होती है, तो उसमें भी विवाद ज्यादा होते हैं। इसी तरह के अपराध की संख्या बढ़ी हुई रहती है।

संवाद और परिचर्चा

श्री संजय शर्मा
थाना प्रभारी - बेटमा

अपराधी प्रवृति के लोगो को समाज की मुख्यधारा में लाने - सुधार हेतु पुलिस को क्या करना चाहिए ?

- बिल्कुल सही कहा आपने ,पुलिस विभाग द्वारा लगातार प्रयास किया जाता है कि, ऐसे मामलों में जो कि मुख्य धारा से भटक गए हैं ,अपराधी होने लगे हैं। नशा करने के कारण वे अपराध करने लग गए हैं,तो हम समझाते हैं और समाज की मुख्य धारा में शामिल करने का प्रयास करते हैं। और कई मामलों में पारिवारिक तनाव में रहते हैं, उनको भी पुलिस द्वारा समझाया जाता है कि यह गलत है तो वह व्यक्ति मान भी जाता है।

क्या आपके थाना क्षेत्रों में कोई आदतन अपराधी भी है,?

- हां जरूर है हमारे थाना क्षेत्र में आदतन अपराधी है। हमारे थाना क्षेत्र में 8 आदतन अपराधी है। जो कि सूची में शामिल हैं। ऐसे मामलों से बड़ी सावधानी बरती जाती है। उनके विरुद्ध लगातार प्रतिबंधात्मक कारवाही की जाती है। निगरानी रखी जाति है। और पुलिस विभाग के द्वारा दिए गए निर्देशों को ध्यान में रखकर हमेशा कार्यवाही की जाती है।

महिला द्वारा कई बार उनके पक्ष बने कानून की धारा का लाभ लेते हुए झूठे अपराध दर्ज कराएं जाते हैं, क्या आपके थाना क्षेत्र में कोई घटना है ?

- अच्छा प्रश्न है पर सवाल यह है कि हम अंतिम निर्णय करने वाले नहीं हैं। अंतिम निर्णय करने के लिए अदालत है। हमारा जो काम होता है वह होता दोनों पक्षों की जानकारी कोर्ट तक पहुंचा दे। उसको निर्णय करने का अधिकार हमारा नहीं वह कार्य कोर्ट का अधिकार है।

सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए पुलिस के द्वारा क्या कार्य वाही की जाती है ?

- कई ऐसी सामाजिक योजनाएं है, जिनके माध्यम से पुलिस के द्वारा समाज सुधार के लिए लगातार कार्य किया जाता है। जैसे यातायात सुधार करने के लिए स्कूल में जाकर बच्चों को समझाए दी जाती, उनको बताया जाता है, वाहन के चलाने के लिए क्या सावधानी उनको रखना चाहिए । अपराध के मामले में उनको समझाया जाता है।महिला अपराध के बारे में समझाना और उनको अभी हम जाना की महिला पुलिस की मदद किस तरह से ली जा सकती है। जहां तक बच्चों के अपराध के मामले में सावधानी रखना चाहिए वह भी बच्चों को समझाया जाता है। और उन्हें बेड टच और गुड टच के बारे में भी पुलिस द्वारा समय समय पर समझाए जाता है ।तो इस तरह के कार्यक्रम के माध्यम से समझाइए समाज सुधार के लिए। इस तरीके से काम पुलिस के द्वारा किए जाते हैं ।

भ्रष्टाचार पर आपकी टिप्पणी क्या होगी?

- भ्रष्टाचार एक ऐसा विषय है जिसके बारे में हम यह कह सकते हैं कि, यह एक सामाजिक बुराई है, भ्रष्टाचार करने वाला दोषी, जो भ्रष्टाचार करता है वो भी दोषी है ।भ्रष्टाचार करने वाला लेने वाला और देने वाला दोनों दोषी । यह सामाजिक बुराई के साथ-साथ एक गलत व्यवस्था भी है । इसके लिए अलग से एक विभाग बना हुआ है। भ्रष्टाचार के अपराधियों को सजा मिलती है । तो कुल मिलाकर भ्रष्टाचार एक बुराई है जिसका किसी को भी समर्थन नहीं करना चाहिए । समाज के लिए यह ठीक नहीं है।

सर्वधर्म सदभाव परआप क्या कहेंगे ?

- हमारे यहां सभी धर्म के लोग रहते हैं, और सभी जन के लोगों को हम बराबरी से देखते हैं। किसी भी धार्मिक त्योहार पर हिंदुओं का त्यौहार चाहे वह मुस्लिम त्योहार या किसी अन्य समाज का त्योहार क्यों न हो, सर्व धर्म समान रूप से सम्मानीय है और हम इसी थीम पर काम भी करते हैं । सभी धर्मों के लिए बराबर सुरक्षा का काम करते हैं। त्यौहार आते हैं उसके पहले उनमें बैठक होती है । शांति समिति की बैठक आयोजित की जाती है। शांतिपूर्ण ढंग से मनाई जाने की अपील की जाती है।

क्या आपके यहां किसी राजनीति के जनप्रतिनिधि का फोन किसी को छुड़वाने के लिए कभी आता है ?

इस तरह का तो कोई फोन नहीं आता है, लेकिन यह सामान्य रूप से है कि पुलिस को कई बार स्थानीय लोगों की जानकारी नहीं होती है और जनप्रतिनिधि जो होते हैं वह हमें फोन लगाकर कई बार बताते हैं। कोई जानकारी मिलती है, इसमें कोई बुराई नहीं है । अपराधी को छुड़ाने के लिए इस तरह का कभी कोई फोन नहीं आता है, बल्कि हम तो उसको सकारात्मक देखते हैं । चुकी कानून के दायरे में हमको काम करना होता है तो वह तो हमारी प्राथमिकता रहती है। और हमको अगर कोई फोन करके यह बताता है, जानकारी देता है, तो हम जांच करने के बाद ही निर्णय लेते हैं।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री महेन्द्र सिंह भदौरिया
थाना प्रभारी - महू (इन्दौर)

ग्रामीण थाना क्षेत्र और शहरी थाना क्षेत्र में अंतर क्या होता है ?

- दोनों में बहुत अंतर है ,ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का व्यवसाय खेती किसानी होता है। वही शहर के जो लोग हैं वहां पर बाहरी लोगों का आना जाना बहुत होता है। और बाहरी लोग ज्यादा रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के परिवेश में सभी एक दूसरे को जानते हैं ,वहीं शहर में अनजान होते हैं और ग्रामीण परिवेश में अपराध भी कम होते हैं। अपराध अगर होते भी हैं तो छोटे-मोटे लड़ाई झगड़े के मारपीट के अपराध होते हैं। शहर में विविध प्रकार के अपराध होते हैं, बाहरी लोग होते हैं, अज्ञात लोग होते हैं, शहर में सभी तरह के अपराध होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि ग्रामीण थाना क्षेत्र और शहर थाना क्षेत्र में वहां के कार्य करने में अंतर होता है।

क्या ग्रामीण क्षेत्रों में भी पारिवारिक विवाद के कोई मामले आते हैं ?

- पारिवारिक विवादों में पुलिस के द्वारा पहले आपस सामन्जस्य का प्रयास किया जाता है,दोनों पक्षों को बुलाकर काउंसलिंग के माध्यम से उन को समझाने का प्रयास हमारा रहता है। पति पत्नी के झगड़े हैं और परिवार के अन्य झगड़े हैं जिनको FIR की जरूरत नहीं है, उनको हम कोशिश करते हैं कि आपसी समझौते से समस्या का समाधान हो जाए यही हमारा प्रयास होता है। महिला अधिकारी भी नियुक्त है उन के माध्यम से भी समस्या का समाधान का प्रयास होता है। फिर भी अगर समस्या हल नहीं है तो फिर कानूनी जो प्रक्रिया है उस प्रक्रिया के तहत हम लोग कार्रवाई करते हैं और इस समस्या का समाधान करने का प्रयास करते हैं।

क्या पुलिस के द्वारा सामाजिक सुधार के लिए भी भूमिका निभाई जाती है ?

- हां पुलिस के द्वारा नियम और कायदे कानून में रहकर बहुत सारे कार्य किए जाते हैं। इसमें सामाजिक सुधार के लिए भी जो कानूनी प्रक्रिया है उसके द्वारा सामान्य कानून के दायरे में रहकर कार्य किया जाता है। पुलिस के द्वारा कभी-कभी समाज में हमारे द्वारा ऐसे अभियान भी चलाए जाते हैं,हम लोग शामिल होकर समाज सुधार के लिए कार्य करते हैं। फिर कानून तो अपना काम करता ही है। उसी के अनुसार काम किए जा सकते हैं।

अपराधी होने के पीछे आप क्या कारण मानते हैं ?

- अपराधी होने के पीछे अलग-अलग तरह के कारण होते हैं। एक कारण नहीं हो सकता है, तो हम यह कह सकते हैं कि अपराधी होने के पीछे बहुत सारे कारण हैं। जैसे नशे का आदी होना, या संगत का असर होता है, संगत का बुरा असर हुआ तो भी आदमी अपराधी जल्दी बन जाएगा, यह भी हो सकता है कि कई बार वह अपराधी मजबूरी में बन जाता है। कई बार होता यह है कि लोग ऐसे अपराधियों को अपना हीरो मान लेते हैं और उनकी देखा देखी अपराध करने में लग जाते हैं। उनको फॉलो करके अपराधी बनने का कारण भी नजर आता है।

बड़े शहरों की अपेक्षा आप छोटे ग्रामीण क्षेत्रों में किस तरह के अपराध होते हैं ?

- वैसे तो हमारा थाना क्षेत्र शहर की तरह ही है और यहां पर भी सभी तरह के अपराध होते हैं। फिर भी पुराना छोटा शहर है, झगड़े मारपीट चोरी वाहन चोरी ज्यादा है।

अपराधों की संख्या आपके यहां पिछले वर्ष की तुलना में कैसी है ?

- यहां पर बड़े अपराधों की संख्या कम है ,ऐसा मेरा मानना है। फिर भी हम यही कहेंगे अपराध तो अपराध है और अपराधियों की संख्या समय समय के हिसाब से कम ज्यादा होती रहती है। फिर भी ऐसे बड़े कोई यहां पर नहीं है।

शहर की आधुनिकता का ग्रामीण परिवेश में क्या फर्क पड़ा है ?

- हर चीज का फर्क पड़ता है हर चीज का प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे शहर की आधुनिकता गांव के और भी बढ़ रही है और इसका प्रभाव शहर के साथ-साथ गांव में भी हो रहा है। गांव में उसका असर देखने को मिलता है। तो हम कह सकते हैं कि शहर का प्रभाव निश्चित रूप से गांव के परिवेश में भी जगह बना रहा है।

क्या नाबालिग अपराधी आपके थाना क्षेत्र में बढ़ रहे हैं?

- नाबालिग अपराधी तो होते ही हैं, हर जगह होते हैं,छोटे बच्चे भी अपराधी हो जाते हैं।फिर उनको जो नाबालिग अपराधियों हैं। उनके साथ जो कानून का दायरा है उसकी व्यवस्था करके हमारे द्वारा न्यायालय को प्रस्तुत किया जाता है। निर्णय किया जाता है। न्यायालय द्वारा सभी पक्षों की विवेचना जानकारी के बाद उस पर निर्णय लिया जाता है कि वह अपराध और उसकी सजा क्या है।

कार्यक्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप के बारे में आप क्या कहेंगे ?

- ऐसा तो नहीं है, पुलिस की कार्यवाही जो होती है वह कानून के दायरे में होती है। सामान्य तौर पर कोई राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होता है, नेताओं के साथ यह हमारा एक समन्वय होता है। आपसी समन्वय के माध्यम से समस्याओं को समाधान करने का प्रयास हमारा होता है। नियम बनाने वाली सरकार से जुड़े हैं और हम लोग को उन नियमों को पालन करना। तो आपसी समन्वय के माध्यम से निश्चित किया जाता है। मैं इसे राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं कहूंगा, बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि उनके द्वारा पुलिस को सहयोग के माध्यम से इस तरह से इसको देखा जाना चाहिए।

महिला अपराध का ग्राफ आपके यहां पर कैसा है ?

- महिला अपराध का ग्राफ बहुत ज्यादा बड़ा नहीं होता है। महिलाएं सामान्य रूप से अपराध की ओर नहीं जाती है। फिर होता है यह है कि जैसे नाबालिग लड़की ने शादी कर ली, तो वह भी एक नाबालिग महिला अपराध है, पति-पत्नी के आपसी झगड़े हैं, डायवर्स के झगड़े हैं, इस तरह के महिला अपराध होते हैं। पर फिर भी मैं यही कहूंगा कि शहर गांव में महिला अपराध संख्या या ग्राफ कम है।कभी-कभी सुनने को मिलते हैं दहेज प्रताड़ना जैसे अपराधी भी।

आपके यहां क्या आदतन अपराधी का ग्राफ बढ़ा है ?

- देखिए आदतन अपराधी के मामले में मैं यह कहूंगा कि अपराधी जो है जो सूचीबद्ध हो गए हैं, या निगरानी वाले अपराधी हैं, वह आदतन अपराधी है, गुंडे बदमाश हो, उनकी लगातार मॉनिटरिंग होती है। और हमारा यह प्रयास होता है कि वह दोबारा कोई अपराध ना करें। उनको सूचीबद्ध किसी रखा जाता है ताकि उनके ऊपर निगरानी रखी जा सके। और ऐसे आदतन अपराधियों पर कड़ी निगाह रखी जा सके। इससे क्या होता है कि जो होने वाले अपराध हैं उन पर कंट्रोल रहता है। और सारे अपराधी हमारी नजर में रहते हैं।

बेरोजगारी के पीछे क्या अपराध भी छुपा हुआ है या कहें एक कारण हो सकता है ?

- अपराधी होने के पीछे बेरोजगारी बहुत बड़ा कारण नहीं हो सकता है, अपराधी कई कारण से हो सकते हैं, सिर्फ बेरोजगारी को हम यह नहीं कह सकते हैं कि बेरोजगार है इसलिए वह अपराध कर रहा है, बेरोजगार होना ही अपराध के लिए कारण नहीं है। बेरोजगार कोई भी काम कर सकता है,लेकिन हम यह कह सकते हैं कि सिर्फ बेरोजगार होने के लिए अपराधी नहीं है।

भ्रष्टाचार पर आप क्या टिप्पणी करेंगे ?

- यह एक सवाल है जिसका हमारे विभाग से बहुत ज्यादा कोई लेना - देना नहीं है। भ्रष्टाचार के लिए विजिलेंस विभाग काम करता है, समाज के जो भी भ्रष्टाचार होते हैं उन पर उस विभाग के द्वारा कार्यवाही की जाती है। तो मैं तो यही कहूंगा कि सीधे-सीधे भ्रष्टाचार का पुलिस विभाग से कोई संबंध नहीं है।

आपकी पुलिस सर्विस के समय ऐसा कोई अपराध हुआ जिसने आप को चौंकाया हो ?

- अपराध तो सभी चौकानेवाले होते हैं और हम मानते हैं कि अपराध नहीं होना चाहिए। लेकिन जो भी अपराध होता है वही होता है और हम तो यह चाहते हैं कि कोई भी अपराध ना हो। लेकिन अपराध जो होता है तो वह निश्चित रूप से हमको चौंकाने वाली होता है। सामान्य अपराध के अलावा जो भी अपराध है, जो बड़े अपराध है, वह सब हमें चौकने के लिए पर्याप्त है। तो ऐसा कोई परिभाषित नहीं कर सकते गंभीर जो अपराध होते हैं वह भी हमे चोकातें ही हैं।

क्या यहां भी ड्रग्स व्यापार या सम्बन्धित अपराध बढ़ा है ?

- ड्रग का व्यापार चल रहा है। बड़े लोगों में भी और हम कह सकते हैं कि ड्रग का जो काला बाजार है वह क्लब वगैरह आज क्या आधुनिकता में समाया जा रहा है। लेकिन पिछले समय से पुलिस विभाग सरकार और नारकोटिक्स विभाग के द्वारा बड़ी सतर्कता से कार्य किया जा रहा है। और इस पर नियंत्रण करने का प्रयास लगातार किया जा रहा है। इसको अभियान के रूप में हम लोग कार्यवाही भी कर रहे हैं। तत्काल हमारा प्रयास होता है कि उसका जो नेटवर्क है उसको खत्म किया जाए।

पुलिस और पब्लिक के बीच कैसा संबंध होना चाहिए?

- हमारा यह कहना है कि पब्लिक और पुलिस के बीच समन्वय अनिवार्य। पुलिस के पास कोई जादू नहीं है जिससे अपराध होते ही पहुंच जाए। पक्की सूचना मिलने के बाद ही हम लोगों के लिए आसान हो जाता है। घटनास्थल पर पहुंचकर हमारे द्वारा यह प्रयास होता है कि अपराधी को पकड़ा जाए। तो मैं तो यही कहूंगा कि पुलिस का और पब्लिक का संबंध अच्छा होना चाहिए। और इसी से सफलता मिलती है। मैं फिर कहूंगा कि हमारा तो सूचना तंत्र ही पब्लिक है ,वही का उसी मोहल्ले का उसी शहर का व्यक्ति जो किसी के टच में नहीं होता है, वह हमारे टच में रहता है। वह हमें समय पर खबर करता है वही हमारा मुखबिर होता है सटीक जानकारी भी हमें वही उपलब्ध कराता है। उन्हीं के माध्यम से बड़े-बड़े मसले हल किए जाते हैं।

कोई परेशान व्यक्ति आप तक पहुंच कैसे रखता है ?

- हमारे पास हर व्यक्ति की एप्रोच है ,जो व्यक्ति जब चाहे जब समस्या हो वह हमसे आकर मिल सकता है। और हमारा यह प्रयास होता है कि उसकी समस्या का समाधान करें। हम थाने पर उपलब्ध होते हैं, हम हर चौराहे पर उपलब्ध रहते हैं, कोई भी कहीं भी हमसे संपर्क कर सकता है। हर व्यक्ति जहां चाहे वहां हम से संपर्क कर सकता है और अपनी समस्या का समाधान करवा सकता है। हमारे द्वारा पूरी मदद की जाती है।

सामाजिक परिवेश को सुधारने में पुलिस की क्या भूमिका होती है ?

पुलिस समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और वर्तमान परिवेश में सामुदायिक पुलिस को लेकर भी हमारे वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निर्देश दिए जाते हैं। कई कार्यक्रम चलाए जाते हैं,पुलिस मुख्यालय पर भी कई कार्यक्रम चलाए जाते हैं। जिनकी वजह से सामाजिक सुधार होता है। महिलाओं के सुधार हेतु ,बच्चों के सुरक्षा हेतु एवं यातायात के प्रबंधन हेतु भी पुलिस की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। क्राइम होने के बाद उसे डिटेक्ट करना और क्राइम होने के पहले ही लोगों को जागरूक करना, क्राइम के पैटर्न को समझें और जागरूक रहें। आम जनता समाज का एक अभिन्न अंग बने यह पुलिस का मुख्य कार्य होता है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री अमित कुमार भाबोर
थाना प्रभारी बडगोंडा, (इंदौर)

क्या कमिश्नर प्रणाली इंदौर में लागू होने से ग्रामीण क्षेत्र पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा ?

- जी बिल्कुल, कमिश्नर प्रणाली शहर में लागू होने का प्रभाव, ग्रामीण क्षेत्रों पर भी पड़ेगा। शहर में सिटी में जितने भी अपराधी हैं, कमिश्नर प्रणाली लागू होने के बाद उन लोगों ने अपना ठिकाना बदल कर ग्रामीण क्षेत्रों की ओर किया है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में भी हमें अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

ग्रामीण थाना क्षेत्र और शहरी थाना क्षेत्र की कार्य प्रणाली में क्या अंतर होता है ?

- चूंकि ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीण परिवेश में ,अधिकतर लोग अशिक्षित निवास करते हैं, उनको क्राइम के बारे में अधिक से अधिक अवेयरनेस की आवश्यकता है। शहरों में काफी लोग अवैर हैं बनिस्बत गांव की अपेक्षा। जो कि अपराध के बारे में समझ का बेसिक अंतर है।

शहरी थाना क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण थाना क्षेत्र में किस तरह के अपराध होते हैं ?

- शहरी क्षेत्रों में और ग्रामीण क्षेत्रों में अलग तरह के अपराध होते हैं, सामान्य प्रकृति के अपराध हमारे यहां पर होते हैं। अशिक्षा और कानून के बारे में कम समझ होने के कारण घरेलू झगड़े , जमीन जायदाद आदि अधिक होते हैं। बड़े अपराध फ्रॉड जैसे अपराध ग्रामीण क्षेत्र में नहीं होते हैं।

अपराधी होने के पीछे आपकी नजरों में क्या कारण होते हैं ?

- ग्रामीण क्षेत्र के अपराध होने के पीछे मुख्य रूप से परिस्थितियां निर्भर करती हैं, परिस्थितियों के कारण कई बार अपराध घटित हो जाते हैं, पुराने झगड़े हैं। यहां पर कोई प्रोफेशनल नहीं होते हैं, जमीनी विवाद और पारिवारिक झगड़े ही यहां पर अधिक पाए जाते हैं यही सामान्य अपराध होते हैं।

शहर की आधुनिकता का ग्रामीण क्षेत्र की आम जनता पर कितना प्रभाव पड़ा है ?

- यह सही है शहरी आधुनिकता का प्रभाव ग्रामीण परिवेश में भी देखने को मिला है। क्योंकि आवागमन के साधन होने से गांव के लोग भी शहरों में जा रहे हैं। और वहां के परिवेश को देखकर ग्रामीण परिवेश में भी उसका प्रभाव पड़ रहा है। फिर भी गांव के आपसी संबंध सबके साथ रहते हैं। आधुनिकता का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र पर भी पड़ा है।

आपके थाना क्षेत्र में क्या महिला अपराध का ग्राफ बढ़ा है ?

- महिला महिलाओं से संबंधित अपराध का ग्राफ, छेड़खानी है घरेलू हिंसा है इस तरह के महिलाओं संबंधित अपराध सामान्य रूप से होते हैं। हम जागरूकता के माध्यम से प्रयास करते हैं, महिलाएं और लड़कियां इन सब चीजों के लिए विरोध करने के लिए आगेआ गई है।

चोरी , चैन स्नैचिंग , लूटपाट जैसी घटनाओं का ग्राफ आपके थाना पर क्या बढ़ा है ?

- मेरे थाना क्षेत्र की बात करूं तो मैं यही कहूंगा कि, इस तरह के जो अपराध हैं,उनका ग्राफ मेरे यहां बढ़ा नहीं है। सामान्य जो घटनाएं होती हैं वही है ऐसी कोई घटना मेरे संज्ञान में नहीं आई है।

भ्रष्टाचार पर आपकी टिप्पणी क्या होगी ?

- भ्रष्टाचार निश्चित रूप से समाज में एक गलत व्यवस्था है ।जो भी परिस्थिति को लेकर चल रही है। भ्रष्टाचार पर पुलिस के कर्मचारियों को भी समय-समय पर अवेयरनेस के प्रयास किए जाते हैं।

नशा मुक्ति के लिए पुलिस के द्वारा क्या प्रयास किए जाते हैं ?

- यह भी एक सामाजिक बुराई है और नशा मुक्ति के लिए पुलिस काफी प्रयास कर रही है। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र में कच्ची शराब और अन्य तरह के साधनों का पहले से प्रचलन है। आबकारी विभाग के सहयोग के माध्यम से और हमारे पुलिस स्टाफ के माध्यम से समय-समय पर अवेयरनेस प्रोग्राम व उचित कार्यवाही कर उस पर अंकुश लगाने का प्रयास किया जाता है।

परेशान व्यक्ति की पहुंच अब तक कैसी है ?

- क्योंकि यह बात आप भी समझ रहे हैं कि, आजकल मीडिया का दौर है, मोबाइल का दौर है, ग्राम रक्षा समिति के माध्यम से भी हमारा सीधा संपर्क रहता है और सीधा संवाद रहता है। अब वह पुरानी स्थिति नहीं है अब आसानी से आम आदमी हमसे संपर्क कर सकता है। सभी जगह हमारे नंबर उपलब्ध हैं,गांव गांव जाते हैं वहां मीटिंग्स होती है। भ्रमण के दौरान भी बीट प्रभारी हैं, वह भी लगातार संपर्क में रहते हैं। पुलिस तक पहुंच आम जनता की कोई समस्या नहीं है। कभी भी जनता कहीं भी संवाद कर सकती है आसानी से।

अगर आप पुलिस में नहीं होते तो कहां होते ?

- यह एक अच्छा सवाल है, हम अगर पुलिस में नहीं होते तो, हमने एमएसडब्ल्यू की पढ़ाई पूरी की है। हम निश्चित रूप से समाज सेवा के कार्य में कहीं सेवा दे रहे होते,समाज सेवा कर रहे होते।

जनता को क्या सावधानी रखना चाहिए आपकी नजरों में ?

- वर्तमान दौर में हमारा यही कहना है, यही संदेश है कि, जो साइबरक्राइम है, अभी इस का बोलबाला है और पढ़े लिखे और अशिक्षित सभी प्रकार के लोग इससे कहीं ना कहीं प्रभावित हैं। काफी मेहनत की गाढ़ी कमाई, साइबर ठग द्वारा ठग ली जाती है। तो यही संदेश है कि वर्तमान में सभी को जागरूक किया जाए। खुद व अपने मित्र पड़ोसी जो भी हैं उन सब के लिए संदेश है कि, पुलिस के द्वारा अभियान चलाए जाते हैं उसका प्रचार प्रसार किया जाए। इस प्रकार की घटनाओं से बचा जा सके यह प्रयास करना चाहिए।

हमारे अखबार और न्यूज़ चैनल के संकल्प-सूत्र वाक्य 'सतर्क रहें-सजग रहे अभियान' पर आपकी प्रतिक्रिया और संदेश..!

आम जनता के लिए यही संदेश देना चाहूंगा कि वह अपराध होने की स्थिति में यही प्रयास करें कि अपराध से बचें। किसी तरह के अपराध में शामिल ना हो, अपराध होने का जब शक हो या कोई असामान्य बात होने लगे तो तत्काल उनको सतर्क होना चाहिए, सजग रहना चाहिए और पुलिस को सूचना करना चाहिए। ताकि होने वाले अपराध से जनता को सुरक्षित रखा जा सके। पुलिस का सहयोग करना चाहिए यही मेरा संदेश है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री विजय सिंह सिसोदिया
थाना प्रभारी मानपुर

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू की है इसको आप किस तरह से देखते हैं ?

शहरी थाना क्षेत्र और ग्रामीण थाना क्षेत्र के कार्य प्रणाली पर अंतर बताइए?

- देहात का जो छेत्र होता है वह शहर से लगा होता है, जो जनता होती है इस पर प्रेशर कम होता है और वहां पर क्राइम भी अलग प्रकार के होते हैं। सिटी में जो है वहां पर पुलिस को ज्यादा सख्ती करना पड़ती है और हमारे यहां बहुत ज्यादा सख्ती की आवश्यकता नहीं होती है। क्योंकि यहां पर ग्रामीण जनता होती है और वह लाग लपेट से दूर होती है।

क्या बड़े थाना क्षेत्रों में और आपके थाना क्षेत्र में भी राजनीतिक हस्तक्षेप देखा जाता है ?

- नहीं ऐसा नहीं है मैं जहां तक समझता हूं, चाहे थाना बड़ा हो या थाना छोटा हो, इसमें राजनीति के हस्तक्षेप को नहीं देखा जाना चाहिए। राजनीति का दखल सामान्य रूप से कम होता है।

सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए पुलिस की क्या भूमिका रहती है ?

- निश्चित रूप से पुलिस विभाग जनसेवा का कार्य करता है और सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कोई भी काम हो पुलिस का रोल उसमें रहता ही है। पुलिस हमेशा उपलब्ध रहती है और सकारात्मक भूमिका निभाती है।

पारिवारिक विवादों में पुलिस क्या भूमिका निभाती है ?

- देखिए पारिवारिक विवाद होते हैं ,पारिवारिक विवादों की जहां तक हम बात करें तो मैं समझता हूं कि पारिवारिक विवादों में महिलाओं संबंधित और भाई बंधुओं के झगड़े ही खास होते हैं। इन में पुलिस की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और पुलिस के द्वारा हमेशा एक अच्छा वातावरण तैयार किया जाता है। महिला डेस्क भी हमारे यहां काम करती है। उसी के माध्यम से हम महिलाओं के जो अपराध होते हैं या महिलाओं संबंधित जो पारिवारिक विवाद होते हैं, उनको सुलझाने का प्रयास करते हैं। डेस्क द्वारा यह भी प्रयास किया जाता है कि आपस में बिठाकर समझौता कराकर परिवार में अच्छा वातावरण बने ,परिवार टूटे नहीं, इस बात का हम लोग प्रयास करते हैं। यह पुलिस की भूमिका होती है।

क्या शहरी आधुनिकता का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र में भी पड़ा है ?

- निश्चित रूप से कोई भी व्यवस्था बदलती है या कोई नया चलाना आता है तो उसका प्रभाव पड़ता है। इसी तरह से शहर में जो आधुनिकता है जो आधुनिकता के साधन है, उनका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र की जनता पर भी पड़ा है। ग्रामीण जनता भी उससे प्रभावित हुई है,इससे हम इंकार नहीं कर सकते हैं।

आपके थाना क्षेत्र में महिला संबंधित अपराध का ग्राफ कम हुआ है या बढ़ा है ?

- यह ग्रामीण क्षेत्र है और यहां पर महिलाओं का अपराध का ग्राफ मेरी नजर में नहीं बढ़ा है। क्योंकि यहां पर जो जनता है जो महिलाएं ज्यादा पढ़ी लिखी नही होती है,मजदूर इलाके की महिलाएं होती हैं ,तो ज्यादा नियम वगैरह के कानून ज्यादा को जानते नहीं हैं। 363 ऐसी कोई बहुत बड़ी कार्यवाही नहीं होती है, इसलिए मेरा यही कहना है कि हमारे इलाके में महिलाओं के अपराध का ग्राफ नहीं बढ़ा है।

क्या आपके थाना क्षेत्र में भी आदतन अपराधी हैं ?

- नहीं मेरे साथ क्षेत्र में आदतन अपराधी की संख्या ना के बराबर है ,मेरे कार्य क्षेत्र में और मेरे थाना क्षेत्र में मेरे द्वारा इस पर कड़ा शिकंजा कसा हुआ है। इसलिए मैं यह मानता हूं कि यहां पर आदतन अपराधी नहीं है। और अगर कोई होगा भी तो वह बहुत ज्यादा नजर में नहीं है।

आदतन अपराधी पर क्या कार्यवाही करना चाहिए ?

- देखिए जो आदतन अपराधी होते हैं उन पर सख्त कार्रवाई करना चाहिए , क्योंकि भय के बिना प्रीति नहीं होती है। इसलिए जो आदतन अपराधी है उन पर कार्रवाई होना चाहिए। एनएसए की कार्यवाही उन पर होना चाहिए, जिला बदर की कार्यवाही होना चाहिए और इस पर 110 की कार्रवाई होना चाहिए। सख्त कार्यवाही होना चाहिए जिससे कि जो आदतन अपराधी हैं उन पर डर बना रहे।

बेरोजगारी को अपराध होने के कारण मानते हैं?

- नहीं बेरोजगारी के कारण लोग अपराध करने लग गया है यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। और यह व्यवस्था ठीक नहीं है। इस तरह के अपराध लोगों को करना भी नहीं चाहिए और अपराधी अपराधी होता है। अपराध होने के कारण नहीं है तो बेरोजगारी ऐसा बड़ा कारण नहीं है। जिसके पीछे अपराध किया जाए। अपराध जो मानसिकता बनी हुई है वही अपराध करेगा और अपराधी कानून के शिकंजे से बच नहीं पाता है। रोजगार नहीं है और आदमी अपराध करने लग जाए यह तो एक अच्छी व्यवस्था नहीं है। ना सामाजिक परिवेश इस तरह का होना चाहिए तो अपराधी होने के पीछे बेरोजगारी कोई कारण नहीं होता है।

भ्रष्टाचार पर आप क्या टिप्पणी करेंगे ?

- भ्रष्टाचार एक बुराई जो कि सामाजिक बुराई की तरह से देखना चाहिए। भ्रष्टाचार में लेने वाला और देने वाला दोनों ही उसके हिस्से होते हैं। भ्रष्टाचार इसलिए सामाजिक बुराई है, इसको आगे नहीं बढ़ना चाहिए।

सर्वधर्म समाज के लिए पुलिस के क्या प्रयास होते हैं ?

- सभी धर्म समान होते हैं और हमारी नजरों में कोई भी ऐसा नहीं है जिसको अलग से देखा जाए। सभी धर्मों को हम एकरूपता देखते हैं और सभी धर्मों की सुरक्षा के लिए उनके आयोजनों के लिए पुलिस की सुरक्षा हमेशा तत्पर से ही रहती है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पुलिस के द्वारा क्या प्रयास किए जाते हैं ?

- जहां तक मेरा ख्याल है कि वह निश्चित रूप से सभी को उच्च भावना रखना चाहिए, राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न जब खड़ा होता है। तो हम तो यही कहेंगे कि हम सब काम कर रहे हैं जो पुलिस काम कर रही है, वह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए काम कर रही है। पुलिस का काम राष्ट्रीय सुरक्षा करना है तो निश्चित रूप से पुलिस वही काम कर रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा प्राथमिकता है।

परेशान व्यक्ति की आप तक पहुंच कैसी है?

- जनता का जो भी व्यक्ति है और अगर वह किसी तरह से परेशान है उसे मेरा सीधा संपर्क होता है। क्योंकि मैं ही समस्या को सुनता हूं और जनता से हमारा सीधा संपर्क होता है। मैं जनता के बीच जाकर जनता की समस्याओं को सुनता हूं, आम जनता के बीच हमेशा में उपलब्ध रहता हूं, उनके पास मेरे मोबाइल नंबर वगैरह सुविधा से उपलब्ध है। कोई भी कभी भी संपर्क कर सकता है। सभी मुझे सहयोग करते हैं।

वैसे तो कमिश्नरी प्रणाली शहर में लागू हुई है, आप इसको कैसे देखते हैं ?

- कमिश्नर प्रणाली निश्चित रूप से इंदौर शहर में लागू हुई है, क्योंकि हमारा क्षेत्र इंदौर जिले में ही आता है और जो बड़े शहर में कोई अगर गतिविधि होती है कोई कार्यवाही होती है। पुलिस के लिए अच्छा प्रयास होता है,तो उसका प्रभाव हमारे क्षेत्र में पड़ता है। भले ही कमिश्नर प्रणाली शहर में लागू हुई हो, लेकिन उसका सकारात्मक और एक अच्छा प्रभाव, क्राइम रोकने के लिए है यह एक अच्छी पहल है।

हमारे अखबार के संकल्प सूत्र वाक्य "सतर्क रहें सजग रहें अभियान " पर आपका संदेश?

यह बहुत अच्छी बात है व्यक्ति को हमेशा सतर्क रहना चाहिए और सतर्क रहेगा तो सुरक्षित रहेगा । सतर्क रहना ही चाहिए। अगर व्यक्ति सतर्क रहेगा तो कई खतरों से बचा रहेगा। आज के समय में काम लापरवाही से होगा तो खतरा बना रहेगा। सतर्क रहेगा तो एक सुरक्षा का कवच बना रहेगा । सजग रहना भी समय की आवश्यकता है । साइबर फ्रॉड हो, या अन्य आपराधिक गतिविधियां सभी जगह सावधानी से सुरक्षा बनी रहेगी।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री अजय सिंह गुर्जर
थाना प्रभारी- खुड़ैल (इंदौर)

शहरी थाना क्षेत्र और ग्रामीण थाना क्षेत्र की कार्य प्रणाली में अंतर बताइए?

- शहरी और ग्रामीण थाना क्षेत्र की पुलिस कार्यवाही में बहुत बड़ा अंतर नहीं है । ग्रामीण थाना क्षेत्र होने के कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं। यहां पर पुलिसकर्मी कुछ रिलैक्स में रहते हैं , लेकिन जब वह वारदात होती है तो पूरी सतर्कता से वह अपना काम करते हैं । शहरों में वारदात होने पर पूरी एकजुटता से काम होता है, वहीं ग्रामीण थाना क्षेत्र में वारदात होने पर जो कम संख्या में बल होता है ,वही पूरी सक्रियता से वारदात को देखना पड़ता है। अगर दो पुलिसकर्मी यहां पर हैं तो उनको ही हैंडल करना होता है।

बड़े थानों में अपराध और छोटे थानों में जो अपराध होते हैं ,वह किस तरह के होते हैं?

- शहरी थाना क्षेत्रों में साइबर क्राइम की ज्यादा समस्या है और यहां पर ग्रामीण क्षेत्र में मारपीट के मामले ज्यादा होते हैं, शहर में धोखाधड़ी का अपराध ज्यादा होते हैं यहां पर आपसी विवाद ज्यादा होते हैं,लड़ाई झगड़ा आदि के अपराध अधिक होते हैं।

अपराधी होने के पीछे आपकी नजरों में मुख्य कारण क्या होते हैं?

- अपराधी अपनी पृष्ठभूमि के आधार पर होता है, उसके पीछे पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या है? सामाजिक वातावरण कैसा है? एक होता है बेरोजगारी इस कारण से भी व्यक्ति अपराध की ओर चला जाता है। इसी कारण से अपराधों में वृद्धि होती है। अचानक अपराध भी हो जाते हैं, बदले की भावना से भी हो जाते हैं।

पारिवारिक विवादों की स्थिति में पुलिस की भूमिका?

- पुलिस की भूमिका हमेशा अच्छी होती है, उनको समझाया जाता है और इसके माध्यम से विवाद खत्म करने का प्रयास पुलिस का रहता है। काउंसिलिंग के माध्यम से भी उनको विवाद खत्म करने के लिए तैयार किया जाता है । पुलिस का हमेशा यही प्रयास रहता है कि परिवार ना टूटे ।

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस की क्या भूमिका होती है?

- सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए मेरा ऐसा मानना है कि जैसे समाज सुधारता है वैसे ही पुलिस भी सकारात्मक कार्य करती है, पुलिस भी समाज का ही एक अंग है,पुलिस के जो लोग होते हैं वह भी समाज के ही होते हैं । जैसे सामाजिक बदलाव होते हुए भी पुलिसिंग भी की जाती है। जैसे सामाजिक वातवरण होता है वैसे ही पुलिसिंग का कार्य किया जाता है। कहीं शक्ति और कहीं नरमी से सामाजिक परिवेश को बदलने का प्रयास होता है।

ऐसा माना जाता है कि पुलिस बदलेगी तो समाज बदलेगा?

- निश्चित रूप से पुलिस के व्यवहार के ऊपर समाज की कई चीजें टिकी होती हैं। पुलिस समाज के आइकॉन होती है। जब पुलिस वाले अच्छे काम करते हैं तो उसकी प्रशंसा होती है। तो इसका प्रभाव आम जनता पर भी पड़ता है।

आपके कार्यक्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप को आप किस नजरिए से देखते हैं?

- राजनीति में जो काम करने वाले लोग होते हैं वह अपने क्षेत्र की जनता के लिए कार्य करते हैं। उनकी जो जायज मांग होती हैं उस पर उचित तरीके से विचार किया जाता है । पक्ष विपक्ष दोनों को सुना जाता है तब कोई निर्णय जो विधि सम्मत होता है वह लिया जाता है । तो राजनीति के जो लोग होते हैं वह भी समाज का हिस्सा होते हैं।

जो आदतन अपराधी होते हैं उन पर आपकी नजरों में कैसे कार्रवाई होना चाहिए?

- निश्चित रूप से जो आदतन अपराधी हैं उन पर सख्ती से कानूनी कार्रवाई होना चाहिए, समय-समय पर उनके ऊपर बाउंड ओवर की कार्यवाही करना चाहिए। अगर उसके बाद भी वह अपराध दोहराता है तो उसके विरुद्ध एनएसए की कार्यवाही की जाना चाहिए।

आपके थाना क्षेत्र में चोरी स्नैचिंग डकैती जैसी घटनाओं का ग्राफ पिछले वर्ष की तुलना में बड़ा है या कम हुआ है?

- इस तरह की घटनाओं का ग्राफ जहां तक मानता हूं कि सख्त कार्रवाई हुई है और आगे भी इन सब घटनाओं पर लगातार नजर रखी हुई है। तो घटनाओं का ग्राफ जो है वह कम ही है ।और प्रयास किया जाएगा कि वह कम किया जा सके।

भ्रष्टाचार पर आप क्या टिप्पणी करना चाहेंगे?

- समाज सब से मिलकर बना है और जहां तक मैं जानता हूं मैं मानता हूं कि भ्रष्टाचार समाज में एक बुराई की नजर से देखा जाना चाहिए। भ्रष्टाचार समाज की जो व्यवस्था बनी है उसके लिए घातक है । आचरण अगर भ्रष्ट होगा तो फिर एक अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है ।

परेशान व्यक्ति की पहुंच कैसी है?

- आम जनता की पहुंच आसानी से, परेशान व्यक्ति अधिकारी तक पहुंच सकता है। हम तक पहुंच आम आदमी की 1_ 2_ 1 है। कभी भी कॉल कर सकता है, थाने पर आकर संपर्क कर सकता है, बिचौलियों वगैरा की व्यवस्था हम नहीं रखते हैं। सीधा आम आदमी हमसे संपर्क कर सकता है और थाना प्रभारी , थाने के नंबर कभी भी कोई भी संपर्क कर सकता है। मोबाइल अपडेट है।

ग्रामीण थाना क्षेत्र में नशा मुक्ति के लिए पुलिस के क्या प्रयास है?

- इस विषय में समय-समय पर पुलिस के द्वारा कार्यवाही की जाती है, अभियान चलाए जाते हैं, लोगों को समझाया जाता है, स्कूलों और अन्य संस्थाओं में जाकर पुलिस के द्वारा नशा न करने की समझाइश दी जाती है सलाह दी जाती है। नशे की होने वाली हानियों के बारे में उन्हें समझाया जाता है। जो अवैध गतिविधियां होती हैं उन पर रोक लगाने का प्रयास हमारा होता है ।

अगर आप पुलिस में हो तो कहां होते?

- निश्चित रूप से मैं पुलिस में ही होता। क्योंकि मेरा लगातार प्रयास पुलिस में सेवा करने का ही रहा है । 5 बार मेरा सिलेक्शन नहीं हुआ और भी प्रयास किया तो मेरा सिलेक्शन हुआ । मैं पुलिस में ही रहना चाहता था पुलिस में ही हूं ।

इंदौर में कमिश्नर प्रणाली लागू हुई है इसे ग्रामीण क्षेत्र में कैसे देखते हैं?

- निश्चित रूप से कमिश्नर प्रणाली शहर में लागू हुई है और शहर के लिए क्राइम के लिए यह बहुत रोकने के लिए बहुत अच्छी पहल है । इस प्रयास से आम नागरिक को काफी सुरक्षा मिलेगी , इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र में भी निश्चित रूप से पड़ा है। क्योंकि शहर से लगी हुई आबादी हैं तो यहां पर जो पुलिस की कार्यप्रणाली है उसको अच्छे से किया जाए यह प्रयास होता है।

शहर की आधुनिकता का ग्रामीण परिवेश में कितना फर्क पड़ा है?कितना प्रभाव हुआ है?

- शहर की आधुनिकता है उसके कारण ग्रामीण परिवेश का वातावरण भी बदला है। पहले चौपालों पर बड़े प्रेम से लोग बैठते थे, आपस में चर्चा करते थे, अब लोगों ने पक्के मकान बनवा लिए हैं, यह सब आधुनिकता का प्रभाव एक दूसरे से दूरियां बन गई है। शहर के देखा देखी गांव में भी वातावरण में कुछ बदलाव तो आया है।

ऐसा माना जाता है कि पुलिस बदलेगी तो समाज बदलेगा?

पुलिस समाज का अभिन्न अंग है। पुलिस व समाज एक परस्पर चलने वाली गाड़ी है। यदि बदलाव पुलिस में आएगा तो इसका प्रभाव स्वतः से समाज में देखा जा सकता है। इसी तरह यदि समाज में कोई बदलाव होता है तो पुलिस में उसका प्रभाव दर्शनीय होता है। इसी बदलाव के कारण समाज में पुलिस में आपसी सामंजस्य बना रहता है।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

शहरी थाना क्षेत्र एवं ग्रामीण थाना क्षेत्र में क्या अंतर है?

- यदि कोई गंभीर घटना घटित होती है, तब आसपास के थानों में दूरी होने के कारण पुलिस बल उपलब्ध होने में समय लगता है। संसाधन का अभाव व बल की कमी रहती है। फिर भी पुलिस बल घटना के समय उपलब्ध होकर वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में कार्य करती है।

शहरी थाना क्षेत्र के अपराध व ग्रामीण थाना क्षेत्र के अपराध किस तरह के होते हैं?

- सभी थानों पर हर प्रकार के अपराध होते हैं जैसे साइबर क्राइम, धोखाधड़ी आदि एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक एवं जमीन संबंधी अपराध अधिक होते हैं, उन्हें विवादों से अत्यधिक गंभीर घटना घटित होती है।

अपराधी प्रवृत्ति होने के पीछे आपकी नजरों में मुख्य कारण क्या है?

- आपराधिक प्रवृत्ति के होने के लिए निम्न कारक होते हैं पारिवारिक पृष्ठभूमि, संगति, रहन-सहन का वातावरण, अशिक्षा, गरीबी, आपसी रंजिश इत्यादि।

संवाद और परिचर्चा

मीणा कर्णावत
देपालपुर थाना प्रभारी

पारिवारिक विवादों की स्थिति में पुलिस की भूमिका?

- पारिवारिक मामलों में पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका पारिवारिक मामलों को परिवार के स्तर पर संभालने की होती है। आपसी समझाइश देकर, सुलह विवाद सुलझाने हेतु दोनों पक्षों की काउंसलिंग लेना एवं परिवार बनाए रखना।

सामाजिक बदलाव के लिए पुलिस कार्यप्रणाली?

- सामाजिक बदलाव हेतु पुलिस की कार्यप्रणाली थाना क्षेत्र में व्याप्त रीति रिवाज आहत ना करते हुए विधि अनुसार कार्य करना चाहिए, पुलिस समाज का ही अंश है। समाज को बढ़ाने वाले हर कारक जैसे समाज में अपराधों के प्रति जागरूकता अभियान चलाना, मानव व्यवहार संबंधी सेमिनार लेकर अशिक्षित विभाग अथवा शिक्षित वर्ग अपराधों एवं उनके अधिकार, अपराधों से बचाव हेतु अवगत कराना।

आपके कार्य क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप को आप कैसे देखते हैं?

- राजनेता समाज से ही जुड़ा होकर समाज का ही प्रतिनिधि होता है। यदि किसी मामले में राजनीतिक हस्तक्षेप होता भी है तो दोनों पक्षों की बात सुनकर हर वैधानिक कार्रवाई की जाती है।

आदतन अपराधी पर आपकी टिप्पणी?

- आदतन अपराधी की निरंतर चेकिंग कर, गुजर बसर के बारे में समय-समय पर पता कर कार्रवाई कर, समझाइश देकर अपराधी को उसकी आपराधिक प्रवृत्ति से निकलने में मदद करना। समय-समय पर निगाह रख बाउंड ओवर की कार्रवाई करना, यदि फिर भी कोई अपराध करता है तो दंडात्मक कार्रवाई करना इत्यादि।

भ्रष्टाचार पर टिप्पणी?

- भ्रष्टाचार एक सामाजिक, आवश्यक बुराई है, जिसका हर क्षेत्र में व्याप्त होना आवश्यक नहीं है। भ्रष्टाचार आज समाज का एक नजरिया बन चुका है जिस में बदलाव आवश्यक है। यदि हम भ्रष्टाचार रखेंगे तो समाज में भी हमारा स्तर व लोगों के प्रति हमारा नजरिया वैसा ही होगा।

नशा मुक्ति के लिए पुलिस के प्रयास?

- नशा मुक्ति एक सामाजिक बुराई है जिसे सुधारने में हमारे द्वारा सेमिनार लिया जाता है। लोगों को नशा न करने की समझाई देना, अपने स्वास्थ्य, परिवार समाज के लिए नशा मुक्त होने के लिए समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाना। नुक्कड़ नाटकों का आयोजन करना इत्यादि ताकि समाज से यह बुराई खत्म की जा सके।

हमारे अखबार का मूल मंत्र है "सतर्क रहें सजग रहें अभियान" इस पर आपके विचार प्रस्तुत करे।

आपका यह जो मूल मंत्र है "सतर्क रहें सजग रहें अभियान" यह पसंद आया यह बात सही है कि अगर आप सावधान सुरक्षित रहना चाहते हैं तो हम सभी को जागरूक रहना होगा और इसको हम सूत्र में पिरो कर देखे तो हम कह सकते हैं कि हमें" सतर्क रहना है और सजग रहना" है तभी जीवन सार्थक होगा। तो "सतर्क रहें सजग रहें अभियान" सफल हो यही कामना करता हूं।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

संवाद और परिचर्चा

श्री कुलदीप खत्री
थाना प्रभारी - किशनगंज (इंदौर)

पारिवारिक विवादों को आप कैसे हैंडल करते हैं ?

- परिवार में बहुत सारी समस्याएं रहती हैं, एक नहीं होती है, हम भी कहीं ना कहीं उस समस्या को देख रहे होते हैं और इतने समय से जो अनुभव होता है उसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि, कई छोटी-छोटी बातों पर परिवार में विवाद ज्यादा होते हैं। किसी के इगो रहते हैं, और भी कई कारण होते हैं जिनके कारण लड़ाई झगड़े होते हैं। हमारा उद्देश्य परिवार न टूटे परिवार ना बिगड़े और सब संगठित हो जाएं, तो यही कोशिश रहती है, हमारी प्राथमिकता यही होती है कि समझाइश दी जाए। काउंसलिंग की जाए और छोटे-मोटे मनमुटाव है कोई बात है तो यहीं खत्म करके अपना जीवन बिताएं। उसके लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र के अपराध किस तरह के होते हैं ?

- देखिए ग्रामीण क्षेत्र के जो अपराध होते हैं ऐसा कोई विशेष नहीं है, अपराध जो है उसमें सामान्य रूप से एक्सीडेंट के ज्यादा अपराध होते हैं, हमारे यहां चारों तरफ हाईवे होने से एक्सीडेंट के मामले ज्यादा होते हैं। बाकी मारपीट वगैरा की जो सामान्य घटना है और ग्रामीण क्षेत्र में जो झगड़े होते हैं, इस तरह के अपराध होते हैं और ज्यादातर क्राइम नहीं होते हैं।

अपराधी होने के पीछे आप क्या कारण मानते हैं ?

- अपराधी होने के पीछे बहुत सारे कारण होते हैं,मेरी ऐसी मान्यता है कि कोई एक ऐसा कारण नहीं होता है जिसके कारण व्यक्ति अपराधी होता है। जिसको हम बता सके किसी की महत्वाकांक्षा होती है,तो अपराधी बन जाता है, किसी को दूसरे से आगे बढ़ना है तो वह अपराधी बन जाता है,किसी की पारिवारिक पृष्ठभूमि ऐसी होती है जिसके कारण वह अपराध में चला जाता है। कई बार होता ये है कि आस पास का वातावरण जो होता है उसके कारण भी व्यक्ति अपराध में शामिल हो जाते हैं।

आपके थाना क्षेत्र में महिला संबंधी अपराध का ग्राफ की क्या स्थिति है ?

- हमारे थाना क्षेत्र में महिला अपराध की बात करें तो हम कह सकते हैं कि यह ग्रामीण क्षेत्र है और यहां पर महिला अपराध सामान्य ही है, कोई विशेष नहीं है। जिस तरह से देखा जाता है कि महिलाओं में अपराध लत कम होती है तो यह कह सकते हैं कि महिलाओं के अपराध नहीं है या नहीं के बराबर है।

आपके थाना क्षेत्र में चोरी, चैन स्नेचिंग, लूटपाट, डकैती जैसी घटनाओं का ग्राफ पिछले वर्ष से अधिक है या कम?

- नहीं इस तरह की घटनाओं का ग्राफ पिछले साल कि तुलना करें तो यह कह सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र होने से यहां पर बहुत कम अपराध है। डकैती की कोई घटना नहीं घटी है। लूट पाट की जो घटना हुई है वह भी हमने ट्रेस कर ली है। बाकी इस प्रकार के जो अपराध होते हैं वह भी समान्य है। अपराध बड़े नहीं है।

आम आदमी की आप तक पहुंच कैसे है?

- आज समय बदल गया है, नया समय है, नया दौर है, नई टेक्नोलॉजी का समय है और यह भी सही है कि, आज तो प्रधान मंत्री से लेकर मुख्य मंत्री तक पहुंच आम आदमी की बड़ी आसान है। सभी जगह हेल्प लाइन नंबर पर कॉल किया जा सकता है। हमारा थाना भी रात दिन खुला रहता है, कभी भी कोई भी व्यक्ति अपनी समस्या हल कराने आ सकता है। हमारा प्रयास होता है कि पुलिस परेशान व्यक्ति की हर संभव मदद कर सकें। आसानी से पहुंचा जा सकता है पुलिस तक।

पुलिस विभाग को चुनने के पीछे आपकी क्या सोच रही थी?

- कोई ख़ास वजह तो नहीं थी, परन्तु कहीं ऐसा मानना था कि कुछ करना चाहिए बस अच्छा करना चाहिए यही कारण था कि मैं पुलिस विभाग को चुनने में सफल रहा।ओर पुलिस विभाग में कार्य करने में अच्छा लगा । हां यह जरूर है कि पुलिस विभाग में ना होता तो मैं एक स्पोर्ट्स अधिकारी के रुप में कहीं सेवा दे रहा होता।

सायबर फ्राड होने पर आपकी तत्परता कैसी होती है ?

- हां, यह सही है कि आजकल सायबर फ्राड अधिक होते हैं, सभी जगह पर देखा जा सकता है कि सायबर अपराध करने वाले लोग चालाक होते हैं। वे बड़ी चालाकी से लोगों को अपने जाल में फंसाकर धोखा देने में सफल हो जाते हैं। उसमे थाने लेबल पर कुछ नहीं होता है। जो लोग फ्राड करते हैं वे चालाकी से सभी डाक्यूमेंट फर्जी तरीके से रखते हैं। फिर भी अगर पीड़ित व्यक्ति पुलिस अधिकारी के पास आता है तो हम उसकी पूरी तरह से मदद करते हैं। तत्काल प्रभावी कार्यवाही शुरू कर सहायता करने की कोशिश करते हैं।

ड्रग्स व्यापार आपके थाना क्षेत्र में भी पैर पसारता नजर आता है नहीं?

- ये देखने में आया है कि यहां पर कुछ लोग चोरी छिपे पुड़िया वगैरा बेचते हैं, लेकिन पुलिस अधिकारी को यह बात जानकारी मिलती है तो उस पर उचित कार्यवाही की जाती है और हमारा प्रयास होता है कि इस प्रकार के लोग जो है उन पर कार्रवाई करना है।

सर्व धर्म समभाव सुरक्षा को लेकर आप केसे देखते हैं?

- पुलिस तो हमेशा सकारात्मक सोच के साथ सभी धर्मों को लेकर समान नजरिया रखती है, सम्मान रखना हमारा दायित्व है। भारत में सभी धर्मों को हम एकरूपता से देखते हैं इसलिए सब धर्मों को लेकर हम चाहते हैं कि सभी धर्म अपने तोयोहर अच्छे से मनाने। सोहद्रता से एक दूसरे को लेकर गंभीर रहे तोआपसी कटुता नहीं बढ़े। पुलिस तो हमेशा से यही प्रयास कर रही है कि सभी धर्म समभाव से हो।

सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए आपके प्रयास ?

देखिए सामाजिक परिवेश एक ऐसा विषय है जिस पर मेरा ऐसा मानना है कि सामाजिक परिवेश को तो हम नहीं सुधार सकते। उसके सुधार के लिए समाज के सभी अंगों को आगे आना पड़ेगा। सामुदायिक पुलिसिंग के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर काम जरूर करना चाहते हैं और इसीलिए हमारे द्वारा नगर सुरक्षा समिति, ग्राम रक्षा समिति, वरिष्ठ नागरिकों की समिति, शांति सुरक्षा की समिति का गठन करना, इन सभी की मीटिंग करना। उन सभी को अपराधों के प्रति साइबर के जो अपराध हो रहे हैं उनके बारे में जानकारी देना और उन को जागरूक करना जिससे अकारण ठगे ना जाए। आजकल साइबर अपराध के प्रचलन बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं।तो उस पर सावधानी रखना अनिवार्य ,जागरूकता की कमी के कारण यह अपराध बढ़ जाते हैं झांसे में आ जाते हैं लोग और ठगे जाते हैं।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

ग्रामीण थाना क्षेत्र और शहरी थाना क्षेत्र की जीवन शैली में क्या अंतर होता है ?

- ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के काम करने का और शहर में काम करने का ढंग अलग होता है। यहां की जीवन शैली जो है वह अलग होती है। ग्रामीण क्षेत्र में व्यक्ति 10:00 बजे तक किसी भी हालत में सो ही जाता है और सुबह भी 5_6 बजे उठ जाता है, इधर शहर की जो जीवन शैली है वह रात को देर तक जागना और सुबह देर तक सोना। ग्रामीण जीवन शैली और शहरी जीवन शैली में बहुत अंतर है। शहर में आजकल की जो युवा पीढ़ी है यह जो देर रात तक जागना और 12:00 बजे तक सुबह सोना। इस वजह से शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के जो अपराध होते हैं उनमें भी फर्क होता है। और अपराध व्यक्ति के द्वारा ही किया जाता है। जैसी जीवनशैली होगी वैसा आसपास का वातावरण बनेगा। वैसे ही अपराध होंगे और वैसा ही पुलिस के द्वारा कार्यवाही भी की जाएगी। तो ग्रामीण और शहरी जीवन शैली है उस में बहुत अंतर होता है।

अपराधी होने के पीछे आपकी नजरों में मुख्य कारण क्या होते हैं ?

- ग्रामीण क्षेत्र जहां हम कार्य कर रहे हैं, यहां पर अपराध होने के पीछे मेरी नजरों में दो ही कारण प्रमुख है। एक तो नशा, नशा इसका प्रचलन बहुत बढ़ गया है, इसके कारण अपराध बढ़ते हैं। दूसरा जो मुख्य कारण है वह अशिक्षा। इसके कारण भी आदमी अपराध की दुनिया में चला जाता है। सामान्य रूप से अपराध होने के पीछे अशिक्षा भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

नाबालिग के अपराध बढ़ रहे हैं, बच्चे अपराध की ओर बढ़ रहे हैं ?

- मेरा ऐसा मानना है कि हम यह नहीं कह सकते हैं कि नाबालिग जो है वह अपराध की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन

संवाद और परिचर्चा

श्री राजीव त्रिपाठी
थाना प्रभारी- हातोद (इंदौर)

यह जरूर है कि नाबालिग बच्चियों को बहला-फुसलाकर ले जाने का जो प्रचलन बढ़ गया है, उसके पीछे नेट और मोबाइल की जो संस्कृति है इसको मैं प्रमुख कारण मानता हूं।और को जो दूसरा कारण हो सकता है, वह एक एकल परिवार के कारण भी यह समस्या आ सकती है। पहले संयुक्त परिवार होते थे और नियंत्रण के लिए परिवार में बहुत सारे लोग हुआ करते थे। बच्चे फ्री हो गए हैं और माता-पिता का कंट्रोल नहीं रहता है, वह उन पर नजर नहीं रख पाते हैं। समय अभाव की उनकी अपनी एक समस्या है। निरंकुशता आई है इस वजह से कुछ अपराध हो रहे हैं।

आपके थाना क्षेत्र में महिला अपराध का ग्राफ पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष कम हुआ है या बढ़ा है ?

- मैं ऐसा मानता हूं कि महिला अपराध नियंत्रण में है, पहले इतनी जागरूकता नहीं थी, क्योंकि अगर कोई अपराध होता भी था तो महिलाएं शिकायत करने को तैयार नहीं होती थी। पुलिस विभाग के द्वारा महिलाओं को महिला डेस्क के माध्यम से भी जागरूक किया है। उनको काफी समानता के साथ देखा जाता है। हर चीज में उन को आगे लाने का प्रयास किया जाता है, इसीलिए जागरूकता बढ़ने के कारण कोई अपराध हो रहा है तो महिलाएं शिकायत कर रही हैं। और रिपोर्ट करा रही हैं जो रिपोर्ट दर्ज होती है तो निश्चित रूप से कार्यवाही हम कर सकते हैं। अपराध की संख्या महिलाओं के द्वारा किए जाने वाले अपराधों में वृद्धि हुई हो ऐसा नहीं कह सकते। महिला से संबंधित शिकायतें और अपराध है, उनकी संख्या हो सकती है।

आदतन जो अपराधी होते हैं उन पर आपकी टिप्पणी ?

- जो आदतन अपराधी होते हैं उनके ऊपर हमारे द्वारा प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करवाई जाती है। उन पर नजर रखी जाती है, उनको सुधार करने का प्रयास करते हैं, उन को समझाते हैं। उम्र के मान से भी अपराध होता है,युवावस्था होती है तो जल्दी अपराध की तरफ चला जाता है। जो युवा है छोटी-छोटी बातों पर एरिटेड हो जाता है और उसी दशा में अपराध करने लग जाता है। घटनाएं कर बैठता है, वह गुस्से में आ जाता है और घटनाएं जो अपराध की श्रेणी में आते हैं वोहो जाता है और जब उसकी आयु बढ़ती है कोर्ट कचहरी और जेल में जाना पड़ता है तो उसे समझ में आता है और वह परेशान होकर तौबा करता है। नियंत्रण में रहता है और उस पर रोक भी लगती है तो जो आदतन अपराधी हैं उन पर सख्त निगाह रखी जाती है।

ग्रामीण थाना क्षेत्र में चोरी, चैन स्नैचिंग,डकैती और लूटपाट जैसी घटनाओं का ग्राफ कैसा है ?

- देखिए मैं यहां तक समझता हूं मेरे थाना क्षेत्र में 1 जनवरी से लेकर अभी तक इस तरह की कोई बड़ी घटना नहीं घटी है। घटनाओं पर हमारा पूरा नियंत्रण है। चैन स्नैचिंग,लूटपाट और डकैती की घटनाएं नहीं बढ़ी। यह भी है कि पुलिस के पास संसाधन बड़े हैं,पुलिस के पास सीसीटीवी कैमरे का उपयोग बड़ा है। पुलिस ने जनता के सहयोग से काफी उपयोग किया है। ग्रामीण क्षेत्र में बाहरी अपराधी आकर जरूर कुछ अपराध करते हैं।लेकिन हमारे क्षेत्र में 1 जनवरी से लेकर अभी तक चोरी, स्नैचिंग और डकैती ऐसी कोई घटना नहीं हुई है।

शहरों में ड्रग्स का व्यापार बहुत बढ़ रहा है ? क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है ?

- मेरा ऐसा मानना है कि अन्य क्षेत्र के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता,लेकिन मेरे थाना क्षेत्र में इस तरह की कोई घटना नहीं हुई है। शहरों की जो भौगोलिक स्थिति है वहां का जो वातावरण है, महानगर होना भीड़ भाड़ होना। लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में इस तरह की कोई शिकायत अभी तक हमारे पास नहीं है तो ड्रग्स का जो व्यापार है वह ग्रामीण क्षेत्र में देखने को नहीं मिलता है।

नशा मुक्ति के लिए आपके द्वारा क्या प्रयास किए जाते हैं ?

- पुलिस मुख्यालय के निर्देश अनुसार हम समय-समय पर या जिला स्तर के अधिकारियों के द्वारा समय-समय पर जब निर्देश दिए जाते हैं तो विशेष अभियान चलाए जाते हैं। इसके माध्यम से हमारे द्वारा जनता के हित में प्रयास किए जाते हैं। कुछ समय पूर्व नशा मुक्ति के लिए हमारे द्वारा विशेष अभियान चलाया गया था। जन जागरूकता के माध्यम से भी हमारे द्वारा महिलाओं को समझाना,बच्चों को जागरूक करना सामिल है। महिला पुलिस अधिकारियों के द्वारा भी इस तरह के प्रयास करते हैं ताकि नशे पर रोक लगाई जा सके। सामाजिक स्तर पर यह एक बुराई है और सभी लोग मिलकर काम करेंगे तो निश्चित रूप से उस पर ज्यादा असर होगा।

हमारे अखबार का संकल्प सूत्र - ध्येय वाक्य है 'सतर्क रहें सजग रहें अभियान' इस पर आपकी टिप्पणी ?

- आपका यह जो अभियान है सतर्क रहें सजग रहें अभियान है,हम भी इसी थीम पर काम करते हैं। यह अभियान सफल भी होना चाहिए। इस अभियान के माध्यम से निश्चित रूप से नागरिकों को सुरक्षा मिलेगी, जागरूकता आएगी। क्योंकि आदमी सतर्क होगा तो सजग भी होगा और सजग होगा तो सतर्क भी होगा। हमारी ओर से आपके इस अभियान को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

अपराध होने के पीछे आपकी नजरों में क्या कारण है?

देखिए मेरा ऐसा मानना है कि समाज और अपराध दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य जो है उसमें स्वाभाविक रुप से दोनों ही प्रवृत्ति होती है। अपराधिक प्रवृत्ति होती है और सात्विक प्रवृत्ति भी होती है। एक बड़ा अच्छा उदाहरण है बहुत पहले लगभग 30 से 40 साल पहले मुंबई में एक रात पूरा ब्लैक आउट हुआ था, तो बाद में अखबार ने लिखा था कि जो जन सामान्य है, सामान्य व्यक्ति जो है, वह भी चोर और लुटेरा हो गया था डकैत हो गया था। किंतु यह मानवीय प्रवृत्ति है अब हमारा जो समाज है, हमारे धर्म गुरु हैं, वह सब इसको किस प्रकार से देखते हैं। इस तरह से नियंत्रण का प्रयास करते हैं।अपराध एक सामाजिक बुराई है और इसमें सुधार मात्र पुलिस के कारण या पुलिस से नहीं हो सकता है। यह एक सामाजिक समस्या है हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में बदलाव करना पड़ेगा। हमारे जो भी धार्मिक गुरु हैं जो भी प्रवचन करनेवाले हैं, उन्हें अपने क्षेत्रों के अंदर अलग-अलग स्तर पर लोगों को समझाइश देना होगी। तभी संभव है कि अपराध में कमी आए और समाज में परिवर्तन आए।

DGR @ एल.एन.उग्र (PRO)

वर्तमान में शहरी थाना क्षेत्र - ग्रामीण थाना क्षेत्र की कार्य प्रणाली में क्या अंतर आया है?

- इंदौर शहर में कमिश्नर प्रणाली लागू होने से कार्यपालक दंडाधिकारी के अधिकार उन्हें मिले हुए हैं, तो इंदौर कमिश्नर प्रणाली अलग है। क्योंकि इंदौर से देहात कटा हुआ है, देहात की जो पुलिस की कार्यप्रणाली है वह एक सामान्य पुलिस की जो कार्यप्रणाली होती है वही है।

ग्रामीण क्षेत्र में किस तरह के अपराध अधिक होते हैं ?

- ग्रामीण क्षेत्र में सभी प्रकार के अपराध है होते हैं, बॉडी संबंधी अपराध और ग्रामीण परिवेश में संपत्ति संबंधी अपराध भी होते हैं। वर्तमान की बात करें तो जमीन संबंधी काफी शिकायतें आ रही है। लगभग हर दिन एक व्यक्ति इस तरह की शिकायत लेकर हमारे पास आता है। हमने पैसा दे दिया है एग्रीमेंट कर लिया है जिस व्यक्ति ने हमें जमीन बेची है वह उसे जमीन को देने से इंकार कर रहा है । तो यह बड़ा जटिल प्रश्न है इस को विधी अनुसार निराकरण करने का प्रयास करते हैं।

क्या ग्रामीण परिवेश में साइबर संबंधी अपराध की संख्या बढ़ रही है ?

- देखिए ग्रामीण थाना क्षेत्रों के अंदर जो पूरे देश के साइबर बढ़ रहा है, उसी अनुरूप में उसी अनुपात में ग्रामीण क्षेत्र में भी साइबर अपराध की संख्या बढ़ रही है। तो हम यह कह सकते हैं कि बहुत ज्यादा साइबर अपराध ग्रामीण क्षेत्र में नहीं है।

साइबर अपराध होने की स्थिति में क्या दक्ष स्टाफ ग्रामीण थानों पर उपलब्ध है?

- हमारे ग्रामीण थाना क्षेत्र में एक साइबर सेल है उसमें हमारे ट्रेंड कर्मचारी लोग हैं, वह लोग कार्य कर रहे हैं।और साइबर अपराध होने की स्थिति में यह पूरी टीम अपनी पूरी ताकत से इस पर काम करती है और सफलता भी साइबर सेल को मिलती है।

क्या ग्रामीण थाना क्षेत्र में बलों की कमी महसूस की जाती है ?

- हां हम यह कह सकते हैं कि ग्रामीण थाना क्षेत्र जो है और वहां के जो थाने हैं उन पर बल की कमी कह सकते हैं। क्योंकि अभी शहरी क्षेत्र का पूरी तरह से बंटवारा हुआ, तो अभी हमारी

पुलिस लाइन बनी नहीं है। हमारे यहां ट्रैफिक थाना क्षेत्र भी चिन्हित नहीं है, हमारी तमाम जो जांच होती हैं वह भी ठीक नहीं है। फिर भी अभी बंटवारे का शेशव काल है। पुलिस अधीक्षक का कार्य भी बढ़ जाएगा। मैं ऐसा मानता हूं की बहुत जल्दी ही अच्छी स्थिति हो जाएगी, तब पुलिसिंग की व्यवस्था सुचारु रुप से चल पाएगी।

ग्रामीण थाना क्षेत्रों का क्षेत्रफल की दृष्टि से विस्तृत होता है और बल की कमी होती है कंट्रोल कैसे होता है ?

- मेरा मानना है कि पुलिंग का सिस्टम है, जो हमारी ग्राम रक्षा समिति है, जवानों का बल है, डोंजे साहब ने माइक्रोबिट सिस्टम लागू किया हुआ है, सिस्टम में हमारे अधिकारी कर्मचारी लगातार अपने क्षेत्र में जा रहे हैं। सूचना हमारे पास में आती है तो उस पर हम लोग काफी हद तक अपराध को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं, और इसमें सफलता भी मिलती है।

क्या बेरोजगारी के कारण अपराध बढ़ रहे हैं ?

- इस विषय में मेरा मानना है कि ऐसा कोई विषय परिलक्षित नहीं होता है, कि हम कह सके कि बेरोजगारी के कारण अपराध में बहोतरी हो रही है या अपराध बढ़ रहे हैं।

संवाद और परिचर्चा

श्री भगवत सिंह विरदे
पुलिस अधीक्षक - ग्रामीण इंदौर

ड्रग्स की रोकथाम के लिए ग्रामीण पुलिस के प्रयास ?

- मेरा ऐसा मानना है कि ड्रग्स अनेकों प्रकार के होते हैं, शराब भी ड्रग्स की तरह हैं, शासन भी उसको लाइसेंस देकर चला रहे हैं, गांजा अफीम चरस जो दूसरे तरह के डर से ड्रक्स है। उसमें सुधार के लिए हम लोग प्रयास करते हैं और आवश्यकता होने पर उस पर हम कार्यवाही भी करते हैं। समय-समय पर हम इस बुराई के खिलाफ स्कूलों में बच्चों को कॉलेज के बच्चों को अवेरनेस कर जानकारी देने का प्रयास करते हैं और ग्रामीण क्षेत्र में ड्रग्स जैसे व्यापार की रोकथाम के लिए काफी ग्रामीण पुलिस के द्वारा किया जाता है ।

ग्रामीण थाना क्षेत्र में क्या राजनीतिक हस्तक्षेप को भी आप देखते हैं ?

- मेरा ऐसा विचार है कि ग्रामीण क्षेत्र की जो पुलिस है और हमारे यहां किसी तरह की भी राजनीतिक हम नहीं देखते हैं, पुलिस के साथ कोई राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं है पुलिस अपना काम करती है। विधि अनुसार विधि सम्मत पुलिस को कार्य करना होता है। वही पुलिस करती भी है।

ग्रामीण क्षेत्र जो है इसमें पिछले वर्ष की तुलना में चोरी डकैती लूटपाट की घटनाओं का ग्राफ कितना है ?

- आपकी जानकारी के लिए मैं बताना चाहूंगा कि, इन सब घटनाओं के इस तरह के अपराध का जो ग्राफ पिछले साल की तुलना में काफी कम है और पुलिस के लगातार प्रयास के माध्यम से यह हमारे द्वारा एक विशेष उपलब्धि है, कि इस तरह के अपराध पिछले वर्ष की तुलना में काफी कम है।

ग्रामीण परिवेश में सामाजिक सुधार के लिए ग्रामीण पुलिस के प्रयास ?

- सामाजिक परिवेश को सुधारने के लिए पुलिस अकेली कुछ नहीं कर सकती है। पुलिस भी समाज से ही आती है इसलिए समाज सुधार के लिए सबको मिलजुल कर काम करना होगा। जब समाज सुधार हो पाएगा, पुलिस अपना काम करती है समाज को भी अपने दायित्व के अनुसार काम करना चाहिए, सभी स्तर पर सुधार के प्रयास किया जाए तो निश्चित रूप से समाज में सुधार आएगा।

आपने पुलिस विभाग को ही क्यों चुना ?

- पुलिस विभाग को चुनने के पीछे मेरा ऐसा कोई बहुत बड़ा आईडिया नहीं था कि पुलिस ही चुने। हम तो पी एस सी को परीक्षा दिए थे, उसमें हम सिलेक्ट हो गए और जब सिलेक्शन हो गया तो फिर हमने इस विभाग को ही जीवन का ध्येय मान लिया। तन और मन से इसमें समाहित होकर पुलिस की सेवा कर रहे हैं। यह एक अच्छा प्लेटफार्म है और मैं लोगों से कहा भी करता हूं, आपको भी बताना चाहता हूं कि 'वी आर नॉट गुड गॉड' 'बट नॉट लेस देन गॉड'। 'हम ईश्वर नहीं हैं' 'लेकिन ईश्वर से कम भी नहीं हैं'। क्योंकि सभी ने देखा होगा आदमी पुलिस को पानी पी पीकर गाली देता है। लेकिन जब तकलीफ में होता है तो सबसे पहले पुलिस के पास ही आता है। इससे अच्छी सेवा कोई और हो भी नहीं सकती है।

भ्रष्टाचार को आप किस तरह से देखते हैं ?

- देखें जैसा कि मैंने आपको बताया है, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो समाज है उसी समाज से मनुष्य आया है, हर चीज समाज से ही आई है। भ्रष्टाचार एक शब्द समाज में कतई स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए, स्वीकार होना भी नहीं चाहिए। लेकिन हम इस बात का चिंतन करें,कि हम अपने बच्चों को क्या शिक्षा दे रहे हैं। क्या हम नैतिक शिक्षा अपने बच्चों को दे रहे हैं ? क्या हम बच्चों को बोल रहे हैं कि बेटा सुबह उठकर माता-पिता को प्रणाम करो ?क्या हम बता रहे हैं कि दादा दादी नाना नानी का सम्मान करो ? तो एक समय था जब कुटुंब व्यवस्था थी । उस समय सामाजिक परिवेश अलग था संयुक्त परिवार की व्यवस्था थी वह अब एकल परिवार में आ गई है। तो सामाजिक बंधनों में जो शिथिलता आ रही है, मेरा ऐसा मानना है कि उसी से भ्रष्टाचार आ रहा है। तो मैं कह सकता हूं कि भ्रष्टाचार तो एक सामाजिक अनिवार्य बुराई है। इसका निवारण सामाजिक स्तर पर ही करना पड़ेगा।

अगर आप पुलिस में ना होते तो कहां होते?

यह आपने अच्छा प्रश्न किया है मैं ऐसा मानता हूं कि अगर पुलिस में नहीं होता तो अपनी खेती बाड़ी कर रहा होता और अपने जीवन को परिवार को संचालित कर रहा होता। समाज के मुख्य अंग

हमारे 'सतर्क रहें सजग रहें अभियान' पर आप क्या कहना चाहेंगे, यह हमारे अखबार का संकल्पसूत्र - ध्येयवाक्य है !

- मैं यही कहूंगा कि हर नागरिक अपने कर्तव्य का पालन करें, हमारे यहां सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारे संविधान में बाबा साहब ने और बाद के हमारे राजनेताओं ने भी, अधिकारों को अनिवार्य बना दिया कर्तव्य को ऐच्छिक बना दिया। यदि हर नागरिक कर्तव्यों का पालन करने लगे तो मैं ऐसा मानता हूं कि बहुत अच्छा समाज बनेगा। अभी भी बहुत अच्छा समाज है, और बेहतर बन जाएगा यदि हम सब अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्य का पालन करें तो। और सतर्क रहें यह समय की आवश्यकता है, सजग रहें यह भी समय की आवश्यकता है, यह अभियान आपका जो है यह सराहनीय प्रयास है। यह सफल होना ही चाहिए।

सर्वजनहिताय के लिए हमारे शुभसंकल्पित उद्देश्य

'सतर्क रहे - सजग रहे अभियान'

को जन-गण-मन तक प्रसारित और पल्लवित करने में अपना योगदान दीजिये ।

हम विवाद के लिए नहीं अपितु संवाद के लिए संकल्पित है...!

हम सिर्फ लाभ के लिए नहीं अपितु शुभ के लिए भी संकल्पित है...!

हम सिर्फ समस्याओं को उजागर के लिए ही नहीं अपितु समाधान के साथ सहयोग के लिए भी संकल्पित है...!

'मित्रस्यम चक्षुक्षाम देहि' की भावना वाली हमारी संवाद और सहयोग की पत्रकारिता के साथ जुड़े।

Webportal :
https://www.detectivegroupreport.com
https://www.dgr.co.in

Youtube Channal :
http://www.youtube.com/c /DETECTIVEGROUPREPORT

Email us :
dgrnewsnetwork@gmail.com

Social Media :

Twitter
https://twitter.com/Detective_G_R

Facebook
https://www.facebook.com /DetectiveGroupReport

Instagram
https://www.instagram.com /detective_group_report